# कृतिका भाग 2

# कृतिका भाग – 2

## माता का आँचल

**-शिवपूजन सहाय**

### सारांश

'माता का आँचल' पाठ शिवपूजन सहाय द्वारा लिखा गया है जिसमें लेखक ने माँ के साथ एक अद्भुत लगाव को दर्शाया है| इस पाठ में ग्राम संस्कृति का चित्रण किया गया है|

कथाकार का नाम तारकेश्वर था। पिता अपने साथ ही उसे सुलाते, सुबह उठाते और नहलाते थे। वे पूजा के समय उसे अपने पास बिठाकर शंकर जी जैसा तिलक लगाते जो लेखक को ख़ुशी देती थी| पूजा के बाद पिता जी उसे कंधे पर बिठाकर गंगा में मछलियों को दाना खिलाने के लिए ले जाते थे और रामनाम लिखी पर्चियों में लिपटीं आटे की गोलियाँ गंगा में डालकर लौटते हुए उसे रास्ते में पड़ने वाले पेड़ों की डालों पर झुलाते। घर आकर बाबूजी उन्हें चौके पर बिठाकर अपने हाथों से खाना खिलाया करते थे। मना करने पर उनकी माँ बड़े प्यार से तोता, मैना, कबूतर, हँस, मोर आदि के बनावटी नाम से टुकड़े बनाकर उन्हें खिलाती थीं।

खाना खाकर बाहर जाते हुए माँ उसे झपटकर पकड़ लेती थीं और रोते रहने के बाद भी बालों में तेल डाल कंघी कर देतीं। कुरता-टोपी पहनाकर चोटी गूँथकर फूलदार लट्टू लगा देती थीं।लेखक रोते-रोते बाबूजी की गोद में बाहर आते। बाहर आते ही वे बालकों के झुंड के साथ मौज-मस्ती में डूब जाते थे। वे चबूतरे पर बैठकर तमाशे और नाटक किया करते थे। मिठाइयों की दुकान लगाया करते थे। घरौंदे के खेल में खाने वालों की पंक्ति में आखिरी में चुपके से बैठ जाने पर जब लोगों को खाने से पहले ही उठा दिया जाता, तो वे पूछते कि भोजन फिर कब मिलेगा। किसी दूल्हे के आगे चलती पालकी देखते ही जोर-जोर से चिल्लाने लगते।

एक बार रास्ते में आते हुए लड़को की टोली ने मूसन तिवारी को बुढ़वा बेईमान कहकर चिढ़ा दिया। मूसन तिवारी ने उनको खूब खदेड़ा। जब वे लोग भाग गए तो मूसन तिवारी पाठशाला पहुँच गए। अध्यापक ने लेखक की खूब पिटाई की। यह सुनकर पिताजी पाठशाला दौड़े आए। अध्यापक से विनती कर पिताजी उन्हें घर ले आए। फिर वे रोना-धोना भुलकर अपनी मित्र मंडली के साथ हो गए।

मित्र मंडली के साथ मिलकर लेखक खेतों में चिड़ियों को पकड़ने की कोशिश करने लगे। चिड़ियों के उड़ जाने पर जब एक टीले पर आगे बढ़कर चूहे के बिल में उसने आस-पास का भरा पानी डाला, तो उसमें से एक साँप निकल आया। डर के मारे लुढ़ककर गिरते-पड़ते हुए लेखक लहूलुहान स्थिति में जब घर पहुँचे तो सामने पिता बैठे थे परन्तु पिता के साथ ज्यादा वक़्त बिताने के बावजूद लेखक को अंदर जाकर माँ से लिपटने में अधिक सुरक्षा महसूस हुई। माँ ने घबराते हुए आँचल से उसकी धूल साफ़ की और हल्दी लगाई।

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

**उत्तर-** यह बात सच है कि बच्चे (लेखक) को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन-पालन ही नहीं करते थे, उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परंतु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी, अत्यधिक ममता और माँ की गोदी की जरूरत थी। उसे 'अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती थी, उतनी पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी याद आती है, बाप या नाना नहीं। माँ का लाड़ घाव को भरने वाले मरहम का काम करता है।

**प्रश्न 2** आपके विचार से भोलनाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

**उत्तर-** भोलानाथ भी बच्चे की स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रूचि लेता है। उसे अपनी मित्र मंडली के साथ तरह-तरह की क्रीड़ा करना अच्छा लगता है। वे उसके हर खेल व हुदगड़ के साथी हैं। अपने मित्रों को मजा करते देख वह स्वयं को रोक नहीं पाता। इसलिए रोना भूलकर वह दुबारा अपनी मित्र मंडली में खेल का मजा उठाने लगता है। उसी मग्नावस्था में वह सिसकना भी भूल जाता है।

**प्रश्न 3** आपने देखा होगा कि भोलानाथ और उसके साथी जब-तब खेलते-खाते समय किसी न किसी प्रकार की तुकबंदी करते हैं। आपको यदि अपने खेलों आदि से जुड़ी तुकबंदी याद हो तो लिखिए।

**उत्तर-**

1. अटकन - बटकन दही चटाके,
   बनफूल बंगाले।
2. अक्कड़ - बक्कड़ बम्बे बो,
   अस्सी नब्बे पूरे सौ।

**प्रश्न 4** भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

**उत्तर-** आज जमाना बदल चुका है। आज माता-पिता अपने बच्चों की बहुत ध्यान रखते हैं। वे उसे गली-मुहल्ले में बेफिक्र खेलने-घूमने की अनुमति नहीं देते। जब से निठारी जैसे कांड होने लगे हैं, तब से बच्चे भी डरे-डरे रहने लगे हैं। अब न तो हुल्लडबाजी, शरारतें और तुकबंदियाँ रही हैं; न ही नंगधडंग घूमते रहने की आज़ादी। अब तो बच्चे प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक्स के महँगे खिलौनों से खेलते हैं। बरसात में बच्चे बाहर रह जाएँ तो माँ-बाप की जान निकल जाती है। आज न कुएँ रहे, न रहट, न खेती का शौक। इसलिए आज का युग पहले की तुलना में आधुनिक, बनावटी और रसहीन हो गया है।

**प्रश्न 5** पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों?

**उत्तर-** पाठ में ऐसे कई प्रसंग आए हैं जिन्होंने मेरे दिल को छू लिए-

रामायण पाठ कर रहे अपने पिता के पास बैठा हुआ भोलानाथ का आईने में अपने को देखकर खुश होना और जब उसके पिताजी उसे देखते हैं तो लजाकर उसका आईना रख देने की अदा बड़ी प्यारी लगती है।

बच्चों द्वारा बारात का स्वांग रचते हुए समधी का बकरे पर सवार होना। दुल्हन को लिवा लाना व पिता द्वारा दुल्हन का घूँघट उठाने ने पर सब बच्चों का भाग जाना, बच्चों के खेल में समाज के प्रति उनका रूझान झलकता है तो दूसरी और उनकी नाटकीयता, स्वांग उनका बचपना।

बच्चे का अपने पिता के साथ कुश्ती लड़ना। शिथिल होकर बच्चे के बल को बढ़ावा देना और पछाड़ खा कर गिर जाना। बच्चे का अपने पिता की मूंछ खींचना और पिता का इसमें प्रसन्न होना बड़ा ही आनन्दमयी प्रसंग है।

कहानी के अन्त में भोलानाथ का माँ के आँचल में छिपना, सिसकना, माँ की चिंता, हल्दी लगाना, बाबू जी के बुलाने पर भी मन की गोद न छोड़ना मर्मस्पर्शी दृश्य उपस्थित करता है; अनायास माँ की याद दिला देता है।

**प्रश्न 6** इस उपन्यास अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं?

**उत्तर-**

1. गाँवों में हरे भरे खेतों के बीच वृक्षों के झुरमुट और ठंडी छाँव से घिरा कच्ची मिट्टी एवं छान का घर हुआ करता था। आज ज्यादातर गाँवों में पक्के मकान ही देखने मिलते हैं।
2. पहले गाँवों में भरे पूरे परिवार होते थे। आज एकल संस्कृति ने जन्म लिया है।
3. अब गाँवों में भी विज्ञान का प्रभाव बढ़ता जा रहा है; जैसे - लालटेन के स्थान पर बिजली, बैल के स्थान पर ट्रैक्टर का प्रयोग, घरेलू खाद के स्थान पर बाज़ार में उपलब्ध कृत्रिम खाद का प्रयोग तथा विदेशी दवाइयों का प्रयोग किया जा रहा है।
4. पहले की तुलना में अब किसानों (खेतिहर मज़दूरों) की संख्या घट रही है।
5. पहले गाँव में लोग बहुत ही सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते थे। आज बनावटीपन देखने मिलता है।

**प्रश्न 7** पाठ पढ़ते-पढ़ते आपको भी अपने माता-पिता का लाड़-प्यार याद आ रहा होगा। अपनी इन भावनाओं को डायरी में अंकित कीजिए।

**उत्तर-** मुझे भी मेरे बचपन की एक घटना याद आ रही है जो नीचे वर्णित है-

मैं आँगन में खेल रहा था। कुछ बच्चे पत्थर फेंक कर पेड़ पर फँसी पतंग निकालने का प्रयास कर रहे थे।

अचानक एक पत्थर मेरी आँख पर लगा। मैं जोरों से रोने लगा। मुझे पीड़ा से रोता हुआ देखकर माँ भी रोने लगी फिर माँ और पिता जी मुझे डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने जब कहा डरने की बात नहीं है तब दोनों की जान में जान आई।

**प्रश्न 8** यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-** माता का अँचल में माता-पिता के वात्सल्य का बहुत सरस और मनमोहक वर्णन हुआ है। इसमें लेखक ने अपने शैशव काल का वर्णन किया है।

भोलानाथ के पिता के दिन का आरम्भ ही भोलानाथ के साथ शुरू होता है। उसे नहलाकर पूजा पाठ कराना, उसको अपने साथ घूमाने ले जाना, उसके साथ खेलना व उसकी बालसुलभ क्रीड़ा से प्रसन्न होना, उनके स्नेह व प्रेम को व्यक्त करता है।

भोलानाथ की माता वात्सल्य व ममत्व से भरपूर माता है। भोलानाथ को भोजन कराने के लिए उनका भिन्न-भिन्न तरह से स्वांग रचना एक स्नेही

माता की ओर संकेत करता है। जो अपने पुत्र के भोजन को लेकर चिन्तित है। दूसरी ओर उसको लहुलुहान व भय से काँपता देखकर माँ भी स्वयं रोने व चिल्लाने लगती है। अपने पुत्र की ऐसी दशा देखकर माँ का हृदय भी दुखी हो जाता है। माँ का ममतालु मन इतना भावुक है कि वह बच्चे को डर के मारे काँपता देखकर रोने लगती है। उसकी ममता पाठक को बहुत प्रभावित करती है।

**प्रश्न 9** माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

**उत्तर-** लेखक ने इस कहानी का नाम माँ का आँचल उपयुक्त रखा है। इस कहानी में माँ के आँचल की सार्थकता को समझाने का प्रयास किया गया है। भोलानाथ को माता व पिता दोनों से बहुत प्रेम मिला है। उसका दिन पिता की छत्रछाया में ही शुरू होता है। पिता उसकी हर क्रीड़ा में सदैव साथ रहते हैं, विपदा होने पर उसकी रक्षा करते हैं। परन्तु जब वह साँप को देखकर डर जाता है तो वह पिता की छत्रछाया के स्थान पर माता की गोद में छिपकर ही प्रेम व शान्ति का अनुभव करता है। माता उसके भय से भयभीत है, उसके दु:ख से दुखी है, उसके आँसु से खिन्न है। वह अपने पुत्र की पीड़ा को देखकर अपनी सुधबुध खो देती है। वह बस इसी प्रयास में है कि वह अपने पुत्र की पीड़ा को समाप्त कर सके। माँ का यही प्रयास उसके बच्चे को आत्मीय सुख व प्रेम का अनुभव कराता है। इसके लिए एक उपयुक्त शीर्षक और हो सकता था माँ की ममता क्योंकि कहानी में माँ का स्नेह ही प्रधान है। अत: यह शीर्षक भी उचित है।

**प्रश्न 10** बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

**उत्तर-** बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को उनके साथ रहकर, उनकी सिखाई हुई बातों में रुचि लेकर, उनके साथ खेल करके, उन्हें चूमकर, उनकी गोद में या कंधे पर बैठकर प्रकट करते हैं।

मेरे माता-पिताजी की बीसवीं वर्षगाँठ थी। मैंने उनके बीस वर्ष पुराने युगल-चित्र को सुंदर से फ्रेम में सजाया और उन्हें भेंट किया। उसी दिन मैं उनके लिए अपने हाथों से सब्जियों का सूप बनाकर लाई और उन्हें आदरपूर्वक दिया। माता-पिता मेरा यह प्रेम देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

**प्रश्न 11** इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

**उत्तर-** प्रस्तुत पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है उसकी पृष्ठभूमि पूर्णतया ग्रामीण जीवन पर आधारित है। यह कहानी उस समय की कहानी प्रस्तुत करती हैं जब बच्चों के पास खेलने के लिए अत्याधिक साधन नहीं होते थे। वे लोग अपने खेल प्रकृति से ही प्राप्त करते थे और उसी प्रकृति के साथ खेलते थे। उनके लिए मिट्टी, खेत, पानी, पेड़, मिट्टी के बर्तन आदि साधन थे। परन्तु आज के बच्चों की दुनिया इन बच्चों से भिन्न है। आज के बच्चे विडियो गेम, टी.वी., कम्प्यूटर, शतरंज़ आदि खेलने में लगे रहते हैं या फिर क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, बेडमिण्टन या कार्टून आदि में ही अपना बचपन तथा समय बीता देते हैं।

**प्रश्न 12** फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन की आँचलिक रचनाओं को पढ़िए।

**उत्तर-**

1. फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास 'मैला आँचल' पठनीय है।
2. नागार्जुन का उपन्यास 'बलचनमा' आँचलिक है।

❖❖

# साना-साना हाथ जोड़ी

**-मधु कांकरिया**

## सारांश

यह पाठ मधु कांकरिया द्वारा लिखा एक यात्रा वृत्तांत है जिसमें लेखिका ने सिक्किम की राजधानी गैंगटॉक और उसके आगे हिमालय की यात्रा का वर्णन किया है जो शहरों की भागमभाग भरी ज़िं दगी से दूर है| लेखिका गैंगटॉक को मेहनती बादशाहों का शहर बताती हैं क्योंकि वहाँ के सभी लोग बड़े ही मेहनती हैं। वहाँ तारों से भरे आसमान में लेखिका को सम्मोहन महसूस होता है जिसमें वह खो जाती हैं। वह नेपाली युवती द्वारा बताई गई प्रार्थना 'मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो' को गाती हैं|

अगले दिन मौसम साफ न होने के कारण लेखिका कंचनजंघा की चोटी तो नहीं देख सकी, परंतु ढेरों खिले फूल देखकर खुश हो जाती हैं। वह उसी दिन गैंगटा ॅक से 149 किलोमीटर दूर यूमथांग देखने अपनी सहयात्री मणि और गाइड जितेन नार्गे के साथ रवाना होती हैं। गंगटोक से यूमथांग को निकलते ही लेखिका को एक कतार में लगी सफेद-सफेद बौद्ध पताकाएँ दिखाई देती हैं जो ध्वज की तरह फहरा रही थीं। ये शान्ति और अहिंसा की प्रतीक थीं और उन पताकाओं पर मंत्र लिखे हुए थे। लेखिका के गाइड ने उन्हें बताया कि जब किसी बौद्ध मतावलम्बी की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। इन्हें उतारा नहीं जाता है, ये खुद नष्ट हो जाती हैं। कई बार नए शुभ कार्य की शुरुआत में भी रंगीन पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। जितेन ने बताया कि कवी-लोंग स्टॉक नामक स्थान पर 'गाइड' फ़िल्म की शूटिंग हुई थी। आगे चलकर मधु जी को एक कुटिया के भीतर घूमता हुआ चक्र दिखाई दिया जिसे धर्म चक्र या प्रेयर व्हील कहा जाता है। नार्गे ने बताया कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। जैसे-जैसे वे लोग ऊँचाई की ओर बढ़ने लगे, वैसे-वैसे बाजार, लोग और बस्तियाँ आँखों से ओझल होने लगी। घाटियों में देखने पर सबकुछ धुंधला दिखाई दे रहा था। उन्हें हिमालय पल-पल परिवर्तित होते महसूस होता है| वह विशाल लगने लगता है|

'सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल' पर जीप रुकती है। सभी लोग वहाँ की सुंदरता को कैमरे में कैद करने लग जाते हैं| झरने का पानी में लेखिका को ऐसा लग रहा था जैसे वह उनके अंदर की सारी बुराईयाँ और दुष्टता को भाकर ले जा रहा हो| रास्ते में प्राकृतिक दृश्य पलपल अपना रंग ऐसे बदल रहे थे जैसे कोई जादू की छड़ी घुमाकर सबकुछ बदल रहा था। थोड़ी देर के लिए जीप 'थिंक ग्रीन' लिखे शब्दों के पास रुकी। वहाँ सभी कुछ एक साथ सामने था। लगातार बहते झरने थे, नीचे पूरे वेग से बह रही तिस्ता नदी थी, सामने धुंध थी, ऊपर आसमान में बादल थे और धीरेधीरे हवा चल रही थी, जो आस-पास के वातावरण में खिले फूलों की हँसी चारों ओर बिखेर रही थी। कुछ औरतों की पीठ पर बँधी टोकरियों में बच्चे थे। इतने सुंदर वातावरण में भूख, गरीबी और मौत के निर्मम दृश्य ने लेखिका को सहमा दिया। एक कर्मचारी ने बताया कि ये पहाडिनें पहाड़ी रास्ते को चौड़ा बना रही हैं। कई बार काम करते समय किसी-न-किसी व्यक्ति की मौत हो जाती है क्योंकि जब पहाड़ों को डायनामाइट से उड़ाया जाता

है तो उनके टुकड़े इधर-उधर गिरते हैं। यदि उस समय सावधानी न बरती जाए, तो जानलेवा हादसा घट जाता है। लेखिका को लगता है कि सभी जगह आम जीवन की कहानी एक-सी है।

आगे चलने पर रास्ते में बहुत सारे पहाड़ी स्कूली बच्चे मिलते हैं। जितेन बताता है कि ये बच्चे तीन-साढ़े तीन किलोमीटर की पहाड़ी चढ़ाई चढ़कर स्कूल जाते हैं। ये बच्चे स्कूल से लौटकर अपनी माँ के साथ काम करते हैं। यहाँ का जीवन बहुत कठोर है। जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे खतरे भी बढ़ते जा रहे थे। रास्ता तंग होता जा रहा था। सरकार की 'गाड़ी धीरे चलाएँ' की चेतावनियों के बोर्ड लगे थे। शाम के समय जीप चाय बागानों में से गुजर रही थी। बागानों में कुछ युवतियाँ सिक्किमी परिधान पहने चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थीं। चारों ओर इंद्रधनुषी रंग छटा बिखेर रहे थे। यूमथांग पहुंचने से पहले वे लोग लायुंग रुके। लायुंग में लकड़ी से बने छोटे-छोटे घर थे। लेखिका सफ़र की थकान उतारने के लिए तिस्ता नदी के किनारे फैले पत्थरों पर बैठ गई। रात होने पर जितेन के साथ अन्य साथियों ने नाच-गाना शुरू कर दिया था। लेखिका की सहयात्री मणि ने बहुत सुंदर नृत्य किया। लायुंग में अधिकतर लोगों की जीविका का साधन पहाड़ी आलू, धान की खेती और शराब था। लेखिका को वहाँ बर्फ़ देखने की इच्छा थी परंतु वहाँ बर्फ कहीं भी नहीं थी|

एक स्थानीय युवक के अनुसार प्रदूषण के कारण यहाँ स्नोफॉल कम हो गया था। 'कटाओ' में बर्फ़ देखने को मिल सकती है। कटाओ' को भारत का स्विट्जरलैंड कहा जाता है। मणि जिसने स्विट्ज़रलैंड घुमा था ने कहा कि यह स्विट्जरलैंड से भी सुंदर है। कटाओ को अभी तक टूरिस्ट स्पॉट नहीं बनाया गया था, इसलिए यह अब तक अपने प्राकृतिक स्वरूप में था। लायुंग से कटाओ का सफ़र दो घंटे का था। कटाओ का रास्ता खतरनाक था। जितेन अंदाज से गाड़ी चला रहा था। चारों ओर बर्फ से भरे पहाड़ थे। कटाओ पहुँचने पर हल्की -हल्की बर्फ पड़ने लगी थी। सभी सहयात्री वहाँ के वातावरण में फोटो खिंचवा रहे थे। लेखिका वहाँ के वातावरण को अपनी साँसों में समा लेना चाहती थी। उसे लग रहा था कि यहाँ के वातावरण ने ही ऋषियोंमुनियों को वेदों की रचना करने की प्रेरणा दी होगी। ऐसे असीम सौंदर्य को यदि कोई अपराधी भी देख ले, तो वह भी आध्यात्मिक हो जाएगा। मणि के मन में भी दार्शनिकता उभरने लगी थी। वे कहती हैं कि - प्रकृति अपने ढंग से सर्दियों में हमारे लिए पानी इकट्ठा करती है और गर्मियों में ये बर्फ शिलाएँ पिघलकर जलधारा बनकर हम लोगों की प्यास को शांत करती हैं। प्रकृति का यह जल संचय अद्भुत है। इस प्रकार नदियों और हिमशिखरों का हम पर ऋण है।

थोड़ा आगे जाने पर फ़ौजी छावनियाँ दिखाई दी चूँकि यह बॉर्डर एरिया था और थोड़ी ही दूर पर चीन की सीमा थी। लेखिका फ़ौजियों को देखकर उदास हो गई। वैशाख के महीने में भी वहाँ बहुत ठंड थी। वे लोग पौष और माघ की ठंड में किस तरह रहते होंगे? वहाँ जाने का रास्ता भी बहुत खतरनाक था। कटाओं से यूमथांग की ओर जाते हुए प्रियुता और रूडोडेंड्रो ने फूलों की घाटी को भी देखा। यूमथांग कटाओ जैसा सुंदर नहीं था। जितेन ने रास्ते में बताया कि यहाँ पर बंदर का माँस भी खाया जाता है। बंदर का माँस खाने से कैंसर नहीं होता। यूमथांग वापस आकर उन लोगों को वहाँ सब फीका-फीका लग रहा था। पहले सिक्किम स्वतंत्र राज्य था। अब वह भारत का एक हिस्सा बन गया है। इससे वहाँ के लोग बहुत खुश हैं।

मणि ने बताया कि पहाड़ी कुत्ते केवल चाँदनी रातों में भौंकते हैं। यह सुनकर लेखिका हैरान रह गई। उसे लगा कि पहाड़ी कुत्तों पर भी ज्वारभाटे की तरह पूर्णिमा की चाँदनी का प्रभाव पड़ता है। गुरुनानक के पदचिह्नों वाला एक ऐसा पत्थर दिखाया, जहाँ कभी उनकी थाली से चावल छिटककर बाहर गिर गए थे। खेदुम नाम का एक किलोमीटर का ऐसा क्षेत्र भी दिखाया, जहाँ देवी-देवताओं का निवास माना जाता है। नार्गे ने पहाड़ियों के पहाड़ों, नदियों, झरनों और वादियों के प्रति पूज्य भाव की भी जानकारी दी। भारतीय आर्मी के कप्तान शेखर दत्ता के सुझाव पर गैंगटाक के पर्यटक स्थल बनने और नए रास्तों के साथ नए स्थानों को खोजने के प्रयासों के बारे में भी बताया|

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को किस तरह सम्मोहित कर रहा था?

**उत्तर-** रात्रि के समय आसमान ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सारे तारे नीचे धरती पर टिमटिमा रहे हों। दूर ढलान लेती तराई पर सितारों के गुच्छे रोशनियों की एक झालर-सी बना रहे थे। रात के अन्धकार में सितारों से झिलमिलाता गंतोक लेखिका को जादुई एहसास करा रहा था। उसे यह जादू ऐसा सम्मोहित कर रहा था कि मानो उसका अस्तित्व स्थगित सा हो गया हो, सब कुछ अर्थहीन सा था। उसकी चेतना शून्यता को प्राप्त कर रही थी। वह सुख की अतींद्रियता में डूबी हुई उस जादुई उजाले में नहा रही थी जो उसे आत्मिक सुख प्रदान कर रही थी।

**प्रश्न 2** गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?

**उत्तर-** मेहनतकश' का अर्थ है- कड़ी मेहनत करने वाले। 'बादशाह' का अर्थ है- मन की मर्जी के मालिक। गंतोक एक पर्वतीय स्थल है। पर्वतीय क्षेत्र होने के नाते यहाँ स्थितियाँ बड़ी कठिन हैं। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोगों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ के लोग इस मेहनत से घबराते नहीं और ऐसी कठिनाइयों के बीच भी मस्त रहते हैं। इसलिए गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया है।

**प्रश्न 3** कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

**उत्तर-** सफ़ेद बौद्ध पताकाएँ शांति व अहिंसा की प्रतीक हैं, इन पर मंत्र लिखे होते हैं। यदि किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए 108 श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं। कई बार किसी नए कार्य के अवसर पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं। इसलिए ये पताकाएँ, शोक व नए कार्य के शुभांरभ की ओर संकेत करते हैं।

**प्रश्न 4** जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में क्या महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं, लिखिए।

**उत्तर-**

1. नार्गे के अनुसार सिक्किम के रास्तों में हिमालय की गहनतम घाटियाँ और फूलों से लदी वादियाँ मिलेंगी।
2. घाटियों का सौंदर्य देखते ही बनता हैं। नार्गे ने बताया कि वहाँ की खूबसूरती की तुलना स्विट्ज़रलैंड की खूबसूरती से की जा सकती है।
3. नार्गे के अनुसार पहाड़ी रास्तों पर फहराई गई पताकाएँ किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु व नए कार्य की शुरूआत का प्रतीक हैं। इनका रंग श्वेत व रंग-बिरंगा होता है।
4. सिक्किम में घूमते चक्र भारत के अन्य स्थानों व्याप्त आस्था, विश्वास, अंधविश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाओं की तरह ही हैं।
5. वहाँ की युवतियाँ बोकु नाम का सिक्किम का परिधान डालती हैं। जिसमें उनके सौंदर्य की छटा निराली होती है। वहाँ के घर, घाटियों में ताश के पत्तों की तरह बिखरे होते हैं।
6. वहाँ के लोग मेहनतकश होते हैं, उनका जीवन काफी मुश्किलों से भरा है।

7. स्त्रियाँ व बच्चे सब काम करते हैं। स्त्रियाँ स्वेटर बुनती हैं, घर सँभालती हैं, खेती करती हैं, पत्थर तोड़-तोड़ कर सड़कें बनाती हैं। चाय की पत्तियाँ चुनने बाग़ में जाती हैं। बच्चे पानी भरते हैं और जानवर चराते हैं।

8. बच्चों को बहुत ऊँचाई पर पढ़ाई के लिए जाना पड़ता है क्योंकि दूर-दूर तक कोई स्कूल नहीं है। इन सब के विषय में नार्गे लेखिका को बताता चला गया।

**प्रश्न 5** लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

**उत्तर-** लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्म-चक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है। मैदानी क्षेत्रों में गंगा के विषय में भी ऐसी ही धारणा है। उसे लगा कि पूरे भारत की आत्मा एक-सी है। सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद उनकी आस्थाएँ, विश्वास, अंधविश्वास और पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक-सी हैं।

**प्रश्न 6** जितेन नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

**उत्तर-** नार्गे एक कुशल गाइड था। वह अपने पेशे के प्रति पूरा समर्पित था। उसे सिक्किम के हर कोने के विषय में भरपूर जानकारी प्राप्त थी इसलिए वह एक अच्छा गाइड था। एक कुशल गाइड में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है-

1. एक गाइड अपने देश व इलाके के कोने-कोने से भली भाँति परिचित होता है, अर्थात् उसे सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
2. उसे वहाँ की भौगोलिक स्थिति, जलवायु व इतिहास की सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
3. एक कुशल गाइड को चाहिए कि वो अपने भ्रमणकर्ता के हर प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो।
4. एक कुशल गाइड को अपनी विश्वसनीयता का विश्वास अपने भ्रमणकर्ता को दिलाना आवश्यक है। तभी वह एक आत्मीय रिश्ता कायम कर अपने कार्य को कर सकता है।
5. गाइड को कुशल व बुद्धिमान व्यक्ति होना आवश्यक है। ताकि समय पड़ने पर वह विषम परिस्थितियों का सामना अपनी कुशलता व बुद्धिमानी से कर सके व अपने भ्रमणकर्ता की सुरक्षा कर सके।
6. एक कुशल गाइड की वाणी को प्रभावशाली होना आवश्यक है इससे पूरी यात्रा प्रभावशाली बनती है और भ्रमणकर्ता की यात्रा में रूचि भी बनी रहती है।
7. वहाँ के जन-जीवन की दिनचर्या से अवगत कराए।
8. रास्ते में आए प्रत्येक दृश्य से पर्यटकों को अवगत कराए।
9. वह यात्रियों को रास्तें में आने वाले दर्शनीय स्थलों की जानकारी देता रहे।

**प्रश्न 7** इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका ने हिमालय के जिन-जिन रूपों का चित्र खींचा है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-** इस यात्रा वृतांत में लेखिका ने हिमालय के पल-पल परिवर्तित होते रुप को देखा। ज्यों-ज्यों वह ऊँचाई पर चढ़ती गई। हिमालय विशाल से विशालतर होता चला गया, हिमालय कहीं चटक हरे रंग का मोटा

कालीन ओढ़े हुए, तो कहीं हल्का पीलापन लिए हुए प्रतीत हुआ। चारों तरफ़ हिमालय के गहनतम वादियाँ और फूलों से लदी घाटियाँ थी। कहीं पर्वत प्लास्टर उखड़ी दीवार की तरह पथरीला दिखाई दिया और देखते-ही-देखते सब कुछ समाप्त हो गया मानो किसी ने जादू की छडी घूमा दी हो। कभी बादलों की मोटी चादर में, सब कुछ बादलमय दिखाई देता तो कभी कुछ और। कटाओ से आगे बढ़ने पर पूरी तरह बर्फ से ढके पहाड़ दिख रहे थे। चारों तरफ दूध की धार की तरह दिखने वाले जलप्रपात थे तो वहीं नीचे चाँदी की तरह कौंध मारती तिस्ता नदी बह रही थी, जिसने लेखिका के हृदय को आनन्द से भर दिया। स्वयं को इस पवित्र वातावरण में पाकर वह भावविभोर हो गई जिसने उनके हृदय को काव्यमय बना दिया।

**प्रश्न 8** प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है?

**उत्तर-** हिमालय का स्वरूप पल-पल बदलता है। प्रकृति इतनी मोहक है कि लेखिका किसी बुत-सी 'माया' और 'छाया' के खेल को देखती रह जाती है। उसे लगता है कि प्रकृति उसे अपना परिचय दे रही है। वह उसे और सयानी (बुद्धिमान) बनाने के लिए अपने रहस्यों का उद्घाटन कर रही है। प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर उसे अनेक अनुभूतियाँ होती हैं। उसे लगता है जीवन की सार्थकता झरनों और फूलों की भाँति स्वयं को दे देने में अर्थात् परोपकार में ही है। झरनों की भाँति निरंतर चलायमान रहना और फूलों की भाँति अपनी महक लुटाना ही जीवन का सच्चा स्वरूप है।

**प्रश्न 9** प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौन से दृश्य झकझोर गए?

**उत्तर-** लेखिका हिमालय यात्रा के दौरान प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनन्द में डूबी हुई थी परन्तु जीवन के कुछ सत्य जो वह इस आनन्द में भूल चूकी थी, अकस्मात् वहाँ के जनजीवन ने उसे झकझोर दिया। वहाँ कुछ पहाड़ी औरतें जो मार्ग बनाने के लिए पत्थरों पर बैठकर पत्थर तोड़ रही थीं। वे पत्थर तोड़कर सँकरे रास्तों को चौड़ा कर रही थीं। उनके कोमल हाथों में कुदाल व हथौड़े से ठाठे (निशान) पड़ गए थे। कईयों की पीठ पर बच्चे भी बँधे हुए थे। इनको देखकर लेखिका को बहुत दुख हुआ। वह सोचने लगी की यह पहाड़ी औरतें अपने जान की परवाह न करते हुए सैलानियों के भ्रमण तथा मनोरंजन के लिए हिमालय की इन दुर्गम घाटियों में मार्ग बनाने का कार्य कर रही है। सात आठ साल के बच्चों को रोज़ तीन-साढ़े तीन किलोमीटर का सफ़र तय कर स्कूल पढ़ने जाना पढ़ता है। यह देखकर लेखिका मन में सोचने लगी कि यहाँ के अलौकिक सौंदर्य के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिजीविषा के बीच जंग जारी है।

**प्रश्न 10** सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख करें।

**उत्तर-** सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में सबसे बड़ा हाथ एक कुशल गाइड का होता है। जो अपनी जानकारी व अनुभव से सैलानियों को अवगत कराता है। कुशल गाइड इस बात का ध्यान रखता है कि भ्रमणकर्ता की रूचि पूरी यात्रा में बनी रहे ताकि भ्रमणकर्ता के भ्रमण करने का प्रयोजन सफल हो। अपने मित्रों व सहयात्रियों का साथ पाकर यात्रा और भी रोमांचकारी व आनन्दमयी बन जाती है। वहाँ के स्थानीय निवासियों व जन जीवन का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। उनके द्वारा ही इस छटा के सौंदर्य को बल मिलता है क्योंकि यदि ये ना हों तो वह स्थान नीरस व बेजान लगने लगता है तथा सरकारी लोग जो व्यवस्था करने में संलग्न होते हैं उनका भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता हैं।

**प्रश्न 11** ''कितनी कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं।'' इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?

**उत्तर-** लेखिका ने यह कथन उन पहाड़ी श्रमिक महिलाओं के विषय में कहा है, जो पीठ पर बँधी डोको (बड़ी टोकरी) में अपने बच्चों को सँभालते हुए कठोर श्रम करती हैं। ऐसा ही दृश्य वह पलामु और गुमला के जंगलों में भी देख चुकी थी, जहाँ बच्चे को पीठ पर बाँधे पत्तों (तेंदु के) की तलाश में आदिवासी औरतें वन-वन डोलती फिरती हैं। उसे लगता है कि ये श्रम-सुंदरियाँ 'वैस्ट एट रिपेईंग' हैं; अर्थात् ये कितना कम लेकर समाज को कितना अधिक लौटा देती हैं। वास्तव में यह एक सत्य है कि हमारे ग्रामीण समाज में महिलाएँ बहुत कम लेकर समाज को बहुत अधिक लौटाती हैं। वे घर-बार भी सँभालती हैं, बच्चों की देखभाल भी करती हैं और श्रम करके धनोपार्जन भी करती हैं। यह बात हमारे देश की आम जनता पर भी लागू होती है। जो श्रमिक कठोर परिश्रम करके सड़कों, पुलों, रेलवे लाइनों का निर्माण करते हैं या खेतों में कड़ी मेहनत करके अन्न उपजाते हैं; उन्हें बदले में बहुत कम मज़दूरी या लाभ मिलता है। लेकिन उनका श्रम देश की प्रगति में बड़ा सहायक होता है। हमारे देश की आम जनता बहुत कम पाकर भी देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाती है।

**प्रश्न 12** आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है। इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए।

**उत्तर-** आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को प्रदूषित किया जा रहा है। प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने के क्रम में आज की पीढ़ी पहाड़ी स्थलों को अपना विहार स्थान बना रही है। इससे वहाँ गंदगी बढ़ रही है। पर्वत अपनी स्वाभाविक सुंदरता खो रहे है। कारखानों से निकलने वाले जल में खतरनाक कैमिकल व रसायन होते हैं जिसे नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। साथ में घरों से निकला दूषित जल भी नदियों में ही जाता है। जिसके कारण हमारी नदियाँ लगातार दूषित हो रही हैं। वनों की अन्धांधुध कटाई से मृदा का कटाव होने लगा है जो बाढ़ को आमंत्रित कर रहा है। दूसरे अधिक पेड़ों की कटाई ने वातावरण में कार्बनडाइ आक्साइड की अधिकता बढ़ा दी है जिससे वायु प्रदूषित होती जा रही है।

हमें निम्नलिखित भूमिका निभानी चाहिए-

1. हम सबको मिलकर अधिक से अधिक पेड़ों को लगाना चाहिए।
2. हमें नदियों की निर्मलता व स्वच्छता को बनाए रखने के लिए कारखानों से निकलने वाले प्रदूर्षित जल को नदियों में डालने से रोकना चाहिए।
3. नदियों की स्वच्छता बनाए रखने के लिए, लोगों की जागरूकता के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होना चाहिए।
4. पेड़ों को काटने से रोकने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए ताकि वातावरण की शुद्धता बनी रहे।

**प्रश्न 13** प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कमी का जिक्र किया गया है। प्रदूषण के और कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आये हैं, लिखें।

**उत्तर-** आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को प्रदूषित किया जा रहा है। प्रदूषण का मौसम पर असर साफ दिखाई देने लगा है। प्रदूषण के चलते जलवायु पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। कहीं पर बारिश अतिरिक्त हो जाती है तो किसी स्थान पर अप्रत्याशित रूप से सूखा पड़ रहा है। गर्मी के मौसम में गर्मी की अधिकता

देखते बनती है। कई बार तो पारा अपने सारे रिकार्ड को तोड़ चुका होता है। सर्दियों के समय में या तो कम सर्दी पड़ती है या कभी सर्दी का पता ही नहीं चलता। ये सब प्रदूषण के कारण ही हो रहा है। प्रदूषण के कारण वायुमण्डल में कार्बनडाईआक्साइड की अधिकता बढ़ गई है जिसके कारण वायु प्रदूषित होती जा रही है। इससे साँस की अनेक बीमारियाँ उत्पन्न होने लगी है। प्रदूषण के कारण पहाड़ी स्थानों का तापमान भी बढ़ गया है, जिससे स्नोफॉल कम हो गया। ध्वनि प्रदूषण से शांति भंग होती है। ध्वनि-प्रदूषण मानसिक अस्थिरता, बहरेपन तथा अनिंद्रा जैसे रोगों का कारण बन रहा है। जलप्रदूषण के कारण स्वच्छ जल पीने को नहीं मिल पा रहा है और पेट सम्बन्धी अनेक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

**प्रश्न 14** 'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए?

**उत्तर-** कटाओ सिक्किम की एक खूबसूरत किंतु अनजान-सी जगह है, जहाँ प्रकृति अपने पूरे वैभव के साथ दृष्टिगोचर होती है। यहाँ पर लेखिका को बर्फ का आनंद लेने के लिए घुटनों तक के लंबे बूटों की आवश्यकता अनुभव हुई तो उसने देखा कि वहाँ पर झांग की तरह ऐसी चीजें किराए पर मुहैया करवाने वाली दुकानों की कतारें तो क्या, एक दुकान भी न थी।

**प्रश्न 15** प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

**उत्तर-** प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था नायाब ढंग से की है। प्रकृति सर्दियों में बर्फ के रूप में जल संग्रह कर लेती है और गर्मियों में पानी के लिए जब त्राहि-त्राहि मचती है, तो उस समय यही बर्फ शिलाएँ पिघलकर जलधारा बन के नदियों को भर देती है। नदियों के रूप में बहती यह जलधारा अपने किनारे बसे नगर तथा गावों में जल-संसाधन के रूप में तथा नहरों के द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में सिंचाई करती हैं और अंत में सागर में जाकर मिल जाती हैं। सागर से फिर से वाष्प के रूप में जल-चक्र की शुरुआत होती है। सचमुच प्रकृति ने जल संचय की कितनी अद्भुत व्यवस्था की है।

**प्रश्न 16** देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी किस तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं? उनके प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए?

**उत्तर-** साना साना हाथ जोडि' पाठ में देश की सीमा पर तैनात फौजियों की चर्चा की गई है। वस्तुत: सैनिक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ईमानदारी, समर्पण तथा अनुशासन से करते है। सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा के लिए कटिबध्द रहते है। देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी प्रकृति के प्रकोप को सहन करते हैं। हमारे सैनिकों (फौजी) भाईयों को उन बर्फ से भरी ठंड में ठिठुरना पड़ता है। जहाँ पर तापमान शून्य से भी नीचे गिर जाता है। वहाँ नसों में खून को जमा देने वाली ठंड होती है। वह वहाँ सीमा की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं और हम आराम से अपने घरों पर बैठे रहते हैं। ये जवान हर पल कठिनाइयों से जूझते हैं और अपनी जान हथेली पर रखकर जीते हैं। हमें सदा उनकी सलामती की दुआ करनी चाहिए। उनके परिवारवालों के साथ हमेशा सहानुभूति, प्यार व सम्मान के साथ पेश आना चाहिए।

# मैं क्यों लिखता हूँ

**- अज्ञेय**

## सारांश

'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक ने अपने लिखने के कारणों के साथ-साथ एक लेखक के प्रेरणा-स्रोतों पर भी प्रकाश डाला है। लेखक के अनुसार लिखे बिना लिखने के कारणों को नहीं जाना जा सकता। वह अपनी आंतरिक व्याकुलता से मुक्ति पाने तथा तटस्थ होकर उसे देखने और पहचानने के लिए लिखता है।

प्रायः प्रत्येक रचनाकार की आत्मानुभूति ही उसे लेखन कार्य के लिए प्रेरित करती है, किंतु कुछ बाहरी दबाव भी होते हैं। ये बाहरी दबाव भी कई बार रचनाकार को लिखने के लिए बाध्य करते हैं। इन बाहरी दबावों में संपादकों का आग्रह, प्रकाशक का तकाजा तथा आर्थिक आवश्यकता आदि प्रमुख हैं। लेखक का मत है कि वह बाहरी दबावों से कम प्रभावित होता है। उसे तो उसकी भीतरी विवशता ही लिखने की ओर प्रेरित करती है। उसका मानना है कि प्रत्यक्ष अनुभव से अनुभूति गहरी चीज है।

एक रचनाकार को अनुभव सामने घटित घटना को देखकर होता है, किंतु अनुभूति संवेदना और कल्पना के द्वारा उस सत्य को भी ग्रहण कर लेती है जो रचनाकार के सामने घटित नहीं हुआ। फिर वह सत्य आत्मा के सामने ज्वलंत प्रकाश में आ जाता है और रचनाकार उसका वर्णन करता है।

लेखक बताता है कि उसके द्वारा लिखी 'हिरोशिमा' नामक कविता भी ऐसी ही है। एक बार जब वह जापान गया, तो वहाँ हिरोशिमा में उसने देखा कि एक पत्थर बुरी तरह झुलसा हुआ है और उस पर एक व्यक्ति की लंबी उजली छाया है। विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण उसे रेडियोधर्मी प्रभावों की जानकारी थी। उसे देखकर उसने अनुमान लगाया कि जब हिरोशिमा पर अणु-बम गिराया गया होगा, तो उस समय वह व्यक्ति इस पत्थर के पास खड़ा होगा। अणु-बम के प्रभाव से वह भाप बनकर उड़ गया, किंतु उसकी छाया उस पत्थर पर ही रह गई।

लेखक को उस झुलसे हुए पत्थर ने झकझोर कर रख दिया। वह हिरोशिमा पर गिराए गए अणु-बम की भयानकता की कल्पना करके बहुत दुखी हुआ। उस समय उसे ऐसे लगा, मानो वह उस दु:खद घटना के समय वहाँ मौजूद रहा हो। इस त्रासदी से उसके भीतर जो व्याकुलता पैदा हुई, उसी का परिणाम उसके द्वारा हिरोशिमा पर लिखी कविता थी। लेखक कहता है कि यह कविता 'हिरोशिमा' जैसी भी हो, वह उसकी अनुभूति से पैदा हुई थी। यही उसके लिए महत्वपूर्ण था।

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?

**उत्तर-** लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव वह होता है। तो हम सामने घटित होते हुए देखते हैं परन्तु अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेती है, यह वास्तव में कृतिकार के साथ घटित नहीं होती है। अनुभव की तुलना में अनुभूति उसके हृदय के सारे भावों को बाहर निकालने में उसकी मदद करती है। जब तक हृदय में अनुभूति न जागे लेखन करना संभव नहीं है क्योंकि यही हृदय में संवेदना जाग्रत करती है और लेखन के लिए मजबूर करती है। लेखक अपनी आंतरिक विवशता के कारण लिखने के लिए प्रेरित होता है। उसकी अनुभूति उसे लिखने के लिए प्रेरित करती है व स्वयं भी वह लिखने के लिए प्रेरित होता है। इसलिए लेखक, लेखन के लिए अनुभूति को अधिक महत्व देता है।

**प्रश्न 2** लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

**उत्तर-** लेखक हिरोशिमा की घटनाओं के बारे में सुनकर तथा उनके कुप्रभावों को प्रत्यक्ष देखकर भी विस्फोट का भोक्ता नहीं बन पाया। एक दिन वह जापान के हिरोशिमा नगर की एक सड़क पर घूम रहा था। अचानक उसकी नज़र एक पत्थर पर पड़ी। उस पत्थर पर एक मानव की छाया छपी हुई थी। वास्तव में परमाणु-विस्फोट के समय कोई मनुष्य उस पत्थर के पास खड़ा होगा। रेडियम-धर्मी किरणों ने उस आदमी को भाप की तरह उड़ाकर उसकी छाया पत्थर पर डाल दी थी। उसे देखकर लेखक के मन में अनुभूति जग गई। उसके मन में विस्फोट का प्रत्यक्ष दृश्य साकार हो उठा। उस समय वह विस्फोट का भोक्ता बन गया।

**प्रश्न 3** मैं क्यों लिखता हूँ? के आधार पर बताइए कि-

a. लेखक को कौन-सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं?

b. किसी रचनाकार के प्रेरणा स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?

**उत्तर-**

a. लेखक अपनी आंतरिक विवशता के कारण लिखने के लिए प्रेरित होता है। उसकी अनुभूति उसे लिखने के लिए प्रेरित करती है व स्वयं को जानने के लिए भी वह लिखने के लिए प्रेरित होता है।

b. किसी रचनाकार को उसकी आंतरिक विवशता रचना करने के लिए प्रेरित करती है। परन्तु कई बार उसे संपादकों के दवाब व आग्रह के कारण रचना लिखने के लिए उत्साहित होना पड़ता है। कई बार प्रकाशक का तकाज़ा व उसकी आर्थिक विवशता भी उसे रचना, रचने के लिए उत्साहित करती है।

**प्रश्न 4** कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/ स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दबाव कौन-कौनसे हो सकते हैं?

**उत्तर-** कोई आत्मानुभूति/ स्वयं के अनुभव, उसे हमेशा लिखने के लिए प्रेरित करते हैं परन्तु इनके साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्वपूर्ण होते हैं। जो लेखक को लिखने के लिए प्रेरित करते हैं। ये इस प्रकार हैं:-

1. आर्थिक लाभ की आकांक्षा।
2. सामाजिक परिस्थितियाँ।
3. संपादकों का आग्रह।
4. विशिष्ट के पक्ष में प्रस्तुत करने का दबाव।

**प्रश्न 5** क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे?

**उत्तर-** बाहरी दबाव सभी प्रकार के कलाकारों को प्रेरित करते हैं। उदाहरणतया अधिकतर अभिनेता, गायक, नर्तक, कलाकार अपने दर्शकों, आयोजकों, श्रोताओं की माँग पर कला-प्रदर्शन करते हैं। अमिताभ बच्चन को बड़े-बड़े निर्माता-निर्देशक अभिनय करने का आग्रह न करें तो शायद अब वे आराम करना चाहें। इसी प्रकार लता मंगेशकर भी 50 साल से गाते-गाते थक चुकी होंगी, अब फिल्म-निर्माता, संगीतकार और प्रशंसक ही उन्हें गाने के लिए बाध्य करते होंगे।

**प्रश्न 6** हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंत: व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है यह आप कैसे कह सकते हैं?

**उत्तर-** लेखक जापान घूमने गया था तो हिरोशिमा में उस विस्फोट से पीड़ित लोगों को देखकर उसे थोड़ी पीड़ा हुई परन्तु उसका मन लिखने के लिए उसे प्रेरित नहीं कर पा रहा था। हिरोशिमा के पीड़ितों को देखकर लेखक को पहले ही अनुभव हो चुका था परन्तु जले पत्थर पर किसी व्यक्ति की उजली छाया को देखकर उसको हिरोशिमा में विस्फोट से प्रभावित लोगों के दर्द की अनुभूति कराई, लेखक को लिखने के लिए प्रेरित किया। इस तरह हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंत: व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है।

**प्रश्न 7** हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है?

**उत्तर-** हिरोशिमा तो विज्ञान के दुरुपयोग का ज्वलंत उदाहरण है ही पर हम मनुष्यों द्वारा विज्ञान का और भी दुरुपयोग किया जा रहा है। जैसे-

1. विज्ञान ने यात्रा को सुगम बनाने के लिए हवाई जहाज़, गाड़ियों आदि का निर्माण किया परन्तु हमने इनसे अपने ही वातावरण को प्रदूषित कर दिया है।
2. इस विज्ञान की देन के द्वारा आज हम अंगप्रत्यारोपण कर सकते हैं। परन्तु आज इस देन का दुरुपयोग कर हम मानव अंगों का व्यापार करने लगे हैं।
3. विज्ञान के दुरुपयोग से भ्रूण हत्याएँ बढ़ रही है।
4. विविध कीटनाशकों का प्रयोग आत्महत्या के लिए होता है।
5. विज्ञान ने कंप्यूटर का आविष्कार किया उसके पश्चात् उसने इंटरनेट का आविष्कार किया ये उसने मानव के कार्यों के बोझ को कम करने

के लिए किया। हम मनुष्यों ने इन दोनों का दुरुपयोग कर वायरस व साइबर क्राइम को जन्म दिया है।

6. आज हर देश परमाणु अस्त्रों को बनाने में लगा हुआ है जो आने वाले भविष्य के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

**प्रश्न 8** एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?

**उत्तर-** मैं संवेदनशील युवा नागरिक हूँ। मैं सारी दुनिया को नहीं बदल सकता। परंतु स्वयं को बदल सकता हूँ। मैं विज्ञान के जिस भी यंत्र की बुराइयों के बारे में जानता हूँ, उनसे दूर रहने का प्रयत्न करता हूँ। मैं प्लास्टिक थैलों तथा वस्तुओं का कम-से-कम प्रयोग करता हूँ। बाजार में उपलब्ध कोक या सॉफ्ट ड्रिंक नहीं पीता। पीज़ा-बर्गर आदि भी नहीं खाता। मैंने संकल्प किया है कि कभी लिंग-भेद का विचार मन में नहीं आने दूंगा। मैं भूलकर भी भ्रूण-हत्या जैसा दुष्कर्म नहीं करूंगा।

STEP UP ACADEMY

# क्षितिज भाग 2
# काव्य खण्ड

# क्षितिज भाग – 2 काव्य खंड

## सूरदास

### कवि परिचय

सूरदास का जन्म सन् 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार उनका जन्म मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ जबकि दूसरी मान्यता के अनुसार उनका जन्म-स्थान दिल्ली के पास सीही माना जाता है। महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास अष्टछाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। वे मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट पर रहते थे और श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे। सन् 1583 में पारसौली में उनका निधन हुआ।

उनके तीन ग्रंथों सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली में सूरसागर ही सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ । खेती और पशुपालन वाले भारतीय समाज का दैनिक अंतरंग चित्र और मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों का चित्रण सूर की कविता में मिलता है। सूर 'वात्सल्य' और 'श्रृंगार' के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं।

कृष्ण और गोपियों का प्रेम सहज मानवीय प्रेम की प्रतिष्ठा करता है। सूर ने मानव प्रेम की गौरवगाथा के माध्यम से सामान्य मनुष्यों को हीनता बोध से मुक्त किया, उनमें जीने की ललक पैदा की।

उनकी कविता में ब्रजभाषा का निखरा हुआ रूप है। वह चली आ रही लोकगीतों की परंपरा की ही श्रेष्ठ कड़ी है।

**पद-**

**ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी |**
**अपरस रहत सनेह तगा तैं नाहिन मन अनुरागी |**
**पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी |**
**ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी |**
**प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी |**
**'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी ||**

**भावार्थ-**

इन पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव से व्यंग्य करती हैं, कहती हैं कि तुम बहुत ही भाग्यशाली हो जो कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम और स्नेह से वंचित हो। तुम कमल के उस पत्ते के समान हो जो रहता तो जल में है परन्तु जल में डूबने से बचा रहता है। जिस प्रकार तेल की गगरी को जल में भिगोने पर भी उस पर पानी की एक भी बूंद नहीं ठहर पाती, ठीक उसी प्रकार तुम श्री कृष्ण रूपी प्रेम की नदी के साथ रहते हुए भी उसमें स्नान करने की बात तो दूर तुम पर तो श्रीकृष्ण प्रेम की एक छींट भी नहीं पड़ी।

तुमने कभी प्रीति रूपी नदी में पैर नही डुबोए। तुम बहुत विद्ववान हो इसलिए कृष्ण के प्रेम में नहीं रंगे परन्तु हम भोली-भाली गोपिकाएँ हैं इसलिए हम उनके प्रति ठीक उस तरह आकर्षित हैं जैसे चीटियाँ गुड़ के प्रति आकर्षित होती हैं। हम उनके प्रेम में लीन हैं।

**पद-**

**मन की मन ही माँझ रही |**
**कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही |**
**अवधि अधार आस आवन की तन मन बिथा सही |**
**अब इन जोग सँदेसनि सुनिसुनि बिरहिनि बिरह दही |**
**चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही |**
**'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही ||**

**भावार्थ-**

इन पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि उनकी मन की बात मन में ही रह गयी। वे कृष्ण से बहुत कुछ कहना चाहती थी परन्तु अब वे नहीं कह पाएंगी। वे उद्धव को अपने सन्देश देने का उचित पात्र नहीं समझती हैं और कहती हैं कि उन्हें बातें सिर्फ कृष्ण से कहनी हैं, किसी और को कहकर संदेश नहीं भेज सकती।

वे कहती हैं कि इतने समय से कृष्ण के लौट कर आने की आशा को हम आधार मान कर तन-मन, हर प्रकार से विरह की ये व्यथा सह रहीं थीं, ये सोचकर कि वे आएँगे तो हमारे सारे दुख दूर हो जाएँगे।

परन्तु श्री कृष्ण ने हमारे लिए ज्ञान-योग का संदेश भेजकर हमें और भी दुखी कर दिया। हम विरह की आग में और भी जलने लगी हैं। ऐसे समय में कोई अपने रक्षक को पुकारता है परन्तु हमारे जो रक्षक हैं वहीं आज हमारे दुःख का कारण हैं।

हे उद्धव, अब हम धीरज क्यूँ धरें, कैसे धरें, जब हमारी आशा का एकमात्र तिनका भी डूब गया। प्रेम की मर्यादा है कि प्रेम के बदले प्रेम ही दिया जाए पर श्री कृष्ण ने हमारे साथ छल किया है उन्होंने मर्यादा का उल्लंघन किया है।

**पद-**

**हमारैं हरि हारिल की लकरी |**
**मन क्रम बचन नंद नंदन उर, यह दृढ़ कर पकरी |**
**जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री |**
**सुनत जोग लागत है ऐसौ ज्यौं करुई ककरी |**
**सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी |**
**यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी ||**

**भावार्थ-**

इन पंक्तियों में गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण उनके लिए हारिल की लकड़ी हैं। जिस तरह हारिल पक्षी लकड़ी के टुकड़े को अपने जीवन का सहारा मानता है उसी प्रकार श्री कृष्ण भी गोपियों के जीने का आधार हैं। उन्होंने मन, कर्म और वचन से नन्द बाबा के पुत्र कृष्ण को अपना माना है। गोपियाँ कहती हैं कि जागते हुए, सोते हुए दिन में, रात में, स्वप्न में हमारा रोम-रोम कृष्ण नाम जपता रहा है।

उन्हें उद्धव का सन्देश कड़वी ककड़ी के समान लगता है। हमें कृष्ण के प्रेम का रोग लग चुका है अब हम आपके कहने पर योग का

रोग नहीं लगा सकतीं क्योंकि हमने तो इसके बारे में न कभी सुना, न देखा और न कभी इसको भोगा ही है। आप जो यह योग सन्देश लाए हैं वो उन्हें जाकर सौंपे जिनका मन चंचल हो चूँकि हमारा मन पहले ही कहीं और लग चुका है।

**पद-**

**हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।**
**समुझी बात कहत मधुकर के समाचार सब पाए |**
**इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए |**
**बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए |**
**ऊधौ भले लोग आगे के पर हित डोलत धाए |**
**अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए |**
**ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए |**
**राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए ||**

**भावार्थ-**

गोपियाँ कहतीं हैं कि श्री कृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है। गोपियाँ बात करती हुई व्यंग्यपूर्वक कहती हैं कि वे तो पहले से ही बहुत चालाक थे पर अब उन्होंने बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिए हैं जिससे उनकी बुद्धि बढ़ गई है तभी तो हमारे बारे में सब कुछ जानते हुए भी उन्होंने हमारे पास उद्धव से योग का सन्देश भेजा है। उद्धव जी का इसमे कोई दोष नहीं है, ये भले लोग हैं जो दूसरों के कल्याण करने में आनन्द का अनुभव करते हैं।

गोपियाँ उद्धव से कहतीं हैं की आप जाकर कहिएगा कि यहाँ से मथुरा जाते वक्त श्रीकृष्ण हमारा मन भी अपने साथ ले गए थे, उसे वे वापस कर दें। वे अत्याचारियों को दंड देने का काम करने मथुरा गए हैं परन्तु वे स्वयं अत्याचार करते हैं। आप उनसे कहिएगा कि एक राजा को हमेशा चाहिए की वो प्रजा की हित का ख्याल रखें। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचने दे, यही राजधर्म है।

गोपियाँ उद्धव से कहतीं हैं की आप जाकर कहिएगा कि यहाँ से मथुरा जाते वक्त श्रीकृष्ण हमारा मन भी अपने साथ ले गए थे, उसे वे वापस कर दें। वे अत्याचारियों को दंड देने का काम करने मथुरा गए हैं परन्तु वे स्वयं अत्याचार करते हैं। आप उनसे कहिएगा कि एक राजा को हमेशा चाहिए की वो प्रजा की हित का ख्याल रखें। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचने दे, यही राजधर्म है।

## प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न-** गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है ?

**उत्तर-** गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग्य निहित है कि उद्धव वास्तव में भाग्यवान न होकर अति भाग्यहीन हैं।

वे कृष्णरूपी सौन्दर्य तथा प्रेम-रस के सागर के सानिध्य में रहते हुए भी उस असीम आनंद से वंचित हैं। वे प्रेम बंधन में बंधने एवं मन के प्रेम में अनुरक्त होने की सुखद अनुभूति से पूर्णतया अपरिचित हैं।

**प्रश्न-** उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है ?

**उत्तर-** गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित उदाहरणों से की है-

- गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते से की है जो नदी के जल में रहते हुए भी जल

की ऊपरी सतह पर ही रहता है। अर्थात् जल का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। श्री कृष्ण का सानिध्य पाकर भी वह श्री कृष्ण के प्रभाव से मुक्त हैं।

- वह जल के मध्य रखे तेल के गागर (मटके) की भाँति हैं, जिस पर जल की एक बूँद भी टिक नहीं पाती। उद्धव पर श्री कृष्ण का प्रेम अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाया है, जो ज्ञानियों की तरह व्यवहार कर रहे हैं।

**प्रश्न-** गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं ?

**उत्तर-** गोपियों ने कमल के पत्ते, तेल की मटकी और प्रेम की नदी के उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं। उनका कहना है की वे कृष्ण के साथ रहते हुए भी प्रेमरूपी नदी में उतरे ही नहीं, अर्थात साक्षात् प्रेमस्वरूप श्रीकृष्ण के पास रहकर भी वे उनके प्रेम से वंचित हैं।

**प्रश्न-** उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया ?

**उत्तर-** गोपियाँ कृष्ण के आगमन की आशा में दिन गिनती जा रही थीं। वे अपने तन-मन की व्यथा को चुपचाप सहती हुई कृष्ण के प्रेम रस में डूबी हुई थीं। कृष्ण को आना था परन्तु उन्होंने योग का संदेश देने के लिए उद्धव को भेज दिया। विरह की अग्नि में जलती हुई गोपियों को जब उद्धव ने कृष्ण को भूल जाने और योग-साधना करने का उपदेश देना प्रारम्भ किया, तब गोपियों की विरह वेदना और भी बढ़ गयी। इस प्रकार उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम किया।

**प्रश्न-** 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है ?

**उत्तर-** 'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा न रहने की बात की जा रही है।

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ उनके वियोग में जल रही थीं। कृष्ण के आने पर ही उनकी विरह-वेदना मिट सकती थी, परन्तु कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव को यह संदेश देकर भेज दिया की गोपियाँ कृष्ण का प्रेम भूलकर योग-साधना में लग जाएं। प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान ही प्रेम की मर्यादा है, लेकिन कृष्ण ने गोपियों की प्रेम रस के उत्तर में योग की शुष्क धारा भेज दी। इस प्रकार कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी। वापस लौटने का वचन देकर भी वे गोपियों से मिलने नहीं आए।

**प्रश्न-** कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है ?

**उत्तर-** गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को हारिल पक्षी के उदाहरण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। वे अपनों को हारिल पक्षी व श्रीकृष्ण को लकड़ी की भाँति बताया है। जिस प्रकार हारिल पक्षी सदैव अपने पंजे में कोई लकड़ी अथवा तिनका पकड़े रहता है, उसे किसी भी दशा में नहीं छोड़ता। उसी प्रकार गोपियों ने भी मन, कर्म और वचन से कृष्ण को अपने ह्रदय में दृढ़तापूर्वक बसा लिया है। वे जागते, सोते स्वप्नावस्था में दिन-रात कृष्ण-कृष्ण की ही रट लगाती रहती हैं। साथ ही गोपियों ने अपनी तुलना उन चीटियों के साथ की है जो गुड़ (श्रीकृष्ण भक्ति) पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती है और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं प्राण त्याग देती है।

**प्रश्न-** गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है ?

**उत्तर-** गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है

जिनका मन चंचल है और इधर-उधर भटकता है। उद्धव अपने योग के संदेश में मन की एकाग्रता का उपदेश देते हैं, परन्तु गोपियों का मन तो कृष्ण के अनन्य प्रेम में पहले से ही एकाग्र है। इस प्रकार योग-साधना का उपदेश उनके लिए निरर्थक है। योग की आवश्यकता तो उन्हें है जिनका मन स्थिर नहीं हो पाता, इसीलिये गोपियाँ चंचल मन वाले लोगों को योग का उपदेश देने की बात कहती हैं।

**प्रश्न-** प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

**उत्तर-** प्रस्तुत पदों में योग साधना के ज्ञान को निरर्थक बताया गया है। यह ज्ञान गोपियों के अनुसार अव्यवहारिक और

अनुपयुक्त है। उनके अनुसार यह ज्ञान उनके लिए कड़वी ककड़ी के समान है जिसे निगलना बड़ा ही मुश्किल है। सूरदास जी गोपियों के माध्यम से आगे कहते हैं कि ये एक बीमारी है। वो भी ऐसा रोग जिसके बारे में तो उन्होंने पहले कभी न सुना है और न देखा है। इसलिए उन्हें इस ज्ञान की आवश्यकता नहीं है।

उन्हें योग का आश्रय तभी लेना पड़ेगा जब उनका चित्त एकाग्र नहीं होगा। परन्तु कृष्णमय होकर यह योग शिक्षा तो उनके लिए अनुपयोगी है। उनके अनुसार कृष्ण के प्रति एकाग्र भाव से भक्ति करने वाले को योग की ज़रूरत नहीं होती।

**प्रश्न-** गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए ?

**उत्तर-** गोपियों के अनुसार राजा का धर्म उनकी प्रजा की हर तरह से रक्षा करना तथा नीति से राजधर्म का पालन करना होता है। एक राजा तभी अच्छा कहलाता है जब वह अनीति का साथ न देकर नीति का साथ दें।

**प्रश्न-** गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं ?

**उत्तर-** गोपियों को लगता है कि कृष्ण ने अब राजनीति सीख ली है। उनकी बुद्धि पहले से भी अधिक चतुर हो गयी है। पहले वे प्रेम का बदला प्रेम से चुकाते थे, परंतु अब प्रेम की मर्यादा भूलकर योग का संदेश देने लगे हैं। कृष्ण पहले दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित रहते थे, परंतु अब अपना भला ही देख रहे हैं।

उन्होंने पहले दूसरों के अन्याय से लोगों को मुक्ति दिलाई है, परंतु अब नहीं। श्रीकृष्ण गोपियों से मिलने के बजाय योग की शिक्षा देने के लिए उद्धव को भेज दिया है। श्रीकृष्ण के इस कदम से गोपियों के मन और भी आहत हुआ है। कृष्ण में आए इन्हीं परिवर्तनों को देखकर गोपियाँ अपने को श्रीकृष्ण के अनुराग से वापस लेना चाहती हैं।

**प्रश्न-** गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए?

**उत्तर-** गोपियों के वाक्चातुर्य की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. तानों द्वारा (उपालंभ द्वारा)- गोपियाँ उद्धव को अपने तानों के द्वारा चुप करा देती हैं। उद्धव के पास उनका कोई जवाब नहीं होता। वे कृष्ण तक को उपालंभ दे डालती हैं।

   **उदाहरण के लिए-**

   **इक अति चतुर हुते पहिलैं ही,**
   **अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।**
   **बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी,**
   **जोग-सँदेस पठाए।**

2. तर्क क्षमता- गोपियों ने अपनी बात तर्क पूर्ण ढंग से कही है।

   वह स्थान-स्थान पर तर्क देकर उद्धव को निरुत्तर कर देती हैं।

   **उदाहरण के लिए-**

   **सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।**
   **सु तो ब्याधि हमकौं ले आए, देखी सुनी न करी।**
   **यह तो 'सूर' तिनहि ले सौंपौ, जिनके मन चकरी।।**

3. व्यंग्यात्मकता- गोपियों में व्यंग्य करने की अद्भुत क्षमता है। वह अपने व्यंग्य बाणों द्वारा उद्धव को घायल कर देती हैं। उनके द्वारा उद्धव को भाग्यवान बताना उसका उपहास उड़ाना था।

4. तीखे प्रहारों द्वारा- गोपियों ने तीखे प्रहारों द्वारा उद्धव को प्रताड़ना दी है।

**प्रश्न-** संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए ?

**उत्तर-** सूरदास मधुर तथा कोमल भावनाओं का मार्मिक चित्रण करने वाले महाकवि हैं। सूर के 'भ्रमरगीत' में अनुभूति और शिल्प दोनों का ही मणि-कांचन संयोग हुआ है। इसकी मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

भाव-पक्ष- 'भ्रमरगीत' एक भाव प्रधान गीतिकाव्य है। इसमें उदात्त भावनाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। भ्रमरगीत में गोपियों ने भौरें को माध्यम बनाकर ज्ञान पर भक्ति की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया है। अपनी वचन

वक्रता, सरलता, मार्मिकता, उपालंभ, व्यंगात्मक कथा, तर्कशक्ति आदि के द्वारा उन्होंने उद्धव के ज्ञान योग को तुच्छ सिद्ध कर दिया है। 'भ्रमरगीत' में सूरदास ने विरह के समस्त भावों की स्वाभाविक एवं मार्मिक व्यंजना की हैं।

कला-पक्ष 'भ्रमरगीत' की कला पक्ष अत्यंत सशक्त, प्रभावशाली और रमणीय है।

भाषा-शैली 'भ्रमरगीत' में शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

अलंकार सूरदास ने 'भ्रमरगीत' में अनुप्रास, उपमा, दृष्टांत, रूपक, व्यतिरेक, विभावना, अतिशयोक्ति आदि अनेक अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

छंद-विधान 'भ्रमरगीत' की रचना 'पद' छंद में हुई है। इसके पद स्वयं में स्वतंत्र भी हैं और परस्पर सम्बंधित भी हैं।

संगीतात्मकथा सूरदास कवि होने के साथ-साथ सुप्रसिद्ध गायक भी थे।

यही कारण है कि "भ्रमरगीत" में भी संगीतात्मकथा का गुण सहज ही दृष्टिगत होता है।

## रचना और अभिव्यक्ति-

**प्रश्न-** उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी ?

**उत्तर-** गोपियों के पास श्री कृष्ण के प्रति सच्चे प्रेम तथा भक्ति की शक्ति थी जिस कारण उन्होंने उद्धव जैसे ज्ञानी तथा नीतिज्ञ को भी अपने वाक्चातुर्य से परास्त कर दिया।

**प्रश्न-** गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं ? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है, स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** गोपियों ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि श्री कृष्ण ने सीधी सरल बातें ना करके रहस्यात्मक ढंग से उद्धव के माध्यम से अपनी बात गोपियों तक पहुंचाई है। गोपियों का कथन कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं आजकल की राजनीति में नजर आ रहा है कि आज के नेता भी अपनी बातों को घुमा फिरा कर कहते हैं जिस तरह कृष्ण ने उद्धव द्वारा कहना चाहा।

वे सीधे-सीधे मुद्दे और काम को स्पष्ट नहीं करते बल्कि इतना घुमा देते हैं कि जनता समझ नहीं पाती। दूसरी तरफ यहाँ गोपियों ने राजनीति शब्द को व्यंग्य के रूप में कहा है। आज के समय में भी राजनीति शब्द का अर्थ व्यंग्य के रूप में लिया जाता है।

## शब्द संपदा-

| | |
|---|---|
| बड़भागी | भाग्यवान |
| अपरस | अलिप्त, नीरस, अछूता |
| तगा | धागा, बंधन |
| पुरइनि | पात कमल का पत्ता |
| दागी | दाग, धब्बा |
| माहँ | में |
| प्रीति-नदी | प्रेम की नदी |
| पाउँ | पैर |
| बोरयौ | डुबोया |
| परागी | मुग्ध होना |
| गुर चाँटी ज्यौं पागी | जिस प्रकार चींटी गुड़ में लिपटती है, उसी प्रकार हम भी कृष्ण के प्रेम में अनुरक्त हैं |
| अधार | आधार |
| आवन | आगमन |
| बिथा | व्यथा |
| बिरहिनि | वियोग में जीने वाली |
| बिरह दही | विरह की आग में जल रही हैं |
| हुतीं | थीं |
| गुहारि | रक्षा के लिए पुकारना |

# तुलसीदास

## कवि परिचय

तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा ज़िले के राजापुर गाँव में सन् 1532 में हुआ था। कुछ विद्वान उनका जन्मस्थान सोरों (जिला-एटा) भी मानते हैं। तुलसी का बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही माता-पिता से उनका बिछोह हो गया। कहा जाता है कि गुरुकृपा से उन्हें रामभक्ति का मार्ग मिला। वे मानव मूल्यों के उपासक कवि थे। रामभक्ति परंपरा में तुलसी अतुलनीय हैं। रामचरितमानस कवि की अनन्य रामभक्ति और उनके सृजनात्मक कौशल का मनोरम उदाहरण है।

उनके राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्शों के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से तुलसी ने नीति, स्नेह, शील, विनय, त्याग जैसे उदात्त आदर्शों को प्रतिष्ठित किया। रामचरितमानस उत्तरी भारत की जनता के बीच बहुत लोकप्रिय है। मानस के अलावा कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। सन् 1623 में काशी में उनका देहावसान हुआ।

तुलसी ने रामचरितमानस की रचना अवधी में और विनयपत्रिका तथा कवितावली की रचना ब्रजभाषा में की। उस समय प्रचलित सभी काव्य रूपों को तुलसी की रचनाओं में देखा जा सकता है।

रामचरितमानस का मुख्य छंद चौपाई है तथा बीच-बीच में दोहे, सोरठे, हरिगीतिका तथा अन्य छंद पिरोए गए हैं। विनयपत्रिका की रचना गेय पदों में हुई है। कवितावली में सवैया और कवित्त छंद की छटा देखी जा सकती है। उनकी रचनाओं में प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप है। यह अंश रामचरितमानस के बाल कांड से लिया गया है। सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव-धनुष भंग के बाद मुनि परशुराम को जब यह समाचार मिला तो वे क्रोधित होकर वहाँ आते हैं।

शिव-धनुष को खंडित देखकर वे आपे से बाहर हो जाते हैं। राम के विनय और विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंततः उनका गुस्सा शांत होता है। इस बीच राम, लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ उस प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। परशुराम के क्रोध भरे वाक्यों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य वचनों से देते हैं। इस प्रसंग की विशेषता है लक्ष्मण की वीर रस से पगी व्यंग्योक्तियाँ और व्यंजना शैली की सरस अभिव्यक्ति।

## राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद-

**नाथ संभुधनु भंजनिहार | होइहि केउ एक दास तुम्हारा||**
**आयेसु काह कहिअ किन मोही | सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ||**
**सेवकु सो जो करै सेवकाई | अरिकरनी करि करिअ लराई ||**
**सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा | सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ||**
**सो बिलगाउ बिहाइ समाजा | न त मारे जैहहिं सब राजा ||**
**सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने | बोले परसुधरहि अवमाने ||**

**बहु धनुही तोरी लरिकाई | कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं ||**
**येहि धनु पर ममता केहि हेतू | सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू ||**

**रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।**
**धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार॥**

## अर्थ-

जनक-सभा में सीता स्वयंवर के समय धनुष के टूटने पर क्रोधित परशुराम से राम कहते हैं कि शिव-धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका दास ही होगा। मेरे लिए क्या आज्ञा है? यह सुन क्रोधी ऋषि गुस्सा करके बोले - "सेवा का कार्य करने वाला सेवक होता है। शत्रुता का काम करने वाला सेवक कैसा ? उससे तो लड़ाई ही उचित है। हे राम! जिसने भी यह शिव धनुष तोड़ा है, सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है, इसलिए वह इस राज समाज से अलग हो जाए, नहीं तो (एक के धोखे में) सभी राजा भ जाएँगे।"

ऋषि की क्रोधभरी बातें सुनकर परशु धारण करने वाले परशुराम का अपमान करते हुए लक्ष्मण मुस्कराकर बोले- हमने बचपन में बहुत धनुहियाँ तोड़ीं, तब तो आपने कभी ऐसा गुस्सा नहीं किया। इस धनुष पर इतना स्नेह किस कारण है? यह सुनकर भृगुकुल की पताका-रूप ऋषि ने कहा- "हे राजकुमार ! तू काल के वशीभूत होकर बिना विचारे बोल रहा है। जिस शिव-धनुष श्री संपूर्ण विश्व जानता है, उसे तू सामान्य धनुष बता रहा है।

## शब्दार्थ-

| | |
|---|---|
| नाथ | स्वामी। |
| संभुधनु | शिव का धनुष। |
| भंजनिहारा | तोड़ने वाला। |
| आयेसु | आज्ञा। |
| मोही | मुझे। |
| रिसाइ | क्रोध करना। |
| कोही | क्रोधी। |
| सेवकाई | सेवा। |
| अरिकरनी | शत्रु-कर्म। |
| करि | करके। |
| जेहि | जिसने। |
| तोरा | तोड़ा। |
| सम | समान। |
| रिपु | शत्रु। |
| मोरा | मेरा। |
| बिलगाउ | अलग। |
| बिहाइ | छोड़कर। |
| जैहहिं | जाएँगे। |
| अवमाने | अपमान करते हुए। |
| लरिकाई | बचपन। |
| असि | ऐसी। |
| रिस | गुस्सा । |
| गोसाईं | स्वामी। |
| येहि | इस। |
| ममता | स्नेह। |
| केहि | किस। |
| हेतू | कारण। |
| भृगुकुलकेतू | भृगुवंश की पताका रूप परशुराम। |
| नृपबालक | राज-पुत्र। |
| कालबस | मृत्यु के वश होकर। |
| सँभार | सँभलकर। |
| त्रिपुरारिधनु | शिवधनुष। |
| विदित | ज्ञात है। |
| सकल | संपूर्ण। |

**लखन कहा हसि हमरे जाना | सुनहु देव सब धनुष समाना ||**
**का छति लाभु जून धनु तोरें | देखा राम नयन के भोरें ||**
**छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू | मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ||**
**बोले चितै परसु की ओरा | रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ||**
**बालकु बोलि बधौं नहि तोही | केवल मुनि जड़ जानहि मोही ||**
**बाल ब्रह्मचारी अति कोही | बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही ||**
**भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही | बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ||**
**सहसबाहुभुज छेदनिहारा | परसु बिलोकु महीपकुमारा ||**
**मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर | गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ||**

**अर्थ-**

लक्ष्मण ने परशुराम को संबोधित करते हुए हँसकर कहा- "हे देव! हमारे ज्ञान में तो सभी धनुष समान ही हैं। फिर इस सड़े-गले धनुष के टूट जाने से क्या हानि है? और क्या लाभ है? श्री राम ने तो इसे नया समझ देखा था, छुआ था किंतु छूते में यह धनुष टूट गया। इसमें श्रीराम का कोई दोष नहीं है। मुनिवर ! आप तो बिना कारण ही गुस्सा कर रहे हैं।" तब परशुराम अपने अरसे की ओर देखते हुए बोले- "रे दुष्ट लक्ष्मण ! तूने मेरे स्वभाव के बारे में नहीं सुना है। मैं तुझे बालक समझकर तेरा वध नहीं कर रहा हूँ।

अरे मूर्ख ! तू मुझे केवल साधारण मुनि समझ रहा है। (इस कारण तू बढ़-चढ़कर बातें कर रहा है) में क्षत्रियकुल से दोह करने वाला, विश्व-प्रसिद्ध, अत्यंत क्रोधी, बाल- ब्रह्मचारी हूँ। मैंने अपनी भुजाओं के बल पर क्षत्रिय राजाओं का मान-मर्दन कर पृथ्वी अनेक बार ब्राह्मणों को दान कर दी है। हे राजकुमार ! सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले मेरे इस फरसे की ओर देखा।" "हे राजकुमार! तू अपने माता-पिता के लिए मरकर सोच का कारण मत बन । मेरा यह अत्यंत भयानक फरसा गर्भ के बच्चों को भी नष्ट करने में समर्थ है।"

**शब्दार्थ-**

| | |
|---|---|
| हसि | हँसकर। |
| छति | हानि। |
| जून | जीर्ण, पुराना। |
| तोरें | तोड़ने से। |
| छुअत | छूते ही। |
| दोसू | दोष। |
| बिनु | बिना। |
| काज | कार्य। |
| करिअ | कर रहे हो। |
| कत | क्यों। |
| रोसू | गुस्सा। |
| चितै | देखकर। |
| ओरा | ओर, तरफ। |
| सठ | दुष्ट। |
| सुभाउ | स्वभाव। |
| मोरा | मेरा। |
| बचौं | बय कर रहा है। |
| तोही | तेरा। |
| जड़ | मूर्ख। |
| जानहि | जानता है। |
| मोही | मुझे। |
| कोही | क्रोधी। |
| बिस्वबिदित | संसार-प्रसिद्ध। |
| द्रोही | शत्रुन करने वाला। |
| भुजबल | भुजाओं के बल पर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| विपुल | बहुत। | महीपकुमारा | राजकुमार। |
| महिदेवन्ह | ब्राह्मणों के लिए। | सोचबस | सोच के कारण। |
| भुज | भुजा। | महीसकिसोर | राज कुमार। |
| छेदनिहारा | काटने वाला। | गर्भन्ह | गर्भ के। |
| विलोकु | देखकर। | अर्भक | बच्चे |

**बिहसि लखनु बोले मृदु बानी | अहो मुनीसु महाभट मानी ||**
**पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु | चहत उड़ावन फूँकि पहारू ||**
**इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं | जे तरजनी देखि मरि जाहीं ||**
**देखि कुठारु सरासन बाना | मैं कछु कहा सहित अभिमाना ||**
**भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी | जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी ||**
**सुर महिसुर हरिजन अरु गाई | हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ||**
**बधें पापु अपकीरति हारें | मारतहू पा परिअ तुम्हारें ||**
**कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा | ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ||**
**जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर | सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर ||**

**अर्थ-**

परशुराम की आत्मप्रशंसा सुनकर लक्ष्मण हँसते हुए मृदु वाणी में बोले - "हे मुनिवर ! आप स्वयं को महायोद्धा मानकर बार-बार मुझे कुठार दिखा रहे हो। ऐसा लगता कि फूंक से पहाड़ को उड़ा देना चाहते हो। हम काशीफल के छोटे से फल जैसे अति-निर्वत नहीं हैं जो तर्जनी के दिखाने मात्र से ही मुरझा जाएँगे। मैंने तो कुठार, धनुष-बाण धारण किए वीर-वेश को देखकर ही अभिमान से कुछ कहा है। आपके गले में जनेऊ देखकर और भृगु-पुत्र परशुराम जानकर ही अपने क्रोध को रोक आपके वचनों को सहन कर रहा हूँ. क्योंकि हमारे वंश की मर्यादा है कि देवताओं, ब्राह्मणों, हरिभक्तों और गाय पर वीरता नहीं दिखाई जाती है। इन्हें मारने से पाप लगता है और उनसे हारने पर अपयश मिलता है।

अतः यदि आप हमें मारें भी तो आपके पैरों में गिरना उचित है। आप तो धनुष-बाण और कुठार व्यर्थ ही धारण किए हुए हैं, क्योंकि आपके वचन ही करोड़ों वज्रों के समान कठोर हैं। अतः धनुष-बाण और कुठार को धारण किए हुए वीर-वेश को देखकर मैंने कुछ अनुचित कह दिया हो तो हे धैर्यवान् महामुनिः मुझे क्षमा कर दीजिए।" यह सुनकर भृगृवंश के मणि क्रोध करते हुए गंभीर वाणी में बोले ।

**शब्दार्थ-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| बिहसि | हँसकर। | देखाव | दिखा रहे हो। |
| मृदु | कोमल। | कुठारु | कुल्हाड़ी। |
| बानी | वाणी। | चहत | चाहते हो। |
| महाभट | महायोद्धा। | उड़ावन | उड़ाना। |
| पुनि-पुनि | बार-बार | फूँकि | फूँक से। |
| | | पहारू | पहाड़। |

| | |
|---|---|
| कुम्हड़वतिया | काशीफल का छोटा-सा फल अर्थात् निर्बल। |
| तरजनी | अँगूठे के पास की प्रथम उँगली। |
| सरासन | धनुष। |
| वाना | वाण। |
| भृगुसुत | भृगु के पुत्र परशुराम। |
| समुझि | समझकर। |
| विलोकी | देखकर। |
| सहौँ | सहन कर रहा हूँ। |
| रिस | गुस्सा। |
| रोकी | रोककर। |
| सुर | देवता। |
| महिसुर | ब्राह्मण। |
| गाई | गाय। |
| सुराई | वीरता। |

| | |
|---|---|
| वयें | मारने से। |
| अपकीरति | अपयश, बुराई। |
| हारें | हारने से |
| मारतहू | मारने से। |
| पा | पैर। |
| परिअ | पड़ते है। |
| कोटि | करोड़। |
| कुलिस | कठोर। |
| व्यर्थ | बेकार। |
| धरहु | धारण किए हुए। |
| छमहु | क्षमा करें। |
| धीर | धैर्यवान्। |
| सरोष | क्रोध-सहित। |
| भृगुवंशमनि | भृगुवंश के मणि परशुराम। |
| गिरा | वाणी। |

## प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न-** परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए ?

**उत्तर-** परशुराम के क्रोध करने पर, धनुष के टूट जाने पर लक्ष्मण ने यह तर्क देते हुए कहा कि आप किसलिए इतना क्रोध कर रहे है ऐसे धनुष तो हमने बचपन में कई बार तोड़े हैं। इस धनुष पर आपकी इतनी अधिक ममता किस कारण से है ? हमें यह समझ नहीं आता। लक्ष्मण जी ने यह तर्क भी दिया कि हमारी समझ में तो सभी धनुष एक समान ही हैं। रामचंद्र जी ने तो इसे सिर्फ छुआ था और यह तो छूते ही टूट गया। इस पुराने धनुष के टूटने से क्या हानि या लाभ। इसमें श्री रामचंद्र जी का कोई दोष नहीं है।

**प्रश्न-** परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-** राम स्वभाव से कोमल और विनयी हैं। उनके मन में बड़ों के प्रति श्रद्धा और आदर है। वे गुरुजनों के सामने झुकना अपना धर्म समझते हैं। वे महाक्रोधी परशुराम के क्रुद्ध होने पर भी स्वयं को उनका दास कहते हैं। इस प्रकार वे परशुराम का दिल जीत लेते हैं। लक्ष्मण राम से एकदम विपरीत हैं। वे बहुत उग्र और प्रचंड हैं। उनकी जुबान छुरी से भी अधिक तेज है। वे व्यंग्य-वचनों से परशुराम को छलनी-छलनी कर देते हैं। उनकी उग्रता और कठोर वचनों को सुनकर न केवल परशुराम भड़क उठते हैं बल्कि अन्य सभाजन भी उन्हें अनुचित कहने लगते हैं। वास्तव में राम छाया है तो लक्ष्मण धूप। राम शीतल जल हैं तो लक्ष्मण आग।

**प्रश्न-** लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

**उत्तर-** मेरे अनुसार लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का सबसे अच्छा अंश निम्नलिखित है-

- **लक्ष्मण:** हे मुनि ! धनुष तोड़ने में हम किसी लाभ-हानि की चिंता नहीं करते। और यह धनुष तो छूते ही स्वयं टूट गया अतः आपका हम पर क्रोध करना सर्वथा अनुचित है।
- **परशुराम:** हे दुष्ट बालक ! तू मुझसे तथा मेरे स्वभाव से परिचित नहीं है। मैं अत्यंत क्रोधी हूँ। मैं अब तक तुझे बालक मानकर ही तेरा वध नहीं कर रहा हूँ। और तू मुझे सिर्फ एक साधारण मुनि समझता है।
- **लक्ष्मण:** हे मुनि ! आप स्वयं को बहुत योद्धा मान रहे हैं। और मुझे बार-बार अपना फरसा दिखाकर डराने का प्रयत्न कर रहे हैं। आप फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं। हम भी कुम्हड़ा के बतिया के समान कोमल बालक नहीं है जो आपकी धमकियों से डर जाएंगे। आपके वचन ही अत्यंत कठोर हैं आपको धनुष-बाण और फरसे की कोई जरूरत नहीं।

**प्रश्न-** परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए-

**बाल ब्रह्मचारी अति कोही |**
**बिस्वबिदित क्षत्रियकुलद्रोही ||**
**भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही |**
**बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ||**
**सहसबाहुभुज छेदनिहारा |**
**परसु बिलोकु महीपकुमारा ||**
**मातु पितहि जनि सोचबस**
**करसि महीसकिसोर |**
**गर्भन्ह के अर्भक दलन**
**परसु मोर अति घोर ||**

**उत्तर-** परशुराम ने अपने विषय में चौपाई में कहा- मैं, बाल ब्रह्मचारी और स्वभाव से प्रचंड क्रोधी हूँ। मैं क्षत्रिय कुल का विश्व प्रसिद्ध घोर शत्रु हूँ। मैंने अपने भुजबल से अनेक बार पृथ्वी को राजाओं से रहित कर दिया है। मैंने अनेक बार पृथ्वी को जीतकर उसे ब्राह्मणों को दान में दे डाला। मेरा फरसा बड़ा भयानक है। अतः हे राजकुमार (लक्ष्मण) ! सहस्त्र भुजाओं को काटने वाले मेरे इस फरसे को देख। मेरा फरसा बहुत ही भयानक है। हे राजकुमार लक्ष्मण ! तू मुझसे भिड़कर अपने माता-पिता को चिंता में मत डाल ! अर्थात् अपनी मृत्यु को बुलावा मत दे क्योंकि मेरा यह भयंकर फरसा गर्भो में पल रहे शिशुओं तक का नाश कर चुका है।

**प्रश्न-** लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं ?

**उत्तर-** लक्ष्मण ने किसी भी वीर योद्धा की विशेषताओं के बारे में कहा था कि-

वीर योद्धा व्यर्थ ही अपनी वीरता की डींगे नहीं हाँकते बल्कि युद्ध भूमि में युद्ध करते हैं। अपने अस्त्र-शस्त्रों से वीरता के जौहर दिखाते हैं। शत्रु को सामने पाकर जो अपने के प्रताप की बातें करते हैं वो तो कायर होते हैं।

**प्रश्न-** साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

**उत्तर-** साहस और शक्ति मानव मात्र के लिए सद्गुण हैं जो अत्यंत आवश्यक हैं। अगर इनके साथ विनम्रता का मिलन हो जाए तो क्या कहना। अक्सर साहस और शक्ति के प्रदर्शन में विनम्रता छूट जाती है। इसे साहस और शक्ति का विरोधी मान लिया जाता है परंतु वास्तविकता इसके विपरीत है। साहस और शक्ति विनम्रता के साथ ही प्रशंसनीय हैं।

**प्रश्न-** भाव स्पष्ट कीजिए-

**बिहसि लखनु बोले मृदु बानी।**
**अहो मुनीसु महाभट मानी ||**
**पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू।**
**चहत उड़ावन फूँकि पहारू ||**

**उत्तर-** लक्ष्मण हँसकर कोमल वाणी में बड़बोले परशुराम से बोले - अहो मुनिवर ! आप तो माने हुए महायोद्धा निकले। आप मुझे बार-बार कुल्हाड़ी इस प्रकार दिखा रहे हैं मानो फूँक मारकर पहाड़ उड़ा देंगे। आशय यह है कि परशुराम का गरज- गरजकर अपनी वीरता का गुणगान करना व्यर्थ है। उनकी वीरता खोखली है। उसमें कोई सच्चाई नहीं।

**प्रश्न-** भाव स्पष्ट कीजिए-

**इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं |**
**जे तरजनी देखि मरि जाहीं ||**
**देखि कुठारु सरासन बाना |**
**मैं कछु कहा सहित अभिमाना ||**

**उत्तर-** कवि ने परशुराम के झूठे अभिमान को काव्य रूढ़ि के माध्यम से स्पष्ट किया है। समाज में पुरानी युक्ति है कि कुम्हड़े के छोटे फल की ओर तर्जनी अंगुली से संकेत करने भर से वह मर जाता है। लक्ष्मण कुम्हड़े के कच्चे फल जैसे कमजोर नहीं थे जो परशुराम की धमकी मात्र से भयभीत हो जाते। लक्ष्मण ने यदि उनसे अभिमानपूर्वक कुछ कहा था तो वह उनके अस्त्र-शस्त्र और फरसे को देखकर कहा था।

**प्रश्न-** पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

**उत्तर-** तुलसीदास के पठित पाठ के आधार पर उनकी भाषागत विशेषताओं पर दस पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

(1) तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में अवधी भाषा का प्रयोग किया है।

(2) कवि ने दोहा-चौपाई छंद का सुंदर प्रयोग किया है।

(3) दो चौपाइयों के बाद एक दोहे का क्रम अत्यंत सुंदर बन गया है।

(4) भाषा में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग सुंदर है।

(5) भाषा अलंकारों से सुसज्जित है।

(6) छंद में मात्राओं के बंधन का पूरा निर्वाह हुआ है।

(7) गेयता का गुण विद्यमान है।

(8) संवादात्मक शैली होने के कारण प्रस्तुत पठित अंश में नाटकीयता का समावेश है।

(9) ओजगुण एवं वीर रस है ।

(10) भाषा विषयानुरूप, अर्थगांभीर्य युक्त एवं प्रभावशाली है।

**प्रश्न-** इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** प्रस्तुत पद के अध्ययन से पता चलता है कि लक्ष्मण के कथन में गहरा व्यंग्य छिपा हुआ है। लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं। कि बचपन में हमने ऐसे कितने ही धनुष तोड़ डाले तब किसी ने कोई क्रोध नहीं किया। श्रीराम ने तो इस धनुष को छुआ ही था कि यह टूट गया। परशुराम की डींगों को सुनकर लक्ष्मण पुनः कहते हैं कि हे मुनि, आप अपने आपको बड़ा भारी योद्धा समझते है और फूँक मारकर पहाड़ उड़ाना चाहते हैं। हम भी कोई कुम्हड़बतिया नहीं कि तर्जनी देखकर मुरझा जाएँगे।

आप ये धनुष-बाण व्यर्थ ही धारण किए हुए हैं क्योंकि आपका तो एक-एक शब्द करोड़ों वज्रों के समान है। लक्ष्मण जी व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि आपके रहते आपके यश का वर्णन भला कौन कर सकता है ? शूरवीर तो युद्ध क्षेत्र में ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं तथा कायर अपनी शक्ति का बखान किया करते हैं। परशुराम के शील पर पुनः व्यंग्य करते हुए लक्ष्मण जी कहते हैं कि आपके शील को तो पूरा संसार जानता है। आप तो केवल अपने घर में ही शूरवीर बने फिरते हैं, आपका किसी योद्धा से पाला नहीं पड़ा।

**प्रश्न-** निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए।

(क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही।

**उत्तर-** 'ब' और 'ह' की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है-

(वज्र के समान वचन।)

**प्रश्न-** निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए।

(ख) कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।

**उत्तर-** उपमा - कोटि कुलिस

अनुप्रास - कोटि कुलिस।

## रचना और अभिव्यक्ति-

**प्रश्न-** "सामाजिक जीवन में क्रोध की ज़रूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरे के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिर-निवृत्ति का उपाय ही न कर सके। " आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि क्रोध हमेशा नकारात्मक भाव लिए नहीं होता बल्कि कभी-कभी सकारात्मक भी होता है। इसके पक्ष या विपक्ष में अपना मत प्रकट कीजिए।

**उत्तर-** 'क्रोध' जीवन का ऐसा अनिवार्य आभूषण है, जिसके बिना रहा नहीं जा सकता, और उसे निरंतर धारण भी नहीं कि जा सकता। इस कारण ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने क्रोध के सकारात्मक रूप की सराहना की है और अनायास और ईर्ष्या के कारण उत्पन्न क्रोध को नकारने का परामर्श दिया है।

**क्रोध के पक्ष में-**

- मानवीय अधिकारों के लिए क्रोध अपेक्षित है। क्रोध के अभाव में उदंड की उद्दंडता निरंतर बढ़ती जाती है।
- 'क्रोध और क्षमा' तब सार्थक है जब ऐसा करने वाला शक्ति संपन्न हो। इसलिए कवि दिनकर जी ने कहा है- क्षय शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।" अन्यथा क्रोध उपहास का पात्र होता है।
- क्रोध दंभ का पर्याय होता है। विनम्रता शक्तिमान पुरुष का आभूषण है। जड़, मूर्ख और स्वभाव से उदंड लोगों या जब विनम्रता का कोई प्रभाव नहीं होता तो क्रोध अपेक्षित है। ऐसे क्रोध में शक्ति-संपन्नता और संयम आवश्यक है। राम का अनुनय विनय का समुद्र पर कोई प्रभाव न पड़ने पर उनका पौरूष धधक उठा और उसका परिणाम सार्थक रहा। इसी संदर्भ में श्री तुलसीदास जी ने कहा-

**"विनय न मानत जलधि जड़,**
**गए तीन दिन बीत।**
**कोध मनुष्य बोले राम सकोप तब,**
**भय बिनु होइ न प्रीत।।"**

**क्रोध के विपक्ष में-**

- क्रोध निंदनीय है। क्रोध ध्वंसात्मक कार्य करता है। क्रोध की प्रबल अवस्था में करणीय-अकरणीय, विचारणीय-अविचारणीय का स्थान नहीं होता। ऐसी स्थिति में किसी का भी अपमान हो सकता है। पुत्र अपने माता-पिता का, शिष्य अपने गुरु का अपमान करने में कोई संकोच नहीं करता।
- गीता के अनुसार क्रोध-जनित काम की इच्छा में मनुष्य अपना सब कुछ नष्ट कर बैठता है। स्मृति का नाश, बुद्धिनाश, अंततः पूर्ण नष्ट हो जाता है। इसलिए श्री कृष्ण ने क्रोध को नियंत्रित करने के लिए कहा है।
- दंभ-जनित क्रोध में ईर्ष्या-द्वेष होता है। मनुष्य अपनों से भी शत्रुता करता है; शत्रु पैदा करता है। अंततः पैरों तले कुचला जाता है। पतन के गर्त में गिर पड़ने पर निकलना कठिन होता है।
- क्रोध का विरोध न होने पर यह इतनी गति पकड़ता है कि सामान्य बातों पर क्रोध होने लगता है। स्मृति का विनाश और बुद्धिनाश होने के कारण दुस्साहस करता हुआ मनुष्य प्राणों से ही हाथ धो बैठता है।

**प्रश्न-** अपने किसी परिचित या मित्र के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

**उत्तर-** मेरे मित्र को परिस्थितियों का लंबा अनुभव है। परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करना वह अच्छी तरह

जानता है। वह उन लोगों से सावधान रहता है जो उपदेश देते हैं, अपनी सज्जनता के प्रदर्शन के लिए तिलक आदि तो लगाते ही हैं, साथ ही पौराणिक, ऐतिहासिक चरित्रों का सहारा लेते हैं। उनसे सावधान रहने के लिए कहता है। वह शांत और गंभीर है। वह अपने किए गए प्रयासों को जब तक प्रकट नहीं करता, तब तक उसे सफलता नहीं मिल जाती।

वह अपने मित्रों के प्रति सहृदय है, विनम्र है। अपनी हानि उठाकर भी मित्रों के लिए तत्पर रहता है।

**प्रश्न-** दूसरों की क्षमताओं को कम नहीं समझना चाहिए- इस शीर्षक को ध्यान में रखते हुए एक कहानी लिखिए ।

**उत्तर-** गाँव में एक जमींदार था। उसे पहलवानी का बड़ा शौक था। साथ ही उसे अपनी जमीदारी और परंपरा से चली आ रही पहलवानी का बड़ा घमंड था। जमींदार के बगल में एक मजदूर झोंपड़ी में रहता था। उसका भी एक बेटा था। जमींदार उसे अपने बेटे की मालिश करने के लिए कहता था। मजदूर का लड़का मालिश करता, उससे कुश्ती लड़ता था। बेचारा मजदूर बालक रोज पिटता था। धीरे-धीरे मजदूर और उसके बेटे के मन में जमींदार के बेटे को पछाड़ने की मन-ही-मन धुन लग गई। एक दिन मजदूर से न रहा गया और जमींदार से कह दिया-एक दिन मेरा बेटा आपके बेटे को पीटकर आपके घमंड को चूर करके रहेगा।

यह सुन जमींदार के बेटे ने मजदूर के बेटे को अखाड़े में ले जाकर इतनी पिटाई की, कि फिर वह जमींदार के अखाड़े में नहीं गया। मजदूर से जमींदार पूछता-"अरे तेरा बेटा कहाँ गया ? वह तो मेरे बेटे को कुश्ती में पीटना चाहता था।" मजदूर उस गाँव को छोड़कर कहीं चला गया। मजदूर की बात को जमींदार तो भूल चुका था, किंतु मजदूर का बेटा इस बात को नहीं भूला था। वह जी-जान से पहलवानी की अभ्यास कर रहा था।

एक दिन जिला-चैंपियन के लिए आयोजन किया गया। सबको चुनौती देता हुआ जमींदार का बेटा अखाड़े में घूम रहा था। जोश में था। अखाड़े में घमंड से उछल रहा था। जमींदार भी वहाँ बैठा खूब खुश हो रहा था। जमींदार ने अपने बेटे को खूब बादाम, काजू खिलाए थे। जमींदार के सपने साकार होते हुए दिखाई दे रहे थे। मजदूर का बेटा भी पिता के साथ भीड़ में शांत बैठा देख रहा था। कोई जमींदार के बेटे पहलवान से हाथ मिलाने की हिम्मत नहीं कर रहा था। समय समाप्त होने को था। तभी मजदूर का बेटा धीरे-धीरे आया और चुनौती के अंदाज में हाथ मिलाया। जमींदार और उसका बेटा उसे पहचानकर अवाक् रह गया। कुश्ती हुई। मजदूर का बेटा विजयी हुआ। मजदूर ने जमींदार को दिए गए वचनों को याद कराया। जमींदार का मुँह लटक गया।

जमींदार को होश आया, और कहा- "दूसरों की क्षमताओं को कम नहीं समझना चाहिए।"

**नोट-**

यह प्रश्न परीक्षा के लिए तो उपयुक्त नहीं है किंतु छात्र की वैचारिक प्रतिभा को जानने के लिए उपयुक्त है। यहाँ यह कथा छात्र के लिए प्रेरणा स्रोत है।

**प्रश्न-** उन घटनाओं को याद करके लिखिए जब आपने अन्याय का प्रतिकार किया हो।

**उत्तर-** मैंने अन्याय का प्रतिकार किया है। परंतु ये प्रतिकार मुझे सबक भी सिखा गए कि अन्याय का प्रतिकार करना सबके लिए उपयुक्त नहीं है। कहानियों, कथाओं, उपदेशों से प्रेरित होकर अन्याय का प्रतिकार करना जान-बूझकर ओखली में सिर देने जैसा भी हो सकता है। ऐसा ही एक अनुभव निम्नलिखित है-

सड़क पर साइकिल से जाते हुए दो दूध वाले बिना संकेत दिए गलत दिशा में मुड़े, पीछे से तेज़ आते हुए स्कूटर सवार ने ऐसा देख तेज ब्रेक लगाए फिर भी स्कूटर साइकिल से मात्र स्पर्श ही कर पाया था; स्कूटर सवार स्कूटर से गिर गया।

फिर भी स्कूटर सवार को गालियाँ देते हुए दूध वाले ने मुक्का मारा। वहाँ खड़े हुए मैंने दूध वाले को ऐसा करते देख अपने हाथ में पकड़ी अटैची आगे कर दी, जिससे

मुक्का अटैची में तेजी से लगा। स्कूटर सवार पिटने से बचा। मेरे साथ मेरा मित्र भी था। स्कूटर सवार तो बच गया। पर हम दोनों पिट गए। तब मुझे व्यंग्यकार, कहानीकार, पं. हरिशंकर परसाई की वह 'मातादीन चाँद पर' वाली कहानी याद आ गई, जिसमें गुंडों के एक व्यक्ति को मारने पर घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुँचाने के परिणामतः उसे ही इंस्पेक्टर मातादीन ने जेल भेज दिया था।

**प्रश्न-** अवधी भाषा आज किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है?

**उत्तर-** अवधी भाषा का प्रखर रूप अवध क्षेत्र में देखने को मिलता है। अवधी भाषा का प्रचलित रूप आजकल लखनऊ, अयोध्या, फैजाबाद, सुलतानपुर, प्रतापगढ़, इलाहाबाद, जौनपुर, मिर्जापुर आदि पूर्वी उत्तर-प्रदेश में सुनाई पड़ता है।

❖❖

# आत्मकथ्य

-जयशंकर प्रसाद

## व्याख्या

मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी अपनी यह,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपने व्यंग्य मलिन उपहास
तब भी कहते हो-कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।

**अर्थ -** इस कविता में कवि ने अपने अपनी आत्मकथा न लिखने के कारणों को बताया है। कवि कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का मन रूपी भौंरा प्रेम गीत गाता हुआ अपनी कहानी सुना रहा है। झरते पत्तियों की ओर इशारा करते हुए कवि कहते हैं कि आज असंख्य पत्तियाँ मुरझाकर गिर रही हैं यानी उनकी जीवन लीला समाप्त हो रही है। इस प्रकार अंतहीन नील आकाश के नीचे हर पल अनगिनित जीवन का इतिहास बन और बिगड़ रहा है। इस माध्यम से कवि कह रहे हैं की इस संसार में हर कुछ चंचल है, कुछ भी स्थिर नही है। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के मज़ाक बनाने में लगे हैं, हर किसी को दूसरे में कमी नजर आती है। अपनी कमी कोई नही कहता, यह जानते हुए भी तुम मेरी आत्मकथा जानना चाहते हो। कवि कहता है कि यदि वह उन पर बीती हुई कहानी वह सुनाते हैं तो लोगों को उससे आनंद तो मिलेगा, परन्तु साथ ही वे यह भी देखेंगे की कवि का जीवन सुख और प्रसन्नता से बिलकुल ही खाली है।

किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।
यह विडंबना! अरी सरलते हँसी तेरी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिलाकर हँसतने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

**अर्थ -** कवि कहते हैं कि उनका जीवन स्वप्न के समान एक छलावा रहा है। जीवन में जो कुछ वो पाना चाहते हैं वह सब उनके पास आकर भी दूर हो गया। यह उनके जीवन की विडंबना है। वे अपनी इन कमज़ोरियों का बखान कर जगहँसाई नही करा सकते। वे अपने छले जाने की कहानी नहीं सुनाना चाहता। जिस प्रकार सपने में व्यक्ति को अपने मन की इच्छित वस्तु मिल जाने से वह प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार कवि के जीवन में भी पएक बार प्रेम आया था परन्तु वह स्वपन की भांति टूट गया। उनकी सारी आकांक्षाएँ महज मिथ्या बनकर रह गयी चूँकि वह सुख का स्पर्श पाते-पाते वंचित रह गए। इसलिए कवि कहते हैं कि यदि तुम मेरे अनुभवों के सार से अपने जीवन का घड़ा भरने जा रहे हो तो मैं अपनी उज्जवल जीवन गाथा कैसे सुना सकता हूँ।

**जिसके अरूण-कपोलों की मतवाली सुन्दर छाया में।**
**अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।**
**उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।**
**सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?**
**छोटे से जीवन की कैसे बड़े कथाएँ आज कहूँ?**
**क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?**
**सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा?**
**अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।**

**अर्थ -** इन पंक्तियों में कवि अपने सुन्दर सपनों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि उनके जीवन में कुछ सुखद पल आये जिनके सहारे वे वर्तमान जीवन बिता रहे हैं। उन्होंने प्रेम के अनगनित सपने संजोये थे परन्तु वे सपने मात्र रह गए, वास्तविक जीवन में उन्हें कुछ ना मिल सका। कवि अपने प्रेयसी के सुन्दर लाल गालों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मानो भोर अपनी लाली उनकी प्रेयसी के गालों की लाली से प्राप्त करती है परन्तु अब ऐसे रूपसी की छवि अब उनका सहारा बनकर रह गयी है क्योंकि वास्तविक जीवन वे क्षण कवि को मिलने से पहले ही छिटक कर दूर चले गए। इसलिए कवि कहते हैं कि मेरे जीवन की कथा को जानकर तुम क्या करोगे, अपने जीवन को वे छोटा समझ कर अपनी कहानी नही सुनाना चाहते। इसमें कवि की सादगी और विनय का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। वे दूसरों के जीवन की कथाओं को सुनने और जानने में ही अपनी भलाई समझते हैं। वे कहते हैं कि अभी उनके जीवन की कहानी सुनाने का वक़्त नही आया है। मेरे अतीतों को मत कुरेदो, उन्हें मौन रहने दो।

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है?

**उत्तर-** कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहता था क्योंकि उसे लगता था कि उसका जीवन साधारण-सा है। उसमें कुछ भी ऐसा नहीं जिससे लोगों को किसी प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त हो सके। उसका जीवन अभावों से भरा हुआ था जिन्हें वह औरों के साथ बांटना नहीं चाहता था। उसके जीवन में किसी के प्रति कोमल भाव अवश्य था जिसे वह किसी को बताना नहीं चाहता था।

**प्रश्न 2** आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

**उत्तर-** कवि कहता है कि उसके लिए आत्मकथा सुननाने का यह उचित समय नहीं है। कवि द्वारा ऐसा कहने का कारण है यह है कि कवि को अभी सुखों के सिवाय और कोइ उपलब्धि नहीं मिल सकी है। कवि का जीवन दु:ख और अभावों से भरा रहा हैं। कवि को अपने जीवन में जो बाहरी पीड़ा मिली है, उसे वह चुपचाप अकेले ही सहा है। जीवन का इस पड़ाव पर उसके जीवन के सभी दु:ख तथा व्यथाएँ थककर सोई हुई है, अर्थात बहुत मुश्किल से कवि को अपनी पुराणी वेदना से मुक्ति मिल चुकी है। आत्मकथा लिखने के लिए के लिए कवि को अपने जीवन की उन सभी व्यथाओं को जगाना होगा और कवि ऐसा प्रतीत होता है कि अभी उसके जीवन में ऐसी कोइ उपलब्धि नहीं मिली है जिसे वह लोगों के सामने प्रेरणास्वरूप रख सके। इन्हीं कारणों से कवि अपनी आत्मकथा अभी नहीं लिखना चाहता।

**प्रश्न 3** स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

**उत्तर-** स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का आशय जीवनमार्ग के प्रेरणा से है। कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए कवि स्वयं को जीवन - यात्रा से थका हुआ मानता है। जिस प्रकार 'पाथेय' यात्रा में यात्री को सहारा देता है, आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है ठिक उसी प्रकार स्वप्न में देखे हुए किंचित सुख की स्मृति भी कवि को जीवन - मार्ग में आगे बढ़ने का सहारा देता है।

**प्रश्न 4** भाव स्पष्ट कीजिये-

a. मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

b. जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।

अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

**उत्तर-**

a. कवि का मानना है कि उसे अपने जीवन में सुखों की प्राप्ति नहीं हुई। हर व्यक्ति की तरह वह भी अपने जीवन में सुखों की प्राप्ति करना चाहता था। अवचेतन में छिपे सुख के भावों के कारण कवि ने भी सुख भरा सपना देखा था पर वह सुख उसे वास्तव में प्राप्त कभी नहीं हुआ। वह सुख उसके बिल्कुल पास आते-आते मुस्करा कर दूर भाग गया।

b. कवि का प्रियतम अति सुंदर था। उसकी गालों पर मस्ती भरी लाली छाई हुई थी। उसकी सुंदर छाया में प्रेमभरी भोर भी अपने सुहाग की मधुरिमा प्राप्त करती थी।

**प्रश्न 5** 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की'- कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

**उत्तर-** प्रसाद जी एक सीधे-सादे व्यक्तित्व के इंसान थे। उनके जीवन में दिखावा नहीं था। वे अपने जीवन के सुख-दुख को लोगों पर व्यक्त नहीं करना चाहते थे, अपनी दुर्बलताओं को अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे। अपनी दुर्बलताओं को समाज में प्रस्तुत कर वे स्वयं को हँसी का पात्र बनाना नहीं चाहते थे। पाठ की कुछ पंक्तियाँ उनके वेदना पूर्ण जीवन को दर्शाती है। इस कविता में एक तरफ़ कवि की यथार्थवादी प्रवृति भी है तथा दूसरी तरफ़ प्रसाद जी की विनम्रता भी है। जिसके कारण वे स्वयं को श्रेष्ठ कवि मानने से इनकार करते हैं।

**प्रश्न 6** आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

**उत्तर-** जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित कविता 'आत्मकथ्य' की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. प्रस्तुत कविता में कवि ने खड़ी बोली हिंदी भाषा का प्रयोग किया है-
2. अपने मनोभावों को व्यक्त कर उसमें सजीवता लाने के लिए कवि ने ललित, सुंदर एवं नवीन बिम्बों का प्रयोग किया है। कविता में बिम्बों का प्रयोग किया है।
3. विडंबना, प्रवंचना जैसे नवीन शब्दों का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य में सुंदरता आई है।
4. मानवेतर पदार्थों को मानव की तरह सजीव बनाकर प्रस्तुत किया गया है। यह छायावाद की प्रमुख विशेषता रही है।
5. अलंकारों के प्रयोग से काव्य सौंदर्य बढ़ गया है।

**प्रश्न 7** कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?

**उत्तर-** कवि ने सुख के जिस स्वप्न को देखा था उसे वह प्राप्त नहीं कर पाया था। वह स्वप्न तो ही रह गया था पर उसकी याद कवि के मन में गहराई से जमी हुई थी। कवि के हृदय में अपने प्रिय की सुखद छवि विद्यमान थी। उसका प्रिय भोला-भाला था जिसके लिए कवि ने 'सरलते' शब्द का प्रयोग किया है। उसके लिए अतीत के उन रस से भीगे दिनों को भुला पाना कभी भी संभव नहीं हो पाया। वे प्यार-भरी मधुर चाँदनी रातें उसके लिए सदा याद रखने योग्य थीं। वे उसे अलौकिक आनंद प्रदान करती थीं। प्रिय की हंसी का स्रोत उसके जीवन के कण-कण को सराबोर किए रहता था पर वह कल्पना मात्र था। जब तक सपना आँखों के सामने छाया रहा तब तक वह प्रसन्नता से भरा रहा पर स्वप्न के समाप्त होते ही जीवन की वास्तविकता उसके सामने आ गई। उसकी आनंद-कल्पना अधूरी रह गई। उसका प्रिय अपार सौंदर्य का स्वामी था। उसकी गालों की सौंदर्य-लालिमा के सामने तो उषा की लालिमा भी फीकी थी पर अब तो वह दृश्य ही बदल गया है।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-** प्रसाद जी एक सीधे-सादे व्यक्तित्व के इंसान थे। उनके जीवन में दिखावा नहीं था। वे अपने जीवन के सुख-दुख को लोगों पर व्यक्त नहीं करना चाहते थे, अपनी दुर्बलताओं को अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे। अपनी दुर्बलताओं को समाज में प्रस्तुत कर वे स्वयं को हँसी का पात्र बनाना नहीं चाहते थे। पाठ की कुछ पंक्तियाँ उनके वेदना पूर्ण जीवन को दर्शाती है। इस कविता में एक तरफ़ कवि की यथार्थवादी प्रवृति भी है तथा दूसरी तरफ़ प्रसाद

STEP UP ACADEMY

जी की विनम्रता भी है। जिसके कारण वे स्वयं को श्रेष्ठ कवि मानने से इनकार करते हैं।

**प्रश्न 2** आप किन व्यक्तियों की आत्मकथा पढ़ना चाहेंगे और क्यों?

**उत्तर-** नीचे कुछ महान व्यक्तियों की आत्मकथा का उल्लेख किया गया है। हमें उनकी आत्मकथा पढ़कर उनसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए-

1. महात्मा गाँधी की आत्मकथा- हमें महात्मा गाँधी की आत्मकथा पढ़नी चाहिए। इससे हमें सत्य तथा अहिंसा के महत्व की जानकारी मिलती है।
2. भगत सिंह की आत्मकथा- देशभक्त भगतसिंह की आत्मकथा को पढ़ने से हमें देश भक्ति की प्रेरणा मिलती है।
3. महावीर प्रसाद द्विवेदी की आत्मकथा- प्रसिद्ध साहित्यकार महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा है। एक महान साहित्यकार के रुप से हमें उनकी आत्मकथा पढ़नी चाहिए।

**प्रश्न 3** कोई भी अपनी आत्मकथा लिख सकता है। उसके लिए विशिष्ट या बड़ा होना जरूरी नहीं। हरियाणा राज्य के गुड़गाँव में घरेलू सहायिका के रूप में काम करने वाली बेबी हालदार की आत्मकथा बहुतों के द्वारा सराही गई। आत्मकथात्मक शैली में अपने बारे में कुछ लिखिए।

**उत्तर-** मैं अपने जीवन में कुछ ऐसा करना चाहती हूँ जिससे समाज में मेरा नाम हो, प्रतिष्ठा हो, और लोग मेरे कारण मेरे परिवार को पहचानें। जीवन तो सभी प्राणी भगवान से प्राप्त करते हैं। पशु भी जीवित रहते हैं पर उनका जीवन भी क्या जीवन है? अनजाने-से इस दुनिया में आते हैं और वैसे ही मर जाते हैं। मैं अपना जीवन ऐसे व्यतीत नहीं करना चाहती। मैं तो चाहती हूँ कि मेरी मृत्यु भी ऐसी हो जिस पर सभी गर्व करें और युगों तक मेरा नाम प्रशंसापूर्वक लेते रहें। मेरे कारण मेरे नगर और मेरे देश का नाम ख्याति प्राप्त करे। कल्पना चावला इस संसार में आई और चली गई। उसका धरती पर आना तो सामान्य था पर उसका यहाँ से जाना सामान्य नहीं था। आज उसे सारा देश ही नहीं सारा संसार जानता है। उसके कारण उसके नगर करनाल का नाम अब सभी की जुबान पर है। मैं भी चाहती हूँ कि मैं अपने जीवन में इतना परिश्रम करूँ कि मुझे विशेष पहचान मिले। मैं अपने माता-पिता के साथ-साथ अपने देश की कीर्ति का कारण बनूँ।

❖❖

# उत्साह और अट नहीं रही

-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

## उत्साह

प्रस्तुत कविता एक आह्वाहन गीत है। इसमें कवि बादल से घनघोर गर्जन के साथ बरसने की अपील कर रहे हैं। बादल बच्चों के काले घुंघराले बालों जैसे हैं। कवि बादल से बरसकर सबकी प्यास बुझाने और गरज कर सुखी बनाने का आग्रह कर रहे हैं। कवि बादल में नवजीवन प्रदान करने वाला बारिश तथा सबकुछ तहस-नहस कर देने वाला वज्रपात दोनों देखते हैं इसलिए वे बादल से अनुरोध करते हैं कि वह अपने कठोर वज्रशक्ति को अपने भीतर छुपाकर सब में नई स्फूर्ति और नया जीवन डालने के लिए मूसलाधार बारिश करे।

आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादल को देखकर कवि को लगता है की वे बेचैन से हैं तभी उन्हें याद आता है कि समस्त धरती भीषण गर्मी से परेशान है इसलिए आकाश की अनजान दिशा से आकर काले-काले बादल पूरी तपती हुई धरती को शीतलता प्रदान करने के लिए बेचैन हो रहे हैं। कवि आग्रह करते हैं की बादल खूब गरजे और बरसे और सारे धरती को तृप्त करे।

## अट नहीं रही

प्रस्तुत कविता में कवि ने फागुन का मानवीकरण चित्र प्रस्तुत किया है। फागुन यानी फ़रवरी-मार्च के महीने में वसंत ऋतू का आगमन होता है। इस ऋतू में पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नए पत्ते आते हैं। रंग-बिरंगे फूलों की बहार छा जाती है और उनकी सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो फागुन के सांस लेने पर सब जगह सुगंध फैल गयी हो। वे चाहकर भी अपनी आँखे इस प्राकृतिक सुंदरता से हटा नही सकते।

इस मौसम में बाग़-बगीचों, वन-उपवनों के सभी पेड़-पौधे नए-नए पत्तों से लद गए हैं, कहीं यहीं लाल रंग के हैं तो कहीं हरे और डालियाँ अनगिनत फूलों से लद गए हैं जिससे कवि को ऐसा लग रहा है जैसे प्रकृति देवी ने अपने गले रंग बिरंगे और सुगन्धित फूलों की माला पहन रखी हो। इस सर्वव्यापी सुंदरता का कवि को कहीं ओऱ-छोर नजर नही आ रहा है इसलिए कवि कहते हैं की फागुन की सुंदरता अट नही रही है।

# उत्साह

## प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?

**उत्तर-** कवि ने बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए नहीं कहता बल्कि 'गरजने' के लिए कहा है, क्योंकि 'गरजना' विद्रोह का प्रतीक है। कवि ने बादल के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।

**प्रश्न 2** कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?

**उत्तर-** यह एक आह्वान गीत है। कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादल का गरजना लोगों के मन में उत्साह भर देता है। इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।

**प्रश्न 3** कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

**उत्तर-** कविता में बादल ललित कल्पना और क्रांति चेतना की ओर संकेत करता है। यह एक तरफ पीड़ित-प्यासे लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने वाला है तो दूसरी तरफ वह नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति चेतना की ओर संकेत करता है।

**प्रश्न 4** शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद सौंदर्य कहलाता है। उत्साह कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद है, छाँटकर लिखें।

**उत्तर-** कविता की इन पंक्तियों में नाद-सौंदर्य मौजूद है-

1. 'घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
2. ललित ललित, काले घुँघराले,
   बाल कल्पना के-से पाले
3. "विद्युत-छवि उर में"

### रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** जैसे बादल उमड़-घुमड़कर बारिश करते हैं वैसे ही कवि के अंतर्मन में भी भावों के बादल उमड़-घुमड़कर कविता के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे ही किसी प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अपने उमड़ते भावों को कविता में उतारिए।

**उत्तर-** दूर आसमानों में बादलों की छवि देख,
जगी मेरे मन में भी आस
प्यास के मारों को मिली राहत की साँस
तड़पती विरहणी की प्रेमी से मिलन की वजह खास
धरती को भी मिली तृप्ति की आस
मोर भी करने लगा प्रीतम को मिलने का प्रयास
किसान के आँखों में भी जगी एक चमक खास
देखो बादल आया अपने साथ कितनी आस।

# अट नही रही है

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** छायावाद की एक खास विशेषता है- अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए।

**उत्तर-** पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।

कवि को हरे पत्तों और लाल कोयलों से भरी डालियों के बीच खिले सुगंधित फूलों की शोभा बिखरी है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके कंठों में सुगंधित फूलों की मालाएँ पड़ी हुई हैं। कवि की अज्ञात सत्ता रूपी प्रियतम वन की शोभा के वैभव को कूट-कूट कर भर रहे हैं पर अपनी पुष्पलता के कारण उसमें समा न सकने के कारण चारों ओर बिखर रही है। कवि ने अपने मन के भावों को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया है।

**प्रश्न 2** कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

**उत्तर-** फागुन का मौसम तथा दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। चारों तरफ का दृश्य अत्यंत स्वच्छ तथा हरा-भरा दिखाई दे रहा है। पेड़ों पर कहीं हरी तो कहीं लाल पत्तियाँ हैं, फूलों की मंद-मंद खुश्बू हृदय को मुग्ध कर लेती है। इसीलिए कवि की आँख फागुन की सुंदरता से हट नहीं रही है।

**प्रश्न 3** प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है?

**उत्तर-** प्रस्तुत कविता 'अट नहीं रही है' में कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी ने फागुन के सर्वव्यापक सौन्दर्य और मादक रूप के प्रभाव को दर्शाया है। पेड़-पौधे नए-नए पत्तों, फल और फूलों से अटे पड़े हैं, हवा सुगन्धित हो उठी है, प्रकृति के कण-कण में सौन्दर्य भर गया है। खेत-खलिहानों, बाग-बगीचों, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों एवं चौक-चौबारों में फ़ागुन का उल्लास सहज ही दिखता है।

**प्रश्न 4** फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

**उत्तर-** फागुन का महीना मस्ती से भरा होता है जो सारी प्रकृति को नया रंग प्रदान कर देता है। पेड़-पौधों की शाखाएँ हरे-हरे पत्तों से लद जाती। हैं। लाल-लाल कोंपलें अपार सुंदर लगती हैं। रंग-बिरंगे फूलों की बहार-सी छा जाती है इससे वन की शोभा का वैभव पूरी तरह से प्रकट हो जाता है। प्रकृति ईश्वरीय शोभा को ले कर प्रकट हो जाती है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है। इस ऋतु में न गर्मी का प्रकोप होता है और न ही सर्दी की ठिठुरन। इसमें न तो हर समय की वर्षा होती है और न ही पतझड़ से ठुंठ बने वृक्ष। यह महीना तो अपार सुखदायी बन कर सबके मन को मोह लेता है

**प्रश्न 5** इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ बताएँ।

**उत्तर-** महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी छायावाद

के प्रमुख कवि माने जाते हैं। छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं- प्रकृति चित्रण और प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण। उत्साह और 'अट नहीं रही है' दोनों ही कविताओं में प्राकृतिक उपादानों का चित्रण और मानवीकरण हुआ है। काव्य के दो पक्ष हुआ करते हैं-अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष अर्थात् भाव पक्ष और शिल्प पक्ष। इस दृष्टि से दोनों कविताएँ सराह्य हैं। छायावाद की अन्य विशेषताएँ जैसे गेयता, प्रवाहमयता, अलंकार योजना और संगीतात्मकता आदि भी विद्यमान है। 'निराला' जी की भाषा एक ओर जहाँ संस्कृतनिष्ठ, सामासिक और आलंकारिक है तो वहीं दूसरी ओर ठेठ ग्रामीण शब्द का प्रयोग भी पठनीय है। अतुकांत शैली में रचित कविताओं में क्राँति का स्वर, मादकता एवम् मोहकता भरी है। भाषा सरल, सहज, सुबोध और प्रवाहमयी है।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** होली के आसपास प्रकृति में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उन्हें लिखिए।

**उत्तर-** होली के समय चारों तरफ़ का वातावरण रंगों से भर जाता है। चारों तरफ़ रंग ही रंग बिखरे होते हैं। प्रकृति भी उस समय रंगों से वंचित नहीं रह पाती है। प्रकृति के हरे भरे वृक्ष तथा रंग-बिरंगे फूल होली के महत्व को और अधिक बढ़ा देते हैं।

❖❖

# यह दंतुरित मुस्कान और फसल

-नागार्जुन

## यह दंतुरित मुस्कान

इस कविता में कवि ने नवजात शिशु के मुस्कान के सौंदर्य के बारे में बताया है। कवि कहते हैं की शिशु की मुस्कान इतनी मनमोहक और आकर्षक होती है की किसी मृतक में भी जान डाल दे। खेलने के बाद धूल से भरा तुम्हारा शरीर देखकर ऐसा लगता है मानो कमल का फूल तालाब छोड़कर मेरी झोपड़ी में आकर खिल गए हों। तुम्हारे स्पर्श को पाकर पत्थर भी मानो पिघलकर जल हो गया हो यानी तुम्हारे जैसे शिशु की कोमल स्पर्श पाकर किसी भी पत्थर-हृदय व्यक्ति का दिल पिघल जाएगा। कवि कहते हैं की उनका मन बांस और बबूल की भांति नीरस और ठूँठ हो गया था परन्तु तुम्हारे कोमलता का स्पर्श मात्र पड़ते ही हृदय भी शेफालिका के फूलों की भांति झड़ने लगा। कवि के हृदय में वात्सल्य की धारा बह निकली और वे अपने शिशु से कहते हैं की तुमने मुझे आज से पूर्व नहीं देखा है इसलिए मुझे पहचान नही रहे। वे कहते हैं की तुम्हे थकान से उबारने के लिए मैं अपनी आँखे फेर लेता हूँ ताकि तुम भी मुझे एकटक देखने के श्रम से बच सको। कवि कहते हैं की क्या हुआ यदि तुम मुझे पहचान नही पाए। यदि आज तुम्हारी माँ न होती तो आज मैं तुम्हारी यह मुस्कान भी ना देख पाता। वे अपनी पत्नी का आभार जताते हुए की तुम्हारा मेरा क्या सम्बन्ध यह तुम इसलिए नही जानते क्योंकि मैं इधर उधर भटकता रहा, तुम्हारी ओर ध्यान ना दिया। तुम्हारी माँ ने ही सदा तुम्हें स्नेह-प्रेम दिया और देखभाल किया। पर जब भी हम दोनों की निगाहें मिलती हैं तब तुम्हारी यह मुस्कान मुझे आकर्षित कर लेती हैं।

## फ़सल

इस कविता में कवि ने फसल क्या है साथ ही इसे पैदा करने में  किनका योगदान रहता है उसे स्पष्ट किया है। वे कहते हैं की इसे पैदा करने में एक नदी या दो नदी का पानी नही होता बल्कि ढेर सारी नदियों का पानी का योगदान होता है अर्थात जब सारी नदियों का पानी भाप बनकर उड़ जाता है तब सब बादल बनकर बरसते हैं जो की फसल उपजाने में सहायक होता है। वे किसानों का महत्व स्पष्ट करते हुए कहते हैं की फसल तैयार करने में असंख्य लोगों के हाथों की मेहनत होती है। कवि बताते हैं की हर मिटटी की अलग अलग विशेषता होती है, उनके रूप, गुण, रंग एक सामान नही होते। सबका योगदान फसल को तैयार करने में है।

कवि ने बताया है की फसल बहुत चीज़ों का सम्मिलित रूप है जैसे नदियों का पानी, हाथों की मेहनत, भिन्न मिट्टियों का गुण तथा सूर्य की किरणों का प्रभाव तथा मंद हवाओं का स्पर्श। इन सब के मिलने से ही हमारी फसल तैयार होती है।

# यह दंतुरित मुस्कान

## प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

**उत्तर-** बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। वह उसके सुंदर और मोहक मुख पर छाई मनोहारी मुसकान से प्रसन्नता में भर उठा था। उसे ऐसा लगा था कि वह धूल-धूसरित चेहरा किसी तालाब में खिले सुंदर कमल के फूल के समान था जो उसकी झोपड़ी में आ गया था। कवि उसे एकटक देखता ही रह गया था। उसकी मुसकान ने उसे अपनी पत्नी के प्रति कृतज़ता प्रकट कर देने के लिए विवश-सा कर दिया था।

**प्रश्न 2** बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

**उत्तर-** बच्चे तथा बड़े व्यक्ति की मुसकान में निम्नलिखित अंतर होते हैं-

1. बच्चे की मुसकान सरल और स्वाभाविक होती है वहीं बड़ों की मुसकान में बनावटीपन होता है।
2. बच्चे की मुसकान भोली और स्वार्थरहित होती है वहीं बड़ों की मुसकान कुटिल और स्वार्थी होती है।
3. बच्चे की मुसकान निष्काम और निश्छल होती है वहीं बड़ों की मुसकान उसकी परिस्थितियाँ के अनुसार तय होती है।

प्रश्न 3 कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

**उत्तर-** कवि नागार्जुन ने बच्चे की मुसकान के सौन्दर्य को जिन बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है, वे निम्नलिखित हैं:-

1. मृतक में भी जान डाल देना।
2. कमल का तालाब छोड़कर झोपड़ी में खिलना।
3. बाँस या बबूल से शेफ़ालिका के फूलों का झड़ना।
4. स्पर्श पाकर पाषाण का पिघलना।
5. तिरछी नज़रों से देख कर मुसकाना।

**प्रश्न 4** भाव स्पष्ट कीजिए-

a. छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।
b. छू गया तुम से कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?

**उत्तर-**

a. कवि को ऐसा लगा कि उस छोटे बच्चे की अपार सुंदरता तो ईश्वरीय वरदान के समान थी। वह धूल-धूसरित अंग-प्रत्यंगों वाला तो जैसे तालाब में खिले कमल के समान मोहक और मनोरम था जो उसकी झोपड़ी में आकर बस गया था।
b. उस छोटे दंतुरित बच्चे का ऐसा मनोरम रूप था कि चाहे कोई कितना भी कठोर क्यों न रहा हो पर उसे देख मन ही मन प्रसन्नता से भर उठता था। चाहें बाँस के समान हो या कांटों भरे कीकर के समान, पर उसकी सुदंरता से प्रभावित हो वह उसकी ओर देख मुस्कराने के लिए विवश हो जाता था।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** मुसकान और क्रोध भिन्न-भिन्न भाव हैं। इनकी उपस्थिति से बने वातावरण की भिन्नता का चित्रण कीजिए।

**उत्तर-** मुसकान और क्रोध परस्पर विलोम भाव हैं। मुसकान से चेहरा आकर्षक, मन में प्रसन्नता और वातावरण में उल्लास भर जाता है। मुसकान कठोर एवम् भावशून्य हृदय वाले को भी कोमल और भावयुक्त बना देती है। इसमें पराए को भी अपना बना लेने की अद्भुत क्षमता होती है। जबकि; ठीक इसके विपरीत क्रोध से चेहरा भयानक, मन अशान्त और वातावरण तनावयुक्त बन जाता है। क्रोध से हृदय कठोर और संवेदनहीन हो जाता है। लोगों में भय और आतंक उत्पन्न हो जाता है, जिससे गैर तो गैर और अपने भी पराए बन जाते हैं।

**प्रश्न 2** दंतुरित मुसकान से बच्चे की उम्र का अनुमान लगाइए और तर्क सहित उत्तर दीजिए।

**उत्तर-** बच्चों के दाँत मुख्यत: 9 महीने से लेकर एक साल में आने लगते हैं। कई बार इससे कम या अधिक समय भी लग जाया करता है, परन्तु यहाँ माँ उँगलियों से मधुपर्क करा रही है। अत: बच्चे की आयु लगभग 1 वर्ष की लगती है। बच्चा अपनी निश्छल दंतुरित मुसकान से सबका मन मोह लेता है।

**प्रश्न 3** बच्चे से कवि की मुलाकात का जो शब्द-चित्र उपस्थित हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-** कितना सुंदर है वह बच्चा। छोटा-सा है, एक साल से भी छोटा होगा। कमल के फूल के समान उसका मोहक चेहरा है। मिट्टी में खेलता है, इधर-उधर कच्चे गन में रेंगता रहता है। सारे शरीर पर धूल लगी हुई है। कवि लंबे समय के बाद पर लौटा है। अपनी बच्चे के बारे में उसे अपनी पत्नी से पता लगा है। वह भाव-विभोर है। एक टक उस बच्चे की ओर निहार रहा है। वह उसकी मोहक 'दंतुरित मुसकान' पर तो मंत्र-मुग्ध है। बच्चा उसे पहचानना चाहता है पर पहचान नहीं पाता-छोटा है न, शायद उसने उन्हें पहली बार देखा है, वह कनखियों को अनजाने से अतिथि को देखता है पर क्रोध करता नहीं है-बस मुसकराता है। कवि को लगता है कि इस बच्चे की मुसकान तो पत्थर को भी पिघला देने की क्षमता रखती है। कठोर-से-कठोर व्यक्ति भी इसकी मोहक मुसकान पर मर मिट सकता है।

# फसल

## प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** कवि के अनुसार फसल क्या है?

**उत्तर-** कवि के अनुसार फसल ढेर सारी नदियों के पानी का जादू, लाखों लोगों के हाथों के स्पर्श की गरिमा तथा भिन्न प्रकार की मिट्टी के गुण, सूर्य की किरणों और वायु की मंद गति का परिणाम है। यानी फसल मनुष्य और प्रकृति दोनों के मिलकर कार्य करने से उपजता है।

**प्रश्न 2** कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं?

**उत्तर-** प्रस्तुत कविता में कवि ने फसल उपजाने के लिए मानव परिश्रम, पानी, मिट्टी, सूरज की किरणों तथा हवा जैसे तत्वों को आवश्यक कहा है।

**प्रश्न 3** फसल को 'हाथों से स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर क्या व्यक्त करना चाहता है?

**उत्तर-** कवि ने लाखों-करोड़ों लोगों के द्वारा किए जाने वाले परिश्रम और उनकी एक निष्ठ लग्न के लिए 'हाथो के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहा है। फसल उत्पन्न करना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है। न जाने कितने दिन-रात मेहनत करके इसे उगाने का गौरव प्राप्त करते हैं।

**प्रश्न 4** भाव स्पष्ट कीजिए-

रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

**उत्तर-** प्रस्तुत पंक्तियों का तात्पर्य यह है कि फसल के लिए सूरज की किरणें तथा हवा दोनों का प्रमुख योगदान है। वातावरण के ये दोनों अवयव ही फसल के योगदान में अपनी-अपनी भूमिका अदा करते हैं।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** कवि ने फसल को हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण-धर्म कहा है-

a. मिट्टी के गुण-धर्म को आप किस तरह परिभाषित करेंगे?

b. वर्तमान जीवन शैली मिट्टी के गुण-धर्म को किस-किस तरह प्रभावित करती है?

c. मिट्टी द्वारा अपना गुण-धर्म छोड़ने की स्थिति में क्या किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना की जा सकती है?

d. मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

**उत्तर-**

a. किसी भी फसल की उपज मिट्टी के उपजाऊ होने पर निर्भर करती है। मिट्टी की उर्वरा शक्ति जितनी अधिक होगी। फसल का उत्पाद भी उतना ही अधिक होगा।

b. वर्तमान जीवन-शैली प्रदूषण उत्पन्न करती है। प्रदूषण मिट्टी के गुण-धर्म को प्रभावित करता है। नए-नए खाद्यों के उपयोग से प्लास्टिक के ज़मीन में रहने से, प्रदूषण से मिट्टी की उर्वरा शक्ति धीरे-धीरे नष्ट होती जा रही है और मिट्टी का मूल स्वभाव बदलकर विकृत हो जाता है। इसका बुरा प्रभाव फसल की उपज पर पड़ रहा है

c. अगर मिटटी ने अपना गुण-धर्म छोड़ दिया तो धरती से हरियाली का, पेड़-पौधे और फ़सल आदि का नामोनिशान मिट जाएगा। इनके अभाव में तो धरती पर जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

d. मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हम मिट्टी को प्रदूषण से बचाकर, वृक्षारोपण कर, मिट्टी के कटाव को रोकने की व्यवस्था कर फसल-चक्र चलाकर, कम से कम मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करके हम मिट्टी के गुण-धर्म का का पोषण कर सकते हैं।

# संगतकार

**-मंगलेश डबराल**

## सार

इस कविता में कवि ने गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की महत्ता का स्पष्ट किया है। कवि कहते हैं कि मुख्य गायक के गंभीर आवाज़ का साथ संगतकार अपनी कमजोर किन्तु मधुर आवाज़ से देता है। अधिकांशत ये मुख्य गायक का छोटा भाई, चेला या कोई रिश्तेदार होता है जो की शुरू से ही उसके साथ आवाज़ मिलाता आ रहा है। जब मुख्य गायक गायन करते हुए सुरों की मोहक दुनिया में खो जाता है, उसी में रम जाता है तब संगतकार ही स्थायी इस प्रकार गाकर समां बांधे रखता है जैसे वह कोई छूटा हुआ सामान सँजोकर रख रहा हो। वह अपनी टेक से गायक को यह उन दिनों की याद दिलाता है जब उसने सीखना शुरू किया था।

कवि कहते हैं बहुत ऊँची आवाज़ में जब मुख्य गायक का स्वर उखड़ने लगता है और गला बैठने लगता है तब संगतकार अपनी कोमल आवाज़ का सहारा देकर उसे इस अवस्था से उबारने का प्रयास करता है। वह मुख्य गायक को स्थायी गाकर हिम्मत देता है की वह इस गायन जैसे अनुष्ठान में अकेला नहीं है। वह पुनः उन पंक्तियों को गाकर मुख्य गायक के बुझते हुए स्वर को सहयोग प्रदान करता है। इस समय उसके आवाज़ में एक झिझक से भी होती है की कहीं उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर से ऊपर ना पहुँच जाए। ऐसा करने का मतलब यह नही है की उसके आवाज़ में कमजोरी है बल्कि वह आवाज़ नीची रखकर मुख्या गायक को सम्मान देता है। इसे कवि ने महानता बताया है।

## प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

**उत्तर-** संगतकार के माध्यम से कवि विवश या ज्ञान के इच्छुक व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है। वह या तो मुख्य गायक का छोटा भाई है या संगीत की शिक्षा प्राप्त करने का इच्छुक उसका कोई शिष्य या कोई दूर से पैदल आने वाला असहाय सगा-संबंधी, जिसके लिए गायन की कला सीखना विवशता है।

**प्रश्न 2** संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

**उत्तर-** संगतकार जैसे व्यक्ति निम्नलिखित क्षेत्रों में मिलते हैं; जैसे-

1. सह नर्तक (डांसर): जो मुख्य नर्तक का साथ देते हैं।
2. भवन निर्माण क्षेत्र में: मज़दूर जो भवन का निर्माण करते हैं।

3. सिनेमा के क्षेत्र में: फिल्म में अनेकों सह कलाकार, डुप्लीकेट व स्टंटमैन होते हैं।

**प्रश्न 3** संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

**उत्तर-** संगतकार निम्नलिखित रूपों में संगतकार की मदद करते हैं-

- वे अपनी आवाज़ और गूंज को मुख्य गायक की आवाज़ में मिलाकर उनकी आवाज़ का बल बढ़ाने का काम करते हैं।
- जब मुख्य गायक गायन की गहराई में चले जाते हैं तब वे स्थायी पंक्ति को पकड़कर मुख्य गायक को वापस मूल स्वर में लाते हैं।
- वे मुख्य गायक की थकी, टूटती-बिखरती आवाज़ को बल देकर उसे अकेला होने या बिखरने से बचाते हैं।

**प्रश्न 4** भाव स्पष्ट कीजिए:

और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है

या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है

उसे विफलता नहीं

उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

**उत्तर-** कभी-कभी संगतकार मुख्य गायक का साथ देने के लिए गाता है। वह अस्पष्ट रूप से उसे यह बताना चाहता है कि जो राग पहले गाया जा चुका है उसे फिर से गाया जा सकता है पर उसकी आवाज में एक हिचक साफ सुनाई देती है। वह अपने स्वर को ऊँचा उठाने की कोशिश नहीं करता। इसे उसकी विफलता नहीं समझना चाहिए बल्कि उसकी मनुष्यता समझना चाहिए क्योंकि वह किसी भी अवस्था में मुख्य गायक के अहं को ठेस नहीं लगने देना चाहता। वह उसका शिष्य है। उसका बड़प्पन इसी बात मे है कि वह मुख्य गायक के मान-सम्मान की रक्षा करे।

**प्रश्न 5** किसी भी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाले लोगों को अनेक लोग तरह-तरह से अपना योगदान देते हैं। कोई एक उदाहरण देकर इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

**उत्तर-** किसी भी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाले लोगों को अनेक लोग तरह-तरह से योगदान देते हैं। जैसे प्रसिद्ध गायक-गायिका जब प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं तो उसमें एक संगीत निर्देशक, गीतकार, तकनीकी साउंड डालने वाले, वाद्य यंत्र बजाने वाले, संगतकार, निर्माता का महत्वपूर्ण हाथ होता है जब तक इन सब लोगों का सहयोग प्राप्त न हो तो एक गायक-गायिका अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर सकते और इन्हीं सब के सहयोग द्वारा वह सफलता के शिखर तक पहुँच पाते हैं।

**प्रश्न 6** कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नज़र आता है उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है। इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** तारसप्तक में गायन करते समय मुख्य गायक का स्वर बहुत ऊँचाई तक पहुँच जाता है। जिसके कारण स्वर के टूटने का आभास होने लगता है और इसी कारण वह अपने कंठ से ध्वनि का विस्तार करने में कमज़ोर हो जाता है। तब संगतकार उसके पीछे मुख्य धुन को दोहराता चलता है वह अपनी आवाज़ से उसके बिखराव को सँभाल लेता है।

**प्रश्न 7** सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाते हैं तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?

**उत्तर-** सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाते हैं तब उसे उसके सहयोगी सांत्वना देते हैं। उसका हौसला बढ़ाते है। असफलता को भूलने की सलाह देते हैं। यदि आवश्यकता हो तो आर्थिक सहायता भी देते हैं।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** कल्पना कीजिए कि आपको किसी संगीत या नृत्य समारोह का कार्यक्रम प्रस्तुत करना है लेकिन आपके सहयोगी कलाकार किसी कारणवश नहीं पहुँच पाएँ-

a. ऐसे में अपनी स्थिति का वर्णन कीजिए।

b. ऐसी परिस्थिति का आप कैसे सामना करेंगे?

**उत्तर-**

a. एक बार एक नृत्य समारोह में मैंने और मेरे मित्र ने भाग लिया था। दोनों ने उसके लिए बहुत ज्यादा अभ्यास किया था। उसके अनुरूप वस्त्र बनवाए थे। दुर्भाग्य वश स्पर्धा के दिन उसकी माता जी बीमार हो गई और वह नहीं आ पाया। मेरे तो जैसे हाथ पाँव फूल गए। क्या करता! तब मेरे मित्र और माता-पिता ने मुझे ढाढ़स बंधाया। हमने जिस गाने की तैयारी की थी उसमें साथी की आवश्यकता थी इसलिए मैंने दूसरे गाने पर जैसा आया वैसा नृत्य किया। स्पर्धा के दिन अगर सहयोगी कलाकार न आए तो दिन में तारे नज़र आ जाते हैं।

b. स्पर्धा के दिन अगर सहयोगी कलाकार न आए तो दिन में तारे नज़र आ जाते है। ऐसे में हमें हिम्मत से काम लेना चाहिए। बिना डरे सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए। तुरंत क्या प्रस्तुत करके स्थिति संभाल सकते हैं, उसकी योजना मस्तिष्क में बना लेनी चाहिए। इससे दर्शकगण का सामना करने का मनोबल बढ़ेगा।

**प्रश्न 2** आपके विद्यालय में मनाए जाने वाले सांस्कृतिक समारोह में मंच के पीछे काम करने वाले सहयागियों की भूमिका पर एक अनुच्छेद लिखिए।

**उत्तर-** किसी भी कार्यक्रम की सफलता में मंच के पीछे काम करने वाले व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्हें मंच पर चल रहीं हर गतिविधियों पर बारीकी से काम करना पड़ता है। कलाकार की छोटी से छोटी आवश्यकता को समय रहते पूरी करना होता है। अगर वे छोटी सी भूल भी करें तो बहुत बड़ी समस्या हो सकती है। जैसे किसी नृत्य के लिए किसी और नृत्य का गाना लगा देना।

**प्रश्न 3** किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले लोग प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर क्यों नहीं पहुँच पाते होंगे?

**उत्तर-** किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले लोग प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर नहीं पहुँच पाते। क्योंकि वे अपने गुरु और स्वामी को महत्व देते और उनका सम्मान करते हैं।

# क्षितिज भाग 2

# गद्य खण्ड

# क्षितिज भाग – 2 गद्य खंड

## नेताजी का चश्मा

-स्वंय प्रकाश

### सार

हालदार साहब को हर पन्द्रहवें दिन कम्पनी के काम से एक छोटे कस्बे से गुजरना पड़ता था। उस कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का कारखाना, दो ओपन सिनेमा घर तथा एक नगरपालिका थी। नगरपालिका थी तो कुछ ना कुछ करती रहती थी, कभी सड़के पक्की करवाने का काम तो कभी शौचालय तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। एक बार नगरपालिका के एक उत्साही अधिकारी ने मुख्य बाज़ार के चैराहे पर सुभाषचन्द्र बोस की संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। चूँकि बजट ज्यादा नही था इसलिए मूर्ति बनाने का काम कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के शिक्षक को सौंपा गया। मूर्ति सुन्दर बनी थी बस एक चीज़ की कमी थी, नेताजी की आँख पर चश्मा नहीं था। एक सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया। जब हालदार साहब आये तो उन्होंने सोचा वाह भई! यह आईडिया ठीक है। मूर्ति पत्थर की पर चश्मा रियल। दूसरी बार जब हालदार साहब आये तो उन्हें मूर्ति पर तार का फ्रेम वाले गोल चश्मा लगा था। तीसरी बार फिर उन्होंने नया चश्मा पाया। इस बार वे पानवाले से पूछ बैठे कि नेताजी का चश्मा हरदम बदल कैसे जाता है। पानवाले ने बताया की यह काम कैप्टन चश्मेवाला करता है। हालदार साहब को समझते देर न लगी की बिना चश्मे वाली मूर्ति कैप्टेन को ख़राब लगती होगी इसलिए अपने उपलब्ध फ्रेम में से एक को वह नेताजी के मूर्ति पर फिट कर देता होगा। जब कोई ग्राहक वैसे ही फ्रेम की मांग करता जैसा मूर्ति पर लगा है तो वह उसे मूर्ति से उतारकर ग्राहक को दे देता और मूर्ति पर नया फ्रेम लगा देता चूँकि मूर्ति बनाने वाला मास्टर चश्मा भूल गया।

हालदार साहब ने पानवाले जानना चाहा कि कैप्टेन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आजाद हिन्द फ़ौज का कोई भूतपूर्व सिपाही? पानवाले बोला कि वह लंगड़ा क्या फ़ौज में जाएगा, वह पागल है इसलिए ऐसा करता है। हालदार साहब को एक देशभक्त का मजाक बनते देखना अच्छा नही लगा। कैप्टेन को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ चूँकि वह एक बूढ़ा मरियल-लंगड़ा सा आदमी था जिसके सिर पर गांधी टोपी तथा चश्मा था, उसके एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे में एक बांस में टंगे ढेरों चश्मे थे। वह उसका वास्तविक नाम जानना चाहते थे परन्तु पानवाले ने इससे ज्यादा बताने से मना कर दिया।

दो साल के भीतर हालदार साहब ने नेताजी की मूर्ति पर कई चश्मे लगते हुए देखे। एक बार जब हालदार साहब कस्बे से गुजरे तो मूर्ति पर कोई चश्मा नही था। पूछने पर पता चला की कैप्टेन मर गया, उन्हें बहुत दुःख हुआ। पंद्रह दिन बाद कस्बे से गुजरे तो सोचा की वहाँ नही रुकेंगे, पान भी नही खायेंगे, मूर्ति की ओर देखेंगे भी नहीं। परन्तु आदत से मजबूर हालदार साहब की नजर चौराहे पर आते ही आँखे मूर्ति की ओर उठ गयीं। वे जीप से उतरे और मूर्ति के सामने जाकर खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना हुआ छोटा सा चश्मा रखा था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। यह देखकर हालदार साहब की आँखे नम हो गयीं।

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

**उत्तर-** सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि उसके अंदर देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले सेनानियों का भरपूर सम्मान करता था। वह नेताजी की मूर्ती को बार-बार चश्मा पहना कर देश के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करता था। देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना उसके हृदय में किसी भी फ़ौजी से कम नहीं थी।

**प्रश्न 2** हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा-

a. हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

b. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

c. हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

**उत्तर-**

a. हालदार साहब यह जानकर मायूस हो गए थे कि कैप्टन की मृत्यु हो चुकी है। अतः अब उस कस्बे में सुभाष की बिना चश्मे वाली मूर्ति को चश्मा पहनाने वाला कोई न रहा होगा। अब मूर्ति बिना चश्मे के ही खड़ी होगी।

b. मूर्ति पर लगा सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि यह धरती देशभक्ति से शून्य नहीं हुई है। एक कैप्टन नहीं रहा, तो अन्य लोग उस दायित्व को सँभालने के लिए तैयार हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सरकंडे का चश्मा किसी गरीब बच्चे ने बनाया है। अतः उम्मीद है कि ये बच्चे गरीबी के बावजूद भी देश को ऊपर उठाने का प्रयास करते रहेंगे।

c. हालदार साहब के लिए सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाना 'इतनी-सी' बात नहीं थी। यह उनके लिए बहुत बड़ी बात थी। यह बात उनके मन में आशा जगाती थी कि कस्बे-कस्बे में देशभक्ति जीवित है। देश की नई पीढ़ी में देश-प्रेम जीवित है। इस खुशी और आशा से वे भावुक हो उठे।

**प्रश्न 3** आशय स्पष्ट कीजिए-

"बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िन्दगी सब कुछ होम देने वालों पर हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

**उत्तर-** लेखक का उपरोक्त वाक्य से यह आशय है कि लेखक बार-बार यही सोचता है कि उस देश के लोगों का क्या होगा जो अपने देश के लिए सब न्योछावर करने वालों पर हँसते है। देश के लिए अपना घर-परिवार, जवानी, यहाँ तक कि अपने प्राण भी देने वालों पर लोग हँसते हैं। उनका मजाक उड़ाते हैं। दूसरों का मजाक उड़ाने वालों के पास लोग जल्दी इकट्ठे हो जाते हैं जिससे उन्हें अपना सामान बेचने का अवसर मिल जाता है।

**प्रश्न 4** पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

**उत्तर-** सड़क के चौराहे के किनारे एक पान की दुकान में एक पान वाला बैठा है। वह काला तथा मोटा है, उसके सिर पर गिने-चुने बाल ही बचे हैं। वह एक तरफ़ ग्राहक के लिए पान बना रहा है, वहीं दूसरी ओर उसका मुँह पान से भरा है। पान खाने के कारण

उसके होंठ लाल तथा कहीं-कहीं काले पड़ गए हैं। उसने अपने कंधे पर एक कपड़ा रखा हुआ है जिससे रह-रहकर अपना चेहरा साफ़ करता है।

**प्रश्न 5** "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में पागल है पागल?''

कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

**उत्तर-** पानवाले की यह टिप्पणी बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। उसे चाहिए था कि वह चश्मेवाले कैप्टन की भावनाओं का सम्मान करता। उसे पता था कि कैप्टन ही सुभाषचंद्र बोस की आँखों पर अपनी ओर से चश्मा लगाए रहता है। वह भी केवल इसलिए कि नेताजी की मूर्ति अधूरी न लगे। उसकी इस भावना से देशभक्ति प्रकट होती है। अत: ऐसे व्यक्ति की कमियाँ या कुरूपता नहीं देखनी चाहिए। न ही ऐसे व्यक्ति को पागल कहना चाहिए। अतः पानवाले की यह टिप्पणी गैरजिम्मेदाराना है।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं-

a. हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

b. पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला-साहब! कैप्टन मर गया।

c. कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

**उत्तर-**

a. हालदार साहब का चौराहे पर रुक कर नेता जी की मूर्ति को निहारने से यह पता चलता है कि उनके मन में देश के नेताओं के प्रति आदर और सम्मान की भावना थी। नेता जी की मूर्ति उन्हें देश के निर्माण में सहयोग देने के लिए प्रेरित करती थी। इससे उनकी देशभक्ति की भावना का पता चलता है।

b. पानवाला जब भी कोई बात करता था, उससे पहले वह मुँह का पान नीचे अवश्य थूकता था। पानवाले को कैप्टन के मरने का दु:ख था। इसीलिए उसकी आँखें नम थीं। इससे यह पता चलता है कि पानवाले के मन में कैप्टन के प्रति आदर की भावना थी।

c. चौराहे पर लगी नेता जी की मूर्ति का मूर्तिकार चश्मा बनाना भूल गया था। बिना चश्मे वाली मूर्ति कैप्टन को बहुत आहत करती थी। इसलिए वह मूर्ति पर अपने पास से चश्मा लगा देता था। जब भी मूर्ति पर से चश्मा उतर जाता वह उसी समय मूर्ति पर चश्मा लगा देता था। इससे पता चलता है कि कैप्टन में देश और देश के नेताओं के प्रति आदर और सम्मान की भावना है।

**प्रश्न 2** जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

**उत्तर-** जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को नहीं देखा था तब तक वो उसे एक फौज़ी की तरह लम्बा-चौड़ा, घनी मूछों वाला मजबूत और बलशाली व्यक्ति समझते थे। उन्होंने सोचा होगा कि वह एक फौजी की तरह अपने जीवन को अनुशासित ढंग से जीता होगें। उन्हें लगता था फौज़ में होने के कारण लोग उन्हें कैप्टन कहते हैं।

**प्रश्न 3** कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन-सा हो गया है-

a. इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं?

b. आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों?

c. उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?

**उत्तर-**

a. इस तरह की मूर्ति लगाने का उद्देश्य यही हो सकता है कि लोग उस प्रसिद्ध व्यक्ति के बारे में जाने। उससे प्रेरणा प्राप्त करें। उसके गुणों को अपनाएँ। उसे याद रखें, ताकि समाज में अच्छे कार्य होते रहें।

b. हम अपने इलाके के चौराहे पर राष्ट्रीय महापुरुषों, प्रसिद्ध संतों, ऋषियों, साहित्यकारों और वैज्ञानिकों की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे।

क्यों-हम उनकी मूर्ति स्थापित करके उनके कामों को याद रखेंगे, उन्हें याद रखेंगे, उनसे प्रेरणा प्राप्त करेंगे और आने वाली पीढ़ियों को भी उनके बारे में बताना चाहेंगे।

c. ऐसी मूर्तियों के प्रति हमारा तथा समाज के सभी लोगों का यह दायित्व बनता है कि वे उनकी देखभाल और साज-सँवार करें। उन्हें समय-समय पर सँवारते रहें।

**प्रश्न 4** सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश प्रेम प्रकट करते हैं; जैसे-सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अपने जीवन-जगत से जुड़े ऐसे कार्यों का उल्लेख करें और उन पर अमल भी कीजिये।

**उत्तर-** हम अपने जीवन-जगत से जुड़े ऐसे कई कार्यों को उचित ढंग से कर सकते हैं जिससे देश प्रेम का परिचय मिलता है। पानी हमारे प्राणी जीवन के लिए अनमोल धैरोहर है। पानी का उचित प्रयोग करना चाहिए। बिना मतलब के पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पानी की टंकी को खुला न छोड़े। पानी के प्रयोग के बाद तुरंत पानी की टंकी बंद कर देनी चाहिए।

बिजली का उचित प्रयोग करना चाहिए। फालतू बिजली का प्रयोग हमारे जीवन को अंधकारमय बना सकता है। इसलिए बिजली का जितना प्रयोग संभव हो उतना ही प्रयोग करना चाहिए। घरों में बिजली के पंखें, ट्यूबें खुली नहीं छोड़नी चाहिए। जब इनकी जरूरत न हो तो बंद कर देनी चाहिए।

पेट्रोल का उचित प्रयोग करने के लिए जहां तक संभव हो निजी यातायात के साधनों का प्रयोग कम करना चाहिए। सार्वजनिक यातायात के साधनों का उचित प्रयोग करना चाहिए। इससे मनुष्य के धन की भी बचत होती है तथा पर्यावरण प्रदूषित कम होता है।

ऐसे हमारे जीवन-जगत से जुड़े कई कार्य हैं जिनको अमल में लाकर हम अपने देश प्रेम का परिचय दे सकते हैं।

**प्रश्न 5** निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में लिखिए-

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

**उत्तर-** **मानक हिंदी में रुपांतरित:**

अगर कोई ग्राहक आ गया और उसे चौड़े चौखट चाहिए, तो कैप्टन कहाँ से लाएगा? तो उसे मूर्तिवाला चौखट दे देता है और उसकी जगह दूसरा लगा देता है।

**प्रश्न 6** भई खूब! क्या आइडिया है।' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?

**उत्तर-** प्रत्येक भाषा दूसरी भाषा से कुछ शब्द उधार लेती है। कई बार दूसरी भाषा के शब्द ऐसे अर्थ और प्रभाव वाले होते हैं कि अपनी भाषा में नहीं होते। जैसे उपर्युक्त वाक्य में दो शब्द हैं- 'खूब' तथा 'आइडिया'। 'खूब' उर्दू शब्द है। 'आइडिया' अंग्रेजी शब्द है। 'खूब' में गहरी प्रशंसा का भाव है। यह भाव हिंदी के 'सुंदर' या 'अद्भुत' में नहीं है। इसी प्रकार 'आइडिया' में जो भाव है, वह हिंदी के शब्द 'विचार', 'युक्ति' या 'सूझ' में नहीं है। इससे पता चलता है कि अन्य भाषाओं के शब्द हमारी भाषा को समृद्ध करते हैं। परंतु यदि उनका प्रयोग अनावश्यक हो, दिखावे-भर के लिए हो या जानबूझकर हो तो वे शब्द खलल डालते हैं।

## भाषा-अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित वाक्यों से निपात छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए-

a. नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी।

b. किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।

c. यानी चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था।

d. हालदार साहब अब भी नहीं समझा पाए।

e. दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे।

**उत्तर-**

a. भी = बाज़ार जा रहे हो तो मेरे लिए भी फल लेते आना।

b. ही = शिक्षा ही मानव को ऊँचा उठाती है।

c. यानी = यानी खाना तो था परंतु लजीज नहीं था।

d. भी = क्या कहा! तुम भी फिल्म देखने जा रहे हो।

e. तक = पिछले दो सालों से उसने मुझे चिट्ठी तक नहीं लिखी।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए-

a. वह अपनी छोटी- सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर एक फिट कर देता है।

b. पानवाला नया पान खा रहा था।

c. पानवाले ने साफ़ बता दिया था।

d. ड्राईवर ने जोर से ब्रेक मारा।

e. नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

f. हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया।

**उत्तर-**

a. उसके द्वारा अपनी छोटी- सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेम में से नेताजी की मूर्ति पर एक फिट कर दिया जाता है।

b. पानवाले से नया पान ख़ाया जा रहा था।

c. पानवाले द्वारा साफ़ बता दिया गया था।

d. ड्राईवर द्वारा जोर से ब्रेक मारा गया।

e. नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

f. हालदार साहब द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

**प्रश्न 3** नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए-

जैसे-अब चलते हैं।- अब चला जाए।

a. माँ बैठ नहीं सकती।

b. मैं देख नहीं सकती।

c. चलो, अब सोते हैं।

d. माँ रो भी नहीं सकती।

**उत्तर-**

a. माँ से बैठा नहीं जाता।

b. मुझसे देखा नहीं जाता।

c. चलो, अब सोया जाए।

d. माँ से रोया नहीं जाता।

STEP UP ACADEMY

# बालगोबिन भगत

**-रामवृक्ष बेनीपुरी**

## सार

बालगोबिन भगत मंझोले कद के गोर-चिट्टे आदमी थे। उनकी उम्र साठ वर्ष से उपर थी और बाल पक गए थे। वे लम्बी ढाढ़ी नही रखते थे और कपडे बिल्कुल कम पहनते थे। कमर में लंगोटी पहनते और सिर पर कबीरपंथियों की सी कनफटी टोपी। सर्दियों में ऊपर से कम्बल ओढ़ लेते। वे गृहस्थ होते हुई भी सही मायनों में साधू थे। माथे पर रामानंदी चन्दन का टीका और गले में तुलसी की जड़ों की बेडौल माला पहने रहते। उनका एक बेटा और पतोहू थे। वे कबीर को साहब मानते थे। किसी दूसरे की चीज़ नही छूटे और न बिना वजह झगड़ा करते। उनके पास खेती बाड़ी थी तथा साफ़-सुथरा मकान था। खेत से जो भी उपज होती, उसे पहले सिर पर लादकर कबीरपंथी मठ ले जाते और प्रसाद स्वरुप जो भी मिलता उसी से गुजर बसर करते।

वे कबीर के पद का बहुत मधुर गायन करते। आषाढ़ के दिनों में जब समूचा गाँव खेतों में काम कर रहा होता तब बालगोबिन पूरा शरीर कीचड़ में लपेटे खेत में रोपनी करते हुए अपने मधुर गानों को गाते। भादो की अंधियारी में उनकी खँजरी बजती थी, जब सारा संसार सोया होता तब उनका संगीत जागता था। कार्तिक मास में उनकी प्रभातियाँ शुरू हो जातीं। वे अहले सुबह नदी-स्नान को जाते और लौटकर पोखर के ऊँचे भिंडे पर अपनी खँजरी लेकर बैठ जाते और अपना गाना शुरू कर देते। गर्मियों में अपने घर के आँगन में आसन जमा बैठते। उनकी संगीत साधना का चरमोत्कर्ष तब देखा गया जिस दिन उनका इकलौता बेटा मरा। बड़े शौक से उन्होंने अपने बेटे कि शादी करवाई थी, बहू भी बड़ी सुशील थी। उन्होंने मरे हुए बेटे को आँगन में चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढक रखा था तथा उसपर कुछ फूल बिखरा पड़ा था। सामने बालगोबिन ज़मीन पर आसन जमाये गीत गाये जा रहे थे और बहू को रोने के बजाये उत्सव मनाने को कह रहे थे चूँकि उनके अनुसार आत्मा परमात्मा पास चली गयी है, ये आनंद की बात है। उन्होंने बेटे की चिता को आग भी बहू से दिलवाई। जैसे ही श्राद्ध की अवधि पूरी हुई, बहू के भाई को बुलाकर उसके दूसरा विवाह करने का आदेश दिया। बहू जाना नही चाहती थी, साथ रह उनकी सेवा करना चाहती थी परन्तु बालगोबिन के आगे उनकी एक ना चली उन्होंने दलील अगर वो नही गयी तो वे घर छोड़कर चले जायेंगे।

बालगोबिन भगत की मृत्यु भी उनके अनुरूप ही हुई। वे हर वर्ष गंगा स्नान को जाते। गंगा तीस कोस दूर पड़ती थी फिर भी वे पैदल ही जाते। घर से खाकर निकलते तथा वापस आकर खाते थे, बाकी दिन उपवास पर। किन्तु अब उनका शरीर बूढ़ा हो चूका था। इस बार लौटे तो तबीयत ख़राब हो चुकी थी किन्तु वी नेम-व्रत छोड़ने वाले ना थे, वही पुरानी दिनचर्या शुरू कर दी, लोगों ने मन किया परन्तु वे टस से मस ना हुए। एक दिन अंध्या में गाना गया परन्तु भोर में किसी ने गीत नही सुना, जाकर देखा तो पता चला बालगोबिन भगत नही रहे।

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** खेतीबाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

**उत्तर-** खेतीबाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत वेशभूषा से साधु नहीं लगते थे परंतु उनका व्यवहार साधु जैसा था। वे कबीर के भगत थे। कबीर के ही गीत गाते थे। उनके बताए मार्ग पर चलते थे। वे कभी भी झूठ नहीं बोलते थे। वे कभी भी किसी से निरर्थक बातों के लिए नहीं लड़ते थे परंतु गलत बातों का विरोध करने में संकोच नहीं करते थे। वे कभी भी किसी की चीज को नहीं छूते थे और न ही व्यवहार में लाते थे। उनकी सब चीज साहब (कबीर) की थी। उनके खेत में जो पैदावार होती थी उसे लेकर कबीर के मठ पर जाते थे। वहाँ से उन्हें जो प्रसाद के रूप में मिलता था उसी में अपने परिवार का निर्वाह करते थे। बालगोबिन भगत की इन्हीं चारित्रिक विशेषताओं के कारण लेखक उन्हें साधु मानता था।

**प्रश्न 2** भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

**उत्तर-** भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले छोड़कर नहीं जाना चाहती थी क्योंकि भगत के बुढ़ापे का वह एकमात्र सहारा थी। उसके चले जाने के बाद भगत की देखभाल करने वाला और कोई नहीं था।

**प्रश्न 3** भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

**उत्तर-** भगत ने अपने बेटे की मृत्यु को ईश्वर की इच्छा कहकर उसका सम्मान किया। उन्होंने उस मृत्यु को आत्मा-परमात्मा का शुभ मिलन माना। इसलिए उसे उत्सव की तरह मनाया। उन्होंने पुत्र के शव को सफेद वस्त्र से ढंककर उसे फूलों से सजाया। उसके सिरहाने दीपक रखा। फिर वे उसके सामने प्रभु-भक्ति के गीत गाने लगे। वे बँजड़ी की ताल पर तल्लीन होकर गाते चले गए। उन्होंने विलाप करती हुई पतोहू को भी उत्सव मनाने के लिए कहा।

**प्रश्न 4** भगत के व्यक्तित्व और उनकी बेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

**उत्तर-** बालगोबिन भगत मँझोलेकद के गोरे-चिट्टे व्यक्ति थे जिनकी आयु साठ वर्ष से अधिक थी। उनके बाल सफेद थे। वे दाढ़ी तो नहीं रखते थे पर उनके चेहरे पर सफेद बाल जगमगाते ही रहते थे। वे कपड़े बिलकुल कम पहनते थे। कमर में एक लंगोटी और सिर पर कबीर पंथियों जैसी कनफटी टोपी पहनते थे। जब सरदियां आतीं तो एक काली कमली ऊपर से ओढ़ लेते थे। माथे पर सदा चमकता रामानंदी चंदन, जो नाक के एक छोर से ही, औरतों के टीके की तरह शुरू होता था। अपने गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बाँधे रहते थे। उनमें साधुओं वाली सारी बातें थीं। वे कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीत गाते रहते थे और उन्हीं के आदेशों पर चलते थे। कभी झूठ नहीं बोलते थे और सदा खरा न्यवहार करते थे। हर बात साफ-साफ करते थे और किसी से व्यर्थ झगड़ा नहीं करते थे। किसी की चीज को तो कभी छूते नहीं थे। वह दूसरों के खेत में शौच तक के लिए नहीं बैठते थे। उनके खेत में जो कुछ पैदा होता उसे सिर पर रख कर चार कोस दूर कबीर पंथी मठ में ले जाते थे और प्रमाद रूप में कुछ वापिस ले आते थे।

**प्रश्न 5** बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

**उत्तर-** वृद्ध होते हुए भी उनकी स्फूर्ति में कोई कमी नहीं थी। सर्दी के मौसम में भी, भरे बादलों वाले भादों की आधी रात में भी वे भोर में सबसे पहले उठकर गाँव से दो मील दूर स्थित गंगा स्नान करने जाते थे, खेतों में अकेले ही खेती करते तथा गीत गाते रहते। विपरीत परिस्थिति होने के बाद भी उनकी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं आता था। एक वृद्ध में अपने कार्य के प्रति इतनी सजगता को देखकर लोग दंग रह जाते थे।

**प्रश्न 6** पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

**उत्तर-** बालगोबिन भगत प्रभु-भक्ति के मस्ती-भरे गीत गाया करते थे। उनके गानों में सच्ची टेर होती थी। उनका स्वर इतना मोहक, ऊँचा और आरोही होता था कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते थे। औरतें उस गीत को गुनगुनाने लगती थीं। खेतों में काम करने वाले किसानों के हाथ और पाँव एक विशेष लय में चलने लगते थे। उनके संगीत में जादुई प्रभाव था। वह मनमोहक प्रभाव सारे वातावरण पर छा जाता था। यहाँ तक कि घनघोर सर्दी और गर्मियों की उमस भी उन्हें डिगा नहीं पाती थी।

**प्रश्न 7** कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिये।

**उत्तर-** बालगोबिन भगत समाज में प्रचलित मान्यताओं को नहीं मानते थे। वे जाति-पाति में विश्वास नहीं रखते थे। सब लोगों को एक समझते थे। वे भी भगवान के निराकार रूप को मानते थे। भगत मृत्यु को भी आनंद मनाने का अवसर मानते हैं। जब उनके इकलौते बेटे की मृत्यु होती है तो वे अपने बेटे के मृत शरीर को फूलों से सजाते हैं और गीत गाते हैं। उनके अनुसार आज आत्मा रूपी प्रेमिका परमात्मा रूपी प्रेमी से मिल गई हैं उसके मिलन पर आनंद मनाना चाहिए अफसोस नहीं। भगत ने अपने बेटे का क्रिया-कर्म अपनी पुत्रवधू से कराया। उनकी पुत्रवधू ने ही अपने पति की चिता को अग्नि दी थी। उनकी जाति में विधवा के पुनर्विवाह को अनुचित नहीं मानते थे परंतु उनकी पुत्रवधू इसके लिए तैयार नहीं थी। वह उन्हीं के पास रहकर उनकी सेवा करना चाहती थी लेकिन उन्होंने उसे यौवन की ऊँच-नीच का ज्ञान करवाया और पुनर्विवाह के लिए तैयार किया। इससे हम कह सकते हैं कि बालगोबिन पुरानी सामाजिक मान्यताओं के समर्थक नहीं थे। वे अपने स्वार्थ की अपेक्षा दूसरों के हित का ध्यान रखते थे।

**प्रश्न 8** धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं? उस माहौल का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

**उत्तर-** आषाढ़ की रिमझिम फुहारों के बीच खेतों में धान की रोपाई चल रही थी। बादल से घिरे आसमान में, ठंडी हवाओं के चलने के समय अचानक खेतों में से किसी के मीठे स्वर गाते हुए सुनाई देते हैं। बालगोबिन भगत के कंठ से निकला मधुर संगीत वहाँ खेतों में काम कर रहे लोगों के मन में झंकार उत्पन्न करने लगा। स्वर के आरोह के साथ एक-एक शब्द जैसे स्वर्ग की ओर भेजा जा रहा हो। उनकी मधुर वाणी को सुनते ही लोग झूमने लगते हैं, स्त्रियाँ स्वयं को रोक नहीं पाती है तथा अपने आप उनके होंठ काँपकर गुनगुनाते लगते हैं। हलवाहों के पैर गीत के ताल के साथ उठने लगे। रोपाई करने वाले लोगों की उँगलियाँ गीत की स्वरलहरी के अनुरूप एक विशेष क्रम से चलने लगीं बालगोबिन भगत के गाने से संपूर्ण सृष्टि मिठास में खों जाती है।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई?

**उत्तर-** बालगोबिन भगत कबीर के प्रति असीम श्रद्धा रखते थे। उन्होंने अपनी श्रद्धा को निम्न रूपों में व्यक्त किया-

उन्होंने स्वयं को कबीर-पंथ के प्रति समर्पित कर दिया। वे अपना जीवन कबीर के आदेशों पर चलाते थे। कबीर ने गृहस्थी करते हुए संसार के आकर्षणों से दूर रहने की सलाह दी थी। बालगोबिन भगत ने भी यही किया। उन्होंने खेतीबारी करते हुए कभी लोभ-लालच, स्वार्थ या आडंबर-भरा जीवन नहीं जिया। जैसे कबीर अपने व्यवहार में खरे थे, उसी प्रकार बालगोबिन भगत भी व्यवहार में खरे रहे।

भगत जी ने अपनी फसलों को भी ईश्वर की संपत्ति माना। वे फसलों को कबीरमठ में अर्पित करके प्रसाद रूप में पाई फसलों का भोग करते थे।

कबीर ने नर-नारी की समानता पर बल दिया। बाहरी आडंबरों पर चोट की। बालगोबिन भगत ने भी कबीर के आदेशानुसार अपनी आत्मा की आवाज़ पर व्यवहार किया। उन्होंने वही किया, जो उन्हें उचित और हितकारी लगा।।

कबीर मनुष्य-शरीर को नश्वर मानते थे। वे जीवन को प्रभु-भक्ति में लगाने की सीख देते थे। बालगोबिन भगत ने उनके इन आदेशों को पूरी तरह माना। उन्होंने अपने पुत्र की मृत्यु को भी उत्सव में बदल दिया। वे अंत तक मस्ती-भरे गीत गाते रहे।

**प्रश्न 2** आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?

**उत्तर-** भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के कई कारण रहे होंगे जैसे कि भगत समाज में प्रचलित रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। वे भगवान के निराकार रूप को मानते थे जिसमें मनुष्य के अंत समय में आत्मा से परमात्मा का मिलन होता है। वे गृहस्थी होते हुए भी व्यवहार से साधु थे। वे सब चीजों की प्राप्ति में भगवान को सहायक मानते थे। जिन बातों को भगत मानते थे वही बातें कबीर जी ने अपनी वाणी में कही थीं इसलिए बालगोबिन भगत की कबीर जी में श्रद्धा थी।

**प्रश्न 3** गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है?

**उत्तर-** भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ के गाँव कृषि पर आधारित हैं। वर्षा भी आषाढ़ मास में ही शुरू होती है। आषाढ़ की रिमझिम बारिश में भगत जी अपने मधुर गीतों को गुनगुनाकर खेती करते हैं। उनके इन गीतों के प्रभाव से संपूर्ण सृष्टि रम जाती है, स्त्रियाँ भी इससे प्रभावित होकर गाने लगती हैं। बच्चे भी वर्षा का आनन्द लेते हैं। किसान भी अच्छी फसल की आशा में हर्ष से भर उठते हैं। इस लिए गाँव का परिवेश उल्लास से भर जाता है।

**प्रश्न 4** ऊपर की तसवीर से यह नहीं माना जाए कि बालगोबिन भगत साधु थे।'' क्या 'साधु' की पहचान पहनावे के आधार पर की जानी चाहिए? आप किन आधारों पर यह सुनिश्चित करेंगे कि अमुक व्यक्ति 'साधु' है?

**उत्तर-** साधु की पहचान उसके पहनावे से भी होती है। साधु व्यक्ति अगर संसारी आकर्षणों से बँधा नहीं है तो वह सुंदर पहनावे की ओर ध्यान नहीं देता। वह कम-से-कम कपड़े पहनता है। प्रायः वह धोती, कंबल जैसे बिना सिले कपड़े पहनता है और सादगी से रहता है। परंतु साधु की सच्ची पहचान ये कपड़े नहीं हैं। बहुत से ढोंगी लोग साधुओं का वेश धारण करके संसार के सुखों का भोग करते हैं।

मेरे विचार से साधु की सच्ची पहचान उसके व्यवहार से होती है। सच्चा साधु अपना ध्यान संसार की ओर नहीं, प्रभु-भक्ति की ओर लगाता है। वह व्यवहार में सच्चा, सादा, आडंबरहीन, खरा और साफ़ रहता है। वह किसी से झगड़ा मोल नहीं लेता। कभी किसी का अधिकार नहीं छीनता। वह अपनी कमाई को भी प्रभु-चरणों में अर्पित कर देता है।

**प्रश्न 5** मोह और प्रेम में अंतर होता है। भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर आप इस कथन को सच सिद्ध करेंगे?

**उत्तर-** मोह और प्रेम में अंतर होता है। भगत के एक ही बेटा था। वह बेटा भी दिमाग से सुस्त था अर्थात् उसका दिमाग कमज़ोर था। भगत ने उसकी परवरिश बहुत प्यार से की थी। भगत के अनुसार कम दिमाग वालों को अधिक प्यार और देखभाल की आवश्यकता होती है। उन्होंने उसकी शादी की। बेटे की बहू भी सुशील और सुघड़ थी। एक दिन बेटा मर गया। भगत ने बेटे के मोह में पड़कर शोक नहीं मनाया। उन्होंने तो उसकी मृत्यु को आनंद मनाने का अवसर बताया। वे शरीर के मोह में नहीं थे। वे तो मनुष्य की आत्मा से प्रेम करते थे और वह प्रेमिका रूपी आत्मा तो शरीर से निकलकर अपने प्रेमी रूपी परमात्मा से मिल गई है। इसलिए उन्होंने उसके मृत शरीर का श्रृंगार किया और मिलन के गीत गाए। भगत ने मृत्यु के सच को जान लिया था इसीलिए वे अपने बेटे के मोह में नहीं पड़े। उन्हें उस समय भो परमात्मा से प्रेम की बातें याद रही थीं। इसीलिए उन्होंने अपनी पुत्रवधू को भी शोक मनाने से मना कर दिया था।

## भाषा-अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** इस पाठ में आए कोई दस क्रियाविशेषण छाँटकर लिखिए और उनके भेद भी बताइए।

**उत्तर-** पाठ से उद्धृत क्रियाविशेषण-

1. गाँव से **दो मील** दूर।

   दो मील - क्रिया विशेषण
2. पोखरे के **ऊँचें भिंडे** पर अपनी खंजरी लेकर जा बैठते।

   ऊँचे भिंडे - क्रिया विशेषण
3. उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर **लगातार** चल रही थी।

   लगातार - क्रिया विशेषण
4. कितनी **उमस भरी** शाम है।

   उमस भरी - क्रिया विशेषण
5. **ठंडी पुरवाई** चल रही थी।

   ठंडी पुरवाई - क्रिया विशेषण
6. उनकी खँजड़ी **डिमक-डिमक** बज रही है।

   डिमक-डिमक - क्रिया विशेषण
7. कपड़े **बिल्कुल कम** पहनते।

   बिल्कुल कम - क्रिया विशेषण
8. लोगों को **कुतुहल** होता।

   कुतुहल - क्रिया विशेषण
9. समूचा गाँव **खेतों में उतर** पड़ा है।

   खेतों में - क्रिया विशेषण
10. एक अच्छा **साफ़-सुथरा** मकान भी था।

    साफ़-सुथरा - क्रिया विशेषण

# लखनवी अंदाज़

-यशपाल

## सार

लेखक को पास में ही कहीं जाना था। लेखक ने यह सोचकर सेकंड क्लास का टिकट लिया की उसमे भीड़ कम होती है, वे आराम से खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखते हुए किसी नए कहानी के बारे में सोच सकेंगे। पैसेंजर ट्रेन खुलने को थी। लेखक दौड़कर एक डिब्बे में चढ़े परन्तु अनुमान के विपरीत उन्हें डिब्बा खाली नही मिला। डिब्बे में पहले से ही लखनऊ की नबाबी नस्ल के एक सज्जन पालथी मारे बैठे थे, उनके सामने दो ताजे चिकने खीरे तौलिये पर रखे थे। लेखक का अचानक चढ़ जाना उस सज्जन को अच्छा नही लगा। उन्होंने लेखक से मिलने में कोई दिलचस्पी नही दिखाई। लेखक को लगा शायद नबाब ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए लिया है ताकि वे अकेले यात्रा कर सकें परन्तु अब उन्हें ये बिल्कुल अच्छा नही लग रहा था की कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे। उन्होंने शायद खीरा भी अकेले सफर में वक़्त काटने के लिए ख़रीदा होगा परन्तु अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खायें। नबाब साहब खिड़की से बाहर देख रहे थे परन्तु लगातार कनखियों से लेखक की ओर देख रहे थे।

अचानक ही नबाब साहब ने लेखक को सम्बोधित करते हुए खीरे का लुत्फ़ उठाने को कहा परन्तु लेखक ने शुक्रिया करते हुए मना कर दिया। नबाब ने बहुत ढंग से खीरे को धोकर छिले, काटे और उसमे जीरा, नमक-मिर्च बुरककर तौलिये पर सजाते हुए पुनः लेखक से खाने को कहा किन्तु वे एक बार मना कर चुके थे इसलिए आत्मसम्मान बनाये रखने के लिए दूसरी बार पेट ख़राब होने का बहाना बनाया। लेखक ने मन ही मन सोचा कि मियाँ रईस बनते हैं लेकिन लोगों की नजर से बच सकने के ख्याल में अपनी असलियत पर उतर आयें हैं। नबाब साहब खीरे की एक फाँक को उठाकर होठों तक ले गए, उसको सूँघा। खीरे की स्वाद का आनंद में उनकी पलकें मूँद गयीं। मुंह में आये पानी का घूँट गले से उतर गया, तब नबाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। इसी प्रकार एक-एक करके फाँक को उठाकर सूँघते और फेंकते गए। सारे फाँको को फेकने के बाद उन्होंने तौलिये से हाथ और होठों को पोछा। फिर गर्व से लेखक की ओर देखा और इस नायब इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक ने सोचा की खीरा इस्तेमाल करने से क्या पेट भर सकता है तभी नबाब साहब ने डकार ले ली और बोले खीरा होता है लजीज पर पेट पर बोझ डाल देता है। यह सुनकर लेखक ने सोचा की जब खीरे के गंध से पेट भर जाने की डकार आ जाती है तो बिना विचार, घटना और पात्रों के इच्छा मात्र से नई कहानी बन सकती है।

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

**उत्तर-** लेखक को डिब्बे में आया देखकर नवाब साहब की आँखों में असंतोष छा गया। ऐसे लगा मानो लेखक के आने से उनके एकांत में बाधा पड़ गई हो। उन्होंने लेखक से कोई बातचीत नहीं की। उनकी तरफ़ देखा भी नहीं। वे खिड़की के बाहर देखने का नाटक करने लगे। साथ ही डिब्बे की स्थिति पर गौर करने लगे। इससे लेखक को पता चल गया कि नवाब साहब उनसे बातचीत करने को उत्सुक नहीं हैं।

**प्रश्न 2** नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंतत: सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

**उत्तर-** लेखक को डिब्बे में आया देखकर नवाब साहब की आँखों में असंतोष छा गया। ऐसे लगा मानो लेखक के आने से उनके एकांत में बाधा पड़ गई हो। उन्होंने लेखक से कोई बातचीत नहीं की। उनकी तरफ़ देखा भी नहीं। वे खिड़की के बाहर देखने का नाटक करने लगे। साथ ही डिब्बे की स्थिति पर गौर करने लगे। इससे लेखक को पता चल गया कि नवाब साहब उनसे बातचीत करने को उत्सुक नहीं हैं।

**प्रश्न 3** बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

**उत्तर-** हम लेखक यशपाल के विचारों से पूरी तरह सहमत हैं। किसी भी कहानी की रचना उसके आवश्यक तत्वों - कथावस्तु, घटना, पात्र आदि के बिना संभव नहीं होती। घटना तथा कथावस्तु कहानी को आगे बढ़ाते हैं, पात्रों द्वारा संवाद कहे जाते हैं। कहानी में कोई न कोई विचार, बात या उद्देश्य भी अवश्य होना चाहिए। ये कहानी के आवश्यक तत्व हैं।

**प्रश्न 4** आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे? और क्यों?

**उत्तर-** हवाई भोज

या

खयाली भोजन

क्योंकी- इस निबंध में मुख्य घटना नवाब साहब की है जो कल्पना से ही खीरे का स्वाद ले रहे हैं।

**प्रश्न 5**

a. नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

b. किन-किन चीज़ों का रसास्वादन करने के लिए आप किस प्रकार की तैयारी करते हैं?

**उत्तर-**

a. सेकेंड क्लास के एकांत डिब्बे में बैठे नवाब साहब ने खीरा खाने की इच्छा से दो ताज़े खीरे एक तौलिए पर रखे। सबसे पहले उन्होंने खीरे को खिड़की से बाहर निकालकर लोटे के पानी से धोया और तौलिए से साफ़ कर पानी सुखा लिया फिर जेब से चाकू निकाला। दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोद कर झाग निकाला। फिर खीरों को बहुत सावधानी से छीलकर फाँको पर बहुत कायदे से जीरा, नमक-मिर्च की सुर्वी बुरक दी। इसके बाद एक-एक करके उन फाँको को उठाया और उन्हें सूँघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया।

b. हम खीर का रसास्वादन करने के लिए उसे अच्छी तरह से एक कटोरी में परोसते हैं तथा उसके ऊपर काजू, किशमिश, बादाम और पिस्ता डालकर अच्छी तरह से उसे सजाते हैं और फिर उसका स्वाद लेते हैं।

**प्रश्न 6** खीरे के संबंध में नवाब साहब के व्यवहार को उनकी सनक कहा जा सकता है। आपने नवाबों की और भी सनकों और शौक के बारे में पढ़ा-सुना होगा।किसी एक के बारे में लिखिए।

**उत्तर-** पाठ में प्रस्तुत खीरे के प्रसंग द्वारा नवाब के दिखावटी ज़िंदगी का पता चलता है, इससे उनके सनकी व्यक्तित्व का ज़ान होता है। ऐसे कुछ और भी प्रसंग हैं-

1. नवाब अपनी शान और शौकत के लिए पैसे लुटाने से बाज़ नहीं आते हैं। फिर चाहे उनके घर में पैसों की तंगी ही क्यों न हो पर बाहर वे खूब पैसे लुटाते हैं।
2. नवाब नाच-गानों का शौक भी रखते हैं। वे मुजरों पर खूब पैसा लुटाते हैं।
3. अपनी झूठी समृद्धि को कायम रखने के लिए ये किसी से लड़ने से भी बाज़ नही आते हैं।
4. प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी 'पर्दा' में नवाबी शानो-शौकत का उल्लेख है। जिसमें एक नवाब अपने घर की इज़्ज़त कायम रखने के लिए पर्दे पर खर्च करता है भले ही उसे खाने तथा कपड़े की कमी होती है।

**प्रश्न 7** क्या सनक का कोई सकारात्मक रूप हो सकता है? यदि हाँ तो ऐसी सनकों का उल्लेख कीजिए।

**उत्तर-** हाँ, सनक का सकारात्मक रूप भी हो सकता है। प्रायः गाँधी, सुभाष, विवेकानंद, मदन मोहन मालवीय आदि महापुरुष भी सनकी हुए हैं। उन्हें जिस चीज़ की सनक सवार हो जाती है उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। कौन नहीं जानता कि गाँधी जी को अहिंसात्मक आंदोलनों की सनक थी। आंदोलन में जरा-सी भी हिंसा हुई तो वे आंदोलन वापस ले लेते थे। विवेकानंद को ईश्वर को जानने की सनक थी। वे जिस किसी संत-महात्मा से मिलते थे, उनसे पूछते- क्या आपने ईश्वर को देखा है। उनकी इसी सनक ने उन्हें ज़ानी बना दिया। वे रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आ गए। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1**

a. नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

b. किन-किन चीजों का रसास्वादन करने के लिए आप किस प्रकार की तैयारी करते हैं ?

**उत्तर-**

a. नवाब साहब ने सर्वप्रथम दो ताजे चिकने खीरे तौलिए पर रखे। इसके बाद वे खीरा खाने में सकुचाने लगे तथा लेखक से खीरा खाने के लिए पूछा। उन्होंने अपने खीरे धोए तथा तौलिए पर रखकर जेब से चाकू निकाला। खीरों के सिरों को चाकू से गोदकर झाग निकाला। तदोपरान्त फाकें काटकर तौलिए पर सजा लीं। फाँकों पर जीरा-मिर्च तथा नमक का मसाला डाला। खीरे की फाँक उठाकर सूंघी तथा एक फाँक खिड़की से बाहर फेंक दी। अन्ततः सभी फाँके गाड़ी की खिड़की से बाहर फेंक दी।

b. हम जिन-जिन चीजों का रसास्वादन करना चाहते हैं। उससे पहले चीज के गुण एवं स्वाद

के विषय में सोचते हैं। अच्छी चीजें खाने के लिए तो हमारे मुँह में पानी भर आता है। चीज खाने से पहले सर्वप्रथम हम अपने हाथ साफ करते हैं तदोपरान्त चीज का स्वाद लेते हैं।

**प्रश्न 2** खीरे के सम्बन्ध में नवाब साहब के व्यवहार को नकी सनक कहा जा सकता है। आपने नवाबों की और की सनकों और शौक के बारे में पढ़ा-सुना होगा। किसी एक के बारे में लिखिए।

**उत्तर-** पाठ में प्रस्तुत खीरे के प्रसंग द्वारा नवाब के दिखावटी ज़िंदगी का पता चलता है, इससे उनके सनकी व्यक्तित्व का ज्ञान होता है। ऐसे कुछ और भी प्रसंग हैं -

- नवाब अपनी शान और शौकत के लिए पैसे लुटाने से बाज़ नहीं आते हैं। फिर चाहे उनके घर में पैसों की तंगी ही क्यों न हो पर बाहर वे खूब पैसे लुटाते हैं।
- नवाब नाच-गानों का शौक भी रखते हैं। वे मुजरों पर खूब पैसा लुटाते हैं।
- अपनी झूठी समृद्धि को कायम रखने के लिए ये किसी से लड़ने से भी बाज़ नही आते हैं।
- प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी 'पर्दा' में नवाबी शानो-शौकत का उल्लेख है। जिसमें एक नवाब अपने घर की इज़्ज़त कायम रखने के लिए पर्दे पर खर्च करता है भले ही उसे खाने तथा कपड़े की कमी होती है।

**प्रश्न 3** क्या सनकका कोई सकारात्मक रूप हा सकता है? यदि हाँ तो ऐसी सनकों का उल्लेख कीजिए।

**उत्तर-** सनक का कोई सकारात्मक रूप नकारात्मकता क्योंकि सनक मन का एक अमूर्त भाव है।

## भाषा-अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियापद छाँटकर क्रिया-भेद भी लिखिए-

a. एक सफ़ेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे।
b. नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया।
c. ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है।
d. अकेले सफ़र का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे।
e. दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला।
f. नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की और देखा।
g. नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए।
h. जेब से चाकू निकाला।

**उत्तर-**

a. बैठे थे – अकर्मक क्रिया।
b. दिखाया - सकर्मक क्रिया।
c. आदत है - सकर्मक क्रिया।
d. खरीदे होंगे - सकर्मक क्रिया।
e. निकाला - सकर्मक क्रिया।
f. देखा - सकर्मक क्रिया।
g. लेट गए - अकर्मक क्रिया।
h. निकाला - सकर्मक क्रिया।

# एक कहानी यह भी

**-मन्नू भंडारी**

## सार

प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण तथ्यों को उभारा है। लेखिका का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव हुआ था परन्तु उनकी यादें अजमेर के ब्रह्मापुरी मोहल्ले के एक-दो मंजिला मकान में पिता के बिगड़ी हुई मनःस्थिति से शुरू हुई। आरम्भ में लेखिका के पिता इंदौर में रहते थे, वहाँ संपन्न तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। काँग्रेस से जुड़े होने के साथ वे समाज सेवा से भी जुड़े थे परन्तु किसी के द्वारा धोखा दिए जाने पर वे आर्थिक मुसीबत में फँस गए और अजमेर आ गए। अपने जमाने के अलग तरह के अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोष को पूरा करने बाद भी जब उन्हें धन नही मिला तो सकरात्मकता घटती चली गयी। वे बेहद क्रोधी, जिद्दी और शक्की हो गए, जब तब वे अपना गुस्सा लेखिका के बिन पढ़ी माँ पर उतारने के साथ-साथ अपने बच्चों पर भी उतारने लगे

पांच भाई-बहनों में लेखिका सबसे छोटी थीं। काम उम्र में उनकी बड़ी बहन की शादी होने के कारण लेखिका के पास ज्यादा उनकी यादें नही थीं। लेखिका काली थीं तथा उनकी बड़ी बहन सुशीला के गोरी होने के कारण पिता हमेशा उनकी तुलना लेखिका से किया करते तथा उन्हें नीचा दिखाते। इस हीनता की भावना ने उनमें विशेष बनने की लगन उत्पन्न की परन्तु लेखकीय उपलब्धियाँ मिलने पर भी वह इससे उबार नही पाई। बड़ी बहन के विवाह तथा भाइयों के पढ़ने के लिए बाहर जाने पर पिता का ध्यान लेखिका पर केंद्रित हुआ। पिता ने उन्हें रसोई में समय ख़राब न कर देश दुनिया का हाल जानने के लिए प्रेरित किया। घर में जब कभी विभिन्न राजनितिक पार्टियों के जमावड़े होते और बहस होती तो लेखिका के पिता उन्हें उस बहस में बैठाते जिससे उनके अंदर देशभक्ति की भावना जगी।

सन 1945 में सावित्री गर्ल्स कॉलेज के प्रथम वर्ष में हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका में न केवल हिंदी साहित्य के प्रति रूचि जगाई बल्कि साहित्य के सच को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित भी किया। सन 1946-1947 के दिनों में लेखिका ने घर से बाहर निकलकर देशसेवा में सक्रीय भूमिका निभायी। हड़तालों, जुलूसों व भाषणों में भाग लेने से छात्राएँ भी प्रभावित होकर कॉलेजों का बहिष्कार करने लगीं। प्रिंसिपल ने कॉलेज से निकाल जाने से पहले पिता को बुलाकर शिकायत की तो वे क्रोधित होने के बजाय लेखिका के नेतृत्व शक्ति को देखकर गद्गद हो गए। एक बार जब पिता ने अजमेर के वयस्त चौराहे पर बेटी के भाषण की बात अपने पिछड़े मित्र से सुनी जिसने उन्हें मान-मर्यादा का लिहाज करने को कहा तो उनके पिता गुस्सा हो गए परन्तु रात को जब यही बात उनके एक और अभिन्न मित्र ने लेखिका की बड़ाई करते हुए कहा जिससे लेखिका के पिता ने गौरवान्वित महसूस किया।

सन 1947 के मई महीने में कॉलेज ने लेखिका समेत दो-तीन छात्राओं का प्रवेश थर्ड ईयर में हुड़दंग की कारण निषिद्ध कर दिया परन्तु लेखिका और उनके मित्रों ने बाहर भी इतना हुड़दंग मचाया की आखिर उन्हें प्रवेश लेना ही पड़ा। यह ख़ुशी लेखिका को उतना खुश न कर पायी जितना आजादी की ख़ुशी ने दी। उन्होंने इसे शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया है।

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

**उत्तर-** लेखिका के व्यक्तित्व पर दो लोगों का विशेष प्रभाव पड़ा-

1. पिता का प्रभाव- लेखिका के व्यक्तित्व पर पिताजी का अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा, वह रंग-रूप के कारण हीन भावना से ग्रस्त थी क्योंकि गौर वर्ण के कारण बड़ी बहन सुशीला को उनके पिता ज्यादा मानते थे, इसी के परिमाण स्वरुप उनमें आत्मविश्वास की कमी हो गई थी। पिता के द्वारा ही उनमें देश प्रेम की भावना जाग्रत हुई थी। पिता के समान कभी अपनी उपलब्धियों पर विश्वास नहीं कर पाई।
2. शिक्षिका शीला अग्रवाल का प्रभाव- शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने एक ओर लेखिका के खोए आत्मविश्वास को पुनः लौटाया तो दूसरी ओर देशप्रेम की अंकुरित भावना को अभिव्यक्ति का उचित माहौल प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप लेखिका खुलकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने लगी। शीला अग्रवाल ने लेखिका को अच्छा साहित्य चुन कर पढ़ना सिखाया।

**प्रश्न 2** इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

**उत्तर-** भटियारखाने के दो अर्थ हैं-

1. जहाँ हमेशा भट्टी जलती रहती है, अर्थात् चूल्हा चढ़ा रहता है।
2. जहाँ बहुत शोर-गुल रहता है। भटियारे का घर। कमीने और असभ्य लोगों का जमघट।

पाठ के संदर्भ में यह शब्द पहले अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। रसोईघर में हमेशा खाना-पकाना चलता रहता है। पिताजी अपने बच्चों को घर-गृहस्थी या चूल्हे-चौके तक सीमित नहीं रखना चाहते थे। वे उन्हें जागरूक नागरिक बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने रसोईघर की उपेक्षा करते हुए भटियारखाना अर्थात् प्रतिभा को नष्ट करने वाला कह दिया है।

**प्रश्न 3** वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर

**उत्तर-** जब पहली बार लेखिका के कॉलेज से उनके पिता के पास शिकायत आई तो लेखिका बहुत डरी हुई थी। उनका अनुमान था कि उनके पिता गुस्से में उनका बुरा हाल करेंगे। लेकिन ठीक इसके उलट उनके पिता ने उन्हें शाबाशी दी। यह सुनकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ और न अपने कानों पर।

**प्रश्न 4** लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-** लेखिका के अपने पिता के साथ अक्सर वैचारिक टकराहट हुआ करती थी-

1. लेखिका के पिता यद्यपि स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी नहीं थे परन्तु वे स्त्रियों का दायरा चार दीवारी के अंदर ही सीमित रखना चाहते थे। परन्तु लेखिका खुले विचारों की महिला थी।
2. लेखिका के पिता लड़की की शादी जल्दी करने के पक्ष में थे। लेकिन लेखिका जीवन की आकाँक्षाओं को पूर्ण करना चाहती थी।
3. लेखिका का स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर भाषण देना उनके पिता को पसंद नहीं था।

4. पिताजी का लेखिका की माँ के साथ अच्छा व्यवहार नहीं था। स्त्री के प्रति ऐसे व्यवहार को लेखिका अनुचित समझती थी।
5. बचपन के दिनों में लेखिका के काले रंग रुप को लेकर उनके पिता का मन उनकी तरफ़ से उदासीन रहा करता था।

**प्रश्न 5** इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

**उत्तर-** सन् 1942 से 1947 तक का समय स्वतंत्रता-आंदोलन का समय था। इन दिनों पूरे देश में देशभक्ति का ज्वार पूरे यौवन पर था। हर नगर में हड़तालें हो रही थीं। प्रभात-फेरियाँ हो रही थीं। जलसे हो रहे थे। जुलूस निकाले जा रहे थे।

युवक-युवतियाँ सड़कों पर घूम-घूमकर नारे लगा रहे थे। सारी मर्यादाएँ टूट रही थीं। घर के बंधन, स्कूल-कॉलेज के नियम-सबकी धज्जियाँ उड़ रही थीं। लड़कियाँ भी लड़कों के बीच खुलकर सामने आ रही थीं।

ऐसे वातावरण में लेखिका मन्नू भंडारी ने अपूर्व उत्साह दिखाया। उसने पिता की इच्छा के विरुद्ध सड़कों पर घूम-घूमकर नारेबाजी वो, भाषण दिए, हड़तालें कीं, जलसे-जुलूस किए। उसके इशारे पर पूरा कॉलेज कक्षाएँ छोड़कर आंदोलन में साथ हो लेता था। हम कह सकते हैं कि वे स्वतंत्रता सेनानी थीं।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली डंडा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल भी खेले किंतु लड़की होने के कारण उनका दायरा घर की चारदीवारी तक सीमित था। क्या आज भी लड़कियों के लिए स्थितियाँ ऐसी ही हैं या बदल गई हैं, अपने परिवेश के आधार पर लिखिए?

**उत्तर-** अपने समय में लेखिका को खेलने तथा पढ़ने की आज़ादी तो थी, लेकिन अपने पिता द्वारा निर्धारित गाँव की सीमा तक ही, परन्तु आज स्थिति बदल गई है। आज लड़कियाँ एक शहर से दूसरे शहर शिक्षा ग्रहण करने तथा खेलने जाती हैं। ऐसा केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आज भारतीय महिलाएँ विदेशों तक, अंतरिक्ष में जाकर दुनियाँ में अपने देश का नाम रोशन कर रही हैं। परन्तु इसके साथ दूसरा पहलू यह भी है, कि आज भी हमारे देश में कुछ लोग स्त्री स्वतंत्रता के पक्ष-धर नहीं हैं।

**प्रश्न 2** मनुष्य के जीवन में आस-पड़ोस का बहुत महत्व होता है। परंतु महानगरों में रहने वाले लोग प्राय: 'पड़ोस कल्चर' से वंचित रह जाते हैं। इस बारे में अपने विचार लिखिए।

**उत्तर-** पास-पड़ोस मनुष्य की वास्तविक शक्ति होती है। आज घर के स्त्री-पुरुष दोनों ही कामकाज के सिलसिले में ज्यादा से ज्यादा समय घर से बाहर रहते हैं इसलिए लोगों के पास समय का अभाव होता है। मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों का क्षेत्र सीमित होता जा रहा है, मनुष्य आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है। यही कारण है कि आज के समाज में 'पड़ोस कल्चर' लगभग लुप्त होता जा रहा है। किसी के पास इतना समय नहीं है कि वह अपने पड़ोसियों से मिलकर बात-चीत करें, उनके सुख-दु:ख को बाँटें, या तीज त्योहार साथ मनाएँ।

**प्रश्न 3** लेखिका द्वारा पढ़े गए उपन्यासों की सूची बनाइए और उन उपन्यासों को अपने पुस्तकालय में खोजिए।

**उत्तर-** मनु भंडारी के द्वारा पढ़े गए कुछ चर्चित उपन्यास-

- सुनीता।
- शेखर: एक जीवनी।

- नदी के द्वीप।
- त्यागपत्र।
- चित्रलेखा।

**प्रश्न 4** आप भी अपने दैनिक अनुभवों को डायरी में लिखिए।

**उत्तर-** 15 सितम्बर 2014

आज हमारी परीक्षा का अंतिम दिन था इसलिए मन सुबह से अति प्रसन्न था। मैं और मेरा छोटा भाई विद्यालय की ओर रोज की भाँति निकल पड़े। आधे रास्ते तक पहुँचे ही थे कि एक कुत्ते के करहाने की आवाज सुनाई पड़ी। हम दोनों उसके पास पहुँचे तो देखा उसके पैर से खून बह रहा था। मेरा मन उसे उस हालत में छोड़ने कतई तैयार नहीं हुआ। भाई को मैंने विद्यालय जाकर प्राचार्य से स्थिति से अवगत कराने के लिए कहा तथा उसे मैं फ़ौरन घर ले गया और माँ के हाथों सौप दिया। माँ ने उसकी मरहम-पट्टी की। पिताजी ने जल्दी से स्कूटर से मुझे विद्यालय पहुँचा दिया और प्राचार्य की अनुमति से मुझे परीक्षा में बैठने दिया गया और अतिरिक्त समय भी दिया गया। उस दिन से वह कुत्ता हमारे घर का सदस्य बन गया।

## भाषा-अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** इस आत्मकथ्य में मुहावरों का प्रयोग करके लेखिका ने रचना को रोचक बनाया है। रेखांकित मुहावरों को ध्यान में रखकर कुछ और वाक्य बनाएँ-

a. इस बीच पिता जी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिता जी की लू उतारी।

b. वे तो आग लगाकर चले गए और पिता जी सारे दिन भभकते रहे।

c. बस अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ।

d. पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला हो गए।

**उत्तर-**

a. **लू उतारी-** होमवर्क न करने से शिक्षक ने अच्छी तरह से छात्र की **लू उतारी।**

b. **आगलगाना-** कुछ मित्र ऐसे भी होते हैं जो घर में **आग लगाने** का काम करते हैं।

c. **थू-थू करना-** तुम्हारे इस तरह से ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने से पड़ोसी **थू-थू करेंगे।**

d. **आग-बबूला-** मेरे स्कूल नहीं जाने से पिताजी **आग-बबूला** हो गए।

# नौबतखाने में इबादत

**-यतीन्द्र मिश्र**

## सारांश

अम्मीरुद्दीन उर्फ़ बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म बिहार में डुमराँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। इनके बड़े भाई का नाम शम्सुद्दीन था जो उम्र में उनसे तीन वर्ष बड़े थे। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम पैग़म्बरबख़्श खाँ तथा माँ मिट्ठन थीं। पांच-छह वर्ष होने पर वे डुमराँव छोड़कर अपने ननिहाल काशी आ गए। वहां उनके मामा सादिक हुसैन और अलीबक्श तथा नाना रहते थे जो की जाने माने शहनाईवादक थे। वे लोग बाला जी के मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाकर अपनी दिनचर्या का आरम्भ करते थे। वे विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने का काम करते थे।

ननिहाल में 14 साल की उम्र से ही बिस्मिल्लाह खाँ ने बाला जी के मंदिर में रियाज़ करना शुरू कर दिया। उन्होंने वहां जाने का ऐसा रास्ता चुना जहाँ उन्हें रसूलन और बतूलन बाई की गीत सुनाई देती जिससे उन्हें ख़ुशी मिलती। अपने साक्षात्कारों में भी इन्होनें स्वीकार किया की बचपन में इनलोगों ने इनका संगीत के प्रति प्रेम पैदा करने में भूमिका निभायी। भले ही वैदिक इतिहास में शहनाई का जिक्र ना मिलता हो परन्तु मंगल कार्यों में इसका उपयोग प्रतिष्ठित करता है अर्थात यह मंगल ध्वनि का सम्पूरक है। बिस्मिल्लाह खाँ ने अस्सी वर्ष के हो जाने के वाबजूद हमेशा पाँचो वक्त वाली नमाज में शहनाई के सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में बिताया। मुहर्रम के दसों दिन बिस्मिल्लाह खाँ अपने पूरे खानदान के साथ ना तो शहनाई बजाते थे और ना ही किसी कार्यक्रम में भाग लेते। आठवीं तारीख को वे शहनाई बजाते और दालमंडी से फातमान की आठ किलोमीटर की दुरी तक भींगी आँखों से नोहा बजाकर निकलते हुए सबकी आँखों को भिंगो देते।

फुरसत के समय वे उस्ताद और अब्बाजान को काम याद कर अपनी पसंद की सुलोचना गीताबाली जैसी अभिनेत्रियों की देखी फिल्मों को याद करते थे। वे अपनी बचपन की घटनाओं को याद करते की कैसे वे छुपकर नाना को शहनाई बजाते हुए सुनाता तथा बाद में उनकी 'मीठी शहनाई' को ढूंढने के लिए एक-एक कर शहनाई को फेंकते और कभी मामा की शहनाई पर पत्थर पटककर दाद देते। बचपन के समय वे फिल्मों के बड़े शौक़ीन थे, उस समय थर्ड क्लास का टिकट छः पैसे का मिलता था जिसे पूरा करने के लिए वो दो पैसे मामा से, दो पैसे मौसी से और दो पैसे नाना से लेते थे फिर बाद में घंटों लाइन में लगकर टिकट खरीदते थे। बाद में वे अपनी पसंदीदा अभिनेत्री सुलोचना की फिल्मों को देखने के लिए वे बालाजी मंदिर पर शहनाई बजाकर कमाई करते। वे सुलोचना की कोई फिल्म ना छोड़ते तथा कुलसुम की देसी घी वाली दूकान पर कचौड़ी खाना ना भूलते।

काशी के संगीत आयोजन में वे अवश्य भाग लेते। यह आयोजन कई वर्षों से संकटमोचन मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर हो रहा था जिसमे शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायन-वादन की सभा होती है। बिस्मिल्लाह खाँ जब काशी के बाहर भी रहते तब भी वो विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की तरफ मुँह करके बैठते और अपनी शहनाई भी उस तरफ घुमा दिया करते। गंगा, काशी और शहनाई उनका जीवन थे। काशी का स्थान सदा से ही विशिष्ट रहा है, यह संस्कृति की पाठशाला है। बिस्मिल्लाह खाँ के शहनाई के धुनों की दुनिया दीवानी हो जाती थी।

सन 2000 के बाद पक्का महाल से मलाई-बर्फ वालों के जाने से, देसी घी तथा कचौड़ी-जलेबी में पहले जैसा स्वाद ना होने के कारण उन्हें इनकी कमी खलती। वे नए गायकों और वादकों में घटती आस्था और रियाज़ों का महत्व के प्रति चिंतित थे। बिस्मिल्लाह खाँ हमेशा से दो कौमों की एकता और भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे। नब्बे वर्ष की उम्र में 21 अगस्त 2006 को उन्हने दुनिया से विदा ली । वे भारतरत्न, अनेकों विश्वविद्यालय की मानद उपाधियाँ व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा पद्मविभूषण जैसे पुरस्कारों से जाने नहीं जाएँगे बल्कि अपने अजेय संगीतयात्रा के नायक के रूप में पहचाने जाएँगे।

## प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

**उत्तर-** शहनाई की दुनिया में डुमराँव को दो कारणों से याद किया जाता है-

1. डुमराँव प्रसिद्ध शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मभूमि है।
2. यहाँ सोन नदी के किनारे वह नरकट घास मिलती है जिसकी रीड का उपयोग शहनाई बजाने के लिए किया जाता है।

**प्रश्न 2** बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

**उत्तर-** शहनाई ऐसा वाद्य है, जिसे मांगलिक अवसरों पर ही बजाया जाता है। "उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ" शहनाई वादन के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान रखते हैं। इन्हीं कारणों की वजह से बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा जाता है।

**प्रश्न 3** सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

**उत्तर-** अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिसमें नाड़ी (नरकट या रीड) होती है, को 'सुषिर-वाद्य' कहते हैं। शहनाई को भी फूँककर बजाया जाता है। यह अन्य सभी सुषिर वाद्यों में श्रेष्ठ है। इसलिए शहनाई को 'सुषिर-वाद्यों' में शाह' का उपाधि दी गई है।

**प्रश्न 4** आशय स्पष्ट कीजिए-

'फटा सुर न बख्शे। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।'

'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'

**उत्तर-** शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ खुदा से विनती करते हैं- हे खुदा! तू मुझे कभी फटा हुआ सुर न देना। शहनाई का बेसुरा स्वर न देना। लुंगिया अगर फटी रह गई तो कोई बात नहीं। आज यह फटी है तो कल सिल जाएगी। आज गरीबी है तो कल समृद्धि भी आ जाएगी। परंतु भूलकर भी बेसुरा राग न देना, शहनाई की कला में कमी न रखना।

बिस्मिल्ला खाँ खुदा से विनती करते हैं-हे खुदा! तू मुझे ऐसा सच्चा और मार्मिक सुर प्रदान कर जिसे सुनकर श्रोताओं की आँखों से आँसू ढुलक पड़े। जिसमें हृदय को गदगद करने की, तरल करने की, करुणाई करने की शक्ति हो।

**प्रश्न 5** काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

**उत्तर-** काशी से बहुत सी परंपराएँ लुप्त हो गई है। संगीत, साहित्य और अदब की परंपराओं में धीरे-धीरे कमी आ रही है। अब काशी से धर्म की प्रतिष्ठा भी लुप्त होती जा रही है। वहाँ हिंदु और मुसलमानों में पहले जैसा भाईचारा नहीं है। पहले काशी खानपान की चीज़ों के लिए विख्यात हुआ करता था। परन्तु अब उनमें परिवर्तन आ रहा हैं। काशी की इन सभी लुप्त होती परंपराओं के कारण बिस्मिल्ला खाँ दु:खी थे।

**प्रश्न 6** पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि–

a. बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

b. वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इनसान थे।

**उत्तर-**

a. उनका धर्म मुस्लिम था। वे अपने मजहब के प्रति समर्पित थे। पाँचों वक्त की नमाज़ अदा करते थे। मुहर्रम के महीने में आठवी तारीख के दिन खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते थे व दालमंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौहा बजाते जाते थे।

इसी तरह इनकी श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी और बालाजी मंदिर के प्रति भी थी। वे जब भी काशी से बाहर रहते थे। तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे और उसी ओर शहनाई बजाते थे। वे अक्सर कहा करते थे कि काशी छोड़कर कहाँ जाए, गंगा मइया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, बालाजी का मंदिर यहाँ। मरते दम तक न यह शहनाई छूटेगी न काशी। इसलिए हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

b. बिस्मिल्ला खाँ एक सच्चे इंसान थे। वे धर्मों से अधिक मानवता, आपसी प्रेम तथा भाईचारे को महत्त्व देते थे। वे हिंदु तथा मुस्लिम धर्म दोनों का ही सम्मान करते थे। भारत रत्न से सम्मानित होने पर भी उनमें लेश मात्र भी घमंड नहीं था। वे भेदभाव और बनावटीपन से दूर रहते थे। दौलत से अधिक सुर उनके लिए ज़रुरी था।

**प्रश्न 7** बिस्मिल्ला ख़ाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत राधना को समृद्ध किया?

**उत्तर-** बिस्मिल्ला खाँ के संगीत-जीवन को निम्नलिखित लोगों ने समृद्ध किया-

रसूलनबाई, बतूलनबाई, मामूजान अलीबख्श खाँ, नाना, कुलसुम हलवाइन, अभिनेत्री सुलोचना।

रसूलनबाई और बतूलनबाई की गायिकी ने उन्हें संगीत की ओर खींचा। उनके द्वारा गाई गई ठुमरी, टप्पे और दादरा सुनकर उनके मन में संगीत की ललक जागी। वे उनकी प्रारंभिक प्रेरिकाएँ थीं। बाद में वे अपने नाना को मधुर स्वर में शहनाई बजाते देखते थे तो उनकी शहनाई को खोजा करते थे। मामूजान अलीबख्श जब शहनाई बजाते-बजाते सम पर आते थे तो बिस्मिल्ला खाँ धड़ से एक पत्थर जमीन में मारा करते थे। इस प्रकार उन्होंने संगीत में दाद देना सीखा।

बिस्मिल्ला खाँ कुलसुम की कचौड़ी तलने की कला में भी संगीत का आरोह-अवरोह देखा करते थे। अभिनेत्री सुलोचना की फिल्मों ने भी उन्हें समृद्ध किया।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

**उत्तर-** "बिस्मिल्ला खाँ" के व्यक्तित्व की निम्नलिखित बातें हमें प्रभावित करती हैं–

1. भारत रत्न की उपाधि मिलने के बाद भी उनमें घमंड कभी नहीं आया।
2. उनमें संगीत के प्रति सच्ची लगन तथा सच्चा प्रेम था।
3. वे अपनी मातृभूमि से सच्चा प्रेम करते थे।
4. वे एक सीधे-सादे तथा सच्चे इंसान थे।
5. ईश्वर के प्रति उनके मन में अगाध भक्ति थी।
6. मुस्लिम होने के बाद भी उन्होंने हिंदु धर्म का सम्मान किया तथा हिंदु-मुस्लिम एकता को कायम रखा।

**प्रश्न 2** मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-** मुहर्रम पर्व के साथ बिस्मिल्ला खाँ और शहनाई का सम्बन्ध बहुत गहरा है। मुहर्रम के महीने में शिया मुसलमान शोक मनाते थे। इसलिए पूरे दस दिनों तक उनके खानदान का कोई व्यक्ति न तो मुहर्रम के दिनों में शहनाई बजाता था और न ही संगीत के किसी कार्यक्रम में भाग लेते थे। आठवीं तारीख खाँ साहब के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती थी। इस दिन खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते और दालमंड़ी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौहा बजाते हुए जाते थे। इन दिनों कोई राग-रागिनी नहीं बजाई जाती थी। उनकी आँखें इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में नम रहती थीं।

**प्रश्न 3** बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे, तर्क सहित उत्तर दीजिए।

**उत्तर-** बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे। उन्होंने 80 वर्षों तक लगातार शहनाई बजाई। उनसे बढ़कर शहनाई बजाने वाला भारत-भर में अन्य कोई नहीं हुआ। फिर भी वे अंत तक खुदा से सच्चे सुर की माँग करते रहे। उन्हें अंत तक लगा रहा कि शायद अब भी खुदा उन्हें कोई सच्चा सुर देगा जिसे पाकर वे श्रोताओं की आँखों में आँसू ला देंगे। उन्होंने अपने को कभी पूर्ण नहीं माना। वे अपने पर झल्लाते भी थे कि क्यों उन्हें अब तक शहनाई को सही ढंग से बजाना नहीं आया। इससे पता चलता है कि वे सच्चे कला-उपासक थे। वे दो-चार राग गाकर उस्ताद नहीं हो गए। उन्होंने जीवन-भर अभ्यास-साधना जारी रखी।

## भाषा-अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित मिश्र वाक्यों के उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए-

a. यह जरूर है कि शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं।

b. रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।

c. रीड नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।

d. उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा।

e. हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है जिसकी गमक उसी में समाई है।

f. खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

**उत्तर-**

a. शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। (संज्ञा आश्रित उपवाक्य)

b. जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। (विशेषण आश्रित उपवाक्य)

c. जो डुमराँव में मुख्यत: सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है। (विशेषण आश्रित उपवाक्य)

d. कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा। (संज्ञा आश्रित उपवाक्य)

e. जिसकी गमक उसी में समाई है। (विशेषण आश्रित उपवाक्य)

f. पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा। (संज्ञा आश्रित उपवाक्य)

**प्रश्न 2** निम्नलिखित वाक्यों को मिश्रित वाक्यों में बदलिए-

a. इसी बालसुलभ हँसी में कई यादें बंद हैं।

b. काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है।

c. धत्! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं।

d. काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

**उत्तर-**

a. यह वही बालसुलभ हँसी है जिसमें कई यादें बंद हैं।

b. काशी में संगीत का आयोजन होता है जो कि एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है।

c. धत्! पगली ई भारतरत्न हमको लुंगिया पे नाहीं, शहनईया पे मिला है।

d. यह जो काशी का नायाब हीरा है वह हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

STEP UP ACADEMY

# संस्कृति

**-भदंत आनंद कौसल्यायन**

## सारांश

लेखक कहते हैं की सभ्यता और संस्कृति दो ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग अधिक होता है परन्तु समझ में कम आता है। इनके साथ विशेषण लगा देने से इन्हे समझना और भी कठिन हो जाता है। कभी-कभी दोनों को एक समझ लिया जाता है तो कभी अलग। आखिर ये दोनों एक हैं या अलग। लेखक समझाने का प्रयास करते हुए आग और सुई-धागे के आविष्कार उदाहरण देते हैं। वह उनके आविष्कर्ता की बात कहकर व्यक्ति विशेष की योग्यता, प्रवृत्ति और प्रेरणा को व्यक्ति विशेष की संस्कृति कहता है जिसके बल पर आविष्कार किया गया।

लेखक संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्थापित करने के लिए आग और सुई-धागे के आविष्कार से जुड़ी प्रारंभिक प्रयत्नशीलता और बाद में हुई उन्नति के उदहारण देते हैं। वे कहते हैं लौहे के टुकड़े को घिसकर छेद बनाना और धागा पिरोकर दो अलग-अलग टुकड़ों को जोड़ने की सोच ही संस्कृति है। इन खोजों को आधार बनाकर आगे जो इन क्षेत्रों में विकास हुआ वह सभ्यता कहलाता है। अपनी बुद्धि के आधार पर नए निश्चित तथ्य को खोज आने वाली पीढ़ी को सौंपने वाला संस्कृत होता है जबकि उसी तथ्य को आधार बनाकर आगे बढ़ने वाला सभ्यता का विकास करने वाला होता है। भौतिक विज्ञान के सभी विद्यार्थी जानते हैं की न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया इसलिए वह संस्कृत कहलाया परन्तु वह और अनेक बातों को नही जान पाया। आज के विद्यार्थी उन बातों को भी जानते है लेकिन हम इन्हे अधिक सभ्य भले ही कहे परन्तु संस्कृत नही कह सकते।

लेखक के अनुसार भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे और आग के आविष्कार करते तथ्य संस्कृत संस्कृत होने या बनने के आधार नही बनते, बल्कि मनुष्य में सदा बसने वाली सहज चेतना भी इसकी उत्पत्ति या बनने का कारण बनती है। इस सहज चेतना का प्रेरक अंश हमें अपने मनीषियों से भी मिला है। मुँह के कौर को दूसरे के मुँह में डाल देना और रोगी बच्चे को रात-रात भर गोदी में लेकर माता का बैठे रहना इसी इसी चेतना से प्रेरित होता है। ढाई हजार वर्ष पूर्व बुद्ध का मनुष्य को तृष्णा से मुक्ति के लिए उपायों को खोजने में गृह त्यागकर कठोर तपस्या करना, कार्ल मार्क्स का मजदूरों के सुखद जीवन के सपने पूरा करने के लिए दुखपूर्ण जीवन बिताना और लेनिन का मुश्किलों से मिले डबल रोटी के टुकड़ों को दूसरों को खिला देना इसी चेतना से संस्कृत बनने का उदाहरण हैं। लेखक कहते हैं की खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने के तरीके आवागमन के साधन से लेकर परस्पर मर-कटने के तरीके भी संस्कृति का ही परिणाम सभ्यताके उदाहरण हैं।

मानव हित में काम ना करने वाली संस्कृति का नाम असंस्कृति है। इसे संस्कृति नही कहा जा सकता। यह निश्चित ही असभ्यता को जन्म देती है। मानव हित में निरंतर परिवर्तनशीलता का ही नाम संस्कृति है। यह बुद्धि और विवेक से बना एक ऐसा तथ्य है जिसकी कभी दल बाँधकर रक्षा करने की जरुरत नही पड़ती। इसका कल्याणकारी अंश अकल्याणकारी अंश की तुलना में सदा श्रेष्ठ और स्थायी है।

# प्रश्न-अभ्यास

**प्रश्न 1** लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

**उत्तर-** लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' शब्दों का प्रयोग बहुत मनमाने ढंग से होता रहा है। यहाँ तक कि उनके साथ 'भौतिक' और 'आध्यात्मिक' जैसे विशेषण जोड़े जाते रहे हैं। इन विशेषणों के कारण इन शब्दों की समझ और अधिक गड़बड़ा जाती है।

**प्रश्न 2** आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

**उत्तर-** आग की खोज मानव की सबसे बड़ी आवश्कता की पूर्ति करती है। आग की खोज के पीछे अनेकों कारण हो सकते हैं, सम्भवत: आग की खोज का मुख्य कारण रोशनी की ज़रुरत, पेट की ज्वाला, ठण्ड या जानवरों से बचाव की रही होगी। अंधेरे में जब मनुष्य कुछ नहीं देख पा रहा था या ठण्ड से उसका बुरा हाल था, तब उसे आग की ज़रुरत महसूस हुई होगी। कच्चे माँस का स्वाद अच्छा न लगने के कारण उसे पकाकर खाने की इच्छा से या खूँखार जानवरों को भगाने के लिए आग का आविष्कार हुआ हो।

**प्रश्न 3** वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

**उत्तर-** लेखक के अनुसार संस्कृत व्यक्ति वह है जो अपनी बुद्धि तथा विवेक से किसी नए तथ्य का अनुसन्धान और दर्शन करता हो। जिस व्यक्ति में ऐसी बुद्धि तथा योग्यता जितनी अधिक मात्रा में होगी वह व्यक्ति उतना ही अधिक संस्कृत होगा। जैसे- न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। तथा जिसने भी अपनी योग्यता से सुई-धागे की खोज की हो वह भी संस्कृत व्यक्ति था।

**प्रश्न 4** न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

**उत्तर-** लेखक ने संस्कृत मानव की परिभाषा ऐसी दी है कि उसमें न्यूटन जैसे आविष्कारक और चिंतक ही आ पाते हैं। उनके अनुसार, जो व्यक्ति अपनी बुद्धि और विवेक से किसी नए तथ्य का अनुसंधान और दर्शन कर सकता है, वही संस्कृत व्यक्ति है। न्यूटन ने भी यही किया। उसने अपनी योग्यता, प्रेरणा और प्रवृत्ति से विज्ञान के विभिन्न नियमों को जाना और उसे जनता के सामने रखा। इस कारण वह संस्कृत व्यक्ति हुआ।

अन्य लोग, जो न्यूटन द्वारा खोजे गए सभी सिद्धांतों की जानकारी रखते हैं और अन्य सूक्ष्म सिद्धांत भी जानते हैं, न्यूटन जैसे संस्कृत नहीं हो सकते। कारण? उन्होंने अपनी योग्यता और प्रवृत्ति से ज्ञान का आविष्कार नहीं किया। उन्होंने तो न्यूटन या अन्य वैज्ञानिकों द्वारा खोजे गए सिद्धांतों को जाना-भर।

**प्रश्न 5** किन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा?

**उत्तर-** कुछ महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के किए सुई धागे का आविष्कार हुआ होगा–

1. सुई-धागे का आविष्कार शरीर को ढ़कने तथा सर्दियों में ठंड से बचने के उद्देश्य से हुआ होगा।

2. आवश्यकतानुसार शरीर को सजाने की जरूरत महसूस हुई होगी, इसलिए कपड़े के दो टुकडों को एक करके जोड़ने के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा।

**प्रश्न 6** मानव संस्कृत एक अविभाज्य वस्तु है। किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब–

a. मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गई।

b. जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।

**उत्तर-**

a.

1. वर्ण व्यवस्था के नाम पर मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की जाती हैं।

2. धर्म के नाम पर भी मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की जाती हैं जिसका परिणाम हम हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान नामक दो देश के रूप में देखते हैं।

b.

मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण भी दिया है–

1. संसार के मज़दूरों को सुखी देखने के लिए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुख में बिता दिया।

2. सिद्धार्थ ने अपना घर केवल मानव कल्याण के लिए छोड़ दिया।

3. जब जापान पर परमाणु बम गिराया गया तब सारी संस्कृतियों ने इसका विरोध किया।

4. सांप्रदायिक हिंसा का सारा विश्व विरोधी है, तो सारा विश्व धर्म-भेद को भूलकर सारी संस्कृतियो की अच्छी बातों को खुले मन से स्वीकार करते हैं।

**प्रश्न 7** आशय स्पष्ट कीजिए-

मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?

**उत्तर-** लेखक प्रश्न करता है-मानव की जो योग्यता, भावना, प्रेरणा और प्रवृत्ति उससे विनाशकारी हथियारों का निर्माण करवाती है, उसे हम संस्कृति कैसे कहें? वह तो आत्म-विनाश कराती है। लेखक कहता है- ऐसी भावना और योग्यता को असंस्कृति कहना चाहिए।

## रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

**प्रश्न 1** लेखक ने अपने दृष्टिकोण से सभ्यता और संस्कृति की एक परिभाषा दी है। आप सभ्यता और संस्कृति के बारे में क्या सोचते हैं, लिखिए।

**उत्तर-** सभ्यता और संस्कृति एक दूसरे से अति सूक्ष्म रूप से जुड़े हैं, एक के अभाव में दूसरे को स्पष्ट करना कठिन हैं, जहाँ हम ये कह सकते हैं कि संस्कृति एक विचार है, तो वहीँ सभ्यता जीवन जीने की कला है।

संस्कृति जीवन का चिंतन और कलात्मक सृजन है, जो जीवन को समृद्ध बनाती है, तथा मनुष्य के रहन-सहन का तरीका सभ्यता के अंतर्गत आता है।

## भाषा-अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास का भेद भी लिखिए-

| | |
|---|---|
| गलत-सलत | आत्म-विनाश |
| महामानव | पददलित |
| हिंदू-मुसलिम | यथोचित |
| सप्तर्षि | सुलोचना |

**उत्तर-**

1. गलत-सलत - गलत और सलत (द्वंद समास)
2. महामानव - महान है जो मानव (कर्म धारय समास)
3. हिंदू-मुसलिम - हिंदू और मुसलिम (द्वंद समास)
4. सप्तर्षि - सात ऋषियों का समूह (द्विगु समास)

STEP UP ACADEMY

# संचयन भाग 2

# संचयन भाग –2

## हरिहर काका

-हबीब तनवीर

### सारांश

यह पाठ जाँबाज़ वज़ीर अली के जिंदगी का एक अंश है। इस नाटक में उस हिस्से को बताया गया है जब वज़ीर अली अपने दुश्मन के कैंप में जाकर वहाँ से अपने लिए कारतूस ले जाता है और अपने बहादुरी का गुणगान अपने दुश्मनों से करवाता है।

**नाटक के पात्र** - कर्नल, लेफ्टिनेंट, सिपाही, सवार (वज़ीर अली)

अंग्रेज़ सरकार के आदेशानुसार वज़ीर अली को गिरफ्तार करने के लिए कर्नल कालिंज अपने लेफ्टिनेंट और सिपाहियों के साथ जंगल में डेरा डाले हुए हैं। उन्हें जंगल में आये हुए हफ्ते गुजर गए हैं परन्तु वह अभी तक वजीर अली को गिरफ्तार नही कर पाये हैं। वजीर अली के दिल में अंग्रेज़ों के प्रति नफरत की बातें सुनकर उन्हें रॉबिनहुड की याद आ जाती है। अपने पांच महीने के शासनकाल में उसने अवध के दरबार से अंग्रेजी हुकूमत को साफ़ कर दिया। सआदत अली आसिफउद्दौला का भाई है साथ ही वज़ीर अली का दुश्मन भी है क्योंकि आसिफउद्दौला के यहाँ लड़के की कोई उम्मीद नहीं थी परन्तु वज़ीर अली ने सआदत अली के सारे सपने को तोड़ दिया।

अंग्रेज़ों ने सआदत अली को अवध के तख़्त पर बैठाया क्योंकि वो अंग्रेज़ों से मिलकर रहता है और ऐश पसंद आदमी है। इसके बदले में सआदत अली ने अंग्रेज़ों को आधी दौलत और दस लाख रूपये नगद दिए।

लेफ्टिनेंट कहता है कि सुना है वज़ीर अली ने अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-ज़मा को हिन्दुस्तान पर हमला करने की दावत दी है इसपर कर्नल ने कहा कि अफ़गानिस्तान को हमले की दावत सबसे पहले टीपू सुल्तान ने दी, फिर वज़ीर अली ने भी उसे दिल्ली बुलाया फिर शमसुद्दौला ने भी जो नवाब बंगाल का रिश्ते का भाई है और बहुत खतरनाक है। इस तरह पूरे हिन्दुस्तान में कंपनी के खिलाफ लहर दौड़ गयी है। यदि यह कामयाब हो गयी तो लार्ड क्लाइव ने बक्सर और प्लासी के युद्ध में जो हासिल किया था वह लार्ड वेल्जली के हाथों खो देगी। कर्नल पूरी एक फ़ौज लिए वज़ीर अली का पीछा जंगलों में कर रहा है परन्तु वह पकड़ में नहीं आ रहा है।

कर्नल ने वज़ीर अली द्वारा कंपनी के वकील की हत्या करने का किस्सा सुनाते हुए कहा कि हमने वज़ीर अली को पद से हटाकर तीन लाख रूपए सालना देकर बनारस भेज दिया। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता बुलाया। वज़ीर अली बनारस में रह रहे कंपनी के वकील के पास जाकर पूछा कि उसे कलकत्ता क्यों बुलाया जाता है इसपर वकील ने उसे बुरा-भला कह दिया, जिस कारण वज़ीर अली ने वकील को खंजर से मार दिया। उसके बाद वह अपने कुछ साथियों के साथ आजमगढ़ भाग

गया वहां के शासन ने उनलोगों को सुरक्षित घागरा पहुँचा दिया अब वे इन्हीं जंगलों में कई साल से भटक रहे हैं। लेफ्टिनेंट द्वारा पूछे जाने पर कर्नल ने वज़ीर अली की स्कीम बताते हुए कहता है कि वे किसी तरह नेपाल पहुँचना चाहते हैं। अफ़गानी हमले का इंतज़ार करें ताक़त बढ़ाएँ। वह सआदत अली को उसके पद से हटाकर खुद कब्ज़ा करे और अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से निकाल दे। लेफ्टिनेंट अपनी शंका जताते हुए कहता है कि हो सकता है की वे लोग नेपाल पहुँच गए हों जिसपर कर्नल उसे भरोसा दिलाते हुए बताता है कि अंग्रेजी और सआदत अली की फौजें बड़ी सख्ती से उनका पीछा कर रही हैं और उन्हें पता है की वह इन्हीं जंगलों में है।

तभी एक सिपाही आकर कर्नल को बताता है कि दूर से धूल उड़ती दिखाई दे रही है लगता है कोई काफिला चला आ रहा हो। कर्नल सभी को मुस्तैद रहने का आदेश देता है। लेफ्टिनेंट और कर्नल देखते हैं की केवल एक ही आदमी है। कर्नल सिपाहियों से उसपर नजर रखने को कहता है। घुड़सवार उनकी और आकर रुक जाता है और इज़ाज़त लेकर कर्नल से मिलने अंदर जाता है और एकांत की माँग करता है जिसपर कर्नल सिपाही और लेफ्टिनेंट को बाहर भेज देते हैं। वह कर्नल से कहता है कि वज़ीर अली को पकड़ना कठिन और कारतूस की माँग करता है। कर्नल उसे कारतूस दे देता है। जब वह कारतूस लेकर जाने लगता है तो कर्नल उससे उसका नाम पूछता है। वह अपना नाम वज़ीर अली बताता है और कारतूस देने के कारण उसकी जान बख्शने की बात कहता है। उसके चले जाने के बाद लेफ्टिनेंट जब पूछता है कि कौन था तब कर्नल एक जाँबाज़ सिपाही बतलाता है।

## बोध-प्रश्न

**प्रश्न 1** कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

**उत्तर-** कथावाचक और हरिहर के बीच मधुर, आत्मीय और गहरे संबंध है। कथावाचक जब छोटा था तब से ही हरिहर काका उसे बहुत प्यार करते थे। जब वह बड़े हो गए तो वह हरिहर काका के मित्र बन गए। गाँव में इतनी गहरी दोस्ती और किसी से नहीं हुई। हरिहर काका उनसे खुल कर बातचीत करते थे। यही कारण है कि कथावाचक को उनके एक-एक पल की खबर थी। शायद अपना मित्र बनाने के लिए काका ने स्वयं ही इसे प्यार से बड़ा किया और इतंजार किया।

**प्रश्न 2** हरिहर काका को महंत और अपने भाई दोनों एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

**उत्तर-** पंद्रह बीघे जमीन के मालिक हरिहर काका की घर में खूब खातिरदारी हुआ करती थी, उनके तीनों छोटे भाइयों ने अपनी पत्नियों को अच्छी तरह से समझा रखा था कि काका की अच्छी से अच्छी खातिरदारी होनी चाहिए क्योंकि उनके बाद उनकी सारी संपत्ति उनकी ही होने वाली है। परंतु उन्होने ऐसा नहीं किया, उन्होने उनके साथ कुव्यवहार ही किया। महंत को पता चलते ही उसने हरिहर काका की खातिरदारी करना शुरू कर दी और भाइयों को पता चले बिना ही उनकी पंद्रह बीघा जमीन मंदिर के नाम लिखवाने की बात कर ली। भाइयों को पता लगने पर दोनों के बीच भंयकर झगड़ा हुआ, क्योंकि दोनों ही हरिहर काका की ज़मीन हड़पना चाहते थे। इसलिए हरिहर काका को महंत और अपने भाई दोनों एक ही श्रेणी के लगने लगे।

**प्रश्न 3** ठाकुरबाड़ी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है?

**उत्तर-** ठाकुरबाड़ी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा है। इस श्रद्धा का कारण उनका धर्म के प्रति प्रगाढ रुझान है। हर शुभ काम में वे ठाकुर जी का योगदान मानते हैं। कोई भी काम करने से पहले वे ठाकुर जी की मनौती मानते हैं। काम पूरा होने पर वे ठाकुरबाड़ी को दान देते हैं। ठाकुरबाड़ी के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा का कारण उनकी धार्मिक मनोवृत्ति है।

**प्रश्न 4** अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं। कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** हरिहर काका अनपढ़ थे फिर भी उन्हें दुनियादारी की बेहद समझ थी। वे यह जानते थे कि जब तक जमीन उनके पास है तब तक सभी उनका आदर करेंगे। उनके भाई लोग उनसे ज़बरदस्ती ज़मीन अपने नाम कराने के लिए डराते थे तो उन्हें गाँव में दिखावा करके ज़मीन हथियाने वालों की याद आती थी। काका ने उन्हें नारकीय जीवन जीते देखा था इसलिए उन्होंने ठान लिया था चाहे मंहत उकसाए चाहे भाई दिखावा करे वह ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। एक बार मंहत के उकसाने पर भाइयों के प्रति धोखा नहीं करना चाहते थे परन्तु जब भाइयों ने भी धोखा दिया तो उन्हें समझ में आ गया उनके प्रति उन्हें कोई प्यार नहीं है। जो प्यार दिखाते हैं वह केवल ज़ायदाद के लिए है

**प्रश्न 5** हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होने उन के साथ कैसा व्यवहार किया?

**उत्तर-** महंत और उसके चेले हरिहर काका को जबरन घर से उठाकर ले गए थे। उन्होंने हरिहर काका के घर पर अप्रत्याशित हमला किया और हरिहर काका को जबरन उठा ले गए और ठाकुरबाड़ी में ले जाकर बंद कर दिया। काका के भाई जब ठाकुरबाड़ी का गेट खुलवाने गए तो महंत के चेलों ने उन पर अंदर से पत्थरों और हथियारों से हमला कर दिया। ठाकुरबाड़ी के अंदर महंत और उसके चंद साधु एक सादे कागज़ पर जबरदस्ती हरिहर काका के अंगूठे का निशान लेने लगे मना करने पर उन्हें बाँधकर एक कमरे में बंद कर दिया गया। काका के भाई पुलिस लेकर आ गए उन्होंने एक-एक कमरे की तलाशी ली और एक कमरे में हरिहर काका मुहँ में कपड़ा दुसे हुए और बँधे हुए मिले।

**प्रश्न 6** हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

**उत्तर-** हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की अलग-अलग राय थी। एक तरफ चटोर किस्म के लोग थे जो सुबह-शाम प्रसाद के बहाने ठाकुरबाड़ी में भोजन करते थे। वे लोग महंत और साधु-संतों को खुश रखना चाहते थे। इसलिए हरिहर काका की जमीन ठाकुरबाड़ी के नाम लिखवाने की हिमायत करते थे।

दूसरी तरफ गाँव के प्रगतिशील विचारों वाले लोग थे। वे किसान थे और जानते थे कि किसान के लिए जमीन का क्या महत्त्व है? वे लोग चाहते थे कि काका को अपनी ज़मीन अपने भाइयों के नाम लिख देनी चाहिए।

**प्रश्न 7** कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।"

**उत्तर-** हरिहर काका को जब अपने भाईयों और महंत की असलियत पता चली और उन्हें समझ में आ गया कि सब लोग उनकी ज़मीन जायदाद के पीछे पड़े हैं तो उन्हें वे सभी लोग याद आ गए जिन्होंने परिवार वालों के मोह माया में आकर अपनी ज़मीन उनके नाम कर दी और मृत्यु तक तिल-तिल करके मरते रहे, दाने-दाने को मोहताज़ हो गए। इसलिए उन्होंने

सोचा कि इस तरह रहने से तो एक बार मरना अच्छा है। जीते जी ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। ये लोग मुझे एक बार में ही मार दे। अतः लेखक ने कहा कि अज्ञान की स्थिति में मनुष्य मृत्यु से डरता है परन्तु ज्ञान होने पर मृत्यु वरण को तैयार रहता है।

**प्रश्न 8** समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

**उत्तर-** हम सभी किसी न किसी प्रकार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं जिससे समाज का निर्माण हुआ है। समाज में अनेक रिश्ते मनुष्य को मनुष्य से जोड़ते हैं जिससे परिवार निर्माण हुआ है। परिवार में मनुष्य सुरक्षित रहता है, आपस में एक विश्वास बढ़ता है। यही विश्वास जब टूटता है तो आदमी भी टूट जाता है, जैसा कि हरिहर काका के साथ हुआ।

**प्रश्न 9** यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?

**उत्तर-** यदि हमारे आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो हम उसके पास बैठकर उससे बातें कर सकते हैं। प्रतिदिन कुछ समय निकालकर उससे बातें करने की कोशिश करें तो हो सकता है कि किसी दिन वह भी हमसे बातें करना शुरू कर दे। हम उसके साथ खाने-पीने की वस्तुएँ बाँट सकते हैं। उसके पसंद की कोई वस्तु दे सकते हैं। हँसी-मज़ाक की बातें करके उसको हँसाने की कोशिश कर सकते हैं।

**प्रश्न 10** हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-** हरिहर काका के गाँव में मीडिया पहुँच जाती तो सबकी पोल खुल जाती, मंहत व भाइयों का पर्दाफाश हो जाता। मीडिया उनके साथ हुए अत्याचारों का लाइव कवरेज दिखाता। वे सभी व्यक्तियों को अन्याय की ये तस्वीर दिखाते और बतलाते कि बूढ़े व्यक्ति के लिए किस तरह लोगों के ख्याल बदल जाते हैं और वे फायदा उठाने का सोचने लगते हैं। मिडिया वहाँ पहुँचकर सबकी पोल खोल देती, मंहत व भाईयों का पर्दाफाश हो जाता। अपहरण, धमकाने और जबरन अँगूठा लगवाने के अपराध में उन्हें जेल हो जाती। मिडिया उन्हें स्वतंत्र और भयमुक्त जीवन की उचित व्यवस्था भी करवा देती।

# सपनों के-से दिन

**-गुरदयाल सिंह**

## सारांश

लेखक कहता है कि उसके बचपन में उसके साथ खेलने वाले बच्चों का हाल भी उसी की तरह होता था। सभी के पाँव नंगे, फटी-मैली सी कच्छी और कई जगह से फटे कुर्ते , जिनके बटन टूटे हुए होते थे और सभी के बाल बिखरे हुए होते थे। जब सभी खेल कर, धूल से लिपटे हुए, कई जगह से पाँव में छाले लिए, घुटने और टखने के बीच का टाँग के पीछे माँस वाले भाग पर खून के ऊपर जमी हुई रेत-मिट्टी से लथपथ पिंडलियाँ ले कर अपने-अपने घर जाते तो सभी की माँ-बहनें उन पर तरस नहीं खाती बल्कि उल्टा और ज्यादा पीट देतीं। कई बच्चों के पिता तो इतने गुस्से वाले होते कि जब बच्चे को पीटना शुरू करते तो यह भी ध्यान नहीं रखते कि छोटे बच्चे के नाक-मुँह से लहू बहने लगा है और ये भी नहीं पूछते कि उसे चोट कहाँ लगी है। परन्तु इतनी बुरी पिटाई होने पर भी दूसरे दिन सभी बच्चे फिर से खेलने के लिए चले आते। लेखक कहता है कि यह बात लेखक को तब समझ आई जब लेखक स्कूल अध्यापक बनने के लिए प्रशिक्षण ले रहा था। वहाँ लेखक ने बच्चों के मन के विज्ञान का विषय पढ़ा था।

लेखक कहता है कि कुछ परिवार के बच्चे तो स्कूल ही नहीं जाते थे और जो कभी गए भी, पढाई में रूचि न होने के कारण किसी दिन बस्ता तालाब में फेंक आए और उनके माँ-बाप ने भी उनको स्कूल भेजने के लिए कोई जबरदस्ती नहीं की। यहाँ तक की राशन की दुकान वाला और जो किसानों की फसलों को खरीदते और बेचते हैं वे भी अपने बच्चों को स्कूल भेजना जरुरी नहीं समझते थे। वे कहते थे कि जब उनका बच्चा थोड़ा बड़ा हो जायगा तो पंडत घनश्याम दास से हिसाब-किताब लिखने की पंजाबी प्राचीन लिपि पढ़वाकर सीखा देंगे और दुकान पर खाता लिखवाने लगा देंगे।

लेखक कहता है कि बचपन में किसी को भी स्कूल के उस कमरे में बैठ कर पढ़ाई करना किसी कैद से कम नहीं लगता था। बचपन में घास ज्यादा हरी और फूलों की सुगंध बहुत ज्यादा मन को लुभाने वाली लगती है। लेखक कहता है की उस समय स्कूल की छोटी क्यारियों में फूल भी कई तरह के उगाए जाते थे जिनमें गुलाब, गेंदा और मोतिया की दूध-सी सफ़ेद कलियाँ भी हुआ करतीं थीं। ये कलियाँ इतनी सूंदर और खुशबूदार होती थीं कि लेखक और उनके साथी चपरासी से छुप-छुपा कर कभी-कभी कुछ फूल तोड़ लिया करते थे। परन्तु लेखक को अब यह याद नहीं कि फिर उन फूलों का वे क्या करते थे। लेखक कहता है कि शायद वे उन फूलों को या तो जेब में डाल लेते होंगे और माँ उसे धोने के समय निकालकर बाहर फेंक देती होगी या लेखक और उनके साथी खुद ही, स्कूल से बाहर आते समय उन्हें बकरी के मेमनों की तरह खा या 'चर' जाया करते होगें।

लेखक कहता है कि उसके समय में स्कूलों में, साल के शुरू में एक-डेढ़ महीना ही पढ़ाई हुआ करती थी, फिर डेढ़-दो महीने की छुटियाँ शुरू हो जाती थी। हर साल ही छुटियों में लेखक अपनी माँ के साथ अपनी नानी के घर चले जाता था। वहाँ नानी खूब दूध-दहीं, मक्खन खिलाती, बहुत ज्यादा प्यार करती थी। दोपहर तक तो लेखक और उनके साथी उस तालाब में नहाते

फिर नानी से जो उनका जी करता वह माँगकर खाने लगते। लेखक कहता है कि जिस साल वह नानी के घर नहीं जा पाता था, उस साल लेखक अपने घर से दूर जो तालाब था वहाँ जाया करता था।

लेखक और उसके साथी कपड़े उतार कर पानी में कूद जाते, फिर पानी से निकलकर भागते हुए एक रेतीले टीले पर जाकर रेत के ऊपर लोटने लगते फिर गीले शरीर को गर्म रेत से खूब लथपथ करके फिर उसी किसी ऊँची जगह जाकर वहाँ से तालाब में छलाँग लगा देते थे। लेखक कहता है कि उसे यह याद नहीं है कि वे इस तरह दौड़ना, रेत में लोटना और फिर दौड़ कर तालाब में कूद जाने का सिलसिला पाँच-दस बार करते थे या पंद्रह-बीस बार।

लेखक कहता है कि जैसे-जैसे उनकी छुट्टियों के दिन ख़त्म होने लगते तो वे लोग दिन गिनने शुरू कर देते थे। डर के कारण लेखक और उसके साथी खेल-कूद के साथ-साथ तालाब में नहाना भी भूल जाते। अध्यापकों ने जो काम छुट्टियों में करने के लिए दिया होता था, उसको कैसे करना है इस बारे में सोचने लगते। काम न किया होने के कारण स्कूल में होने वाली पिटाई का डर अब और ज्यादा बढ़ने लगता। लेखक बताता है कि उसके कितने ही सहपाठी ऐसे भी होते थे जो छुट्टियों का काम करने के बजाय अध्यापकों की पिटाई अधिक 'सस्ता सौदा' समझते। ऐसे समय में लेखक और उसके साथी का सबसे बड़ा 'नेता' ओमा हुआ करता था। ओमा की बातें, गालियाँ और उसकी मार-पिटाई का ढंग सभी से बहुत अलग था। वह देखने में भी सभी से बहुत अलग था। उसका मटके के जितना बड़ा सिर था, जो उसके चार बालिश्त (ढ़ाई फुट) के छोटे कद के शरीर पर ऐसा लगता था जैसे बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा हो। बड़े सिर पर नारियल जैसी आँखों वाला उसका चेहरा बंदरिया के बच्चे जैसा और भी अजीब लगता था। जब भी लड़ाई होती थी तो वह अपने हाथ-पाँव का प्रयोग नहीं करता था, वह अपने सिर से ही लड़ाई किया करता था।

लेखक कहता है कि वह जिस स्कूल में पढता था वह स्कूल बहुत छोटा था। उसमें केवल छोटे-छोटे नौ कमरे थे, जो अंग्रेजी के अक्षर एच (H) की तरह बने हुए थे। दाईं ओर का पहला कमरा हेडमास्टर श्री मदनमोहन शर्मा जी का था। स्कूल की प्रेयर (प्रार्थना) के समय वह बाहर आते थे और सीधी पंक्तियों में कद के अनुसार खड़े लड़कों को देखकर उनके गोरा चेहरे पर ख़ुशी साफ़ ही दिखाई देती थी। मास्टर प्रीतम चंद जो स्कूल के 'पीटी' थे, वे लड़कों की पंक्तियों के पीछे खड़े-खड़े यह देखते रहते थे कि कौन सा लड़का पंक्ति में ठीक से नहीं खड़ा है। उनकी धमकी भरी डाँट तथा लात-घुस्से के डर से लेखक और लेखक के साथी पंक्ति के पहले और आखरी लड़के का ध्यान रखते, सीधी पंक्ति में बने रहने की पूरी कोशिश करते थे। मास्टर प्रीतम चंद बहुत ही सख्त अध्यापक थे। परन्तु हेडमास्टर शर्मा जी उनके बिलकुल उलट स्वभाव के थे। वह पाँचवीं और आठवीं कक्षा को अंग्रेजी स्वयं पढ़ाया करते थे। किसी को भी याद नहीं था कि पाँचवी कक्षा में कभी भी उन्होंने हेडमास्टर शर्मा जी को किसी गलती के कारण किसी को मारते या डाँटते देखा या सूना हो।

लेखक कहता है कि बचपन में स्कूल जाना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता था परन्तु एक-दो कारणों के कारण कभी-कभी स्कूल जाना अच्छा भी लगने लगता था। मास्टर प्रीतमसिंह जब परेड करवाते और मुँह में सीटी ले कर लेफ्ट-राइट की आवाज़ निकालते हुए मार्च करवाया करते थे। फिर जब वे राइट टर्न या लेफ्ट टार्न या अबाऊट टर्न कहते तो सभी विद्यार्थी अपने छोटे-छोटे जूतों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर जूतों की ठक-ठक करते और ऐसे घमंड के साथ चलते जैसे वे सभी विद्यार्थी न हो कर, बहुत महत्वपूर्ण 'आदमी' हों, जैसे किसी देश का फौजी जवान होता है । स्काउटिंग करते हुए कोई भी विद्यार्थी कोई गलती न करता तो पीटी साहब अपनी चमकीली आँखें हलके से झपकाते और सभी को शाबाश कहते। उनकी एक शाबाश लेखक और उसके साथियों को ऐसे लगने लगती जैसे उन्होंने किसी फ़ौज के सभी पदक या मैडल जीत लिए हों।

लेखक कहता है कि हर साल जब वह अगली कक्षा में प्रवेश करता तो उसे पुरानी पुस्तकें मिला करतीं थी। उसके स्कूल के हेडमास्टर शर्मा जी एक धनि घर के लड़के को उसके घर जा कर पढ़ाया करते थे। हर साल अप्रैल में जब पढ़ाई का नया साल आरम्भ होता था तो शर्मा जी उस लड़के की एक साल पुरानी पुस्तकें लेखक के लिए ले आते थे। लेखक के घर में किसी को भी पढ़ाई में कोई रूचि नहीं थी। यदि नयी किताबें लानी पड़तीं तो शायद इसी बहाने लेखक की पढ़ाई तीसरी-चौथी कक्षा में ही छूट जाती।

लेखक कहता है कि जब लेखक स्कूल में था तब दूसरे विश्व युद्ध का समय था। लोगो को फ़ौज में भर्ती करने के लिए जब कुछ अफसर गाँव में आते तो उनके साथ कुछ नौटंकी वाले भी आया करते थे।

वे रात को खुले मैदान में तम्बू लगाकर लोगों को फ़ौज के सुख-आराम, बहादुरी के दृश्य दिखाकर फ़ौज में भर्ती होने के लिए आकर्षित किया करते थे। इन्हीं सारी बातों की वजह से कुछ नौजवान फ़ौज में भरती होने के लिए तैयार भी हो जाया करते थे।

लेखक कहता है कि उन्होंने कभी भी मास्टर प्रीतमचंद को स्कूल के समय में मुस्कुराते या हँसते नहीं देखा था। उनका छोटा कद, दुबला-पतला परन्तु पुष्ट शरीर, माता के दानों से भरा चेहरा यानि चेचक के दागों से भरा चेहरा और बाज़ सी तेज़ आँखें, खाकी वर्दी, चमड़े के चौड़े पंजों वाले जूत-ये सभी चीज़े बच्चों को भयभीत करने वाली होती थी। लेखक अपनी पूरी ज़िन्दगी में उस दिन को कभी नहीं भूल पाया जिस दिन मास्टर प्रीतमचंद लेखक की चौथी कक्षा को फ़ारसी पढ़ाने लगे थे। अभी उन्हें पढ़ते हुए एक सप्ताह भी नहीं हुआ होगा कि प्रीतमचंद ने उन्हें एक शब्दरूप याद करने को कहा और आज्ञा दी कि कल इसी घंटी में केवल जुबान के द्वारा ही सुनेंगे। दूसरे दिन मास्टर प्रीतमचंद ने बारी-बारी सबको सुनाने के लिए कहा तो एक भी लड़का न सुना पाया। मास्टर जी ने गुस्से में चिल्लाकर सभी विद्यार्थी को कान पकड़कर पीठ ऊँची रखने को कहा। जब लेखक की कक्षा को सज़ा दी जा रही थी तो उसके कुछ समय पहले शर्मा जी स्कूल में नहीं थे। आते ही जो कुछ उन्होंने देखा वह सहन नहीं कर पाए। शायद यह पहला अवसर था कि उन्होंने पीटी प्रीतमचंद की उस असभ्यता एवं जंगलीपन को सहन नहीं किया और वह भड़क गए थे। लेखक कहता है कि जिस दिन से हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी प्रीतमचंद को निलंबित किया था उस दिन के बाद यह पता होते हुए भी कि पीटी प्रीतमचंद को जब तक नाभा से डायरेक्टर 'बहाल' नहीं करेंगें तब तक वह स्कूल में कदम नहीं रख सकते, फिर भी जब भी फ़ारसी की घंटी बजती तो लेखक की और उसकी कक्षा के सभी बच्चों की छाती धक्-धक् करने लगती और लगता जैसे छाती फटने वाली हो।

लेखक कहता है कि कई सप्ताह तक पीटी मास्टर स्कूल नहीं आए। लेखक और उसके साथियों को पता चला कि बाज़ार में एक दूकान के ऊपर उन्होंने जो छोटी-छोटी खिड़कियों वाला चौबारा (वह कमरा जिसमें चारों और से खिड़कियाँ और दरवाजें हों) किराए पर ले रखा था, पीटी मास्टर वहीं आराम से रह रहे थे। कुछ सातवीं-आठवीं के विद्यार्थी लेखक और उसके साथियों को बताया करते थे कि उन्हें निष्कासित होने की थोड़ी सी भी चिंता नहीं थी। जिस तरह वह पहले आराम से पिंजरे में रखे दो तोतों को दिन में कई बार, भिगोकर रखे बादामों की गिरियों का छिलका उतारकर खिलाते थे, वे आज भी उसी तरह से रह रहे हैं। लेखक और उसके साथियों के लिए यह चमत्कार ही था कि जो प्रीतमचंद पट्टी या डंडे से मार-मारकर विद्यार्थियों की चमड़ी तक उधेड़ देते, वह अपने तोतों से मीठी-मीठी बातें कैसे कर लेते थे। लेखक स्वयं में सोच रहा था कि क्या तोतों को उनकी आग की तरह जलती, भूरी आँखों से डर नहीं लगता होगा। लेखक और उसके साथियों की समझ में ऐसी बातें तब नहीं आ पाती थीं, क्योंकि तब वे बहुत छोटे हुआ करते थे। वे तो बस पीटी मास्टर के इस रूप को एक तरह से अद्भुत ही मानते थे।

# बोध-प्रश्न

**प्रश्न 1** कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती। पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

**उत्तर-** लेखक के आधे से अधिक साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे। जब बहुत छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ पाते। उनके कुछ शब्द सुनकर हँसी आने लगती थी। परंतु खेलते तो सभी एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते थे।

**प्रश्न 2** पीटी साहब की शाबाश फ़ौज के तमगों-सी क्यों लगती थी। स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** पीटी साहब प्रीतमचन्द बहुत सख्त अध्यापक थे। यदि कोई कतार से सिर इधर-उधर हिला लेता या दूसरी पिंडली खुजलाने लगता इस पर वे उसे लड़के की ओर बाघ की तरह झपट पड़ते। परन्तु जब बच्चे कोई भी गलती न करते प्रार्थना के समय सीधी कतार बना कर खड़े रहते तो पी. टी. साहब उन्हें शाबाश कहते। बच्चे शाबाश शब्द सुनकर खुश होते और उन्हें लगता कि जैसे फौज में सिपाही को तमंगे दिए जाते हैं वैसा ही तमगा उन्हें भी मिल गया है।

**प्रश्न 3** नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

**उत्तर-** नयी श्रेणी में जाने पर लेखक को हैडमास्टर जी एक अमीर घर के बच्चे की पुरानी किताबें लाकर देते थे। परन्तु इन नयी कापियों और पुरानी किताबों आती विशेष गंध से लेखक का बालमन उदास कर जाती थीं क्योंकि नयी श्रेणी का मतलब और कठिन पढाई और नए मास्टरों से पिटाई का भय होता था। पुराने मास्टरों की भी अपेक्षाएं बढ़ जाती थी। उन्हें लगता था की नयी श्रेणी में आने से बच्चें तेज हो गए हैं और अपेक्षाओं की प्रति न होने पर वे चमड़ी उधेरने में देर न लगाते।

**प्रश्न 4** स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फौजी जवान क्यों समझने लगता था?

**उत्तर-** परेड के समय साफ़ धुले कपड़े पॉलिश किए जूते और धुली जुराब लहनकर जब परेड करते तो लेखक को ऐसा लगता कि मानों वह भी सेना का एक सिपाही हो।

**प्रश्न 5** हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

**उत्तर-** एक दिन मास्टर प्रीतमचंद ने कक्षा में बच्चों को फ़ारसी के शब्द रूप याद करने के लिए दिए। परन्तु बच्चों से यह शब्द रूप याद नहीं हो सके। इस पर मास्टर जी ने उन्हें मुर्गा बना दिया। बच्चे इसे सहन नहीं कर पाए कुछ ही देर में लुढ़कने लगे। उसी समय नम्र हृदय हेडमास्टरजी वहाँ से निकले और बच्चों की हालत देखकर सहन नहीं कर पाए और पीटी मास्टर को मुअत्तल कर दिया।

**प्रश्न 6** लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

**उत्तर-** लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल जाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था परन्तु जब स्कूल में रंग बिरगे झंडे लेकर, गले में रूमाल बाँधकर मास्टर प्रीतमचंद पढाई के बजाए स्काउटिंग की परेड करवाते थे, तो लेखक को बहुत अच्छा लगता था। सब बच्चे ठक-ठक करते राइट टर्न, लेफ्ट टर्न या अबाऊट टर्न करते

और मास्टर जी उन्हें शाबाश कहते तो लेखक को पूरे साल में मिले गुड्डो से भी ज्यादा अच्छा लगता था। इसी कारण लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगने लगा।

**प्रश्न 7** लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था?

**उत्तर-** एक-एक दिन गिनते दिन खेल-कूद में और बीतते जाते। स्कूल की पिटाई का डर और बढ़ने लगता। परंतु डर भुलाने के लिए सोचते कि दस की क्या बात, सवाल तो पंद्रह भी आसानी से रोज निकाले जा सकते हैं। जब ऐसा हिसाब लगाने लगते तो छुट्टियाँ कम होते-होते जैसे भागने लगतीं। दिन बहुत छोटे लगने लगते। ऐसा महसूस होता जैसे सूरज भागकर दोपहरी में ही छिप जाता हो। जैसे-जैसे दिन 'छोटे' होने लगते स्कूल का भय बढ़ने लगता। हमारे कितने ही सहपाठी ऐसे भी होते जो छुट्टियों का काम करने की बजाय मास्टरों की पिटाई अधिक 'सस्ता सौदा' समझते थे। लेखक के जो साथी पिटाई से बहुत डरा करते, उन 'बहादुरों' की भाँति ही सोचने लगते। जैसा कि उनका सबसे बड़ा 'नेता' ओमा हुआ करता था।

**प्रश्न 8** पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

**उत्तर-** पीटी सर शरीर से दुबले-पतले, ठिगने कद के थे, उनकी आँखे भूरी और तेज़ थीं। वे खाकी वर्दी और लम्बे जूते पहनते थे। वे बहुत अनुशासन प्रिय थे। बच्चे उनका कहना नहीं मानते तो वे दंड देते थे। वे कठोर स्वभाव के थे, उनके मन में दया भाव न था। बाल खीचना, ठुडढे मारना, खाल खीचना उनकी आदत थी। इनके साथ वे स्वाभिमानी भी थे। नौकरी से निकाले जाने पर वे हेडमास्टर जी के सामने गिड़गिड़ाए नहीं बल्कि चुपचाप चले गए।

**प्रश्न 9** विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

**उत्तर-** इस पाठ में अनुशासन बनाए रखने के लिए बच्चों को कठोर दंड, मार-पीठ जैसी युक्तियाँ अपनाई गई हैं, साथ ही उनके उत्साह बढ़ाने के लिए शाबासियाँ भी जाती थी परन्तु वर्तमान परिवेश में शिक्षकों को बच्चों के साथ मारपीट का अधिकार नहीं दिया गया है। आजकल बच्चों के मनोविज्ञान को समझने के लिए शिक्षकों को परिक्षण दिया जाता है कि वे बच्चे की भावनाओं को समझें, उनके दुर्व्यवहार के कारण को समझे, उन्हें उनकी गलती का एहसास कराए तथा उनके साथ मित्रता व ममता का व्यवहार किया जाए जिससे वे बच्चों को ठीक से समझ कर उनके साथ उचित व्यवहार कर सके। इससे बच्चे स्कूल जाने से डरेंगे नहीं बल्कि खुशी खुशी आएँगे।

**प्रश्न 10** बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लिखिए।

**उत्तर-** बचपन में स्कूल आपस में मिलकर शरारतें करने में बहुत मजा आता था। आपस में मिलकर एक दूसरे को सताना। दूसरे बच्चों का टिफिन चुराकर खाना। एक साथ मिलकर एक-दूसरे का खाना छीनकर खाना जरा-जरा सी बात पर लड़ना एक-दूसरे को मनाना। ये ऐसी यादें है जिन्हें चाहकर भी भुलाया

नही जा सकता और उन क्षणों को किसी भी कीमत पर वापस नहीं लाया जा सकता।

**प्रश्न 11** प्राय: अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज्यादा रूचि लेने पर रोकते हैं और समय बरबाद न करने की नसीहत देते हैं बताइए -

a. खेल आपके लिए क्यों ज़रूरी हैं।

b. आप कौन से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएँगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो।

**उत्तर-**

a. खेल मनोरंजन के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद हैं। इससे शरीर स्वस्थ रहता है, बच्चे अनुशासित रहते हैं तथा प्रेम और सहयोग की भावना बढ़ती है। साथ ही साथ प्रतिस्पर्धा के गुण भी समझ में आते हैं। समूह में खेलने से सामाजिक भावना आती है।

b. खेल शरीर के लिए जरूरी हैं परन्तु उतने ही ज़रूरी अन्य कार्य भी हैं जैसे - पढ़ाई आदि। यदि खेल स्वास्थ्य के लिए है तो पढ़ाई जैसे कार्य भविष्य को सुधारने के लिए आवश्यक हैं। हमें अपना कार्य समय पर करते रहना चाहिए। ज्ञानवर्धक विषयों पर भी उतना ही ध्यान देंगे और समय देंगे तो अभिभावकों को खेलने पर कोई आपत्ति नहीं होगी।

# टोपी शुक्ला

**- राही मासूम रजा**

## सारांश

टोपी शुक्ला' कहानी राही मासूम रजा द्वारा लिखे उपन्यास का एक अंश है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने बताया है कि बचपन में बच्चे को जहाँ से अपनापन और प्यार मिलता है, वह वहीं रहना चाहता है। टोपी को बचपन में अपनापन अपने परिवार की नौकरानी और अपने मित्र की दादी माँ से मिलता है। वह उन्हीं लोगों के साथ रहना चाहता है।

कहानी 'टोपी' के इर्द-र्गिद घूमती है। वह इस कहानी का मुख्य पात्र है। टोपी के पिता डाक्टर हैं। उनका परिवार भरा-पूरा है। यह परिवार अत्यधिक संस्कारवादी है। घर में किसी भी वस्तु की कमी नहीं है। टोपी का एक दोस्त है - इफ़्फ़न। टोपी हमेशा उसे इफ़्फ़न कह कर पुकारता था। इफ़्फ़न को बुरा अवश्य लगता था, परंतु फिर भी वह उससे बात करता था क्योंकि दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे थे। दोनों के घर अलग-अलग थे। दोनों के मज़हब अलग थे। फिर भी दोनों में गहरी दोस्ती थी। दोनों में प्रेम का रिश्ता था।

इस कहानी के दो पात्र हैं- बलभद्र नारायण शुक्ला यानी टोपी आरै सययद ज़रगाम मुर्तुज़ा यानी इफ़्फ़न। इफ़्फ़न के दादा आरै परदादा प्रसिद्ध मौलवी थे। इफ्फन के दादा-परदादा मौलवी थे। वे जीवित रहते हुए हिन्दुस्तान में रहे थे, परंतु उनकी लाश को करबला ले जाकर दफनाया गया। इफ्फन के पिताजो उनके खानदान में पहले बच्चे थे, जो हिंदुस्तानी थे। इफ्फन को दादी मौलवी परिवार से नहीं थी। वह एक ज़मींदार परिवार की तथा पूरब की रहने वाली थी। उनकी ससुराल लखनऊ में थी, जहाँ गाना-बजाना बुरा समझा जाता था। इफ्फन के पिता की शादी पर उनके मन में विवाह के गीत गाने की इच्छा थी, परंतु इफ्फन के दादा के डर से नहीं गा पाई। उन्हें इफ्फन के दादा से केवल एक शिकायत थी कि वे सदा मौलवी बने रहते थे।

इफ्फन की दादी जब मरने लगीं, तो उसे अपनी माँ का घर याद आने लगा। इफ्फन उस समय स्कूल गया हुआ था। उसे अपनी दादी से बहुत प्यार था। वह उसे रात के समय कहानियाँ सुनाया करती थी। दादी पूरबिया भाषा बोलती थी, जो उसे अच्छी लगती थी। टोपी को भी उसकी दादी की भाषा अच्छी लगती थी। टोपी को इफ्फन को दादी अपनी माँ जैसी लगती थी। उसे अपनी दादी से नफ़रत थी। वह इफ्फन के घर जाकर उसकी दादी से बात करता था।

एक दिन टोपी ने अपने घर में जैसे ही अपनी माँ के लिए अम्मी शब्द का प्रयोग किया, उसी क्षण उनके यहाँ तूफ़ान आ गया। माँ से ज्यादा उसकी दादी भड़क गई। बाद में उसकी माँ से बहुत पिटाई हुई। उसके भाई मुन्नी बाबू ने माँ से झूठ कह दिया था कि उसने कबाब खाए हैं, जबकि कबाब मुन्नी बाबू ने खाए थे। सबने मुन्नी बाबू के झूठ को सच समझ लिया। टोपी के पास अपनी सफाई देने का कोई रास्ता नहीं था।

अगले दिन टोपी स्कूल गया तब उसने इफ़्फ़न को सारी घटना बताई। भूगोल के चौथे पीरियड में दोनों स्कूल से भाग गए। उन्होंने पचंम की दुकान से केले खरीदे। टोपी केवल फल खाता था। टोपी इफ्फन से कहता है कि क्यों न वह अपनी दादी बदल

लें। इफ्फन ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि उसकी दादी उसके पिताजी की माँ भी थी। इफ्फन ने उसे दिलासा देते हुए कहा कि फ़िक्र मत करो, तुम्हारी दादी जल्दी मर जाएगी क्योंकि बूढ़े लोग जल्दी मर जाते हैं। इतने में नौकर ने आकर सूचना दी कि इफ़्फ़न की दादी मर गई हैं। शाम को जब टोपी इफ़्फ़न के घर गया तो वहाँ सन्नाटा पसरा पडा था। वहाँ लोगों की भीड़ जमा थी। टोपी के लिए सारा घर मानो खाली हो चुका था। टोपी ने इफ़्फ़न से कहा तोरी दादी की जगह हमरी दादी मर गई होती तब ठीक भया होता।

जल्दी ही इफ्फन के पिता का तबादला हो गया। उस दिन टोपी ने कसम खाई कि आगे से किसी ऐसे लड़के से मित्रता नहीं करेगा, जिसके पिता की नौकरी बदलने वाली हो। इफ्फन के जाने के बाद टोपी अकेला हो गया। उस शहर के अगले कलेक्टर हरिनाम सिंह थे। उनके तीन लड़के थे। तीनों लड़कों में से कोई उसका दोस्त न बन सका। डब्बू बहुत छोटा था। बीलू बहुत बड़ा था। गुड्डू केवल अंग्रेज़ी बोलता था। उनमें से किसी ने टोपी को अपने पास फटकने न दिया। माली और चपरासी टोपी को जानते थे इसलिए वह बँगले में घुस गया। उस समय तीनों लड़के क्रिकेट खेल रहे थे। उनके साथ टोपी का झगड़ा हो गया। डब्बू ने अलसेशियन कुत्ते को टोपी के पीछे लगा दिया। टोपी के पटे में सात सइुयाँ लगीं तो उसे होश आया। फिर उसने कभी कलेक्टर के बँगले का रुख नहीं किया।

इसके बाद टोपी ने अपना अकेलापन घर की बूढ़ी नौकरानी सीता से दूर किया। सीता उसे बहुत प्यार करती थी। वह उसका दुख-दर्द समझती थी। घर के सभी सदस्य उसे बेकार समझते थे। घर में सभी के लिए सर्दी में गर्म कपड़े बने, परंतु टोपी को मुन्नी बाबू का उतरा कोट मिला। उसने इसे लेने से इनकार कर दिया। उसने वह कोट घर की नौकरानी केतकी को दे दिया। उसकी इस हरकत पर दादी क्रोधित हो गई। उन्होंने उसे बिना गर्म कपड़े के सर्दी बिताने का आदेश दे दिया।

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फेल हो गया था, जिस कारण उसे घर में और अधिक डाँट पड़ने लगी थी। जिस समय वह पढ़ने बैठता था, उसी समय घर के सदस्यों को बाहर से कुछ-न-कुछ मँगवाना होता था। स्कूल में भी उसे अध्यापकों ने सहयोग नहीं दिया। अध्यापकों ने उसके नवीं में लगातार तीन साल फेल होने पर उसे नज़रअंदाज़ कर दिया था। पिछले दर्जे के छात्रों के साथ बैठना उसे अच्छा नहीं लगता था। कोई भी ऐसा नहीं था, जो उसके साथ सहानुभूति रखता; उसे परीक्षा में पास होने के लिए प्रेरित करता। घर और स्कूल में किसी ने भी उससे अपनापन नहीं दिखाया। उसने स्वयं ही मेहनत की और तीसरी श्रेणी में नवीं पास कर ली। उसके नवीं पास करने पर दादी ने कहा कि उसकी रफ्तार अच्छी है। तीसरे वर्ष में तीसरी श्रेणी में पास तो हो गए हो।

## बोध-प्रश्न

**प्रश्न 1** इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?

**उत्तर-** इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला अलग-अलग मजहब के होते हुए भी एक दूसरे से प्रेमरूपी अटूट बंधन में बंधे हुए थे। एक दूसरे के बिना अधूरे थे परन्तु दोनों की आत्मा में प्यार की प्यास थी। इफ़्फ़न तो अपने मन की बात दादी को या टोपी को कह कर हल्का कर लेता था परन्तु टोपी के लिए इफ़्फ़न और उसकी दादी के अलावा कोई नहीं था। अत: इफ़्फ़न वास्तव में टोपी की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

**प्रश्न 2** इफ्फन की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थीं?

**उत्तर-** इफ्फन की दादी एक जमींदार की बेटी थीं वहाँ दूध, दही, घी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था, जबकि ससुराल में वे इन सबके लिए तरस गईं थीं। यहाँ वे केवल मौलविन बनकर रह गईं थीं इसलिए वे अपने पीहर जाना चाहती थीं।

**प्रश्न 3** दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी क्यों नहीं कर पाई?

**उत्तर-** दादी का विवाह मौलवीं परिवार में हुआ था जहाँ गाना बजाना पसंद नहीं किया जाता था। इसलिए बेचारी दिल मसोस कर रह गई।

**प्रश्न 4** 'अम्मी' शब्द पर टोपी के घरवालों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

**उत्तर-** 'अम्मी' शब्द को सुनते ही सबकी नज़रें टोपी पर पड़ गई। क्योंकि यह उर्दू का शब्द था और टोपी हिंदू था। इस शब्द को सुनकर जैसे परम्पराओं और संस्कृति की दीवारें डोलने लगीं। घर में सभी हैरान थे। माँ ने डाँटा, दादी गरजी और टोपी की जमकर पिटाई हुई।

**प्रश्न 5** दस अक्टूबर सन् पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में क्या महत्त्व रखता है?

**उत्तर-** दस अक्टूबर सन् पैंतालीस का यूँ तो कोई महत्त्व नहीं परंतु टोपी के आत्म-इतिहास में इस तारीख का बहुत महत्त्व है, क्योंकि इसी तारीख को इफ्फन के पिता बदली पर मुरादाबाद चले गए। टोपी ने दस अक्टूबर सन् पैंतालीस को कसम खाई कि अब वह किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा जिसका बाप ऐसी नौकरी करता हो जिसमें बदली होती रहती है।

**प्रश्न 6** टोपी ने इफ्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कहीं?

**उत्तर-** इफ्फ़न की दादी टोपी को बहुत प्यार करती थी। उनकी मीठी-मीठी बोली उसे तिल के लड्डू या शक्कर गुड जैसी लगती थी। टोपी की माँ भी ऐसा ही बोलती थी परन्तु उसकी दादी उसे बोलने नहीं देती थी। उधर इफ़्फ़न के दादा जी व अम्मी को उनकी बोली पंसद नहीं थी। अतः इफ़्फ़न की दादी और टोपी की माँ दोनों एक स्वर की महिलाएँ थीं। यही सोचकर टोपी ने दादी बदलने की बात की।

**प्रश्न 7** पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से विशेष स्नेह क्यों था?

**उत्तर-** पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से विशेष स्नेह इसलिए था क्योंकि पूरे घर में कभी-न-कभी उसे कोई डाँट देता ही था, कभी अब्बू अम्मी उसे डाँटते थे, उसकी बाजी और नुज़हत भी उसको परेशान करती थी। परन्तु उसकी दादी उसे कभी डाँटती नहीं थी। वे उसे रात में अनार परी, बहराम डाकू, अमीर हमला, गुलब काबली, हातिमताई जैसी अनेक कहानियाँ सुनाती थी। इसी कारण वह अपनी दादी से प्यार करता था।

**प्रश्न 8** इफ्फन की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली–सा क्यों लगा?

**उत्तर-** इफ्फन की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर इसलिए खाली-खाली लगने लगा क्योंकि अब कोई भी उससे बात करने और उसकी बात समझने वाला नहीं रहा था।

**प्रश्न 9** टोपी और इफ्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।

**उत्तर-** टोपी हिंदू धर्म का था और इफ्फ़न की दादी मुस्लिम। परन्तु जब भी टोपी इफ़्फ़न के घर जाता दादी के पास ही बैठता। उनकी मीठी पूरबी बोली उसे बहुत अच्छी लगती थी। दादी पहले अम्मा का हाल चाल पूछतीं। दादी उसे रोज़ कुछ न कुछ खाने को देती परन्तु टोपी खाता नहीं था। फिर भी उनका हर शब्द उसे गुड़ की डली सा लगता था। इसलिए उनका रिश्ता अटूट था।

**प्रश्न 10** टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। बताइए–

a. ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के क्या कारण थे?

b. एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

c. टोपी की भावात्मक परेशानियों को मद्येनज़र रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक बदलाव सुझाइए?

**उत्तर-**

a. ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फ़ेल होने के निम्न कारण थे-

1. जब भी वह पढ़ने बैठता मुन्नी बाबू को कोई न कोई काम निकल आता या रामदुलारी कोई ऐसी चीज़ मँगवाती जो नौकर से नहीं मँगवाई जा सकती। जिससे उसे पढ़ने के लिए समय ही नहीं मिल पाता था। इस तरह वह फेल हो गया।

2. दूसरे साल उसे मियादी (टाइफाइड) बुखार हो गया था और पेपर नहीं दे पाया इसलिए फ़ेल हो गया था।

b. एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को कई भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जैसे वह अध्यापकों की हँसी का पात्र होता क्योंकि कमजोर लड़कों के रूप में अध्यापक उसका ही उदाहारण देते थे। उसका मज़ाक उड़ाते थे। मास्टर भी उससे कोई उत्तर नहीं पूछते बल्कि कहते अगले साल पूछ लेंगे या कहते इतने सालों में तो आ गया होगा। फेल होने के कारण उसके कोई नए मित्र भी नहीं बन पाए। मास्टर उसकी किसी भी बात पर ध्यान ही नहीं देते थे वह किसी से शर्म के मारे खुलकर बातें नहीं कर पाता था। पर फिर भी उसने इन चुनौतियों को स्वीकार कर सफलता प्राप्त की।

c. बच्चे फ़ेल होने पर भावनात्मक रूप से आहत होते हैं और मानसिक रूप से परेशान रहने लगते हैं। उनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। वे शर्म महसूस करते हैं। इसके लिए विद्यार्थी के पुस्तकीय ज्ञान को ही न परखा जाए बल्कि उसके अनुभव व अन्य कार्य कुशलता को भी देखकर उसे प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षा व्यवस्था में बदलाव किया जाना चाहिए।

**प्रश्न 11** इफ्फन की दादी के मायके का घर कस्टोडियन में क्यों चला गया?

**उत्तर-** इफ्फन की दादी के मायके वाले पाकिस्तान में रहने लगे ऐसे में उनके घर की देखभाल करने वाला कोई न रहा इसलिए उनका घर सरकारी कब्जे में चला गया।

# स्पर्श भाग 2
# काव्य खण्ड

# स्पर्श भाग – 2 काव्य खंड

## साखी

-कबीर

**भावार्थ**

**ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।**
**अपना तन सीतल करै, औरन कौ सुख होइ।।**

**भावार्थ** - कबीर कहते हैं की हमें ऐसी बातें करनी चाहिए जिसमें हमारा अहं ना झलकता हो। इससे हमारा मन शांत रहेगा तथा सुनने वाले को भी सुख और शान्ति प्राप्त होगी।

**कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढै वन माँहि।**
**ऐसैं घटि-घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहि।।**

**भावार्थ** - यहाँ कबीर ईश्वर की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि कस्तूरी हिरन की नाभि में होती है लेकिन इससे अनजान हिरन उसके सुगंध के कारण उसे पूरे जंगल में ढूंढ़ता फिरता है ठीक उसी प्रकार ईश्वर भी प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करते हैं परन्तु मनुष्य इसे वहाँ नही देख पाता। वह ईश्वर को मंदिर-मस्जिद और तीर्थ स्थानों में ढूंढ़ता रहता है।

**जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।**
**सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।**

**भावार्थ** - यहाँ कबीर कह रहे हैं की जब तक मनुष्य के मन में अहंकार होता है तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नही होती। जब उसके अंदर का अंहकार मिट जाता है तब ईश्वर की प्राप्ति होती है। ठीक उसी प्रकार जैसे दीपक के जलने पर उसके प्रकाश से अँधियारा मिट जाता है। यहाँ अहं का प्रयोग अन्धकार के लिए तथा दीपक का प्रयोग ईश्वर के लिए किया गया है।

**सुखिया सब संसार है, खायै अरु सोवै।**
**दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।**

**भावार्थ** - कबीरदास के अनुसार ये सारी दुनिया सुखी है क्योंकि ये केवल खाने और सोने का काम करता है। इसे किसी भी प्रकार की चिंता नहीं है। उनके अनुसार सबसे दुखी व्यक्ति वो हैं जो प्रभु के वियोग में जागते रहते हैं। उन्हें कहीं भी चैन नही मिलता, वे प्रभु को पाने की आशा में हमेशा चिंता में रहते हैं।

**बिरह भुवंगम तन बसै, मन्त्र ना लागै कोइ।**
**राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ।।**

**भावार्थ** - जब किसी मनुष्य के शरीर के अंदर अपने प्रिय से बिछड़ने का साँप बसता है तो उसपर कोई मन्त्र या दवा का असर

नहीं होता ठीक उसी प्रकार राम यानी ईश्वर के वियोग में मनुष्य भी जीवित नही रहता। अगर जीवित रह भी जाता है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

**निंदक नेडा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।**
**बिन साबण पाँणी बिना, निरमल करै सुभाइ।।**

**भावार्थ** - संत कबीर कहते हैं की निंदा करने वाले व्यक्ति को सदा अपने पास रखना चाहिए, हो सके तो उसके लिए अपने पास रखने का प्रबंध करना चाहिए ताकि हमें उसके द्वारा अपनी त्रुटियों को सुन सकें और उसे दूर कर सकें। इससे हमारा स्वभाव साबुन और पानी की मदद के बिना निर्मल हो जाएगा।

**पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया ना कोइ।**
**ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होई।।**

**भावार्थ** - कबीर कहते हैं की इस संसार में मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़-पढ़ कर कई मनुष्य मर गए परन्तु कोई भी पंडित ना बन पाया। यदि किसी मनुष्य ने ईश्वर-भक्ति का एक अक्षर भी पढ़ लिया होता तो वह पंडित बन जाता यानी ईश्वर ही एकमात्र सत्य है, इसे जाननेवाला ही वास्तविक ज्ञानी है।

**हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराडा हाथि।**
**अब घर जालौं तास का, जे चले हमारे साथि।।**

**भावार्थ** - कबीर कहते हैं की उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला लिया है यानी उन्होंने मोह-माया रूपी घर को जलाकर ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अब उनके हाथों में जलती हुई मशाल है यानी ज्ञान है। अब वो उसका घर जालयेंगे जो उनके साथ जाना चाहता है यानी उसे भी मोह-माया के बंधन से आजाद होना होगा जो ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

## बोध-प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

a. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

b. दीपक दिखाई देने पर अंधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

c. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

d. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

e. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

f. ऐकै अषिर पीव का, पढ़े सु पंडित होई'- इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

g. कबीर की उद्धत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

a. मीठी वाणी बोलने वाले व्यक्तियों में अहंकार नहीं होता, मन शांत रहता है और दूसरे व्यक्ति भी उसके मधुर वचन सुनकर सुखी होते हैं। इसके विपरीत कर्कश और कटु वचन मन को पीड़ा देने वाले होते हैं।

b. यहाँ दीपक का मतलब भक्तिरूपी ज्ञान तथा अन्धकार का मतलब अज्ञानता से है। जिस प्रकार दीपक के जलने अन्धकार समाप्त हो जाता है। ठीक इसी प्रकार जब ज्ञान का प्रकाश हृदय में जलता है तब मन के सारे विकार अर्थात भ्रम, संशय का नाश हो जाता है।

c. इसमें कोई संदेह नही कि ईश्वर हर प्राणी के भीतर ही नही, बल्कि हर कण में है। किन्तु हमारा मन अज्ञानता, अहंकार, विलासिताओं, इत्यादि में लिप्त है। हम उसे मंदिर, मस्जिदों, गिरजाघरों में ढूंढ़ते हैं जबकि वह सर्वव्यापी है। इस कारण हम ईश्वर को नहीं देख पाते हैं।

d. इस संसार में अज्ञानी और भोगी व्यक्ति सुखी हैं, जो ज्ञानी हैं वे दुनिया की स्थिति देखकर दुखी हैं सोना और जागना ज्ञान और अज्ञान दोनों के प्रतीक हैं। ज्ञान ओर अज्ञान के प्रयोग से कवि संसार में नई चेतना लाना चाहता है।

e. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने बताया है कि हमें अपने आसपास निंदक रखने चाहिए ताकि वे हमारी त्रुटियों को बता सके। निंदक हमारे सबसे अच्छे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताए गए त्रुटियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।

f. इन पंक्तियों द्वारा कवि ने प्रेम की महत्ता को बताया है। ईश्वर को पाने के लिए लोग न जाने कितने यतन-जतन करते हैं पर उन्हें समझना चाहिए कि ईश्वर को पाने के लिए एक अक्षर प्रेम का अर्थात ईश्वर को पढ़ लेना ही पर्याप्त है। बड़े-बड़े पोथे या ग्रन्थ पढ़ कर कोई पंडित नहीं बन जाता। केवल इस निराकार परमात्मा का नाम स्मरण करने से ही सच्चा ज्ञानी बना जा सकता है।

g. कबीरदास जी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता अभिव्यक्ति की निर्भीकता है। अपनी शिक्षा के बारे में बताते हुए उन्होने कहा है कि - 'मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नहीं हाथ' अर्थात उन्होने कभी भी कागज और कलम को हाथ तक नहीं लगाया। कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा या खिचड़ी भाषा की संज्ञा भी दी गई है। उनकी भाषा में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग मिलता है। उनकी भाषा में एक ऐसा सौंदर्य है जो अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है। हृदय से निकली अभिव्यक्तियों के कारण उनकी भाषा सहज, सरल और मन पर सीधा प्रहार करने वाली है।

**प्रश्न 1** भाव स्पष्ट कीजिए-

a. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

b. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन माँहि।

c. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहीं।

d. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।

**उत्तर-**

a. इस पंक्ति का भाव हैं कि जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम रुपी विरह का सर्प बस जाता है, उस पर कोई मंत्र असर नहीं करता है। अर्थात भगवान के विरह में कोई भी जीव सामान्य नहीं रहता है। उस पर किसी बात का कोई असर नहीं होता है।

b. इस पंक्ति में कवि कहता है कि जिस प्रकार हिरण अपनी नाभि से आती सुगंध पर मोहित रहता है। परन्तु वह यह नहीं जानता कि यह सुगंध उसकी नाभि में से आ रही है। वह उसे इधर-उधर हूँढता रहता है। उसी प्रकार मनुष्य भी अज्ञानतावश वास्तविकता को नहीं जानता

कि ईश्वर उसी में निवास करता है और उसे प्राप्त करने के लिए धार्मिक स्थलों, अनुष्ठानों में ढूँढता रहता है। परमात्मा को केवल अपनी आत्मा द्वारा ही जाना जा सकता हैं। वह तो जीवन रूपी प्रकाश हैं।

c. कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे अंदर मैं का भाव 'अहंकार' तब तक मुझे हरी की प्राप्ति नहीं हुई थी। अब मेरे अंदर से अहंकार समाप्त हो गया है और मुझ पर ईश्वर की कृपा हो गई है।

d. कबीर के अनुसार बड़े ग्रंथ, शास्त्र पढ़ने भर से कोई ज्ञानी नहीं होता। अर्थात ईश्वर की प्राप्ति नहीं कर पाता। प्रेम से ईश्वर का स्मरण करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। प्रेम में बहुत शक्ति होती है।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रुप उदाहरण के अनुसार लिखिए।

उदाहरण - जिवै - जीना

a. औरन।

b. माँहि।

c. देख्या।

d. भुवंगम।

e. नेड़ा।

f. आँगणि।

g. साबण।

h. मुवा।

i. पीव।

j. जालौं।

k. तास।

**उत्तर-**

a. औरन - दूसरों।

b. माँहि - के अंदर (में)।

c. देख्या - देखा।

d. भुवंगम - साँप।

e. नेड़ा - निकट।

f. आँगणि - आँगन।

g. साबण - साबुन।

h. मुवा - मरा।

i. पीव - प्रेम।

j. जालौं - जलना।

k. तास - उसका।

STEP UP ACADEMY

# पद

**- मीराबाई**

**हरि आप हरो जन री भीर।**

**द्रोपदी री लाज राखी, आप बढायो चीर।**

**भगत कारण रूप नरहरि, धरयो आप सरीर।**

**बूढतो गजराज राख्यो , काटी कुण्जर पीर।**

**दासी मीराँ लाल गिरधर , हरो म्हारी भीर।**

**भावार्थ -** इस पद में मीराबाई अपने प्रिय भगवान श्रीकृष्ण से विनती करते हुए कहतीं हैं कि हे प्रभु अब आप ही अपने भक्तों की पीड़ा हरें। जिस तरह आपने अपमानित द्रोपदी की लाज उसे चीर प्रदान करके बचाई थी जब दु:शासन ने उसे निर्वस्त्र करने का प्रयास किया था। अपने प्रिय भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह रूप धारण किया था। आपने ही डुबते हुए हाथी की रक्षा की थी और उसे मगरमच्छ के मुँह से बचाया था। इस प्रकार आपने उस हाथी की पीड़ा दूर की थी। इन उदाहरणों को देकर दासी मीरा कहतीं हैं की हे गिरिधर लाल! आप मेरी पीडा भी दूर कर मुझे छुटकारा दीजिये।

**स्याम म्हाने चाकर राखे जी,गिरिधरी लाल म्हाँने चाकर राखोजी।**

**चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।**

**बिन्दरावन री कुंज गली में , गोविन्द लीला गास्यूँ।**

**चाकरी में दरसण पास्यूँ , सुमरण पास्यूँ खरची।**

**भाव भगती जागीरी पास्यूँ , तीनू बाताँ सरसी।**

**मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।**

**बिन्दरावन में धेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।**

**ऊँचा ऊँचा महल बणाव , बिच बिच राखूँ बारी।**

**साँवरिया रा दरसण पास्यूँ , पहर कुसुम्बी साडी।**

**आधी रात प्रभु दरसण , दीज्यो जमनाजी रे तीरां।**

**मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवडो घणो अधीराँ॥**

**भावार्थ -** इन पदों में मीरा भगवान श्री कृष्ण से प्रार्थना करते हुए कहतीं हैं कि हे श्याम! आप मुझे अपनी दासी बना लीजिये। आपकी दासी बनकर में आपके लिए बाग–बगीचे लगाऊँगी , जिसमें आप विहार कर सकें। इसी बहाने मैं रोज आपके दर्शन कर सकूँगी। मैं वृंदावन के कुंजों और गलियों में कृष्ण की लीला के गान करुँगी। इससे उन्हें कृष्ण के नाम स्मरण का अवसर प्राप्त हो जाएगा तथा भावपूर्ण भक्ति की जागीर भी प्राप्त होगी। इस प्रकार दर्शन, स्मरण और भाव–भक्ति नामक तीनों बातें मेरे जीवन में रच–बस जाएँगी।

अगली पंक्तियों में मीरा श्री कृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहती हैं कि मेरे प्रभु कृष्ण के शीश पर मोरपंखों का बना हुआ मुकुट सुशोभित है। तन पर पीले वस्त्र सुशोभित हैं। गले में वनफूलों की माला शोभायमान है। वे वृन्दावन में गायें चराते हैं और मनमोहक मुरली बजाते हैं। वृन्दावन में मेरे प्रभु का बहुत ऊँचे-ऊँचे महल हैं। वे उस महल के आँगन के बीच–बीच में सुंदर फूलों से सजी फुलवारी बनाना चाहती हैं। वे कुसुम्बी साड़ी पहनकर अपने साँवले प्रभु के दर्शन पाना चाहती हैं। मीरा भगवान कृष्ण से निवेदन करते हुए कहती हैं कि हे प्रभु! आप आधी रात के समय मुझे यमुना जी के किनारे अपने दर्शन देकर कृतार्थ करें। हे गिरिधर नागर! मेरा मन आप से मिलने के लिए बहुत व्याकुल है इसलिए दर्शन देने अवश्य आइएगा।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

a. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

b. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

c. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रुप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

d. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

e. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

**उत्तर-**

a. पहले पद में मीरा ने हरि 'कृष्ण' से कहा है कि जिस प्रकार आपने भरी सभा में द्रौपदी की साड़ी को बढ़ाकर उसका अपमान होने से बचाया था। भक्त प्रहलाद के प्राणों की रक्षा भगवान नरसिंह का रूप धारण करके की। उसी प्रकार आप मुझे भी अपने दर्शन देकर मेरी पीड़ा को हर लो।

b. मीरा का हृदय कृष्ण के पास रहना चाहता है। उसे पाने के लिए इतना अधीर है कि वह उनकी सेविका बनना चाहती हैं। वह बाग-बगीचे लगाना चाहती हैं जिसमें श्री कृष्ण घूमें, कुंज गलियों में कृष्ण की लीला के गीत गाएँ ताकि उनके नाम के स्मरण का लाभ उठा सके। इस प्रकार वह कृष्ण का नाम, भावभक्ति और स्मरण की जागीर अपने पास रखना चाहती हैं।

c. मीरा ने कृष्ण के रुप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि उनके सिर पर मोर मुकुट तथा शरीर पर पिले वस्त्र सुशोभित हो रहे हैं और गले में वैजंती फूलों की माला पहनी है, मुरली की मधुर तान से सबको मोहित करते हुए वे गायें चराते हैं और बहुत सुंदर लगते हैं।

d. मीराबाई की भाषा मूलतः बृजभाषा है, जो तत्कालीन काव्य की भाषा के रूप में प्रचलित थी। मूलतः राजस्थान की होने के कारण उनकी भाषा पर राजस्थानी भाषा का भी अच्छा प्रभाव है। मीरा की कविता में एक रहस्य है जो उनके लौकिक प्रेम को उनके अलौकिक प्रेम से जोड़ता है। जब वे कृष्ण से अपने वियोग की बात करती हैं तो वे कहती हैं कि इस वियोग से वे अत्यंत दुखी हैं और कृष्ण से मिलन के लिए बेचैन हैं। दूसरे रूप में वे आत्मा और परमात्मा के मिलन की ओर संकेत करती दिखाई देती हैं, क्योंकि किसी भी जीव को संपूर्ण आनन्द परमात्मा से मिलन के बाद ही प्राप्त होता है।

e. मीरा कृष्ण को पाने के लिए अनेकों कार्य करने को तैयार हैं। वह सेवक बन कर उनकी सेवा कर उनके साथ रहना चाहती हैं, उनके विहार करने के लिए बाग बगीचे लगाना चाहती है। वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं, ऊँचे-ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सकें। कुसुम्बी रंग की साड़ी पहनकर आधी रात को कृष्ण से मिलकर उनके दर्शन करना चाहती हैं।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

a. हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रुप नरहरि, धर्यो आप सरीर।

b. बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

c. चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

**उत्तर-**

a. इस पद में मीरा ने कृष्ण के भक्तों पर कृपा दृष्टि रखने वाले रुप का वर्णन किया है। वे कहती हैं - "हे हरि जिस प्रकार आपने अपने भक्तजनों की पीड़ा हरी है, मेरी भी पीड़ा उसी प्रकार दूर करो। जिस प्रकार द्रोपदी का चीर बढ़ाकर, प्रह्लाद के लिए नरसिंह रुप धारण कर आपने रक्षा की, उसी प्रकार मेरी भी रक्षा करो।" इसकी भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। 'र' ध्वनि का बार बार प्रयोग हुआ है तथा 'हरि' शब्द में श्लेष अलंकार है।

b. मीरा कहती हैं कि आपने गजराज की रक्षा करने के लिए मगरमच्छ का वध किया। हे गिरधरलाल आप अपनी दासी मीरा की पीड़ा को भी दूर करो। काटी कुजर में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है राजस्थानी मिश्रित बृजभाषा के कारण गेयता और संगीतात्मकता की भी प्रचुरता है।

c. इसमें मीरा कृष्ण की चाकरी करने के लिए तैयार है क्योंकि इससे वह उनके दर्शन, नाम, स्मरण और भावभक्ति पा सकती है। इसमें दास्य भाव दर्शाया गया है। भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। अनुप्रास अलंकार, रुपक अलंकार और कुछ तुकांत शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रुप लिखिए-

उदाहरण - भीर - पीड़ा/ कष्ट/ दुख; री - की

a. चीर।
b. बूढ़ता।
c. धर्यो।
d. लगास्यूँ।
e. कुण्जर
f. घणा।
g. बिन्दरावन।
h. सरसी।
i. रहस्यूँ।
j. हिवड़ा।
k. राखो।
l. कुसुम्बी।

**उत्तर-**

a. चीर- वस्त्र।

b. बूढ़ता- डूबना।

c. धर्यो- धारण।

d. लगास्यूँ- लगाना।

e. कुण्जर- हाथी।

f. घणा- बहूत।

g. बिन्दरावन- वृंदावन।

h. सरसी- हर्ष।

i. रहस्यूँ- रहूँ ।

j. हिवड़ा- हृदय।

k. राखो- रखना ।

l. कुसुम्बी - लाल (केसरिया)।

STEP UP ACADEMY

# मनुष्यता

**-मैथिलीशरण गुप्त**

## व्याख्या

प्रस्तुत पाठ में कवि मैथलीशरण गुप्त ने सही अर्थों में मनुष्य किसे कहते हैं उसे बताया है। कविता परोपकार की भावना का बखान करती है तथा मनुष्य को भलाई और भाईचारे के पथ पर चलने का सलाह देती है।

**विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,**

**मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी।**

**हुई न यों सु-मृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,**

**मरा नहीं वहीं कि जो जिया न आपके लिए।**

**वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि कहते हैं मनुष्य को ज्ञान होना चाहिए की वह मरणशील है इसलिए उसे मृत्यु से डरना नहीं चाहिए परन्तु उसे ऐसी सुमृत्यु को प्राप्त होना चाहिए जिससे सभी लोग मृत्यु के बाद भी याद करें। कवि के अनुसार ऐसे व्यक्ति का जीना या मरना व्यर्थ है जो खुद के लिए जीता हो। ऐसे व्यक्ति पशु के समान है असल मनुष्य वह है जो दूसरों की भलाई करे, उनके लिए जिए। ऐसे व्यक्ति को लोग मृत्यु के बाद भी याद रखते हैं।

**उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,**

**उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।**

**उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,**

**तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।**

**अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि के अनुसार उदार व्यक्तियों की उदारशीलता को पुस्तकों, इतिहासों में स्थान देकर उनका बखान किया जाता है, उनका समस्त लोग आभार मानते हैं तथा पूजते हैं। जो व्यक्ति विश्व में एकता और अखंडता को फैलता है उसकी कीर्ति का सारे संसार में गुणगान होता है। असल मनुष्य वह है जो दूसरों के लिए जिए मरे।

**क्षुदार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,**

**तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।**

**उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,**

**सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।**

**अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

इन पंक्तियों में कवि ने पौरणिक कथाओं का उदारहण दिया है। भूख से व्याकुल रंतिदेव ने माँगने पर अपना भोजन का थाल भी दे दिया तथा देवताओं को बचाने के लिए दधीचि ने अपनी हड्डियों को व्रज बनाने के लिए दिया। राजा उशीनर ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपने शरीर का मांस बहेलिए को दे दिया और वीर कर्ण ने अपना शारीरिक रक्षा कवच दान कर दिया। नश्वर शरीर के लिए मनुष्य को भयभीत नही होना चाहिए।

**सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है वही,**

**वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।**

**विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,**

**विनीत लोक वर्ग क्या न सामने झुका रहे?**

**अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,**

**वहीं मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि ने सहानुभूति, उपकार और करुणा की भावना को सबसे बड़ी पूंजी बताया है और कहा है की इससे ईश्वर भी वश में हो जाते हैं। बुद्ध ने करुणावश पुरानी परम्पराओं को तोड़ा जो कि दुनिया की भलाई के लिए था इसलिए लोग आज भी उन्हें पूजते हैं। उदार व्यक्ति वह है जो दूसरों की भलाई करे।

**रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में**

**सन्त जन आपको करो न गर्व चित्त में**

**अन्त को हैं यहाँ त्रिलोकनाथ साथ में**

**दयालु दीन बन्धु के बडे विशाल हाथ हैं**

**अतीव भाग्यहीन हैं अंधेर भाव जो भरे**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि कहते हैं की अगर किसी मनुष्य के पास यश, धन-दौलत है तो उसे इस बात के गर्व में अँधा होकर दूसरों की उपेक्षा नही करनी नहीं चाहिए क्योंकि इस संसार में कोई अनाथ नहीं है। ईश्वर का हाथ सभी के सर पर है। प्रभु के रहते भी जो व्याकुल है वह बड़ा भाग्यहीन है।

**अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,**

**समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े–बड़े।**

**परस्परावलम्ब से उठो तथा बढ़ो सभी,**

**अभी अमत्र्य–अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।**

**रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि के अनुसार अनंत आकाश में असंख्य देवता मौजूद हैं जो अपने हाथ बढ़ाकर परोपकारी और दयालु मनुष्यों के स्वागत के लिए खड़े हैं। इसलिए हमें परस्पर सहयोग बनाकर उन ऊचाइयों को प्राप्त करना चाहिए जहाँ देवता स्वयं हमें अपने गोद में बिठायें। इस मरणशील संसार में हमें एक-दूसरे के कल्याण के कामों को करते रहें और स्वयं का उद्धार करें।

**'मनुष्य मात्र बन्धु है' यही बड़ा विवेक है,**

**पुराणपुरूष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।**

**फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद है,**

**परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।**

**अनर्थ है कि बंधु हो न बंधु की व्यथा हरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

सभी मनुष्य एक दूसरे के भाई-बंधू है यह बहुत बड़ी समझ है सबके पिता ईश्वर हैं। भले ही मनुष्य के कर्म अनेक हैं परन्तु उनकी आत्मा में एकता है। कवि कहते हैं कि अगर भाई ही भाई की मदद नही करेगा तो उसका जीवन व्यर्थ है यानी हर मनुष्य को दूसरे की मदद को तत्पर रहना चाहिए।

**चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,**

**विपत्ति विप्र जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।**

**घटे न हेल मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,**

**अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।**

**तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

अंतिम पंक्तियों में कवि मनुष्य को कहता है कि अपने इच्छित मार्ग पर प्रसन्नतापूर्वक हंसते खेलते चलो और रास्ते पर जो बाधा पड़े उन्हें हटाते हुए आगे बढ़ो। परन्तु इसमें मनुष्य को यह ध्यान रखना चाहिए कि उनका आपसी सामंजस्य न घटे और भेदभाव न बढ़े। जब हम एक दूसरे के दुखों को दूर करते हुए आगे बढ़ेंगे तभी हमारी समर्थता सिद्ध होगी और समस्त समाज की भी उन्नति होगी।

# प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

a. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?

b. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

c. कवि ने दधीचि कर्ण, आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?

d. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त है कि हमें गर्व रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

e. 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

f. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

g. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

h. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

**उत्तर-**

a. जो व्यक्ति दूसरों के हित को सर्वोपरि मानता हैं तथा जिसमे मानवता, दया, साहनुभूति आदि गुण होते हैं, जो मृत्यु के बाद भी औरों के द्वारा सम्मान की दृष्टि से याद किया जाता है, उसी की मृत्यु को कवि ने सुमृत्यु कहा है।

b. धरती कृतज्ञ होकर जिसका अहसान मानती है।

जिस व्यक्ति की कथा सरस्वती सुनाती है।

जिसकी कीर्ति सदा संसार में बनी रहती है।

ऐसे व्यक्ति सदा संसार में पूजनीय होते हैं और उदार व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं।

c. कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों के उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए यह संदेश दिया है कि परोपकार के लिए अपना सर्वस्व यहाँ तक कि अपने प्राण तक न्योछावर तक करने को तैयार रहना चाहिए। यहाँ तक कि परहित के लिए अपने शरीर तक का दान करने को तैयार रहना चाहिए। दधीचि ने मानवता की रक्षा के लिए अपनी अस्थियों तथा कर्ण ने खाल तक दान कर दी। हमारा शरीर तो नश्वर हैं उसका मोह रखना व्यर्थ है। परोपकार करना ही सच्ची मनुष्यता है। हमें यहीं करना चाहिए।

d. कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों के द्वारा इस भाव को व्यक्त करना चाहा है।

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में।

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में॥

e. मनुष्य मात्र बंधु है' से यह अभिप्राय है कि संसार के सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं सभी उस परमपिता की संतान हैं इसलिए मानव-मानव में भेद नहीं करना चाहिए।

f. कवि ने सबको एक साथ चलने की प्रेरणा इसलिए दी है क्योंकि सभी मनुष्य उस एक ही परमपिता परमेश्वर की संतान हैं। इसलिए बंधुत्व के नाते हमें सभी को साथ लेकर चलना चाहिए क्योंकि समर्थ भाव भी यही है कि हम सबका कल्याण करते हुए अपना कल्याण करें।

g. व्यक्ति को मानव की सेवा करते हुए, परोपकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए, साथ ही अपने अभीष्ट मार्ग पर एकता के साथ बढ़ना चाहिए। अपने व्यक्तिगत स्वार्थों का त्याग कर दूसरों के हित का चिंतन करना

चाहिए। धन संपति को लेकर कभी भी अहंकारी नही बनना चाहिए। जो व्यक्ति दूसरों की सहायता करते हैं, ईश्वर हमेशा उनके सहायक बनते हैं। इस दौरान जो भी विपत्तियाँ आएँ, उन्हें ढकेलते हुए आगे बढ़ते जाना चाहिए।

h. कवि इस कविता द्वारा मानवता, प्रेम, एकता, दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति, सदभावना और उदारता का संदेश देना चाहता है। मनुष्य को नि:स्वार्थ जीवन जीना चाहिए। वर्गवाद, अलगाव को दूर करके विश्व बंधुत्व की भावना को बढ़ाना चाहिए। धन होने पर घमंड नहीं करना चाहिए तथा खुद आगे बढ़ने के साथ-साथ औरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये-

a. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

b. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

c. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न पड़ें उन्हें धकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

**उत्तर-**

a. इन पंक्तियों द्वारा कवि ने एक दूसरे के प्रति सहानुभूति की भावना को उभारा है। इससे बढ़कर कोई पूँजी नहीं है। यदि प्रेम, सहानुभूति, करुणा के भाव हो तो वह जग को जीत सकता है। वह सम्मानित भी रहता है। महात्मा बुद्ध के विचारों का भी विरोध हुआ था परन्तु जब बुद्ध ने अपनी करुणा, प्रेम व दया का प्रवाह किया तो उनके सामने सब नतमस्तक हो गए।

b. कवि कहता है कि कभी भूलकर भी अपने थोड़े से धन के अहंकार में अंधे होकर स्वयं को सनाथ अर्थात् सक्षम मानकर गर्व मत करो क्योंकि अनाथ तो कोई नहीं है। इस संसार का स्वामी ईश्वर तो सबके साथ है और ईश्वर तो बहुत दयालु, दीनों और असहायों का सहारा है और उनके हाथ बहुत विशाल है अर्थात् वह सबकी सहायता करने में सक्षम है। प्रभु के रहते भी जो व्याकुल रहता है वह बहुत भाग्यहीन ही है। सच्चा मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए मरता है।

कवि मनुष्य को प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि यह मनुष्य का इच्छित मार्ग है, इस पर उसे हर्ष के साथ खेलते हुए चलना चाहिए मार्ग में आने वाली बाधाओं विपत्तियों का मुस्कुराते हुए डटकर सामना करते हुए आगे बढ़ना चाहिए आपस में भेदभाव को भूलकर मिलजुल कर रहना चाहिए तर्क करने वालों को एक होकर कुतर्क करने वालों को सही सबक सिखना चाहिए।

# पर्वत प्रदेश में पावस

**-सुमित्रानंदन पंत**

## व्याख्या

**पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,**
**पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।**

इस कविता में कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने पर्वतीय इलाके में वर्षा ऋतु का सजीव चित्रण किया है। पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु होने से वहाँ प्रकृति में पल-पल बदलाव हो रहे हैं। कभी बादल छा जाने से मूसलधार बारिश हो रही थी तो कभी धूप निकल जाती है।

**मेखलाकर पर्वत अपार**
**अपने सहस्त्र दृग-सुमन फाड़,**
**अवलोक रहा है बार-बार**
**नीचे जल में निज महाकार,**
**-जिसके चरणों में पला ताल**
**दर्पण सा फैला है विशाल!**

पर्वतों की श्रृंखला मंडप का आकार लिए अपने पुष्प रूपी नेत्रों को फाड़े अपने नीचे देख रहा है। कवि को ऐसा लग रहा है मानो तालाब पर्वत के चरणों में पला हुआ है जो की दर्पण जैसा विशाल दिख रहा है। पर्वतों में उगे हुए फूल कवि को पर्वत के नेत्र जैसे लग रहे हैं जिनसे पर्वत दर्पण समान तालाब में अपनी विशालता और सौंदर्य का अवलोकन कर रहा है।

**गिरि का गौरव गाकर झर-झर**
**मद में नस-नस उत्तेजित कर**
**मोती की लड़ियों सी सुन्दर**
**झरते हैं झाग भरे निर्झर!**
**गिरिवर के उर से उठ-उठ कर**
**उच्चाकांक्षायों से तरूवर**
**है झांक रहे नीरव नभ पर**
**अनिमेष, अटल, कुछ चिंता पर।**

झरने पर्वत के गौरव का गुणगान करते हुए झर-झर बह रहे हैं। इन झरनों की करतल ध्वनि कवि के नस-नस में उत्साह का संचार करती है। पर्वतों पर बहने वाले झाग भरे झरने कवि को मोती की लड़ियों के समान लग रहे हैं जिससे पर्वत की सुंदरता में और निखार आ रहा है।

पर्वत के खड़े अनेक वृक्ष कवि को ऐसे लग रहे हैं मानो वे पर्वत के हृदय से उठकर उँची आकांक्षायें लिए अपलक और स्थिर होकर शांत आकाश को देख रहे हैं तथा थोड़े चिंतित मालुम हो रहे हैं।

**उड़ गया, अचानक लो, भूधर**

**फड़का अपार वारिद के पर!**

**रव-शेष रह गए हैं निर्झर!**

**है टूट पड़ा भू पर अंबर!**

**धँस गए धरा में सभय शाल!**

**उठ रहा धुऑं, जल गया ताल!**

**-यों जलद-यान में विचर-विचर**

**था इंद्र खेलता इंद्रजाल।**

पल-पल बदलते इस मौसम में अचानक बादलों के आकाश में छाने से कवि को लगता है की पर्वत जैसे गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है मानो आकाश धरती पर टूटकर आ गिरा हो। केवल झरनों का शोर ही सुनाई दे रहा है।

तेज बारिश के कारण धुंध सा उठता दिखाई दे रहा है जिससे ऐसा लग रहा है मानो तालाब में आग लगी हो। मौसम के ऐसे रौद्र रूप को देखकर शाल के वृक्ष डरकर धरती में धँस गए हैं ऐसे प्रतीत होते हैं। इंद्र भी अपने बादलरूपी विमान में सवार होकर इधर-उधर अपना खेल दिखाते घूम रहे हैं।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

a. पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

b. मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

c. 'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?

d. कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

e. पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश की और क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?

f. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धंस गए?

g. झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

**उत्तर-**

a. वर्षा ऋतु में मौसम बदलता रहता है। तेज़ वर्षा होती है। जल पहाड़ों के नीचे इकट्ठा होता है तो दर्पण जैसा लगता है। पर्वत माला पर अनगिनत फूल खिल जाते हैं। ऐसा लगता है कि अनेकों नेत्र खोलकर पर्वत देख रहा है। पर्वतों पर बहते झरने मानो उनका गौरव गान गा रहे हैं। लंबे-लंबे वृक्ष आसमान को निहारते चिंतामग्न दिखाई दे रहे हैं। अचानक काले काले बादल घिर आते हैं। ऐसा लगता है मानो बादल रुपी पंख लगाकर पर्वत उड़ना चाहते हैं। कोहरा धुएँ जैसा लगता है। इंद्र देवता बादलों के यान पर बैठकर नए-नए जादू दिखाना चाहते हैं।

b. 'मेखला' का अर्थ तगड़ी होता है जिसे स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं इस प्रकार मेखलाकार का अर्थ तगड़ी का गोल आकार हुआ पर्वत भी मेखला की तरह गोल दिखाई दे रहे हैं। जो धरती की कटि को घेरे हुए हैं प्रकृति के सौंदर्य को उभरने के लिए कवि ने इसका प्रयोग किया है।

c. वर्षा ऋतु में चारों तरफ खिले हुए फूल ऐसे लगते हैं मानों विशाल पर्वत अपनी सैकड़ों आँखों से पूरी प्रकृति को निहार रहा हो।

d. कवि ने तालाब की समानता दर्पण से की है क्योंकि तालाब भी दर्पण की तरह स्वच्छ और निर्मल प्रतिबिम्ब दिखा रहा है।

e. पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आसमान की ओर अपनी ऊच्चाकंशाओ के कारण देख रहे थे। वे आसमान जितना ऊँचा उठना चाहते हैं। वे शांत भाव से एकटक आसमान को निहारते हैं। जो इस बात की ओर संकेत करता है कि अपनी आकांशाओं को पाने के लिए शांत तथा एकाग्रता आवश्यक है।

f. घनघोर वर्षा और धुंध के कारण ऐसा प्रतीत होता हैं कि शाल के वृक्ष धरती में धंस गए हैं।

g. झरने पर्वतों की गाथा का गान कर रहे हैं। बहते हुए झरने की तुलना मोती की लड़ियों से की गयी है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये-

a. है टूट पड़ा भू पर अंबर।

b. यों जलद-यान में विचर-विचर

था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

c. गिरिवर के उर से उठ-उठ कर

उच्चाकांक्षाओं से तरुवर

हैं झांक रहे नीरव नभ पर

अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

**उत्तर-**

a. सुमित्रानंदन पंत जी ने इस पंक्ति में पर्वत प्रदेश के मूसलाधार वर्षा का वर्णन किया है। पर्वत प्रदेश में पावस ऋतु में प्रकृति की छटा निराली हो जाती है। कभी-कभी इतनी धुआँधार वर्षा होती है मानो आकाश टूट पड़ेगा।

b. अचानक वर्षा का होना और अचानक ही धूप खिल जाना अचानक ही अंधेरा छा जाना प्रकृति के पल-पल बदलते इतने रूप देखकर ऐसा लग रहा जैसे खुद इंद्र ही अपना काला जादू इंद्रजाल दिखा रहा हो।

c. इन पंक्तियों का भाव यह है कि पर्वत पर उगे विशाल वृक्ष ऐसे लगते हैं मानो इनके हृदय में अनेकों महत्वकांक्षाएँ हैं और ये चिंतातुर आसमान को देख रहे हैं।

## कविता का सौंदर्य

**प्रश्न 1** इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** प्रस्तुत कविता में जगह-जगह पर मानवीकरण अलंकार का प्रयोग करके प्रकृति में जान डाल दी गई है जिससे प्रकृति सजीव प्रतीत हो रही है, जैसे - पर्वत पर उगे फूल को आँखों के द्वारा मानवकृत कर उसे सजीव प्राणी की तरह प्रस्तुत किया गया है।

'उच्चाकांक्षाओं से तरूवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर'

इन पंक्तियों में तरूवर के झाँकने में मानवीकरण अलंकार है, मानो कोई व्यक्ति झाँक रहा हो।

**प्रश्न 2** आपकी दृष्टि में इस कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर करता है-

(क) अनेक शब्दों की आवृति पर।

(ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर।

(ग) कविता की संगीतात्मकता पर।

**उत्तर-** (ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर।

इस कविता का सौंदर्य शब्दों की चित्रमयी भाषा पर निर्भर करता है। कविता में चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए प्रकृति का सुन्दर रुप प्रस्तुत किया गया है।

**प्रश्न 3** कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। ऐसे स्थलों को छाँटकर लिखिए।

**उत्तर-** कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। कविता में इन स्थलों पर चित्रात्मक शैली की छटा बिखरी हुई है-

1. मेखलाकार पर्वत अपार
   अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
   अवलोक रहा है बार-बार
   नीचे जल में निज महाकार
   जिसके चरणों में पला ताल
   दर्पण फैला है विशाल।

2. गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
   उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
   हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
   अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

# तोप

**-वीरेन डंगवाल**

**व्याख्या**

**कम्पनी बाग़ के मुहाने पर**

**धर रखी गई है यह 1857 की तोप**

**इसकी होती है बड़ी सम्हाल**

**विरासत में मिले**

**कम्पनी बाग की तरह**

**साल में चमकायी जाती है दो बार**

प्रस्तुत कविता में कवि वीरेन डंगवाल ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के युद्ध में अंग्रेज़ों द्वारा इस्तेमाल की हुई तोप का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि यह तोप आज कम्पनी बाग़ के प्रवेश द्वार रखी हुई है। जिस तरह कम्पनी बाग़ हमें अंग्रेज़ों द्वारा विरासत में मिली थी उसी तरह यह तोप भी हमें अंग्रेज़ो से ही प्राप्त हुआ जिसे आजकल बहुत देखभाल से रखा जाता है। कम्पनी बाग़ की तरह इसे भी साल में दो बार चमकाया जाता है।

**सुबह-शाम कम्पनी बाग में आते हैं बहुत से सैलानी**

**उन्हें बताती है यह तोप**

**कि मैं बड़ी जबर**

**उड़ा दिये थे मैंने**

**अच्छे-अच्छे सूरमाओं के छज्जे**

**अपने ज़माने में**

सुबह-शाम को बहुत सारे यात्री कम्पनी बाग़ में घूमने आते हैं तब यह तोप अपने बारे में बताती है की मैं बड़ी ताकतवर थी। उस समय मैंने बहुत सारे वीरों के मारा था। बहुत अत्याचार किये थे।

**अब तो बहरहाल**

**छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फारिग हो**

**तो उसके ऊपर बैठकर**

**चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप**

**कभी-कभी शैतानी में वे इसके भीतर भी घुस जाती हैं**

**ख़ासकर गौरैयें**

**वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप**

**एक दिन तो होना ही है उनका मुँह बन्द !**

परन्तु अब तोप की स्थिति बहुत बुरी है छोटे बच्चे इसपर बैठकर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। जब तोप बच्चों से मुक्त हो जाती है तब चिड़ियाँ इसपर बैठकर आपस में गप्प करती हैं। कभी-कभी चिड़ियाँ ख़ास तौर पर गौरेये तोप के भीतर घुस जाती हैं। इस दृश्य से कवि को ऐसा महसूस होता है मानो वह कह रही हों कोई कितना भी अत्याचारी और क्रूर हो उसका अंत एक न एक दिन जरूर होना है।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए।

a. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल क्यों होती है? स्पष्ट कीजिए।

b. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल इसलिए होती है क्योंकि ये वस्तुएँ हमें अपने पूर्वजों की, अपने इतिहास की याद दिलाती हैं। इनसे हमारा भावनात्मक संबंध होता है। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है। ये तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी के साथ दिशानिर्देश भी देती हैं।

c. कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?

d. कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

**उत्तर-**

a. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल इसलिए होती है क्योंकि ये वस्तुएँ हमें अपने पूर्वजों की, अपने इतिहास की याद दिलाती हैं। इनसे हमारा भावनात्मक संबंध होता है। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है। ये तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी के साथ दिशानिर्देश भी देती हैं।

b. इस कविता में तोप के विषय में जानकारी मिलती है कि यह अंग्रेज़ों के समय की तोप है। 1857 में इसका प्रयोग शक्तिशाली हथियार के रुप में किया गया था। इसने अनगिनत शूरवीरों, स्वतंत्रता सेनानियों के धज्जे उड़ा दिए थे। आखिरकार अब इस तोप को मुँह बन्द करना पड़ा। अब इससे कोई नहीं डरता। अब यह केवल खिलौना मात्र है। अब यह केवल दर्शनीय वस्तु है। चिड़िया इस पर अपना घोंसला बना रही है, उसमें बच्चे खेलते हैं। यह तोप हमें बताती है कि कोई कितना शक्तिशाली क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसे धराशायी होना ही पड़ता है।

c. कंपनी बाग में रखी तोप यही सीख देती है कोई कितना भी बड़ा ताकतवर क्यूं न हो एक न एक दिन उसको भी समय की मार झेलनी पड़ती है।

d. भारत की स्वतंत्रता के प्रतीक चिह्न दो बड़े त्योहार 15 अगस्त और 26 जनवरी गणतंत्र दिवस है। इन दोनों अवसरों पर तोप को चमकाकर कंपनी बाग को सजाया जाता है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये-

a. अब तो बहरहाल

छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फ़ारिग हो

तो उसके ऊपर बैठकर

चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप।

b. वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप

एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

c. उड़ा दिए थे मैंने

अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे।

**उत्तर-**

a. इन पंक्तियों के द्वारा कवि ने तोप की वर्तमान स्थिति को बताया है। आशय यह है कि अब यह तोप केवल खिलौना मात्र है। चिड़िया इस पर अपना घोंसला बना रही है, उसमें बच्चे खेलते हैं। 1857 की क्रांति में जिस तोप ने आतंक मचा रखा था वो आज बेबस थी। यह तोप हमें बताती है कि कोई कितना शक्तिशाली क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसे धराशायी होना ही पड़ता है.

b. कभी विनाश का पर्याय मानी जाने वाली आज लाचार की तरह खड़ी हैं जो यह बताने के लिए काफी है कि कोई कितना भी बड़ा ताकतवर क्यूँ न हों एक न एक दिन उसका भी अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

c. इन पंक्तियों में तोप ने अपनी गाथा को सुनाया है। वह बता रहा है की 1857 की क्रांति की सामने उसने अपने आगे किसी की नहीं सुनी थी। उसने कई वीरों की नींद सुला दिया था।

## भाषा अध्ययन

**प्रश्न 1** कवि ने इस कविता में शब्दों का सटीक और बेहतरीन प्रयोग किया है। इसकी एक पंक्ति देखिए 'धर' रखी गई है यह 1857 की तोप। 'धर' शब्द देशज है और कवि ने इसका कई अर्थों में प्रयोग किया है। 'रखना', 'धरोहर' और 'संचय' के रूप में।

**उत्तर-** अन्य उदाहरण:

खरा सोना मजबूत होता है।

वह मेरी कसौटी पर खरा उतरा।

**प्रश्न 2** 'तोप' शीर्षक कविता का भाव समझते हुए इसका गद्य में रूपांतरण कीजिए।

**उत्तर-** कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत ने उसका स्वागत ही किया था, लेकिन करते-कराते वह हमारी शासक बन बैठी। उसने कुछ बाग बनवाए तो कुछ तोपें भी तैयार की। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में तोप का प्रयोग शक्तिशाली हथियार के रूप में किया गया था। उन तोपों ने इस देश को फिर से आज़ाद कराने का सपना साकार करने निकले जाँबाजों को मौत के घाट उतारा पर एक दिन ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वजों ने उस सत्ता को उखाड़ फेंका। अब उस क्रूर सत्ता की प्रतीक यह तोप सजावट की वस्तु बनकर कंपनी बाग़ के मुख्य द्वार पर रखी हुई है। इसे संभालकर रखा गया है ताकि लोग जान सकें कि हमारे पूर्वजों ने अपना अमर बलिदान देकर इस तोप से अत्याचार करने वाले शासकों को इस देश से विदा कर ही दिया। अब यह तोप प्रदर्शन की वस्तु बनकर रह गई है। अब इससे कोई नहीं डरता। अब यह केवल खिलौना मात्र है। चिड़ियाँ, गौरेया इसके भीतर घुस जाती हैं, बच्चे इस पर घुड़सवारी करते हैं। यह तोप हमें बताती है कि अन्यायी ताकतवर का भी एक-न-एक दिन अंत अवश्य होता है।

# कर चले हम फ़िदा

-कैफ़ी आज़मी

## व्याख्या

**कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

**साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई**

**फिर भी बढ़ते क़दम को न रुकने दिया**

**कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं**

**सर हिमालय का हमने न झुकने दिया**

**मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

प्रस्तुत गीत कैफ़ी आजमी द्वारा भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म 'हकीकत' से लिया गया है। इस गीत में कवि ने खुद को भारत माता के सैनिक के रूप में अंकित किया है। कवि कहते हैं कि युद्धभूमि में सैनिक शहीद होते हुए अपने दूसरे साथियों से कहते हैं कि हमने अपने जान और तन को देश सेवा में समर्पित कर दिया, हम जा रहे हैं, अब देश की रक्षा करने का भार तुम्हारे हाथों में है। हमारी साँस थम रही थीं, ठंड से नसें जम रही थीं, हम मृत्यु की गोद में जा रहे थे फिर भी हमने पीछे हटकर उन्हें आगे बढ़ने का मौका नही दिया। हमारे कटे सिरों यानी शहीद हुए जवानों का हमें ग़म नहीं है, हमारे लिये ये प्रसन्नता की बात है की हमने अपने जीते जी हिमालय का सिर झुकने नहीं दिया यानी दुश्मनों को देश में प्रवेश नही करने दिया। मरते दम तक हमारे अंदर बलिदान और संघर्ष का जोश बना रहा। हम बलिदानी देकर जाकर रहे हैं, अब देश की रक्षा करने का भार तुम्हारे हाथों में है।

**ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर**

**जान देने के रुत रोज़ आती नहीं**

**हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे**

**वह जवानी जो खूँ में नहाती नहीं**

**आज धरती बनी है दुलहन साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

कवि एक सैनिक के रूप में कहते हैं कि व्यक्ति को जिन्दा रहने के लिए बहुत समय मिलते हैं परन्तु देश के लिए जान देने के मौके कभी-कभी ही मिलते हैं। जो जवानी खून में सराबोर नही होती वही प्यार और सौंदर्य को बदनाम करती है। सैनिक अपने साथियों की सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि आज धरती दुल्हन बनी हुई है यानी हमारी आन, बान और शान का प्रतीक है, इसलिए इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमारे जाने के बाद इसकी रक्षा की जिमेवारी अब आपके हाथों में है।

**राह कुर्बानियों की न वीरान हो**

**तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले**

**फतह का जश्न इस जश्न के बाद है**

**ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले**

**बांध लो अपने सर से कफ़न साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

शहीद होते हुए सैनिक कहते हैं कि बलिदानों का जो सिलसिला चल पड़ा है वो कभी रुक ना पाये यानी अपने देश की दुश्मनों से रक्षा के लिए सैनिक हमेशा आगे बढ़ते रहे। इन कुर्बानियों के बाद ही हमें जश्न मनाने के अवसर मिलेंगे। आज हम मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं इसलिए हमें अपने सिर पर कफ़न बाँध लेना चाहिए यानी मृत्यु का चिंता ना करते हुए शत्रु से लोहा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए। अब हमारे जाने के बाद देश की रक्षा की जिमेवारी तुम्हारी है।

**खींच दो अपने खूँ से ज़मी पर लकीर**

**इस तरफ आने पाए न रावण कोई**

**तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे**

**छू न पाए सीता का दामन कोई**

**राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

सैनिक अपनी बलिदानी से पहले अपने साथियों से कहता है कि आओ हम अपने खून से धरती पर लकीर खीच दें जिसके पार जाने की कोई भी रावण रूपी शत्रु हिम्मत ना कर पाए। भारत माता को सीता समान बताते हुए कहता है अगर कोई भी हाथ भारत माता की आँचल छूने का दुस्साहस करे उसे तोड़ दो। भारत माता के सम्मान को किसी भी तरह ठेस ना पहुँचे। जिस तरह राम और लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए पापी रावण का नाश किया उसी तरह तुम भी शत्रु को पराजित कर भारत माता को सुरक्षित करो। अब ये वतन की जिमेवारी तुम्हारे हाथों में है।

# प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

a. क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?

b. सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?

c. इस गीत में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है?

d. गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि व जीवन भर याद रह जाते हैं?

e. कवी ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

f. कवि ने इस कविता में किस काफिले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

g. इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस और संकेत करता है?

h. इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-**

a. यह गीत सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से आक्रमण किया और भारतीय वीरों ने इस आक्रमण का मुकाबला वीरता से किया।

b. भारत के सैनिक हर पल देश की रक्षा हेतु बलिदान देने के लिए तत्पर रहते हैं। 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' इस पंक्ति में हिमालय भारत के मान सम्मान का प्रतीक है। भारत-चीन युद्ध हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों पर ही लड़ा गया था। भारतीय सैनिकों ने अपने प्राण गवाँकर देश के मान-सम्मान को सुरक्षित रखा। उनके साहस की अमर गाथा से हिमालय की पहाड़ियाँ आज भी गुंजायमान हैं।

c. जिस प्रकार एक दुल्हन का श्रृंगार किया जाता है उसको लाल साड़ी में सजाया जाता है ठीक उसी प्रकार भारतीय सैनिकों ने अपने खून से धरती को लाल रंग में रंग दिया था और उसे दुश्मनों से बचाकर अपने बलिदान से उसे दुल्हन की तरह सजा दिया था।

d. गीतों में भावनात्मकता, मार्मिकता, सच्चाई, गेयता, संगीतात्मकता, लयबद्धता आदि गुण होते हैं जिससे वे जीवन भर याद रह जाते हैं। 'कर चले हम फ़िदा' गीत में बलिदान की भावना स्पष्ट रुप से झलकती है जो हर हिन्दुस्तानी को दिमाग में रच-बस जाते हैं

e. कवि ने साथियों' शब्द का प्रयोग सैनिक साथियों व देशवासियों के लिए किया है। सैनिकों का मानना है कि इस देश की रक्षा हेतु हम बलिदान की राह पर बढ़ रहे हैं। हमारे बाद यह राह सूनी न हो जाए। देशवासियों का परस्पर साथ ही देश की अनेकता में एकता जैसी विशिष्टता को मज़बूत बनाता है। आने वाले भी देश की मान-सम्मान की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान देने को तैयार रहें।

f. कवि ने देश की रक्षा और बलिदान के लिए सैनिकों के समूह को काफिले के रूप में आगे बढ़ते रहने की बात कही है।

g. सर पर कफ़न बाँधना' का अर्थ होता है मौत के लिए तैयार हो जाना। इस गीत यह शत्रुओं से रणभूमि में लड़ने की और संकेत करता है। सैनिक जब युद्धक्षेत्र में उतरते हैं तो वे देश की

मान-सम्मान की रक्षा के लिए प्राण तक देने को तैयार रहते हैं।

h. प्रस्तुत कविता देश के सैनिकों की भाषा में लिखा गया है जो की उनके देशभक्ति की भावना को दर्शाता है। वे देश के सम्मान और रक्षा के लिए हर चुनौतियों को स्वीकार करके अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार रहते हैं। साथ ही इन्हे आने वाली पीढ़ियों से अपेक्षाएं हैं की वे भी उनके शहीद होने के बाद इस देश के दुश्मनों का डटकर मुकाबला करें। वे कह रहे हैं कि उन्होंने अंतिम क्षण तक रक्षा की अब ये ज़िम्मेदारी आप पर है। देश पर जान देने के मौके बहुत कम आते हैं। ये क्रम टूटना नही चाहिए। कवि इसमें देशभक्ति को विकसित करके देश को जागरूक करना चाहता है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए।

a. साँस थमती गई, नब्ज जमती गई<br>फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया।

b. खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर<br>इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई।

c. छू न पाए सीता का दामन कोई<br>राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों।

**उत्तर-**

a. इन पक्तियों में कवि ने भारतीय सैनिकों की सराहना करते हुए कहा है कि वे भयंकर बर्फ के अन्दर भी दुश्मन से मोर्चा लेते रहे उन्होंने सॉस के रुकने और खून के जमने की परवाह भी नहीं की देश रक्षा के जोश ने दुश्मन को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।

b. यह गीत की प्रेरणा देने वाली पंक्तियाँ हैं। कवि का भाव है कि भारतभूमि सीता की तरह पवित्र है। शत्रु रुपी रावण हरण करने के लिए उसकी तरफ़ बढ़ रहा है इसलिए उनका आग्रह है की हम आगे बढ़कर उनकी रक्षा करें तथा ऐसी लक्ष्मण रेखा खींचें कीं शत्रु बढ़ न पाये यानी उसे रोकने का प्रयास करें।

c. कवि सैनिकों को कहना चाहता है कि भारत का सम्मान सीता की पवित्रता के समान में है। देश की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। देश की सीमा पर सैनिकों के होते हुए कोई दुश्मन देश में प्रवेश करके देश की अस्मिता को नहीं लूट सकता। देश की पवित्रता की रक्षा राम और लक्ष्मण की तरह करना है। अतः राम तथा लक्ष्मण का कर्तव्य भी हमें ही निभाना है।

## भाषा अध्ययन

**प्रश्न 1** इस गीत में कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं। गीत संदर्भ में उनका आशय स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. कट गए सर।
2. नब्ज़ जमती गई।
3. जान देने की रुत।
4. हाथ उठने लगे।

**उत्तर-**

1. कट गए सर: युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं के **<u>कट जाए सर।</u>**
2. नब्ज़ जमती गई: डर के मारे सबकी **<u>नब्ज़ जम गई।</u>**
3. जान देने की रुत: शत्रु के हमले की जानकारी मिलते ही सब जान गए कि **<u>यह जान देने की रुत</u>** है।
4. हाथ उठने लगे: स्टेज पर मंत्री के आते ही जयकारे के साथ **<u>हाथ उठने लगे।</u>**

❖❖

# स्पर्श भाग – 2 काव्य खंड

## साखी

-कबीर

**भावार्थ**

**ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।**

**अपना तन सीतल करै, औरन कौ सुख होइ।।**

**भावार्थ -** कबीर कहते हैं की हमें ऐसी बातें करनी चाहिए जिसमें हमारा अहं ना झलकता हो। इससे हमारा मन शांत रहेगा तथा सुनने वाले को भी सुख और शान्ति प्राप्त होगी।

**कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढै वन माँहि।**

**ऐसैं घटि-घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहि।।**

**भावार्थ -** यहाँ कबीर ईश्वर की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि कस्तूरी हिरन की नाभि में होती है लेकिन इससे अनजान हिरन उसके सुगंध के कारण उसे पूरे जंगल में ढूंढ़ता फिरता है ठीक उसी प्रकार ईश्वर भी प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करते हैं परन्तु मनुष्य इसे वहाँ नही देख पाता। वह ईश्वर को मंदिर-मस्जिद और तीर्थ स्थानों में ढूंढ़ता रहता है।

**जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।**

**सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।**

**भावार्थ -** यहाँ कबीर कह रहे हैं की जब तक मनुष्य के मन में अहंकार होता है तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नही होती। जब उसके अंदर का अंहकार मिट जाता है तब ईश्वर की प्राप्ति होती है। ठीक उसी प्रकार जैसे दीपक के जलने पर उसके प्रकाश से आँधियारा मिट जाता है। यहाँ अहं का प्रयोग अन्धकार के लिए तथा दीपक का प्रयोग ईश्वर के लिए किया गया है।

**सुखिया सब संसार है, खायै अरु सोवै।**

**दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।**

**भावार्थ -** कबीरदास के अनुसार ये सारी दुनिया सुखी है क्योंकि ये केवल खाने और सोने का काम करता है। इसे किसी भी प्रकार की चिंता नहीं है। उनके अनुसार सबसे दुखी व्यक्ति वो हैं जो प्रभु के वियोग में जागते रहते हैं। उन्हें कहीं भी चैन नही मिलता, वे प्रभु को पाने की आशा में हमेशा चिंता में रहते हैं।

**बिरह भुवंगम तन बसै, मन्त्र ना लागै कोइ।**

**राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ।।**

**भावार्थ -** जब किसी मनुष्य के शरीर के अंदर अपने प्रिय से बिछड़ने का साँप बसता है तो उसपर कोई मन्त्र या दवा का असर

नहीं होता ठीक उसी प्रकार राम यानी ईश्वर के वियोग में मनुष्य भी जीवित नही रहता। अगर जीवित रह भी जाता है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है।

**निंदक नेडा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।**
**बिन साबण पाँणी बिना, निरमल करै सुभाइ।।**

**भावार्थ -** संत कबीर कहते हैं की निंदा करने वाले व्यक्ति को सदा अपने पास रखना चाहिए, हो सके तो उसके लिए अपने पास रखने का प्रबंध करना चाहिए ताकि हमें उसके द्वारा अपनी त्रुटियों को सुन सकें और उसे दूर कर सकें। इससे हमारा स्वभाव साबुन और पानी की मदद के बिना निर्मल हो जाएगा।

**पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया ना कोइ।**
**ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होई।।**

**भावार्थ -** कबीर कहते हैं की इस संसार में मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़-पढ़ कर कई मनुष्य मर गए परन्तु कोई भी पंडित ना बन पाया। यदि किसी मनुष्य ने ईश्वर-भक्ति का एक अक्षर भी पढ़ लिया होता तो वह पंडित बन जाता यानी ईश्वर ही एकमात्र सत्य है, इसे जाननेवाला ही वास्तविक ज्ञानी है।

**हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराडा हाथि।**
**अब घर जालौं तास का, जे चले हमारे साथि।।**

**भावार्थ -** कबीर कहते हैं की उन्होंने अपने हाथों से अपना घर जला लिया है यानी उन्होंने मोह-माया रूपी घर को जलाकर ज़ान प्राप्त कर लिया है। अब उनके हाथों में जलती हुई मशाल है यानी ज़ान है। अब वो उसका घर जालयेंगे जो उनके साथ जाना चाहता है यानी उसे भी मोह-माया के बंधन से आजाद होना होगा जो ज़ान प्राप्त करना चाहता है।

## बोध-प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

h. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

i. दीपक दिखाई देने पर अंधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

j. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

k. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

l. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

m. ऐकै अषिर पीव का, पढ़े सु पंडित होई'- इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

n. कबीर की उद्धत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

h. मीठी वाणी बोलने वाले व्यक्तियों में अहंकार नहीं होता, मन शांत रहता है और दूसरे व्यक्ति भी उसके मधुर वचन सुनकर सुखी होते हैं। इसके विपरीत कर्कश और कटु वचन मन को पीड़ा देने वाले होते हैं।

i. यहाँ दीपक का मतलब भक्तिरूपी ज्ञान तथा अन्धकार का मतलब अज्ञानता से है। जिस प्रकार दीपक के जलने अन्धकार समाप्त हो जाता है। ठीक इसी प्रकार जब ज्ञान का प्रकाश हृदय में जलता है तब मन के सारे विकार अर्थात भ्रम, संशय का नाश हो जाता है।

j. इसमें कोई संदेह नही कि ईश्वर हर प्राणी के भीतर ही नही, बल्कि हर कण में है। किन्तु हमारा मन अज्ञानता, अहंकार, विलासिताओं, इत्यादि में लिप्त है। हम उसे मंदिर, मस्जिदों, गिरजाघरों में ढूंढ़ते हैं जबकि वह सर्वव्यापी है। इस कारण हम ईश्वर को नहीं देख पाते हैं।

k. इस संसार में अज्ञानी और भोगी व्यक्ति सुखी हैं, जो ज्ञानी हैं वे दुनिया की स्थिति देखकर दुखी हैं सोना और जागना ज्ञान और अज्ञान दोनों के प्रतीक हैं। ज्ञान ओर अज्ञान के प्रयोग से कवि संसार में नई चेतना लाना चाहता है।

l. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने बताया है कि हमें अपने आसपास निंदक रखने चाहिए ताकि वे हमारी त्रुटियों को बता सके। निंदक हमारे सबसे अच्छे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताए गए त्रुटियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं।

m. इन पंक्तियों द्वारा कवि ने प्रेम की महत्ता को बताया है। ईश्वर को पाने के लिए लोग न जाने कितने यतन-जतन करते हैं पर उन्हें समझना चाहिए कि ईश्वर को पाने के लिए एक अक्षर प्रेम का अर्थात ईश्वर को पढ़ लेना ही पर्याप्त है। बड़े-बड़े पोथे या ग्रन्थ पढ़ कर कोई पंडित नहीं बन जाता। केवल इस निराकार परमात्मा का नाम स्मरण करने से ही सच्चा ज्ञानी बना जा सकता है।

n. कबीरदास जी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता अभिव्यक्ति की निर्भीकता है। अपनी शिक्षा के बारे में बताते हुए उन्होने कहा है कि - 'मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नहीं हाथ' अर्थात उन्होने कभी भी कागज और कलम को हाथ तक नहीं लगाया। कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा या खिचड़ी भाषा की संज्ञा भी दी गई है। उनकी भाषा में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग मिलता है। उनकी भाषा में एक ऐसा सौंदर्य है जो अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है। हृदय से निकली अभिव्यक्तियों के कारण उनकी भाषा सहज, सरल और मन पर सीधा प्रहार करने वाली है।

**प्रश्न 1** भाव स्पष्ट कीजिए-

e. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

f. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।

g. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहीं।

h. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।

**उत्तर-**

e. इस पंक्ति का भाव हैं कि जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम रुपी विरह का सर्प बस जाता है, उस पर कोई मंत्र असर नहीं करता है। अर्थात भगवान के विरह में कोई भी जीव सामान्य नहीं रहता है। उस पर किसी बात का कोई असर नहीं होता है।

f. इस पंक्ति में कवि कहता है कि जिस प्रकार हिरण अपनी नाभि से आती सुगंध पर मोहित रहता है। परन्तु वह यह नहीं जानता कि यह सुगंध उसकी नाभि में से आ रही है। वह उसे इधर-उधर ढूँढता रहता है। उसी प्रकार मनुष्य भी अज्ञानतावश वास्तविकता को नहीं जानता

कि ईश्वर उसी में निवास करता है और उसे प्राप्त करने के लिए धार्मिक स्थलों, अनुष्ठानों में ढूँढता रहता है। परमात्मा को केवल अपनी आत्मा द्वारा ही जाना जा सकता हैं। वह तो जीवन रूपी प्रकाश हैं।

g. कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे अंदर मैं का भाव 'अहंकार' तब तक मुझे हरी की प्राप्ति नहीं हुई थी। अब मेरे अंदर से अहंकार समाप्त हो गया है और मुझ पर ईश्वर की कृपा हो गई है।

h. कबीर के अनुसार बड़े ग्रंथ, शास्त्र पढ़ने भर से कोई ज्ञानी नहीं होता। अर्थात ईश्वर की प्राप्ति नहीं कर पाता। प्रेम से ईश्वर का स्मरण करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। प्रेम में बहुत शक्ति होती है।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रुप उदाहरण के अनुसार लिखिए।

उदाहरण - जिवै - जीना

l. औरन।

m. माँहि।

n. देख्या।

o. भुवंगम।

p. नेड़ा।

q. आँगणि।

r. साबण।

s. मुवा।

t. पीव।

u. जालौं।

v. तास।

**उत्तर-**

l. औरन - दूसरों।

m. माँहि - के अंदर (में)।

n. देख्या - देखा।

o. भुवंगम - साँप।

p. नेड़ा - निकट।

q. आँगणि - आँगन।

r. साबण - साबुन।

s. मुवा - मरा।

t. पीव - प्रेम।

u. जालौं - जलना।

v. तास - उसका।

STEP UP ACADEMY

# पद

**- मीराबाई**

**हरि आप हरो जन री भीर।**

**द्रोपदी री लाज राखी, आप बढायो चीर।**

**भगत कारण रूप नरहरि, धरयो आप सरीर।**

**बूढतो गजराज राख्यो , काटी कुण्जर पीर।**

**दासी मीराँ लाल गिरधर , हरो म्हारी भीर।**

**भावार्थ -** इस पद में मीराबाई अपने प्रिय भगवान श्रीकृष्ण से विनती करते हुए कहतीं हैं कि हे प्रभु अब आप ही अपने भक्तों की पीड़ा हरें। जिस तरह आपने अपमानित द्रोपदी की लाज उसे चीर प्रदान करके बचाई थी जब दु:शासन ने उसे निर्वस्त्र करने का प्रयास किया था। अपने प्रिय भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह रूप धारण किया था। आपने ही डुबते हुए हाथी की रक्षा की थी और उसे मगरमच्छ के मुँह से बचाया था। इस प्रकार आपने उस हाथी की पीड़ा दूर की थी। इन उदाहरणों को देकर दासी मीरा कहतीं हैं की हे गिरिधर लाल! आप मेरी पीडा भी दूर कर मुझे छुटकारा दीजिये।

**स्याम म्हाने चाकर राखे जी,गिरिधरी लाल म्हाँने चाकर राखोजी।**

**चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।**

**बिन्दरावन री कुंज गली में , गोविन्द लीला गास्यूँ।**

**चाकरी में दरसण पास्यूँ , सुमरण पास्यूँ खरची।**

**भाव भगती जागीरी पास्यूँ , तीनू बाताँ सरसी।**

**मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।**

**बिन्दरावन में भेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।**

**उँचा उँचा महल बणाव , बिच बिच राखूँ बारी।**

**साँवरिया रा दरसण पास्यूँ , पहर कुसुम्बी साडी।**

**आधी रात प्रभु दरसण , दीज्यो जमनाजी रे तीरां।**

**मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवडो घणो अधीराँ॥**

**भावार्थ -** इन पदों में मीरा भगवान श्री कृष्ण से प्रार्थना करते हुए कहतीं हैं कि हे श्याम! आप मुझे अपनी दासी बना लीजिये। आपकी दासी बनकर में आपके लिए बाग-बगीचे लगाऊँगी , जिसमें आप विहार कर सकें। इसी बहाने मैं रोज आपके दर्शन कर सकूँगी। मैं वृंदावन के कुंजों और गलियों में कृष्ण की लीला के गान करुँगी। इससे उन्हें कृष्ण के नाम स्मरण का अवसर प्राप्त हो जाएगा तथा भावपूर्ण भक्ति की जागीर भी प्राप्त होगी। इस प्रकार दर्शन, स्मरण और भाव-भक्ति नामक तीनों बातें मेरे जीवन में रच-बस जाएँगी।

अगली पंक्तियों में मीरा श्री कृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहती हैं कि मेरे प्रभु कृष्ण के शीश पर मोरपंखों का बना हुआ मुकुट सुशोभित है। तन पर पीले वस्त्र सुशोभित हैं। गले में वनफूलों की माला शोभायमान है। वे वृन्दावन में गायें चराते हैं और मनमोहक मुरली बजाते हैं। वृन्दावन में मेरे प्रभु का बहुत ऊँचे-ऊँचे महल हैं। वे उस महल के आँगन के बीच–बीच में सुंदर फूलों से सजी फुलवारी बनाना चाहती हैं। वे कुसुम्बी साड़ी पहनकर अपने साँवले प्रभु के दर्शन पाना चाहती हैं। मीरा भगवान कृष्ण से निवेदन करते हुए कहती हैं कि हे प्रभु! आप आधी रात के समय मुझे यमुना जी के किनारे अपने दर्शन देकर कृतार्थ करें। हे गिरिधर नागर! मेरा मन आप से मिलने के लिए बहुत व्याकुल है इसलिए दर्शन देने अवश्य आइएगा।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

f. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

g. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

h. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रुप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

i. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

j. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

**उत्तर-**

f. पहले पद में मीरा ने हरि 'कृष्ण' से कहा है कि जिस प्रकार आपने भरी सभा में द्रौपदी की साड़ी को बढ़ाकर उसका अपमान होने से बचाया था। भक्त प्रहलाद के प्राणों की रक्षा भगवान नरसिंह का रूप धारण करके की। उसी प्रकार आप मुझे भी अपने दर्शन देकर मेरी पीड़ा को हर लो।

g. मीरा का हृदय कृष्ण के पास रहना चाहता है। उसे पाने के लिए इतना अधीर है कि वह उनकी सेविका बनना चाहती हैं। वह बाग-बगीचे लगाना चाहती हैं जिसमें श्री कृष्ण घूमें, कुंज गलियों में कृष्ण की लीला के गीत गाएँ ताकि उनके नाम के स्मरण का लाभ उठा सके। इस प्रकार वह कृष्ण का नाम, भावभक्ति और स्मरण की जागीर अपने पास रखना चाहती हैं।

h. मीरा ने कृष्ण के रुप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि उनके सिर पर मोर मुकुट तथा शरीर पर पिले वस्त्र सुशोभित हो रहे हैं और गले में वैजंती फूलों की माला पहनी है, मुरली की मधुर तान से सबको मोहित करते हुए वे गायें चराते हैं और बहुत सुंदर लगते हैं।

i. मीराबाई की भाषा मूलतः बृजभाषा है, जो तत्कालीन काव्य की भाषा के रूप में प्रचलित थी। मूलतः राजस्थान की होने के कारण उनकी भाषा पर राजस्थानी भाषा का भी अच्छा प्रभाव है। मीरा की कविता में एक रहस्य है जो उनके लौकिक प्रेम को उनके अलौकिक प्रेम से जोड़ता है। जब वे कृष्ण से अपने वियोग की बात करती हैं तो वे कहती हैं कि इस वियोग से वे अत्यंत दुखी हैं और कृष्ण से मिलन के लिए बेचैन हैं। दूसरे रूप में वे आत्मा और परमात्मा के मिलन की ओर संकेत करती दिखाई देती हैं, क्योंकि किसी भी जीव को संपूर्ण आनन्द परमात्मा से मिलन के बाद ही प्राप्त होता है।

j. मीरा कृष्ण को पाने के लिए अनेकों कार्य करने को तैयार हैं। वह सेवक बन कर उनकी सेवा कर उनके साथ रहना चाहती हैं, उनके विहार करने के लिए बाग बगीचे लगाना चाहती है। वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं, ऊँचे-ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सकें। कुसुम्बी रंग की साड़ी पहनकर आधी रात को कृष्ण से मिलकर उनके दर्शन करना चाहती हैं।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

d. हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रुप नरहरि, धर्यो आप सरीर।

e. बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

f. चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

**उत्तर-**

d. इस पद में मीरा ने कृष्ण के भक्तों पर कृपा दृष्टि रखने वाले रुप का वर्णन किया है। वे कहती हैं - "हे हरि जिस प्रकार आपने अपने भक्तजनों की पीड़ा हरी है, मेरी भी पीड़ा उसी प्रकार दूर करो। जिस प्रकार द्रोपदी का चीर बढ़ाकर, प्रह्लाद के लिए नरसिंह रुप धारण कर आपने रक्षा की, उसी प्रकार मेरी भी रक्षा करो।" इसकी भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। 'र' ध्वनि का बार बार प्रयोग हुआ है तथा 'हरि' शब्द में श्लेष अलंकार है।

e. मीरा कहती हैं कि आपने गजराज की रक्षा करने के लिए मगरमच्छ का वध किया। हे गिरधरलाल आप अपनी दासी मीरा की पीड़ा को भी दूर करो। काटी कुजर में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है राजस्थानी मिश्रित बृजभाषा के कारण गेयता और संगीतात्मकता की भी प्रचुरता है।

f. इसमें मीरा कृष्ण की चाकरी करने के लिए तैयार है क्योंकि इससे वह उनके दर्शन, नाम, स्मरण और भावभक्ति पा सकती है। इसमें दास्य भाव दर्शाया गया है। भाषा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। अनुप्रास अलंकार, रुपक अलंकार और कुछ तुकांत शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रुप लिखिए-

उदाहरण - भीर - पीड़ा/ कष्ट/ दुख; री - की

m. चीर।
n. बूढ़ता।
o. धर्यो।
p. लगास्यूँ।
q. कुण्जर
r. घणा।
s. बिन्द्रावन।
t. सरसी।
u. रहस्यूँ।
v. हिवड़ा।
w. राखो।
x. कुसुम्बी।

**उत्तर-**

m. चीर- वस्त्र।

n. बूढ़ता- डूबना।

o. धर्यो- धारण।

p. लगास्यूँ- लगाना।

q. कुण्जर- हाथी।

r. घणा- बहूत।

s. बिन्दरावन- वृंदावन।

t. सरसी- हर्ष।

u. रहस्यूँ- रहूँ ।

v. हिवड़ा- हृदय।

w. राखो- रखना ।

x. कुसुम्बी - लाल (केसरिया)।

STEP UP ACADEMY

# मनुष्यता

**-मैथिलीशरण गुप्त**

## व्याख्या

प्रस्तुत पाठ में कवि मैथलीशरण गुप्त ने सही अर्थों में मनुष्य किसे कहते हैं उसे बताया है। कविता परोपकार की भावना का बखान करती है तथा मनुष्य को भलाई और भाईचारे के पथ पर चलने का सलाह देती है।

**विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,**
**मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी।**
**हुई न यों सु-मृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,**
**मरा नहीं वहीं कि जो जिया न आपके लिए।**
**वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,**
**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि कहते हैं मनुष्य को ज्ञान होना चाहिए की वह मरणशील है इसलिए उसे मृत्यु से डरना नहीं चाहिए परन्तु उसे ऐसी सुमृत्यु को प्राप्त होना चाहिए जिससे सभी लोग मृत्यु के बाद भी याद करें। कवि के अनुसार ऐसे व्यक्ति का जीना या मरना व्यर्थ है जो खुद के लिए जीता हो। ऐसे व्यक्ति पशु के समान है असल मनुष्य वह है जो दूसरों की भलाई करे, उनके लिए जिए। ऐसे व्यक्ति को लोग मृत्यु के बाद भी याद रखते हैं।

**उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,**
**उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।**
**उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,**
**तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।**
**अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,**
**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि के अनुसार उदार व्यक्तियों की उदारशीलता को पुस्तकों, इतिहासों में स्थान देकर उनका बखान किया जाता है, उनका समस्त लोग आभार मानते हैं तथा पूजते हैं। जो व्यक्ति विश्व में एकता और अखंडता को फैलता है उसकी कीर्ति का सारे संसार में गुणगान होता है। असल मनुष्य वह है जो दूसरों के लिए जिए मरे।

**क्षुदार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,**

**तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।**

**उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,**

**सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।**

**अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

इन पंक्तियों में कवि ने पौरणिक कथाओं का उदारहण दिया है। भूख से व्याकुल रंतिदेव ने माँगने पर अपना भोजन का थाल भी दे दिया तथा देवताओं को बचाने के लिए दधीचि ने अपनी हड्डियों को व्रज बनाने के लिए दिया। राजा उशीनर ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपने शरीर का मांस बहेलिए को दे दिया और वीर कर्ण ने अपना शारीरिक रक्षा कवच दान कर दिया। नश्वर शरीर के लिए मनुष्य को भयभीत नही होना चाहिए।

**सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है वही,**

**वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।**

**विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,**

**विनीत लोक वर्ग क्या न सामने झुका रहे?**

**अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,**

**वहीं मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि ने सहानुभूति, उपकार और करुणा की भावना को सबसे बड़ी पूंजी बताया है और कहा है की इससे ईश्वर भी वश में हो जाते हैं। बुद्ध ने करुणावश पुरानी परम्पराओं को तोड़ा जो कि दुनिया की भलाई के लिए था इसलिए लोग आज भी उन्हें पूजते हैं। उदार व्यक्ति वह है जो दूसरों की भलाई करे।

**रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में**

**सन्त जन आपको करो न गर्व चित्त में**

**अन्त को हैं यहाँ त्रिलोकनाथ साथ में**

**दयालु दीन बन्धु के बडे विशाल हाथ हैं**

**अतीव भाग्यहीन हैं अंधेर भाव जो भरे**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि कहते हैं की अगर किसी मनुष्य के पास यश, धन-दौलत है तो उसे इस बात के गर्व में अँधा होकर दूसरों की उपेक्षा नही करनी नहीं चाहिए क्योंकि इस संसार में कोई अनाथ नहीं है। ईश्वर का हाथ सभी के सर पर है। प्रभु के रहते भी जो व्याकुल है वह बड़ा भाग्यहीन है।

**अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,**

**समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े–बड़े।**

**परस्परावलम्ब से उठो तथा बढ़ो सभी,**

**अभी अमत्र्य–अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।**

**रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

कवि के अनुसार अनंत आकाश में असंख्य देवता मौजूद हैं जो अपने हाथ बढ़ाकर परोपकारी और दयालु मनुष्यों के स्वागत के लिए खड़े हैं। इसलिए हमें परस्पर सहयोग बनाकर उन ऊचाइयों को प्राप्त करना चाहिए जहाँ देवता स्वयं हमें अपने गोद में बिठायें। इस मरणशील संसार में हमें एक-दूसरे के कल्याण के कामों को करते रहें और स्वयं का उद्धार करें।

**'मनुष्य मात्र बन्धु है' यही बड़ा विवेक है,**

**पुराणपुरूष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।**

**फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद है,**

**परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।**

**अनर्थ है कि बंधु हो न बंधु की व्यथा हरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

सभी मनुष्य एक दूसरे के भाई-बंधू है यह बहुत बड़ी समझ है सबके पिता ईश्वर हैं। भले ही मनुष्य के कर्म अनेक हैं परन्तु उनकी आत्मा में एकता है। कवि कहते हैं कि अगर भाई ही भाई की मदद नही करेगा तो उसका जीवन व्यर्थ है यानी हर मनुष्य को दूसरे की मदद को तत्पर रहना चाहिए।

**चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,**

**विपत्ति विप्र जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।**

**घटे न हेल मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,**

**अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।**

**तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,**

**वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।**

अंतिम पंक्तियों में कवि मनुष्य को कहता है कि अपने इच्छित मार्ग पर प्रसन्नतापूर्वक हंसते खेलते चलो और रास्ते पर जो बाधा पड़े उन्हें हटाते हुए आगे बढ़ो। परन्तु इसमें मनुष्य को यह ध्यान रखना चाहिए कि उनका आपसी सामंजस्य न घटे और भेदभाव न बढ़े। जब हम एक दूसरे के दुखों को दूर करते हुए आगे बढ़ेंगे तभी हमारी समर्थता सिद्ध होगी और समस्त समाज की भी उन्नति होगी।

# प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

i. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?

j. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

k. कवि ने दधीचि कर्ण, आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?

l. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त है कि हमें गर्व रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

m. 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

n. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

o. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

p. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

**उत्तर-**

i. जो व्यक्ति दूसरों के हित को सर्वोपरि मानता हैं तथा जिसमे मानवता, दया, साहनुभूति आदि गुण होते हैं, जो मृत्यु के बाद भी औरों के द्वारा सम्मान की दृष्टि से याद किया जाता है, उसी की मृत्यु को कवि ने सुमृत्यु कहा है।

j. धरती कृतज्ञ होकर जिसका अहसान मानती है।

जिस व्यक्ति की कथा सरस्वती सुनाती है।

जिसकी कीर्ति सदा संसार में बनी रहती है।

ऐसे व्यक्ति सदा संसार में पूजनीय होते हैं और उदार व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं।

k. कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों के उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए यह संदेश दिया है कि परोपकार के लिए अपना सर्वस्व यहाँ तक कि अपने प्राण तक न्योछावर तक करने को तैयार रहना चाहिए। यहाँ तक कि परहित के लिए अपने शरीर तक का दान करने को तैयार रहना चाहिए। दधीचि ने मानवता की रक्षा के लिए अपनी अस्थियों तथा कर्ण ने खाल तक दान कर दी। हमारा शरीर तो नश्वर हैं उसका मोह रखना व्यर्थ है। परोपकार करना ही सच्ची मनुष्यता है। हमें यहीं करना चाहिए।

l. कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों के द्वारा इस भाव को व्यक्त करना चाहा है।

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में।

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में॥

m. मनुष्य मात्र बंधु है' से यह अभिप्राय है कि संसार के सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं सभी उस परमपिता की संतान हैं इसलिए मानव-मानव में भेद नहीं करना चाहिए।

n. कवि ने सबको एक साथ चलने की प्रेरणा इसलिए दी है क्योंकि सभी मनुष्य उस एक ही परमपिता परमेश्वर की संतान हैं। इसलिए बंधुत्व के नाते हमें सभी को साथ लेकर चलना चाहिए क्योंकि समर्थ भाव भी यही है कि हम सबका कल्याण करते हुए अपना कल्याण करें।

o. व्यक्ति को मानव की सेवा करते हुए, परोपकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए, साथ ही अपने अभीष्ट मार्ग पर एकता के साथ बढ़ना चाहिए। अपने व्यक्तिगत स्वार्थों का त्याग कर दूसरों के हित का चिंतन करना

चाहिए। धन संपति को लेकर कभी भी अहंकारी नही बनना चाहिए। जो व्यक्ति दूसरों की सहायता करते हैं, ईश्वर हमेशा उनके सहायक बनते हैं। इस दौरान जो भी विपत्तियाँ आएँ, उन्हें ढकेलते हुए आगे बढ़ते जाना चाहिए।

p. कवि इस कविता द्वारा मानवता, प्रेम, एकता, दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति, सदभावना और उदारता का संदेश देना चाहता है। मनुष्य को नि:स्वार्थ जीवन जीना चाहिए। वर्गवाद, अलगाव को दूर करके विश्व बंधुत्व की भावना को बढ़ाना चाहिए। धन होने पर घमंड नहीं करना चाहिए तथा खुद आगे बढ़ने के साथ-साथ औरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये-

d. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

e. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

f. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न पड़ें उन्हें धकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

**उत्तर-**

c. इन पंक्तियों द्वारा कवि ने एक दूसरे के प्रति सहानुभूति की भावना को उभारा है। इससे बढ़कर कोई पूँजी नहीं है। यदि प्रेम, सहानुभूति, करुणा के भाव हो तो वह जग को जीत सकता है। वह सम्मानित भी रहता है। महात्मा बुद्ध के विचारों का भी विरोध हुआ था परन्तु जब बुद्ध ने अपनी करुणा, प्रेम व दया का प्रवाह किया तो उनके सामने सब नतमस्तक हो गए।

d. कवि कहता है कि कभी भूलकर भी अपने थोड़े से धन के अहंकार में अंधे होकर स्वयं को सनाथ अर्थात् सक्षम मानकर गर्व मत करो क्योंकि अनाथ तो कोई नहीं है। इस संसार का स्वामी ईश्वर तो सबके साथ है और ईश्वर तो बहुत दयालु, दीनों और असहायों का सहारा है और उनके हाथ बहुत विशाल है अर्थात् वह सबकी सहायता करने में सक्षम है। प्रभु के रहते भी जो व्याकुल रहता है वह बहुत भाग्यहीन ही है। सच्चा मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए मरता है।

कवि मनुष्य को प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि यह मनुष्य का इच्छित मार्ग है, इस पर उसे हर्ष के साथ खेलते हुए चलना चाहिए मार्ग में आने वाली बाधाओं विपत्तियों का मुस्कुराते हुए डटकर सामना करते हुए आगे बढ़ना चाहिए आपस में भेदभाव को भूलकर मिलजुल कर रहना चाहिए तर्क करने वालों को एक होकर कुतर्क करने वालों को सही सबक सिखना चाहिए।

# पर्वत प्रदेश में पावस

-सुमित्रानंदन पंत

**व्याख्या**

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।

इस कविता में कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने पर्वतीय इलाके में वर्षा ऋतु का सजीव चित्रण किया है। पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु होने से वहाँ प्रकृति में पल-पल बदलाव हो रहे हैं। कभी बादल छा जाने से मूसलधार बारिश हो रही थी तो कभी धूप निकल जाती है।

मेखलाकर पर्वत अपार
अपने सहस्त्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार,
-जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण सा फैला है विशाल!

पर्वतों की श्रृंखला मंडप का आकार लिए अपने पुष्प रूपी नेत्रों को फाड़े अपने नीचे देख रहा है। कवि को ऐसा लग रहा है मानो तालाब पर्वत के चरणों में पला हुआ है जो की दर्पण जैसा विशाल दिख रहा है। पर्वतों में उगे हुए फूल कवि को पर्वत के नेत्र जैसे लग रहे हैं जिनसे पर्वत दर्पण समान तालाब में अपनी विशालता और सौंदर्य का अवलोकन कर रहा है।

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों सी सुन्दर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षायों से तरूवर
है झांक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंता पर।

झरने पर्वत के गौरव का गुणगान करते हुए झर-झर बह रहे हैं। इन झरनों की करतल ध्वनि कवि के नस-नस में उत्साह का संचार करती है। पर्वतों पर बहने वाले झाग भरे झरने कवि को मोती की लड़ियों के समान लग रहे हैं जिससे पर्वत की सुंदरता में और निखार आ रहा है।

पर्वत के खड़े अनेक वृक्ष कवि को ऐसे लग रहे हैं मानो वे पर्वत के हृदय से उठकर उँची आकांक्षायें लिए अपलक और स्थिर होकर शांत आकाश को देख रहे हैं तथा थोड़े चिंतित मालुम हो रहे हैं।

**उड़ गया, अचानक लो, भूधर**

**फड़का अपार वारिद के पर!**

**रव-शेष रह गए हैं निर्झर!**

**है टूट पड़ा भू पर अंबर!**

**धँस गए धरा में सभय शाल!**

**उठ रहा धुऑं, जल गया ताल!**

**-यों जलद-यान में विचर-विचर**

**था इंद्र खेलता इंद्रजाल।**

पल-पल बदलते इस मौसम में अचानक बादलों के आकाश में छाने से कवि को लगता है की पर्वत जैसे गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है मानो आकाश धरती पर टूटकर आ गिरा हो। केवल झरनों का शोर ही सुनाई दे रहा है।

तेज बारिश के कारण धुंध सा उठता दिखाई दे रहा है जिससे ऐसा लग रहा है मानो तालाब में आग लगी हो। मौसम के ऐसे रौद्र रूप को देखकर शाल के वृक्ष डरकर धरती में धँस गए हैं ऐसे प्रतीत होते हैं। इंद्र भी अपने बादलरूपी विमान में सवार होकर इधर-उधर अपना खेल दिखाते घूम रहे हैं।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

h. पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

i. मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

j. 'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?

k. कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

l. पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश की और क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?

m. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धंस गए?

n. झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

**उत्तर-**

h. वर्षा ऋतु में मौसम बदलता रहता है। तेज़ वर्षा होती है। जल पहाड़ों के नीचे इकट्ठा होता है तो दर्पण जैसा लगता है। पर्वत माला पर अनगिनत फूल खिल जाते हैं। ऐसा लगता है कि अनेकों नेत्र खोलकर पर्वत देख रहा है। पर्वतों पर बहते झरने मानो उनका गौरव गान गा रहे हैं। लंबे-लंबे वृक्ष आसमान को निहारते चिंतामग्न दिखाई दे रहे हैं। अचानक काले काले बादल घिर आते हैं। ऐसा लगता है मानो बादल रुपी पंख लगाकर पर्वत उड़ना चाहते हैं। कोहरा धुएँ जैसा लगता है। इंद्र देवता बादलों के यान पर बैठकर नए-नए जादू दिखाना चाहते हैं।

i. 'मेखला' का अर्थ तगड़ी होता है जिसे स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं इस प्रकार मेखलाकार का अर्थ तगड़ी का गोल आकार हुआ पर्वत भी मेखला की तरह गोल दिखाई दे रहे हैं। जो धरती की कटि को घेरे हुए हैं प्रकृति के सौंदर्य को उभरने के लिए कवि ने इसका प्रयोग किया है।

j. वर्षा ऋतु में चारों तरफ खिले हुए फूल ऐसे लगते हैं मानों विशाल पर्वत अपनी सैकड़ों आँखों से पूरी प्रकृति को निहार रहा हो।

k. कवि ने तालाब की समानता दर्पण से की है क्योंकि तालाब भी दर्पण की तरह स्वच्छ और निर्मल प्रतिबिम्ब दिखा रहा है।

l. पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आसमान की ओर अपनी ऊच्चाकंशाओ के कारण देख रहे थे। वे आसमान जितना ऊँचा उठना चाहते हैं। वे शांत भाव से एकटक आसमान को निहारते हैं। जो इस बात की ओर संकेत करता है कि अपनी आकांशाओं को पाने के लिए शांत तथा एकाग्रता आवश्यक है।

m. घनघोर वर्षा और धुंध के कारण ऐसा प्रतीत होता हैं कि शाल के वृक्ष धरती में धंस गए हैं।

n. झरने पर्वतों की गाथा का गान कर रहे हैं। बहते हुए झरने की तुलना मोती की लड़ियों से की गयी है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये-

d. है टूट पड़ा भू पर अंबर।

e. यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

f. गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झांक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

**उत्तर-**

d. सुमित्रानंदन पंत जी ने इस पंक्ति में पर्वत प्रदेश के मूसलाधार वर्षा का वर्णन किया है। पर्वत प्रदेश में पावस ऋतु में प्रकृति की छटा निराली हो जाती है। कभी-कभी इतनी धुआँधार वर्षा होती है मानो आकाश टूट पड़ेगा।

e. अचानक वर्षा का होना और अचानक ही धूप खिल जाना अचानक ही अंधेरा छा जाना प्रकृति के पल-पल बदलते इतने रूप देखकर ऐसा लग रहा जैसे खुद इंद्र ही अपना काला जादू इंद्रजाल दिखा रहा हो।

f. इन पंक्तियों का भाव यह है कि पर्वत पर उगे विशाल वृक्ष ऐसे लगते हैं मानो इनके हृदय में अनेकों महत्वकांक्षाएँ हैं और ये चिंतातुर आसमान को देख रहे हैं।

## कविता का सौंदर्य

**प्रश्न 1** इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** प्रस्तुत कविता में जगह-जगह पर मानवीकरण अलंकार का प्रयोग करके प्रकृति में जान डाल दी गई है जिससे प्रकृति सजीव प्रतीत हो रही है, जैसे - पर्वत पर उगे फूल को आँखों के द्वारा मानवकृत कर उसे सजीव प्राणी की तरह प्रस्तुत किया गया है।

'उच्चाकांक्षाओं से तरूवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर'

इन पंक्तियों में तरूवर के झाँकने में मानवीकरण अलंकार है, मानो कोई व्यक्ति झाँक रहा हो।

**प्रश्न 2** आपकी दृष्टि में इस कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर करता है-

(क) अनेक शब्दों की आवृति पर।

(ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर।

(ग) कविता की संगीतात्मकता पर।

**उत्तर-** (ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर।

इस कविता का सौंदर्य शब्दों की चित्रमयी भाषा पर निर्भर करता है। कविता में चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए प्रकृति का सुन्दर रुप प्रस्तुत किया गया है।

**प्रश्न 3** कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। ऐसे स्थलों को छाँटकर लिखिए।

**उत्तर-** कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। कविता में इन स्थलों पर चित्रात्मक शैली की छटा बिखरी हुई है-

3. मेखलाकार पर्वत अपार
   अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
   अवलोक रहा है बार-बार
   नीचे जल में निज महाकार
   जिसके चरणों में पला ताल
   दर्पण फैला है विशाल।

4. गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
   उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
   हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
   अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

# तोप

**-वीरेन डंगवाल**

## व्याख्या

**कम्पनी बाग़ के मुहाने पर**

**धर रखी गई है यह 1857 की तोप**

**इसकी होती है बड़ी सम्हाल**

**विरासत में मिले**

**कम्पनी बाग की तरह**

**साल में चमकायी जाती है दो बार**

प्रस्तुत कविता में कवि वीरेन डंगवाल ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के युद्ध में अंग्रेज़ों द्वारा इस्तेमाल की हुई तोप का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि यह तोप आज कम्पनी बाग़ के प्रवेश द्वार रखी हुई है। जिस तरह कम्पनी बाग़ हमें अंग्रेज़ों द्वारा विरासत में मिली थी उसी तरह यह तोप भी हमें अंग्रेज़ो से ही प्राप्त हुआ जिसे आजकल बहुत देखभाल से रखा जाता है। कम्पनी बाग़ की तरह इसे भी साल में दो बार चमकाया जाता है।

**सुबह-शाम कम्पनी बाग में आते हैं बहुत से सैलानी**

**उन्हें बताती है यह तोप**

**कि मैं बड़ी जबर**

**उड़ा दिये थे मैंने**

**अच्छे-अच्छे सूरमाओं के छज्जे**

**अपने ज़माने में**

सुबह-शाम को बहुत सारे यात्री कम्पनी बाग़ में घूमने आते हैं तब यह तोप अपने बारे में बताती है की मैं बड़ी ताकतवर थी। उस समय मैंने बहुत सारे वीरों के मारा था। बहुत अत्याचार किये थे।

**अब तो बहरहाल**

**छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फारिग हो**

**तो उसके ऊपर बैठकर**

**चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप**

**कभी-कभी शैतानी में वे इसके भीतर भी घुस जाती हैं**

**ख़ासकर गौरैयें**

**वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप**

**एक दिन तो होना ही है उनका मुँह बन्द !**

परन्तु अब तोप की स्थिति बहुत बुरी है छोटे बच्चे इसपर बैठकर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। जब तोप बच्चों से मुक्त हो जाती है तब चिड़ियाँ इसपर बैठकर आपस में गप्प करती हैं। कभी-कभी चिड़ियाँ ख़ास तौर पर गौरेये तोप के भीतर घुस जाती हैं। इस दृश्य से कवि को ऐसा महसूस होता है मानो वह कह रही हों कोई कितना भी अत्याचारी और क्रूर हो उसका अंत एक न एक दिन जरूर होना है।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए।

e. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल क्यों होती है? स्पष्ट कीजिए।

f. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल इसलिए होती है क्योंकि ये वस्तुएँ हमें अपने पूर्वजों की, अपने इतिहास की याद दिलाती हैं। इनसे हमारा भावनात्मक संबंध होता है। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है। ये तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी के साथ दिशानिर्देश भी देती हैं।

g. कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?

h. कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

**उत्तर-**

e. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल इसलिए होती है क्योंकि ये वस्तुएँ हमें अपने पूर्वजों की, अपने इतिहास की याद दिलाती हैं। इनसे हमारा भावनात्मक संबंध होता है। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है। ये तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी के साथ दिशानिर्देश भी देती हैं।

f. इस कविता में तोप के विषय में जानकारी मिलती है कि यह अंग्रेज़ों के समय की तोप है। 1857 में इसका प्रयोग शक्तिशाली हथियार के रुप में किया गया था। इसने अनगिनत शूरवीरों, स्वतंत्रता सेनानियों के धज्जे उड़ा दिए थे। आखिरकार अब इस तोप को मुँह बन्द करना पड़ा। अब इससे कोई नहीं डरता। अब यह केवल खिलौना मात्र है। अब यह केवल दर्शनीय वस्तु है। चिड़िया इस पर अपना घोंसला बना रही है, उसमें बच्चे खेलते हैं। यह तोप हमें बताती है कि कोई कितना शक्तिशाली क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसे धराशायी होना ही पड़ता है।

g. कंपनी बाग में रखी तोप यही सीख देती है कोई कितना भी बड़ा ताकतवर क्यूं न हो एक न एक दिन उसको भी समय की मार झेलनी पड़ती है।

h. भारत की स्वतंत्रता के प्रतीक चिह्न दो बड़े त्योहार 15 अगस्त और 26 जनवरी गणतंत्र दिवस है। इन दोनों अवसरों पर तोप को चमकाकर कंपनी बाग को सजाया जाता है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये-

d. अब तो बहरहाल
छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फ़ारिग हो
तो उसके ऊपर बैठकर
चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप।

e. वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

f. उड़ा दिए थे मैंने
अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे।

**उत्तर-**

d. इन पंक्तियों के द्वारा कवि ने तोप की वर्तमान स्थिति को बताया है। आशय यह है कि अब यह तोप केवल खिलौना मात्र है। चिड़िया इस पर अपना घोंसला बना रही है, उसमें बच्चे खेलते हैं। 1857 की क्रांति में जिस तोप ने आतंक मचा रखा था वो आज बेबस थी। यह तोप हमें बताती है कि कोई कितना शक्तिशाली क्यों न हो, एक-न-एक दिन उसे धराशायी होना ही पड़ता है.

e. कभी विनाश का पर्याय मानी जाने वाली आज लाचार की तरह खड़ी हैं जो यह बताने के लिए काफी है कि कोई कितना भी बड़ा ताकतवर क्यूँ न हों एक न एक दिन उसका भी अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

f. इन पंक्तियों में तोप ने अपनी गाथा को सुनाया है। वह बता रहा है की 1857 की क्रांति की सामने उसने अपने आगे किसी की नहीं सुनी थी। उसने कई वीरों की नींद सुला दिया था।

## भाषा अध्ययन

**प्रश्न 1** कवि ने इस कविता में शब्दों का सटीक और बेहतरीन प्रयोग किया है। इसकी एक पंक्ति देखिए 'धर' रखी गई है यह 1857 की तोप। 'धर' शब्द देशज है और कवि ने इसका कई अर्थों में प्रयोग किया है। 'रखना', 'धरोहर' और 'संचय' के रूप में।

**उत्तर-** अन्य उदाहरण:
खरा सोना मजबूत होता है।
वह मेरी कसौटी पर खरा उतरा।

**प्रश्न 2** 'तोप' शीर्षक कविता का भाव समझते हुए इसका गद्य में रूपांतरण कीजिए।

**उत्तर-** कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। भारत ने उसका स्वागत ही किया था, लेकिन करते-कराते वह हमारी शासक बन बैठी। उसने कुछ बाग बनवाए तो कुछ तोपें भी तैयार की। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में तोप का प्रयोग शक्तिशाली हथियार के रूप में किया गया था। उन तोपों ने इस देश को फिर से आज़ाद कराने का सपना साकार करने निकले जाँबाजों को मौत के घाट उतारा पर एक दिन ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वजों ने उस सत्ता को उखाड़ फेंका। अब उस क्रूर सत्ता की प्रतीक यह तोप सजावट की वस्तु बनकर कंपनी बाग़ के मुख्य द्वार पर रखी हुई है। इसे संभालकर रखा गया है ताकि लोग जान सकें कि हमारे पूर्वजों ने अपना अमर बलिदान देकर इस तोप से अत्याचार करने वाले शासकों को इस देश से विदा कर ही दिया। अब यह तोप प्रदर्शन की वस्तु बनकर रह गई है। अब इससे कोई नहीं डरता। अब यह केवल खिलौना मात्र है। चिड़ियाँ, गौरेया इसके भीतर घुस जाती हैं, बच्चे इस पर घुड़सवारी करते हैं। यह तोप हमें बताती है कि अन्यायी ताकतवर का भी एक-न-एक दिन अंत अवश्य होता है।

# कर चले हम फ़िदा

**-कैफ़ी आज़मी**

**व्याख्या**

**कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

**साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई**

**फिर भी बढ़ते क़दम को न रुकने दिया**

**कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं**

**सर हिमालय का हमने न झुकने दिया**

**मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

प्रस्तुत गीत कैफ़ी आजमी द्वारा भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म 'हकीकत' से लिया गया है। इस गीत में कवि ने खुद को भारत माता के सैनिक के रूप में अंकित किया है। कवि कहते हैं कि युद्धभूमि में सैनिक शहीद होते हुए अपने दूसरे साथियों से कहते हैं कि हमने अपने जान और तन को देश सेवा में समर्पित कर दिया, हम जा रहे हैं, अब देश की रक्षा करने का भार तुम्हारे हाथों में है। हमारी साँस थम रही थीं, ठंड से नसें जम रही थीं, हम मृत्यु की गोद में जा रहे थे फिर भी हमने पीछे हटकर उन्हें आगे बढ़ने का मौका नही दिया। हमारे कटे सिरों यानी शहीद हुए जवानों का हमें ग़म नहीं है, हमारे लिये ये प्रसन्नता की बात है की हमने अपने जीते जी हिमालय का सिर झुकने नहीं दिया यानी दुश्मनों को देश में प्रवेश नही करने दिया। मरते दम तक हमारे अंदर बलिदान और संघर्ष का जोश बना रहा। हम बलिदानी देकर जाकर रहे हैं, अब देश की रक्षा करने का भार तुम्हारे हाथों में है।

**ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर**

**जान देने के रुत रोज़ आती नहीं**

**हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे**

**वह जवानी जो खूँ में नहाती नहीं**

**आज धरती बनी है दुलहन साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

कवि एक सैनिक के रूप में कहते हैं कि व्यक्ति को जिन्दा रहने के लिए बहुत समय मिलते हैं परन्तु देश के लिए जान देने के मौके कभी-कभी ही मिलते हैं। जो जवानी खून में सराबोर नही होती वही प्यार और सौंदर्य को बदनाम करती है। सैनिक अपने साथियों की सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि आज धरती दुल्हन बनी हुई है यानी हमारी आन, बान और शान का प्रतीक है, इसलिए इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमारे जाने के बाद इसकी रक्षा की जिमेवारी अब आपके हाथों में है।

**राह कुर्बानियों की न वीरान हो**

**तुम सजाते ही रहना नए क़ाफ़िले**

**फतह का जश्न इस जश्न के बाद है**

**ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले**

**बांध लो अपने सर से कफ़न साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

शहीद होते हुए सैनिक कहते हैं कि बलिदानों का जो सिलसिला चल पड़ा है वो कभी रुक ना पाये यानी अपने देश की दुश्मनों से रक्षा के लिए सैनिक हमेशा आगे बढ़ते रहे। इन कुर्बानियों के बाद ही हमें जश्न मनाने के अवसर मिलेंगे। आज हम मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं इसलिए हमें अपने सिर पर कफ़न बाँध लेना चाहिए यानी मृत्यु का चिंता ना करते हुए शत्रु से लोहा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए। अब हमारे जाने के बाद देश की रक्षा की जिमेवारी तुम्हारी है।

**खींच दो अपने खूँ से ज़मी पर लकीर**

**इस तरफ आने पाए न रावण कोई**

**तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे**

**छू न पाए सीता का दामन कोई**

**राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो**

**अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**

सैनिक अपनी बलिदानी से पहले अपने साथियों से कहता है कि आओ हम अपने खून से धरती पर लकीर खीच दें जिसके पार जाने की कोई भी रावण रूपी शत्रु हिम्मत ना कर पाए। भारत माता को सीता समान बताते हुए कहता है अगर कोई भी हाथ भारत माता की आँचल छूने का दुस्साहस करे उसे तोड़ दो। भारत माता के सम्मान को किसी भी तरह ठेस ना पहुँचे। जिस तरह राम और लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए पापी रावण का नाश किया उसी तरह तुम भी शत्रु को पराजित कर भारत माता को सुरक्षित करो। अब ये वतन की जिमेवारी तुम्हारे हाथों में है।

# प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

i. क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?

j. सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?

k. इस गीत में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है?

l. गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि व जीवन भर याद रह जाते हैं?

m. कवी ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

n. कवि ने इस कविता में किस काफिले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

o. इस गीत में ‘सर पर कफ़न बाँधना' किस और संकेत करता है?

p. इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-**

i. यह गीत सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। चीन ने तिब्बत की ओर से आक्रमण किया और भारतीय वीरों ने इस आक्रमण का मुकाबला वीरता से किया।

j. भारत के सैनिक हर पल देश की रक्षा हेतु बलिदान देने के लिए तत्पर रहते हैं। 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया’ इस पंक्ति में हिमालय भारत के मान सम्मान का प्रतीक है। भारत-चीन युद्ध हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों पर ही लड़ा गया था। भारतीय सैनिकों ने अपने प्राण गवाँकर देश के मान-सम्मान को सुरक्षित रखा। उनके साहस की अमर गाथा से हिमालय की पहाड़ियाँ आज भी गुंजायमान हैं।

k. जिस प्रकार एक दुल्हन का श्रृंगार किया जाता है उसको लाल साड़ी में सजाया जाता है ठीक उसी प्रकार भारतीय सैनिकों ने अपने खून से धरती को लाल रंग में रंग दिया था और उसे दुश्मनों से बचाकर अपने बलिदान से उसे दुल्हन की तरह सजा दिया था।

l. गीतों में भावनात्मकता, मार्मिकता, सच्चाई, गेयता, संगीतात्मकता, लयबद्धता आदि गुण होते हैं जिससे वे जीवन भर याद रह जाते हैं। ‘कर चले हम फ़िदा' गीत में बलिदान की भावना स्पष्ट रुप से झलकती है जो हर हिन्दुस्तानी को दिमाग में रच-बस जाते हैं

m. कवि ने साथियों' शब्द का प्रयोग सैनिक साथियों व देशवासियों के लिए किया है। सैनिकों का मानना है कि इस देश की रक्षा हेतु हम बलिदान की राह पर बढ़ रहे हैं। हमारे बाद यह राह सूनी न हो जाए। देशवासियों का परस्पर साथ ही देश की अनेकता में एकता जैसी विशिष्टता को मज़बूत बनाता है। आने वाले भी देश की मान-सम्मान की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान देने को तैयार रहें।

n. कवि ने देश की रक्षा और बलिदान के लिए सैनिकों के समूह को काफिले के रूप में आगे बढ़ते रहने की बात कही है।

o. सर पर कफ़न बाँधना' का अर्थ होता है मौत के लिए तैयार हो जाना। इस गीत यह शत्रुओं से रणभूमि में लड़ने की और संकेत करता है। सैनिक जब युद्धक्षेत्र में उतरते हैं तो वे देश की

मान-सम्मान की रक्षा के लिए प्राण तक देने को तैयार रहते हैं।

p. प्रस्तुत कविता देश के सैनिकों की भाषा में लिखा गया है जो की उनके देशभक्ति की भावना को दर्शाता है। वे देश के सम्मान और रक्षा के लिए हर चुनौतियों को स्वीकार करके अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार रहते हैं। साथ ही इन्हे आने वाली पीढ़ियों से अपेक्षाएं हैं की वे भी उनके शहीद होने के बाद इस देश के दुश्मनों का डटकर मुकाबला करें। वे कह रहे हैं कि उन्होंने अंतिम क्षण तक रक्षा की अब ये ज़िम्मेदारी आप पर है। देश पर जान देने के मौके बहुत कम आते हैं। ये क्रम टूटना नही चाहिए। कवि इसमें देशभक्ति को विकसित करके देश को जागरूक करना चाहता है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए।

d. साँस थमती गई, नब्ज जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया।

e. खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई।

f. छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों।

**उत्तर-**

d. इन पक्तियों में कवि ने भारतीय सैनिकों की सराहना करते हुए कहा है कि वे भयंकर बर्फ के अन्दर भी दुश्मन से मोर्चा लेते रहे उन्होंने सॉस के रुकने और खून के जमने की परवाह भी नहीं की देश रक्षा के जोश ने दुश्मन को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।

e. यह गीत की प्रेरणा देने वाली पंक्तियाँ हैं। कवि का भाव है कि भारतभूमि सीता की तरह पवित्र है। शत्रु रुपी रावण हरण करने के लिए उसकी तरफ़ बढ़ रहा है इसलिए उनका आग्रह है की हम आगे बढ़कर उनकी रक्षा करें तथा ऐसी लक्ष्मण रेखा खींचें कीं शत्रु बढ़ न पाये यानी उसे रोकने का प्रयास करें।

f. कवि सैनिकों को कहना चाहता है कि भारत का सम्मान सीता की पवित्रता के समान में है। देश की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। देश की सीमा पर सैनिकों के होते हुए कोई दुश्मन देश में प्रवेश करके देश की अस्मिता को नहीं लूट सकता। देश की पवित्रता की रक्षा राम और लक्ष्मण की तरह करना है। अतः राम तथा लक्ष्मण का कर्तव्य भी हमें ही निभाना है।

## भाषा अध्ययन

**प्रश्न 1** इस गीत में कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं। गीत संदर्भ में उनका आशय स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

5. कट गए सर।
6. नब्ज़ जमती गई।
7. जान देने की रुत।
8. हाथ उठने लगे।

**उत्तर-**

**5.** कट गए सर: युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं के **कट जाए सर।**

6. नब्ज़ जमती गई: डर के मारे सबकी **नब्ज़ जम गई।**

7. जान देने की रुत: शत्रु के हमले की जानकारी मिलते ही सब जान गए कि **यह जान देने की रुत** है।

8. हाथ उठने लगे: स्टेज पर मंत्री के आते ही जयकारे के साथ **हाथ उठने लगे।**

# आत्मत्राण

-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

### व्याख्या

**विपदाओं से मुझे बचाओ ,यह मेरी प्रार्थना नहीं**

**केवल इतना हो (करुणामय)**

**कभी न विपदा में पाऊँ भय।**

**दुःख ताप से व्यथित चित को न दो सांत्वना नहीं सहीं**

**पर इतना होवे (करुणामय)**

**दुःख को मैं कर सकूँ सदा जय।**

**कोई कहीं सहायक न मिले,**

**तो अपना बल पौरुष न हिले,**

**हानि उठानी पड़े जगत में लाभ वंचना रही**

**तो भी मन में न मानूँ क्षय।।**

इन पंक्तियों में कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ईश्वर से कह रहे हैं कि दुखों से मुझे दूर रखें ऐसी आपसे में प्रार्थना नही कर रहा हूँ बल्कि मैं चाहता हूँ आप मुझे उन दुखों को झेलने की शक्ति दें। उन कष्ट के समय में मैं भयभीत ना हूँ। वे दुःख के समय में ईश्वर से सांत्वना बल्कि उन दुखों पर विजय पाने की आत्मविश्वास और हौंसला चाहते हैं। कोई कहीं कष्ट में सहायता करने वाला भी नही मिले फिर भी उनका पुरुषार्थ ना डगमगाए। अगर मुझे इस संसार में हानि भी उठानी पड़े, कोई लाभ प्राप्त ना हो या धोखा ही खाना पड़े तब भी मेरा मन दुखी ना हो। कभी भी मेरे मन की शक्ति का नाश ना हो।

**मेरा त्राण करो अनुहदन तुम यह मेरी प्रार्थना नही**

**बस इतना होवे (करुणामय)**

**तरने की हो शक्ति अनामय।**

**मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नही सही।**

**केवल इतना रखना अनुनय -**

**वहन कर सकूँ इसको निर्भय।**

**नत शिर होकर सुख के दिन में**

**तव मुख पहचानूँ छीन-छीन में।**

**दुख रात्रि मे करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही**

**उस दिन ऐसा हो करुणामय ,**

**तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय।।**

कवि कहते हैं कि हे भगवन्! मेरी यह प्रार्थना नहीं है आप प्रतिदिन मुझे भय से छुटकारा दिलाएँ। आप मुझे केवल रोग रहित यानी स्वस्थ रखें ताकि मैं अपने बल और शक्ति के सहारे इस संसार रूपी भवसागर को पार कर सकूँ। मैं यह नहीं चाहता की आप मेरे कष्टों का भार कम करें और ढाँढस बँधायें। आप मुझे निर्भयता सिखायें ताकि मैं सभी मुसीबतों से डटकर सामना कर सकूँ। सुख के दिनों में भी मैं आपको एक क्षण के लिए भी आपको ना भूलूँ। दु:खों से भरी रात में जब सारा संसार मुझे धोखा दे यानी मदद ना करें फिर भी फिर भी मेरे मन में आपके प्रति संदेह ना हो ऐसी शक्ति मुझमें भरें।

## प्रश्न अभ्यास

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

a. कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

b. विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं'। कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?

c. कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है?

d. अंत में कवि क्या अनुनय करता है?

e. 'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

f. अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या-क्या प्रयास करते हैं? लिखिए।

g. क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है? यदि हाँ, तो कैसे?

**उत्तर-**

a. कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि उसे जीवन की विपदाओं से दूर चाहे ना रखे पर इतनी शक्ति दे कि इन मुश्किलों पर विजय पा सके। दुखों में भी ईश्वर को न भूले, उसका विश्वास अटल रहे।

b. कवि ईश्वर से यह कह रहा है कि आप मुझे आने वाली परेशानियों से बचाओ, मैं यह प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ केवल मुझे उनसे लड़ने की और सामना करने की शक्ति प्रदान कर दो।

c. कवि सहायक के न मिलने पर प्रार्थना करता है कि उसका बल पौरुष न हिले, वह सदा बना रहे और कोई भी कष्ट वह धैर्य से सह ले।

d. अंत में कवि अनुनय करता है कि चाहे सब लोग उसे धोखा दे, सब दुख उसे घेर ले पर ईश्वर के प्रति उसकी आस्था कम न हो, सुखों के आने पर भी ईश्वर को हर क्षण याद करता रहें। उसका विश्वास बना रहे। उसका ईश्वर के प्रति विश्वास कभी न डगमगाए। इस पूरी कविता में कवि ने ईश्वर से साहस और आत्मबल माँगा है।

e. आत्मत्राण' का अर्थ है अपनी आत्मा का त्राण करना या शुद्धि करना कवि यही चाहता है कि

कितनी ही सांसारिक परेशानियाँ झेलनी पड़े लेकिन उनका सामना करने की ताकत कम न हो और ईश्वर पर विश्वास भी सदा बना रहे। यही इस शीर्षक की सार्थकता है जो अपने आप में पूर्ण है।

f. अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना के अतिरिक्त परिश्रम और संघर्ष, सहनशीलता, कठिनाईयों का सामना करना और सतत प्रयत्न जैसे प्रयास आवश्यक हैं। धैर्यपूर्वक यह प्रयास करके इच्छापूर्ण करने की कोशिश करते हैं।

g. यह प्रार्थना अन्य प्रार्थना गीतों से भिन्न है क्योंकि अन्य प्रार्थना गीतों में दास्य भाव, आत्म समर्पण, समस्त दुखों को दूर करके सुखशांति की प्रार्थना, कल्याण, मानवता का विकास, ईश्वर सभी कार्य पूरे करें ऐसी प्रार्थनाएँ होती हैं परन्तु इस कविता में कष्टों से छुटकारा नहीं कष्टों को सहने की शक्ति के लिए प्रार्थना की गई है। यहाँ ईश्वर में आस्था बनी रहे, कर्मशील बने रहने की प्रार्थना की गई है। यह प्रार्थना किसी सांसारिक या भौतिक सुख की कामना के लिए नहीं है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित अंशों का भाव स्पष्ट कीजिए-

a. नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।

b. हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।

c. तरने की हो शक्ति अनामय
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

**उत्तर-**

a. कवि का कहना है कि वह सुख के दिनों में भी अपने ईश्वर को वैसे ही याद रखे जैसे दुख के दिनों में रखता था, बल्कि और ज्यादा प्रसन्नता के साथ।

b. कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि जीवन में उसे लाभ मिले या हानि ही उठानी पड़े तब भी वह अपना मनोबल न खोए। वह उस स्थिति का सामना भी साहसपूर्वक करे

c. कवि कामना करता है कि यदि प्रभु दुख दे तो उसे सहने की शक्ति भी दे। कवि इस संसार रूपी भवसागर को पार करना चाहते हैं, वह यह नहीं चाहता कि ईश्वर उसे इस दुख के भार को कम कर दे या सांत्वना दे। वह अपने जीवन की ज़िम्मेदारियों को कम करने के लिए नहीं कहता बल्कि उससे संघर्ष करने, उसे सहने की शक्ति के लिए प्रार्थना करता है।

❖❖

# स्पर्श भाग 2
# गद्य खण्ड

# स्पर्श भाग – 2 गद्य खंड

## बड़े भाई साहब

-प्रेमचंद

### पात्र परिचय

- लेखक - तीव्र बुद्धि के थे। पढ़ते कम थे, खेलने-कूदने में ज्यादा ध्यान देते थे। परन्तु कक्षा में प्रथम आते थे। दिनभर खेलने और ना पढ़ने के कारण अपने बड़े भाई से डाँट भी खाते परन्तु वह खेल के मोह का त्याग नहीं कर पाते जिस कारण स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता।
- बड़े भाई - स्वभाव से बड़े अध्यनशील थे। दिन-रात किताबें खोलकर बैठे रहते। ना पढ़ने वाले छोटे भाई को डाँटा करते और ना पढ़ने से होने वाली हानियों के बारे में भी बताते। अत्यधिक पढ़ने के बावजूद कक्षा में फेल कर जाते थे।

### सारांश

(1)

लेखक प्रेमचंद ने इस पाठ में अपने बड़े भाई के बारे में बताया है जो की उम्र में उनसे पाँच साल बड़े थे परन्तु पढाई में केवल तीन कक्षा आगे। लेखक स्पष्टीकरण देते हुए कहते हैं ऐसा नहीं है की उन्होंने बाद में पढ़ाई शुरू की बल्कि वे चाहते थे की उनका बुनियाद मजबूत हो इसलिए एक साल का काम दो-तीन साल में करते यानी उनके बड़े भाई कक्षा पास नही कर पाते थे। लेखक की उम्र नौ साल थी और उनके भाई चौदह साल के थे। वे लेखक की पूरी निगरानी रखते थे जो की उनका जन्मसिद्ध अधिकार था।

बड़े भाई स्वभाव से बड़े अध्यनशील थे, हमेशा किताब खोले बैठे रहते। समय काटने के लिए वो कॉपियों पर तथा किताब के हाशियों पर चित्र बनाया करते, एक चीज़ को बार-बार लिखते। दूसरी तरफ लेखक का मन पढ़ाई में बिलकुल नहीं लगता। अवसर पाते ही वो हॉस्टल से निकलकर मैदान में खेलने आ जाते। खेलकूद कर जब वो वापस आते तो उन्हें बड़े भाई के रौद्र रूप के दर्शन होते। उनके भाई लेखक को डाँटते हुए कहते कि पढ़ाई इतनी आसान नही है, इसके लिए रात-दिन आँख फोड़नी पड़ती है खून जलाना पड़ता है तब जाकर यह समझ में आती है। अगर तुम्हें इसी तरह खेलकर अपनी समय गँवानी है तो बेहतर है की घर चले जाओ और गुल्ली-डंडा खेलो। इस तरह यहाँ रहकर दादा की गाढ़ी कमाई के रूपए क्यों बरबाद करते हो? ऐसी लताड़ सुनकर लेखक रोने लगते और उन्हें लगता की पढ़ाई का काम उनके बस का नहीं है परन्तु दो-तीन घंटे बाद निराशा हटती तो फटाफट पढाई-लिखाई की कठिन टाइम-टेबिल बना लेते जिसका वो पालन नहीं कर सकते। खेल-कूद के मैदान उन्हें बाहर खिंच ही लाते। इतने फटकार के बाद भी वो खेल में शामिल होते रहें।

(2)

सालाना परीक्षा में बड़े भाई फिर फेल हो गए और लेखक अपनी कक्षा में प्रथम आये। उन दोनों के बीच अब दो कक्षा की दूरी रह गयी। लेखक के मन में आया की वह भाई साहब को आड़े हाथों लें परन्तु उन्हें दुःखी देखकर लेखक ने इस विचार को त्याग दिया और खेल-कूद में फिर व्यस्त हो गए। अब बड़े भाई का लेखक पर ज्यादा दबाव ना था।

एक दिन लेखक भोर का सारा समय खेल में बिताकर लौटे तब भाई साहब ने उन्हें जमकर डाँटा और कहा कि अगर कक्षा में अव्वल आने पर घमंड हो गया है तो यह जान लो की बड़े-बड़े आदमी का भी घमंड नही टिक पाया, तुम्हारी क्या हस्ती है? अनेको उदाहरण देकर उन्होंने लेखक को चेताया। बड़े भाई ने कक्षा की अलजबरा, जामेट्री और इतिहास पर अपनी टिप्पणी की और बताया की यह सब विषय बड़े कठिन हैं। निबंध लेखन को उन्होंने समय की बर्बादी बताया और कहा की परीक्षा में उत्तीर्ण करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। स्कूल का समय निकट था नही तो लेखक को और बहुत कुछ सुनना पड़ता। उस दिन लेखक को भोजन निःस्वाद सा लगा। इतना सुनने के बाद भी लेखक की अरुचि पढाई में बनी रही और खेल-कूद में वो शामिल होते रहे।

(3)

फिर सालाना परीक्षा में बड़े भाई फेल हो गए और लेखक पास। बड़े भाई ने अत्याधिक परिश्रम किया था और लेखक ने ज्यादा नहीं। लेखक को अपने बड़े भाई पर दया आ रही थी। जब नतीजा सुनाया गया तो वह रो पड़े और उनके साथ लेखक भी रोने लगे। पास होने की ख़ुशी आधी हो गयी। अब उनके बीच केवल एक दर्जे का अंतर रह गया। लेखक को लगा यह उनके उपदेशों का ही असर है की वे दनादन पास हो जाते हैं। अब भाई साहब नरम पड़ गए। अब उन्होंने लेखक को डाँटना बंद कर दिया। अब लेखक में मन में यह धारणा बन गयी की वह पढ़े या ना पढ़े वे पास हो जायेंगे।

एक दिन संध्या समय लेखक होस्टल से दूर कनकौआ लूटने के लिए दौड़े जा रहे थे तभी उनकी मुठभेड़ बड़े भाई से हो गयी। वे लेखक का हाथ पकड़ लिया और गुस्सा होकर बोले कि तुम आठवीं कक्षा में भी आकर ये काम कर रहे हो। एक ज़माने में आठवीं पास कर नायाब तहसीलदार हो जाते थे, कई लीडर और समाचारपत्रों संपादक भी आठवीं पास हैं परन्तु तुम इसे महत्व नही देते हो। उन्होंने लेखक को तजुरबे का महत्व स्पष्ट करते हुए कहा कि भले ही तुम मेरे से कक्षा में कितने भी आगे निकल जाओ फिर भी मेरा तजुरबा तुमसे ज्यादा रहेगा और तुम्हें समझाने का अधिकार भी। उन्होंने लेखक को अम्माँ दादा का उदाहरण देते हुए कहा की भले ही हम बहुत पढ़-लिख जाएँ परन्तु उनके तजुरबे की बराबरी नही कर सकते। वे बिमारी से लेकर घर के काम-काज तक में हमारे से ज्यादा अनुभव रखते हैं। इन बातों को सुनकर लेखक उनके आगे नत-मस्तक हो गए और उन्हें अपनी लघुता का अनुभव हुआ। इतने में ही एक कनकौआ उनलोगों के ऊपर से गुजरा। चूँकि बड़े भाई लम्बे थे इसलिए उन्होंने पतंग की डोर पकड़ ली और होस्टल की तरफ दौड़ कर भागे। लेखक उनके पीछे-पीछे भागे जा रहे थे।

# मौखिक प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

a. कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी?

b. बड़े भाई छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

c. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

d. बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे?

e. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

**उत्तर-**

a. कथा नायक की रूचि खेल कूद, कँउछालने, मैदानों की सुखद हरियाली, कनकौए उड़ाने, गप्पबाजी करने, कागज़ की तितलियाँ बनाने, उछलकूद करने, चार दीवारी पर चढ़कर ऊपर-नीचे कूदने, फाटक पर सवार होकर उसे मोटर कार बना कर मस्ती करने में थी।+

b. बड़े भाई साहब छोटे भाई से, जब भी वह बाहर से आता, हर समय यही सावल पूछते "अब तक कहाँ थे"?

c. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई की स्वछन्दता और मनमानी बढ़ गई। उसने ज्यादा समय मौज-मस्ती में व्यतीत करना शुरू कर दिया। उसे लगने लगा की वह पढे ना पढे अच्छे नम्बरों से पास हो जाएगा। उसे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया।

d. बड़े भाई साहब छोटे भाई से पाँच साल बड़े थे और वे छोटे भाई से चार दर्जे आगे अर्थात् नौवीं कक्षा में थे और छोटा भाई पाँचवीं कक्षा में था।

e. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों आदि की तस्वीर बनाते, कभी एक ही शब्द कई बार लिखते तो कभी बेमेल शब्द लिखते, कभी सुन्दर लिखी में शेर लिखते थे।

## लिखित प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 पंक्तियों में) लिखिए-

a. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

b. एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटे भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

c. बडे भाई साहब को अपनी इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

d. बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?

e. छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फ़ायदा उठाया?

**उत्तर-**

a. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबल बनाते समय सोचा कि वह नियम बनाकर दिन-रात पढ़ा करेगा तथा खेलकूद बिल्कुल छोड़ देगा। परंतु खेलकूद में गहरी रुचि तथा पुस्तकों में अरुचि होने के कारण वह इसका पालन न कर सका।

b. एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटे भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचे तो उनकी

प्रतिक्रिया बहुत भयानक थी। वह बहुत क्रोधित थे। उन्होंने छोटे भाई को बहुत डाँटा। उन्होंने उसे पढ़ाई पर ध्यान देने को कहा। गुल्ली-डंडा खेल की उन्होंने बहुत बुराई की। उनके अनुसार यह खेल भविष्य के लिए लाभकारी नहीं है। अतः इसे खेलकर उन्हें कुछ हासिल नहीं होने वाला है। उन्होंने यह भी कहा कि अव्वल आने पर उसे घमंड हो गया है। उनके अनुसार घमंड तो रावण तक का भी नहीं रहा। अभिमान का एक-न-एक दिन अंत होता है। अतः छोटे भाई को चाहिए कि घमंड छोड़कर पढ़ाई की ओर ध्यान दे।

c. बड़े भाई साहब अपने बड़प्पन के कारण अपनी बहुत सी इच्छाओं को दबाकर रह जाते थे। उनका मानना था कि यदि वह कुछ गलत काम करेंगे तो छोटे पर क्या असर पड़ेगा। छोटे भाई की देखभाल करना उनका कर्तव्य था। वह पढ़ते रहते थे जिससे छोटा भाई भी उन्हें देखकर पढ़े। ज्यादा खेलते भी नहीं थे।

d. बड़े भाई साहब छोटे भाई को दिन-रात पढ़ने तथा खेल-कूद में समय न गँवाने की सलाह देते थे। वे बड़ा होने के कारण उसे राह पर चलाना अपना कर्तव्य समझते थे।

e. छोटे भाई ने बड़े भाई की नरमी का अनुचित लाभ उठाया। छोटे भाई की स्वच्छंदता बढ़ गई अब वह पढ़ने-लिखने की अपेक्षा सारा ध्यान खेल-कूद में लगाने लगा। उस पर बड़े भाई का डर नहीं रहा, वह आज़ादी से खेलकूद में जाने लगा, वह अपना सारा समय मौज-मस्ती में बिताने लगा। उसे विश्वास हो गया कि वह पढ़े न पढ़े पास हो जाएगा।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

a. बडे भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।

b. बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं?

c. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?

d. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

e. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए?

f. बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?

**उत्तर-**

a. छोटा भाई चंचल स्वभाव का था उसका मन खेलकूद में ज्यादा लगता था। वह पढ़ने में तेज होने के साथ-साथ घूमने-फिरने में ज्यादा समय व्यतीत करता था। इसी बात पर बड़ा भाई उसे डॉटता था। जिनके डर से वह पढ़ने बैठ जाता था बड़ा भाई समय-समय पर उसे घमंड न करने की सलाह देता था। इसी डर और शिक्षा के कारण वह हमेशा कक्षा में अव्वल आता था।

b. 'बड़े भाई साहब' पाठ में लेखक ने शिक्षा की रटंत-प्रणाली पर तीखा व्यंग्य किया है। कहानी का बड़ा भाई एक बेचारा दीन पात्र है जो पाठ्यक्रम के एक-एक शब्द को तोते की तरह रटता रहता है। वह किसी भी शब्द को दिमाग तक नहीं पहुँचने देता। वह न तो विषय को समझता है और न समझे हुए विषय को अपनी भाषा में कहना जानता है। इस कारण

वह चौबीसों घंटे पढ़ते-पढ़ते निस्तेज हो जाता है, फिर भी परीक्षा में पास नहीं हो पाता। मेरे विचार से ऐसी शिक्षा व्यर्थ है।

c. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ केवल किताबी ज्ञान से नहीं आती बल्कि अनुभव से आती है। बड़े भाई के अनुसार जीवन की समझ ज्ञान के साथ अनुभव और व्यावहारिकता से आती है। इसके लिए उन्होंने अम्माँ, दादा व हैडमास्टर की माँ के उदाहरण भी दिए हैं कि वे पढ़े लिखे न होने पर भी हर समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेते हैं। अनुभवी व्यक्ति को जीवन की समझ होती है, वे हर परिस्थिति में अपने को ढालने की क्षमता रखते हैं।

d. बड़े भाई हमेशा अपने छोटे भाई को डाँटते रहते थे, लेकिन जब उन्होने अपने छोटे भाई को जीने का सही तरीका बताया तो छोटे भाई के मन में अपने बड़े भाई के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई। उन्होने बताया कि तुम्हारे और मेरे बीच में जो पाँच साल का अंतर है उसको खुदा भी नहीं मिटा सकता। जिंदगी का तजुर्बा मेरा तुमसे ज्यादा है। जीवन को चलाने के लिए अनुभव चाहिए वह भी मेरा तुमसे ज्यादा है इसलिए आज भी मेरा तुम पर पूरा अधिकार है यह बात सुनकर लेखक ने सिर झुका लिया।

e. बड़ा भाई महत्त्वाकांक्षी है। वह बड़ा होने का सम्मान चाहता है। वह अपने-आपको अपने छोटे भाई का संरक्षक सिद्ध करने के लिए जी-जान लगा देता है।

घोर परिश्रमी और धुनी- बड़ा भाई चाहे पढ़ाई करने की ठीक विधि न जानता हो, किंतु उसके परिश्रम और धुन में कोई कोर-कसर नहीं रहती। वह तीन-तीन बार फेल होकर भी उसी धुन से पढ़ता रहता है। वह दिन-रात पढ़ता है। उसकी तपस्या बड़े-बड़े तपस्वियों को भी मात करती है।

वाक्पटु- बड़ा भाई उपदेश देने और बातें बनाने में बहुत कुशल है। वह अपने-आपको बड़ा सिद्ध करने के लिए हर तर्क जुटा लेता है। कभी वह घमंडियों के नाश की बात कहता है। कभी बड़ी कक्षा की पढ़ाई को कठिन बताता है, कभी परीक्षकों को बुरा कहता है, कभी पढ़ाई-लिखाई को बेकार कहता है, कभी अपनी समझदारी की डींग हाँकता है, और कभी उम्र और अनुभव को महत्त्वपूर्ण कहता है। परंतु वह स्वयं को बड़ा सिद्ध करके ही मानता है।

f. बड़े भाई साहब जिंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण समझते थे। उनके अनुसार किताबी ज्ञान तो कोई भी प्राप्त कर सकता है परन्तु असल ज्ञान तो अनुभवों से प्राप्त होता है कि हमने कितने जीवन मूल्यों को समझा, जीवन की सार्थकता, जीवन का उद्देश्य, सामाजिक कर्तव्य के प्रति जागरूकता की समझ को हासिल किया। अत: हमारा अनुभव जितना विशाल होगा उतना ही हमारा जीवन सुन्दर और सरल होगा।

**प्रश्न 3** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

a. बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि-

छोटा भाई अपने बड़े भाई साहब का आदर करता है।

b. बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि-

भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है।

c. बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि-

भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।

d. बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि-

भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

**उत्तर-**

a. छोटे भाई को कनकौए उड़ाने का शौक था मगर वह अपने बड़े भाई से छिपकर कनकौए उड़ाता था ताकि उन्हें ऐसा न लगे कि वह अपने बड़े भाई का लिहाज और सम्मान नहीं करता है

b. बडे भाई साहब का कहना था कि वह उम्र में पाँच साल बड़े हैं और उनका तजुर्बा कहीं ज्यादा है। वह कहा करते थे कि चाहे तुम एम. ए. और डी. फिल. क्यों न हो जाओ समझ और दुनियादारी में मुझसे कम ही रहोगे।

c. एक समय की बात है कि एक कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा बच्चे दौड़ रहे थे बड़े भाई साहब भी लम्बे होने के कारण पतंग की डोर को पकड़कर उसके पीछे दौड़ पड़े।

d. बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को गले लगाते हुए कहा कि मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता मेरा मन भी करता है मगर मैं ऐसा करने लगा तो तुम्हें कैसे सही राह दिखा सकूँगा आखिर तुम्हारे प्रति मेरी जिम्मेदारी बनती है कि मैं तुम्हें सही रास्ता दिखाऊँ।

**प्रश्न 4** निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

a. इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास।

b. फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुडकियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

c. बुनियाद ही पुख्ता न हो तो मकान कैसे पायेदार बने।

d. आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

**उत्तर-**

a. बड़ा भाई छोटे भाई के घमंड को तोड़ने के लिए कहता है- तुम कक्षा में प्रथम आकर यह न सोचो कि इससे तुमने बहुत बड़ी सफलता पा ली है और मैं असफल हो गया हूँ। वास्तव में बड़ी चीज है- बुद्धि का विकास। उसमें तुम अभी छोटे हो। तुम्हें मेरे जितनी समझ नहीं है। देखो, मैं रावण और अंग्रेजों की शक्ति के अंतर को भी जानता हूँ। मेरी बुद्धि विकसित है। तुम अबोध हो, घमंडी हो।

b. इस पंक्ति का आशय यह है कि जिस प्रकार मनुष्य किसी भी परिस्थिति में अपनी मोह-माया को त्याग नहीं सकता ठीक उसी प्रकार छोटा भाई भी अपने खेल-कूद का त्याग नहीं कर पा रहा था। लेखक हर समय अपने खेलकूद, सैरसपाटे में मस्त रहता और बड़े भाई से डॉट खाता था परन्तु फिर भी खेलकूद नहीं छोड़ता था।

c. लेखक का अपने बड़े भाई के बारे में कहना था कि वे अपने अनुभव को बढ़ाने के लिए हर कक्षा में दो-तीन साल लगाते थे क्योंकि उनके भाई के मन में 'बुनियाद ही पुख्ता न हो तो मकान कैसे पायेदार बने' उक्ति घर कर गई थी।

d. लेखक पतंग लूटने के लिए आकाश की ओर देखता हुआ दौड़ा जा रहा था। उसकी आँखें आकाश में उड़ने वाली पतंग रूपी यात्री की ओर थीं। अर्थात् उसे पतंग आकाश में उड़ने वाली दिव्य आत्मा जैसी मनोरम प्रतीत हो रही थी। वह आत्मा मानो मंद गति से झूमती हुई नीचे की ओर आ रही थी। आशय यह है कि कटी हुई पतंग धीरे-धीरे धरती की ओर गिर रही थी। लेखक को कटी पतंग इतनी अच्छी लग रही थी मानो वह कोई आत्मा हो जो स्वर्ग से मिल कर आई हो और बड़े भारी मन से किसी दूसरे के हाथों में आने के लिए धरती पर उतर रही हो।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

a. नसीहत

b. रोष

c. आज़ादी

d. राजा

e. ताज्जुब

**उत्तर-**

a. नसीहत- मशवरा, सलाह, सीख।

b. रोष- गुस्सा, क्रोध, क्षोभ।

c. आजादी- स्वाधीनता, स्वतंत्रता, मुक्ति।

d. राजा- महीप, भूपति, नृप।

e. ताजुब्ब- आश्चर्य, अचंभा, अचरज।

**प्रश्न 2** प्रेमचंद की भाषा बहुत पैनी और मुहावरेदार है। इसलिए इनकी कहानियाँ रोचक और प्रभावपूर्ण होती हैं। इस कहानी में आप देखेंगे कि हर अनुच्छेद में दो-तीन मुहावरों का प्रयोग किया गया है। उदाहरणत: इन वाक्यों को देखिए और ध्यान से पढ़िए-

- मेरा जी पढ़ने में बिल्कुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था।
- भाई सहाब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती।
- वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर मिल जाता।

निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

a. सिर पर नंगी तलवार लटकना।

b. आड़े हाथों लेना।

c. अंधे के हाथ बटेर लगना।

d. लोहे के चने चबाना।

e. दाँतों पसीना आना।

f. ऐरा-गैरा नत्थू खैरा।

**उत्तर-**

a. सिर पर नंगी तलवार लटकना- सी.बी.आई ने जाँच शुरू करके सबके **सिर पर नंगी तलवार लटका दी।**

b. आड़े हाथों लेना- पुलिस ने चोर को **आड़े हाथों ले लिया।**

c. अंधे के हाथ बटेर लगना- कर्मचारी को जब रूपयों से भरा थैला मिला तो मानों **अंधे के हाथ बटेर लग गई।**

d. लोहे के चने चबाना- मज़दूर दिन रात मेहनत करते हैं, पैसों के लिए वह **लोहे के चने चबाते हैं।**

e. दाँतों पसीना आना- राम की जिद्द के आगे उनके पिताजी के **<u>दाँतों पसीना आ गया।</u>**

f. ऐरा-गैरा नत्थू खैरा- उस पार्टी में **<u>ऐरा-गैरा नत्थू खैरा</u>** भी आ गया।

**प्रश्न 3** निम्नलिखित तत्सम, तद्भव, देशी, आगत शब्दों को दिए गए उदाहरणों के आधार पर छाँटकर लिखिए।

| तत्सम | तद्भव | देशज | आगत (अंग्रेज़ी एवं उर्दू/अरबी-फ़ारसी) |
|---|---|---|---|
| जन्मसिद्ध | आँख | दाल-भात | पोजीशन, फ़जीहत |

तालीम, जल्दबाजी, पुख्ता, हाशिया, चेष्टा, जमात, हर्फ, सूक्तिबाण, जानलेवा, आँखफोड़, घुड़कियाँ, आधिपत्य, पन्ना, मेला-तमाशा, मसलन, स्पेशल, स्कीम, फटकार, प्रातःकाल, विद्वान, निपुण, भाई साहब, अवहेलना, टाइम-टेबिल।

**उत्तर-**

| तत्सम | तद्भव | देशज | आगत/उर्दू | अंग्रेजी |
|---|---|---|---|---|
| चेष्टा<br>सूक्तिबाण<br>आधिपत्य<br>मेला<br>फटकार<br>प्रातःकाल<br>विद्वान<br>निपुण<br>अवहेलना | जानलेवा<br>आंखफोड़<br>पन्ना<br>भाई<br>साहब | घुड़कियाँ | तालीम<br>जल्दबाजी<br>पुख्ता<br>हाशिया<br>जमात<br>हर्फ<br>तमाशा<br>मसलन | स्पेशल<br>स्कीम<br>टाइम-टेबल |

**प्रश्न 4** क्रियाएँ मुख्यत: दो प्रकार की होती हैं- सकर्मक और अकर्मक।

**सकर्मक क्रिया-** वाक्य में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की अपेक्षा रहती है, इसे सकर्मक क्रिया कहते हैं;

जैसे-शीला ने सेब खाया?

मोहन पानी पी रहा है?

**अकर्मक क्रिया-** वाक्य में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की अपेक्षा नहीं होती, इसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे- शीला हसँती है?

बच्चा रो रहा है?

नीचे दिए वाक्यों में कौन-सी क्रिया है- सकर्मक या अकर्मक? लिखिए-

a. उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया।

b. फिर चोरों-सा जीवन कटने लगा।

c. शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा।

d. मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता।

e. समय की पाबंदी पर एक निबंध लिखो।

f. मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

**उत्तर-**

a. उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया।

b. फिर चोरों-सा जीवन कटने लगा।

c. शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा।

d. मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता।

e. समय की पाबंदी पर एक निबंध लिखो।

f. मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

**प्रश्न 5** 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए–

a. विचार

b. इतिहास

c. संसार

d. दिन

e. नीति

f. प्रयोग

g. अधिकार

**उत्तर-**

a. विचार- वैचारिक।

b. इतिहास- ऐतिहासिक।

c. संसार- सांसारिक।

d. दिन- दैनिक।

e. नीति- नैतिक।

f. प्रयोग- प्रायोगिक।

g. अधिकार- आधिकारिक।

# डायरी का एक पन्ना

-सीताराम सेकसरिया

## सारांश

इस पाठ में लेखक सीताराम सेकसरिया ने 26 जनवरी 1931 को कोलकाता में मनाए गए स्वतंत्रता दिवस का विवरण प्रस्तुत किया है। लेखक ने बताया है की भारत में स्वतंत्रता दिवस पहली बार 26 जनवरी 1930 में मनाया गया था परन्तु उस साल कोलकाता की स्वतंत्रता दिवस में ज्यादा हिस्सेदारी नही थी परन्तु इस साल पूरी तैयारियाँ की गई थीं। केवल प्रचार में दो हजार रूपए खर्च किये गए थे। लोगों को घर-घर जाकर समझाया गया।

बड़े बाजार के प्रायः मकानों पर तिरंगा फहराया गया था। कलकत्ता के हर भाग में झंडे लगाये गए थे, ऐसी सजावट पहले कभी नही हुई थी। पुलिस भी प्रत्येक मोड़ में तैनात होकर अपनी पूरी ताकत से गश्त दे रही थी। घुड़सवारों का भी प्रबंध था।

मोनुमेंट के नीचे जहाँ सभा होने वाली थी उस जगह को पुलिस ने सुबह छः बजे ही घेर लिया फिर भी कई जगह सुबह में ही झंडा फहराया गया। श्रद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने जब झंडा गाड़ा तब उन्हें पकड़ लिया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा-बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह को झंडा फहराने से पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया। वहाँ मारपीट भी हुई जिसमे दो-चार लोगों के सिर फट गए तथा गुजरात सेविका संघ की ओर से निकाले गए जुलुस में कई लड़कियों को गिरफ्तार किया गया।

मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने 11 बजे झंडा फहराया। जगह- जगह उत्सव और जुलुस के फोटो उतारे गए। दो-तीन कई आदमियों को पकड़ लिया गया जिनमें पूर्णोदास और परुषोत्तम राय प्रमुख थे। सुभाष चन्द्र बोस के जुलुस का भार पूर्णोदास पर था।

स्त्री समाज भी अपना जुलुस निकालने और ठीक स्थान पर पहुँचनें की कोशिश कर रहीं थीं। तीन बजे से ही मैदान में भीड़ जमा होने लगी और लोग टोलियां बनाकर घूमने लगे। इतनी बड़ी सभा कभी नही की गयी थी पुलिस कमिश्नर के नोटिस के आधार पर अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती थी और भाग लेने वाले व्यक्तियों को दोषी समझा जाएगा। कौंसिल के नोटिस के अनुसार चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाना था और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जानी थी।

ठीक चार बजे सुभाष चन्द्र बोस जुलुस के साथ आए। भीड़ ज्यादा होने की वजह से पुलिस उन्हें रोक नही पायी। पुलिस ने लाठियां चलायीं, कई लोग घायल हुए और सुभाष बाबू पर भी लाठियां पड़ीं। वे जोर से 'वन्दे मातरम्' बोल रहे थे और आगे बढ़ते रहे। पुलिस भयानक रूप से लाठियां चला रहीं थी जिससे क्षितीश चटर्जी का सिर फट गया था। उधर स्त्रियां मोनुमेंट की सीढियाँ चढ़कर झंडा फहरा रही थीं। सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाडी में बैठाकर लॉकअप भेज दिया गया।

कुछ देर बाद वहाँ से स्त्रियां जुलुस बनाकर चलीं और साथ में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। पुलिस ने डंडे बरसाने शुरू कर दिए जिससे बहुत आदमी घायल हो गए। धर्मतल्ले के मोड़ के पास आकर जुलुस टूट गया और करीब 50-60 महिलाएँ वहीँ

बैठ गयीं जिसे पुलिस से पकड़कर लालबाजार भेज दिया। स्त्रियों का एक भाग आगे विमला देवी के नेतृत्व में आगे बढ़ा जिसे बहू बाजार के मोड़ पर रोक गया और वे वहीँ बैठ गयीं। डेढ़ घंटे बाद एक लारी में बैठाकर लालबाजार ले जाया गया।

वृजलाल गोयनका को पकड़ा गया और मदालसा भी पकड़ी गयीं। सब मिलाकर 105 स्त्रियां पकड़ी गयीं थीं जिन्हें बाद में रात 9 बजे छोड़ दिया गया। कलकत्ता में आज तक एक साथ इतनी ज्यादा गिरफ्तारी कभी नहीं हुई थी। करीब दो सौ लोग घायल हुए थे। पकड़े गए आदमियों की संख्या का पता नही चला पर लालबाजार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। आज का दिन कलकत्तावासियों के लिए अभूतपूर्व था। आज वो कलंक धुल गया की कलकत्तावासियों की यहाँ काम नही हो सकता।

## मौखिक प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

a. कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

b. सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

c. विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

d. लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

e. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों और मैदानों को क्यों घेर लिया था?

**उत्तर-**

a. देश का स्वतंत्रता दिवस एक वर्ष पहले इसी दिन मनाया गया था। इससे पहले बंगाल वासियों की भूमिका नहीं थी। अब वे प्रत्यक्ष तौर पर जुड़ गए। इसलिए यह महत्वपूर्ण दिन था।

b. सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था किन्तु पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

c. बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने जैसे ही झंडा गाड़ा, पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और लोगों पर लाठियाँ चलाई।

d. लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर बताना चाहते थे कि वे अपने को आज़ाद समझ कर आज़ादी मना रहे हैं। उनमें जोश और उत्साह है।

e. आज़ादी मनाने के लिए पूरे कलकत्ता शहर में जनसभाओं और झंडारोहण उत्सवों का आयोजन किया गया। पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को लोगों को स्वतंत्रता दिवस मनाने से रोकने के लिए घेर लिया था।

## लिखित प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए–

a. 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

b. आज जो बात थी वह निराली थी' - किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

c. पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

d. धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

e. डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर ही रहे थे, उनके फ़ोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फ़ोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

a. 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए कलकत्ता शहर ने शहर में जगह-जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस निकाले गए तथा झंडा फहराया गया था। टोलियाँ बनाकर भीड़ उस स्थान पर जुटने लगी जहाँ सुभाष बाबू का जुलूस पहुँचना था। पुलिस की लाठीचार्ज तथा गिरफ्तारी लोगों के जोश को कम न कर पाए।

b. 26 जनवरी का दिन इसलिए निराला था क्योंकि स्वतंत्रता दिवस मनाने की प्रथम पुनरावृत्ति थी। इस दिन को निराला बनाने के लिए कलकत्तावासी हर संभव प्रयास कर रहे थे। पुलिस ने सभा करने को गैरकानूनी कहा था किंतु सुभाष बाबू के आह्वान पर पूरे कलकत्ता में अनेक संगठनों के माध्यम से जुलूस व सभाओं की जोशीली तैयारी थी। स्त्रियाँ भी जुलूस में बढ़चढ़कर भाग ले रही थी। पूरा शहर झंडों से सजा था तथा कौंसिल ने मोनुमेंद के नीचे झंडा फहराने और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने का सरकार को खुला चैलेंज दिया हुआ था। पुलिस भरपूर तैयारी के बाद भी कामयाब नहीं हो पाई। निषेधाज्ञा के बावजूद सैकड़ो लोग तीन बजे से ही पार्क में पहुँच रहे थे।

c. पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती जो लोग काम करने वाले थे, उन सबको इंस्पेक्टरों द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी और बता दिया गया था कि सभा में भाग लेने पर दोषी समझे जाएँगे। कौंसिल के नोटिस के अनुसार मोनुमेंट के ठीक नीचे चार बजकर चौंतीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा। और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

d. जब सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया तो स्त्रियाँ जुलूस बनाकर चलीं परन्तु पुलिस ने लाठी चार्ज से उन्हें रोकना चाहा जिससे कुछ लोग वहीं बैठ गए, कुछ घायल हो गए और कुछ पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। इसलिए जुलूस टूट गया।

e. डॉ. दास गुप्ता लोगों की फ़ोटो खिचवा रहे थे। इससे अंग्रेज़ों के जुल्म का पर्दाफ़ाश किया जा सकता था, दूसरा यह भी पता चल सकता था कि बंगाल में स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत काम हो रहा है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

a. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

b. जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

c. जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

d. बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

**उत्तर-**

a. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की महत्वपूर्ण भूमिका थी जगह-जगह स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं। स्त्रियों ने मोनुमेंट की सीढ़ियों पर झंडा फहराया और घोषणा पढ़ रही थीं, बड़ी संख्या में स्त्रियाँ झंडे लिए हुए थीं। धर्मतल्ले पर उन्होंने मोड़ पर धरना दिया। पुलिस ने उन्हें पकड़कर लाल बाजार भेज दिया। कुल मिलाकर 105 स्त्रियाँ गिरफ्तार की गई थीं। इससे पहले एक साथ इतनी स्त्रियाँ कभी गिरफ्तार नहीं की गई थीं।

b. जुलूस जैसे ही लालबाजार पहुँचा, आंदोलनकारी स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गईं। उनके आस-पास बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गई। पुलिस लाठी के प्रहार से भीड़ को तितर-बितर करने में जुट गई। कई लोगों को पकड़कर लॉकअप में बंद कर दिया गया। बृजलाल गोयनका ने बहुत उत्साह दिखाया। वह बड़ी तेजी से मोनुमेंट की ओर दौड़ा किंतु गिर पड़ा। पुलिस वाले ने उसे पकड़ कर कहीं दूर छोड़ दिया। वह फिर से स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया। वहाँ फिर से पकड़ा गया और छोड़ दिया गया। अब उसने 200 साथियों के साथ जुलूस निकाला। वहाँ उसे गिरफ्तार कर लिया गया। इस प्रकार वहाँ मार-पीट और लुका-छिपी का भयानक खेल चलता रहा।

c. यहाँ पर अंग्रेजी राज्य द्वारा सभा न करने के कानून को भंग करने की बात कही गई है। वास्तव में यह कानून भारतवासियों की स्वाधीनता को दमन करने का कानून था इसलिए इसे भंग करना उचित था। इस समय देश की आज़ादी के लिए हर व्यक्ति अपना सर्वस्व लुटाने को तैयार था। अंग्रेज़ों ने कानून बनाकर आन्दोलन, जुलूसों को गैर कानूनी घोषित किया हुआ था परन्तु लोगों पर इसका कोई असर नहीं था। वे आज़ादी के लिए अपना प्रदर्शन करते रहे, गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का प्रयास करते रहे थे।

d. इस दिन के अपूर्व होने का यह कारण था क्योंकि बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ पर अंग्रेजों के खिलाफ कोई काम नहीं हो रहा था इस जुलूस के बाद यह कलंक काफी हद तक धुल गया था। लोगों की सोच में परिवर्तन आया और यहाँ की स्त्रियों ने भी बढ़-चढकर आंदोलन में भाग लिया था। लाल बाजार के लॉकअप में स्त्रियों की भारी संख्या के कारण इस दिन को अपूर्व बताया गया है।

**प्रश्न 3** निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

a. आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।

b. खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी?

**उत्तर-**

a. 26 जनवरी, 1931 को कोलकाता में राष्ट्रीय झंडा फहराने तथा पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के

लिए जो संघर्ष हुआ, वह बहुत बड़ा काम था। हजारों-हजारों नर-नारी जान-माल की परवाह न करते हुए जुलूस में साथ चले। उन्होंने पुलिस की लाठियाँ खाईं, अत्याचार सहे, गिरफ्तारी दी। इससे बंगाल और कोलकाता का नाम स्वतंत्रता-संग्राम में ऊपर आ गया। पहले कोलकाता के बारे में यह धारणा थी कि यहाँ आज़ादी का आंदोलन गति नहीं पकड़ रहा है। इस संघर्ष ने कोलकाता के नाम पर लगे इस कलंक को धो डाला।

b. पुलिस ने कोई प्रदर्शन न हो इसके लिए कानून निकाला कि कोई जुलूस आदि आयोजित नहीं होगा परन्तु सुभाष बाबू की अध्यक्षता में कौंसिल ने नोटिस निकाला था कि मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिक्षा पढ़ी जाएगी। सभी को इसके लिए आंमत्रित किया गया, खूब प्रचार भी हुआ। सारे कलकत्ते में झंडे फहराए गए थे। सरकार और आम जनता में खुली लड़ाई थी।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार होते हैं-

**सरल वाक्य-** सरल वाक्य में कर्ता, कर्म, पूरक, क्रिया और क्रिया विशेषण घटकों या इनमें से कुछ घटकों का योग होता है। स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य ही सरल वाक्य है।

उदाहरण - लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे।

**संयुक्त वाक्य-** जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र या मुख्य उपवाक्य समानाधिकरण योजक से जुड़े हों, वह संयुक्त वाक्य कहलाता है।

योजक शब्द - और, परंतु, इसलिए आदि।

उदाहरण - मोनूमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

**मिश्र वाक्य-** वह वाक्य जिसमें एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों, मिश्र वाक्य कहलाता है।

उदाहरण - जब अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तब पुलिस ने उनको पकड लिया?

निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए-

a.

- दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाजार गया और वहाँ पर गिरफ्तार हो गया।
- मैदान में हज़ारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदान में घूमने लगे।
- सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप में भेज दिया गया।

b. बड़े भाई साहब' पाठ में से भी दो-दो सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य छाँटकर लिखिए।

**उत्तर-**

a.

- दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाजार जाकर गिरफ्तार हो गया।
- हज़ारों आदमियों की भीड़ होने पर लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदान में घूमने लगे।
- सुभाष बाबू को पकड़कर गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप में भेज दिया गया।

b.

**सरल वाक्य–**

- वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे।
- उनकी रचनाओं को समझना छोटे मुँह बड़ी बात है।

**संयुक्त वाक्य–**

- उनकी नज़र मेरी ओर उठी और प्राण निकल गए।
- मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फेल हो गए।

**मिश्र वाक्य–**

- मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ लेकिन असफल रहा।
- मैं कह देता कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं को ध्यान से पढ़िए और समझिए कि जाना, रहना और चुकना क्रियाओं का प्रयोग किस प्रकार किया गया है।

a. कई मकान सजाए गए थे।

कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए थे।

b. बड़े बाजार के प्राय: मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था।

कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं।

पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी।

c. सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था, वह प्रबंध कर चुका था।

पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था।

**उत्तर-**

a. कई मकान सजाए गए थे।

कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए थे।

b. बड़े बाजार के प्राय: मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था।

कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं।

पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी।

c. सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था, वह प्रबंध कर चुका था।

पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था।

**प्रश्न 3** नीचे दिए गए शब्दों की संरचना पर ध्यान दीजिए -

विद्या + अर्थी - विद्यार्थी

'विद्या' शब्द का अंतिम स्वर 'आ' और दूसरे शब्द 'अर्थी' की प्रथम स्वर ध्वनि 'अ' जब मिलते हैं तो वे मिलकर दीर्घ स्वर 'आ' में बदल जाते हैं। यह स्वर संधि है जो संधि का ही एक प्रकार है।

संधि शब्द का अर्थ है- जोड़ना। जब दो शब्द पास-पास आते हैं तो पहले शब्द की अंतिम ध्वनि बाद में आने वाले शब्द की पहली ध्वनि से मिलकर उसे प्रभावित करती है। ध्वनि-परिवर्तन की इस प्रक्रिया को संधि कहते हैं। संधि तीन प्रकार की होती है- स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि। जब संधि-युक्त पदों को अलग-अलग किया जाता है तो उसे संधि विच्छेद कहते हैं;

जैसे- विद्यालय - विद्या + आलय

नीचे दिए गए शब्दों की संधि कीजिए-

a. श्रद्धा + आनंद = ...................

b. प्रति + एक = ...................

c. पुरुष + उत्तम = ...................

d. झंडा + उत्सव = ...................

e. पुन: + आवृत्ति = ...................

f. ज्योति: + मय = .................

**उत्तर-**

a. श्रद्धा + आनंद = श्रद्धानंद।

b. प्रति + एक = प्रत्येक।

c. पुरुष + उत्तम = पुरुषोत्तम।

d. झंडा + उत्सव = झंडोत्सव।

e. पुन: + आवृत्ति = पुनरावृत्ति।

f. ज्योति: + मय = ज्योतिर्मय।

# तताँरा-वामीरो कथा

-लीलाधर मंडलोई

## सारांश

यह पाठ अंदमान निकोबार द्वीपसमूह के एक प्रचलित लोककथा पर आधरित है। अंदमान निकोबार दक्षिणी द्वीप लिटिल अंदमान है जो की पोर्ट ब्लेयर से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित है। इसके बाद निकोबार द्वीपसमूह का पहला प्रमुख द्वीप कार-निकोबार है जो की लिटिल अंदमान से 96 कि.मी. दूर है। पौराणिक जनश्रुति के अनुसार ये दोनों द्वीप पहले एक ही थे। इनके अलग होने के पीछे एक लोककथा आज भी प्रचलित है।

जब दोनों द्वीप एक थे तब वहां एक सुन्दर सा गाँव था जहाँ एक सुन्दर और शक्तिशाली युवक रहा करता था जिसका नाम तताँरा था। वह एक नेक और ईमानदार व्यक्ति था और सदा दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहता था। निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। वह अपने गाँव के लोगों के साथ सारे द्वीप की भी सेवा करता था। वह पारंपरिक पोशाक में रहने के साथ अपनी कमर में सदा एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता था। वह कभी तलवार का उपयोग नही करता था, लोगों का मत था की तलवार में दैवीय शक्ति थी।

एक शाम तताँरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र के किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज डूबने को था, समुद्र से ठंडी बयारें आ रहीं थीं। पक्षियाँ अपने घरों को वापस जा रहीं थीं। ततांरा सूरज की अंतिम किरणों को समुद्र पर निहारा रहा था तभी उसे कहीं पास से एक मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया  सुध-बुध खोने लगा। लहरों की एक प्रबल वेग ने उसे जगाया। वह जिधर से गीत के स्वर आ रहे थे उधर बढ़ता गया। उसकी नजर एक युवती पर पड़ी जो की वह श्रृंगार गीत गा रही थी। अचानक एक समुद्री लहर उठी और युवती को भिगों दिया जिसके हड़बड़ाहट में वह अपना गाना भूल गयी। ततांरा ने विनम्रतापूर्वक उसके मधुर गायन छोड़ने के पीछे वजह पूछी। युवती उसे देखकर चौंक गयी और ऐसे असंगत प्रश्न का कारण पूछने लगी। ततांरा उससे बार-बार गाने को बोल रहा था। अंत में ततांरा को अपनी भूल का अहसास हुआ और उसने क्षमा माँगकर उसका नाम पूछा। उसने अपना नाम वामीरो बताया। ततांरा ने उसे अपना नाम बताते हुए कल फिर आने का आग्रह किया।

वामीरो जब अपने घर लपाती पहुँची तो उसे भीतर से बैचैनी होने लगी। उसने ततांरा के व्यक्तित्व में वह सारा गुण पाया जो की वह अपने जीवन साथी के बारे में सोचती थी परन्तु उनका संबंध परंपरा के विरुद्ध था इसलिए उसने ततांरा को भूलना ही बेहतर समझा। किसी तरह दोनों की रात बीती। दूसरे दिन ततांरा लपाती के समुद्री चट्टान पर शाम में वामीरो की प्रतीक्षा करने लगा। सूरज ढलने को था सहसा तभी उसे नारियल के झुरमुटों के बीच एक आकृति दिखाई दी जो की वामीरो ही थी। अब दोनों रोज शाम में मिलते और एक दूसरे को एकटक निहारते खड़े रहते। लपाती के कुछ युवकों ने उन दोनों के इस मूक प्रेम को भाँप लिया और यह बात हवा की  तरह सबको मालूम हो गयी। परन्तु दोनों का विवाह संभव ना था क्योंकि दोनों अलग-अलग गाँव से थे। सबने दोनों को समझाने का पूरा प्रयास किया किन्तु दोनों अडिग रहे और हर शाम मिलते रहे।

कुछ समय बाद तताँरा के गाँव पासा में पशु-पर्व का आयोजन था जिसमें सभी गाँव हिस्सा लिया करते। पर्व में पशुओं के प्रदर्शन के के अतिरिक्त युवकों की भी शक्ति परीक्षा होती साथ ही गीत-संगीत और भोजन का भी आयोजन होता। शाम में सभी लोग पासा आने लगे और धीरे-धीरे विभिन्न कार्यक्रम होने लगे परन्तु तताँरा का मन इनमें ना होकर वामीरो को खोजने में व्यस्त था। तभी उसे नारियल के झुंड के पीछे वामीरो दिखाई दी। वह तताँरा को देखते ही रोने लगी। तताँरा विह्वल हुआ। रुदन का स्वर सुनकर वामीरो की माँ वहां पहुँच गयीं और उसने तताँरा को बुरा-भला कहकर अपमानित किया। गाँव के लोग भी तताँरा के विरोध में आवाज उठाने लगे। यह तताँरा के लिए असहनीय था। उसे परंपरा पर क्षोभ हो रहा था और अपनी असहायता पर गुस्सा। अचानक उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा टिका और क्रोध में उसने अपनी तलवार निकालकर धरती में घोंप दिया और अपनी पूरी ताकत लगाकर खींचने लगा। जहाँ से लकीर खींची थी वहाँ से धरती में दरार आने लगी। द्वीप के दो टुकड़े हो चुके थे एक तरफ तताँरा था और दूसरी तरफ वामीरो। दूसरा द्वीप धँसने लगा। तताँरा को जैसे ही होश आया उसने दूसरे द्वीप का कूद कर सिरा पकड़ने की कोशिश की परन्तु सफल ना हो सका और नीचे की तरफ फिसलने लगा। दोनों के मुँह से एक दूसरे के चीख निकल रही थी।

तताँरा लहूलुहान अचेत पड़ा था। बाद में उसका क्या हुआ कोई नहीं जानता। इधर वामीरो पागल हो गयी और उसने खाना-पीना छोड़ दिया। लोगों ने तताँरा को खोजने का बहुत प्रयास किया परन्तु वह नही मिला। आज ना तताँरा है ना वामीरो परन्तु उनकी प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है। इस घटना के निकोबारी एक दूसरे गाँवों में वैवाहिक संबंध स्थापित करने लगे। तताँरा की तलवार से कार-निकोबार से जो दो टुकड़े उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है।

## मौखिक प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

a. तताँरा-वामीरो कहाँ की कथा है?

b. वामीरो अपना गाना क्यों भूल गई?

c. तताँरा ने वामीरो से क्या याचना की?

d. तताँरा और वामीरो के गाँव की क्या रीति थी?

e. क्रोध में तताँरा ने क्या किया?

**उत्तर-**

a. तताँरा-वामीरो अंडमान निकोबार द्वीप समूह की लोक कथा है।

b. वामीरो सागर के किनारे गा रही थी। अचानक समुद्र की ऊँची लहर ने उसे भिगो दिया, इसी हड़बडाहट में वह गाना भूल गई।

c. तताँरा ने वामीरो से याचना की कि वह अपना मधुर गाना पूरा करे। बाद में उसने उसका नाम जानने और अगले दिन भी वहाँ आने की याचना की।

d. तताँरा और वामीरो के गाँव की रीति थी कि विवाह के लिए लड़का-लड़की का एक ही गाँव का होना आवश्यक था। विवाह संबंध बाहर के किसी गाँव वाले से नहीं हो सकता था।

e. क्रोध में तताँरा का हाथ कमर पर लटकी तलवार पर चला गया और उसने तलवार निकाल कर ज़मीन में गाड़ दी।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित वाक्यों के सामने दिए कोष्ठक में (✓) का चिह्न लगाकर बताएँ कि वह वाक्य किस प्रकार का है–

a. निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

b. तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया? (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

c. वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

d. क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम? (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

e. वाह! कितना सुदंर नाम है। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

f. मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

**उत्तर-**

a. निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे।

b. तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया?

c. वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी।

d. क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम?

e. वाह! कितना सुदंर नाम है।

f. मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

a. सुध-बुध खोना।

b. बाट जोहना।

c. खुशी का ठिकाना न रहना।

d. आग बबूला होना।

e. आवाज़ उठाना।

**उत्तर-**

a. सुध-बुध खोना- वामीरो का मधुर गीत सुनकर तताँरा सुध-बुध खो बैठा।

b. बाट जोहना- तताँरा सूरज ढलते ही वामीरो की बाट जोहने लगा।

c. खुशी का ठिकाना न रहना- वामीरो को आता देख तताँरा की खुशी का ठिकाना न रहा।

d. आग बबूला होना- वामीरो की माँ तताँरा को वामीरो के पास खड़ा देखकर आग बबूला हो गई।

e. आवाज़ उठाना- तताँरा के गाँव वाले भी तताँरा के विरुद्ध आवाज उठाने लगे।

**प्रश्न 3** नीचे दिए गए शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए-

| | | | |
|---|---|---|---|
| a. | शब्द | मूल शब्द | प्रत्यय |
| b. | चर्चित | .......... | .......... |
| c. | साहसिक | .......... | .......... |
| d. | छटपटाहट | .......... | .......... |
| e. | शब्दहीन | .......... | .......... |

**उत्तर-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| a. | शब्द | मूल शब्द | प्रत्यय |
| b. | चर्चित | चर्चा | इत |
| c. | साहसिक | साहस | इक |
| d. | छटपटाहट | छटपट | हट |
| e. | शब्दहीन | शब्द | हीन |

**प्रश्न 4** नीचे दिए गए शब्दों में उचित उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइए-

a. .......... + आकर्षक = .........

b. ........... + ज्ञात = ........

c. ........... + कोमल = ...........

d. ......... + होश = ..........

e. ........... + घटना = ............

**उत्तर-**

a. अन + आकर्षक = अनाकर्षक

b. अ + ज्ञात = अज्ञात

c. सु + कोमल = सुकोमल

d. बे + होश = बेहोश

e. दुर + घटना = दुर्घटना

**प्रश्न 5** निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए-

a. जीवन में पहली बार मैं इस तरह विचलित हुआ हूँ। (मिश्र वाक्य)

b. फिर तेज़ कदमों से चलती हुई तताँरा के सामने आकर ठिठक गई। (संयुक्त वाक्य)

c. वामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ दौड़ी। (सरल वाक्य)

d. तताँरा को देखकर वह फूटकर रोने लगी। (संयुक्त वाक्य)

e. रीति के अनुसार दोनों को एक ही गाँव का होना आवश्यक था। (मिश्र वाक्य)

**उत्तर-**

a. जीवन में ऐसा पहली बार हुआ है कि मैं विचलित हुआ हूँ।

b. फिर तेज कदमों से चलती हुई तताँरा के पास आई और ठिठक गई।

c. वामीरो कुछ सचेत होकर घर की ओर दौड़ी।

d. उसने तताँरा को देखा और फूट-फूटकर रोने लगी।

e. रीति के अनुसार यह आवश्यक था कि दोनों एक ही गाँव के हों।

**प्रश्न 6** नीचे दिए गए वाक्य पढ़िए तथा 'और' शब्द के विभिन्न प्रयोगों पर ध्यान दीजिए-

a. पास में सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। (दो पदों को जोड़ना)

b. वह कुछ और सोचने लगी। ('अन्य' के अर्थ में)

c. एक आकृति कुछ साफ़ हुई... कुछ और ... कुछ और... (क्रमशः धीरे-धीरे के अर्थ में)

d. अचानक वामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ़ दौड़ गई। (दो उपवाक्यों को जोड़ने के अर्थ में)

e. वामीरो का दुख उसे और गहरा कर रहा था। ('अधिकता' के अर्थ में)

f. उसने थोड़ा और करीब जाकर पहचानने की चेष्टा की। ('निकटता' के अर्थ में)

**उत्तर-** छात्र स्वयं करें।

**प्रश्न 7** नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

a. भय,

b. मधुर,

c. सभ्य,

d. मूक,

e. तरल,

f. उपस्थिति,

g. सुखद।

**उत्तर-**

a. निर्भय,

b. कटु,

c. असभ्य,

d. वाचाल,

e. ठोस,

f. अनुपस्थित,

g. दुखद।

**प्रश्न 8** नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

a. समुद्र,

b. आँख,

c. दिन,

d. अँधेरा,

e. मुक्त।

**उत्तर-**

a. समुद्र – रत्नाकर, वारिधि, नीरधि, जलधि

b. आँख – नेत्र, चक्षु, नयन, लोचन, दृग

c. दिन – दिवस, दिवा, वासर, वार

d. अँधेरा – तम, तिमिर, अंधकार

e. मुक्त – उन्मुक्त, आजाद, बंधनहीन

**प्रश्न 9** नीचे दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

a. किंकर्तव्यविमूढ़,

b. विह्वल,

c. भयाकुल,

d. याचक,

e. आकंठ।

**उत्तर-**

a. शब्द – वाक्य प्रयोग

b. किंकर्तव्यविमूढ़ – महाभारत के मैदान में गुरुजन एवं बंधु-बाँधवों को सामने देखकर अर्जुन किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए।

c. विह्वल – अपने खोए बेटे से मिलकर माँ विह्वल होकर रोने लगी।

d. भयाकुल – डाकुओं से स्वयं को घिरा देखकर यात्री भयाकुल हो गए।

e. याचक – याचक करुण स्वर में दो रोटियाँ माँग रहा था।

f. आकंठ – कुछ नेता और अधिकारी आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे हैं।

**प्रश्न 10** किसी तरह आँचरहित एक ठंडा और ऊबाऊ दिन गुजरने लगा' वाक्य में दिन के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है? आप दिन के लिए कोई तीन विशेषण और सुझाइए।

**उत्तर-** उमस भरा लंबा थकाऊ दिन।

सुंदर-सुहावना धूपदार दिन।

**प्रश्न 11** इस पाठ में देखना' क्रिया के कई रूप आए हैं- 'देखना' के इन विभिन्न शब्द-प्रयोगों में क्या अंतर है?

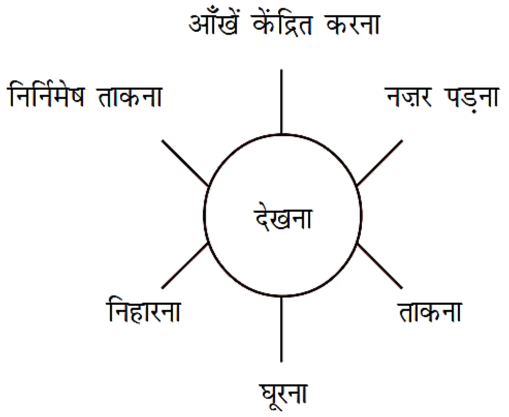


इसी प्रकार 'बोलना' क्रिया के विभिन्न शब्द-प्रयोग बताइए।

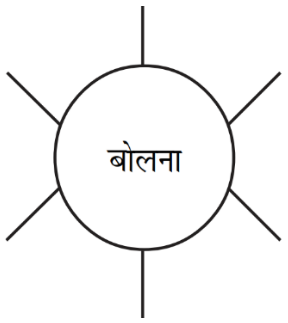

**उत्तर-**

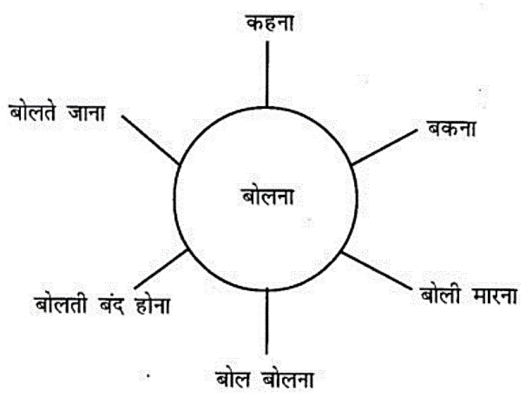


**प्रश्न 12** नीचे दिए गए वाक्यांशों को पढ़िए-

(क) श्याम का बड़ा भाई रमेश कल आया था। (संज्ञा पदबंध)

(ख) सुनीता परिश्रमी और होशियार लड़की है। (विशेषण पदबंध)

(ग) अरुणिमा धीरे-धीरे चलते हुए वहाँ जा पहुँची। (क्रिया विशेषण पदबंध)

(घ) आयुष सुरभि का चुटकुला सुनकर हँसता रहा। (क्रिया पदबंध)

ऊपर दिए गए:

**वाक्य (क)** में रेखांकित अंश में कई पद हैं जो एक पद संज्ञा का काम कर रहे हैं।

**वाक्य (ख)** में तीन पद मिलकर विशेषण पद का काम कर रहे हैं।

**वाक्य (ग)** और **(घ)** में कई पद मिलकर क्रमशः क्रिया विशेषण और क्रिया का काम कर रहे हैं।

ध्वनियों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं और वाक्य में प्रयुक्त शब्द 'पद' कहलाता है; जैसे'पेड़ों पर पक्षी चहचहा रहे थे।' वाक्य में 'पेड़ों' शब्द पद है क्योंकि इसमें अनेक व्याकरणिक बिंदु जुड़ जाते हैं। कई पदों के योग से बने वाक्यांश को जो एक ही पद का काम करता है, पदबंध कहते हैं। पदबंध वाक्य का एक अंश होता है।

पदबंध मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं-

संज्ञा पदबंध

क्रिया पदबंध

विशेषण पदबंध

क्रियाविशेषण पदबंध

वाक्यों के रेखांकित पदबंधों का प्रकार बताइए-

a. उसकी कल्पना में वह एक अद्भुत साहसी युवक था।

b. तताँरा को मानो कुछ होश आया।

c. वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता।

d. तताँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।

e. उसकी व्याकुल आँखें वामीरो को ढूंढने में व्यस्त थीं।

**उत्तर-**

a. विशेषण पदबंध

b. क्रिया पदबंध

c. क्रियाविशेषण पदबंध

d. विशेषण पदबंध

e. विशेषण पदबंध

## लिखित प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

a. तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था?

b. वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया?

c. तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया?

d. निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे?

**उत्तर-**

a. तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का यह मत था कि लकड़ी की होने के बावजूद उस तलवार में अद्भुत दैवीय शक्ति थी। वह अपनी तलवार को अपने से कभी भी अलग न होने देता था और दूसरों के सामने उसका उपयोग नहीं करता था।

b. वामीरो ने ततााँरा को बेरुखी से जवाब दिया कि वह उसके कहने पर गाना क्यों गाए? वह पहले उसे बताए कि वह कौन है? वह उससे असंगत प्रश्न क्यों कर रहा है? वह उसे घूर क्यों रहा है? वह अपने गाँव के पुरुष के अलावा किसी अन्य को जवाब देने को विवश नहीं है।

c. ततााँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में यह परिवर्तन आया कि वहाँ लोग अब दूसरे गाँवों से भी वैवाहिक संबंध स्थापित करने लगे। दोनों की त्यागमयी मृत्यु ने लोगों की विचारधारा में एक सुखद तथा अद्भुत परिवर्तन ला दिया तथा उनकी रूढ़िवादी परंपराएँ भी परिवर्तित हो गईं।

d. निकोबार के लोग ततााँरा को उसके साहसी और परोपकारी स्वभाव के कारण पसंद करते थे। वह सदैव दूसरों की सहायता करने में विश्वास रखता था और समूचे दूद्वीपवासियों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझता था।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

a. निकोबार द्वीप समूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास है?

b. ततााँरा खूब परिश्रम करने के बाद कहाँ गया? वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

c. वामीरो से मिलने के बाद ततााँरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया?

d. प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे?

e. रूढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें तब उनका टूट जाना ही अच्छा है। क्यों? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

a. निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का यह विश्वास है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे। इनके विभक्त होने में ततााँरा और वामीरो की प्रेम-कथा की त्यागमयी मृत्यु है, जो एक सुखद परिवर्तन के लिए थी।

b. ततााँरा खूब परिश्रम करने के बाद समुद्र के किनारे टहलने गया था। संध्या का समय था। उस समय क्षितिज पर सूरज डूबने को था। ठंडी हवाएँ चल रही थीं। पक्षियों की चहचहाहट से वातावरण गूंज रहा था। सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणें, पानी में घुलकर अद्भुत स्वर्गिक सौंदर्य की रचना कर रही थीं।

c. वामीरो से मिलने के बाद ततााँरा के जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया। वह वामीरो से मिलकर सम्मोहित-सा हो गया।

उसके शांत जीवन में हलचल मच गई। वह स्वयं को रोमांचित अनुभव कर रहा था। वह वामीरो की प्रतीक्षा में दिन बिताने लगा। प्रतीक्षा का एक-एक पल उसे पहाड़ की तरह भारी प्रतीत होता था। वह हमेशा अनिर्णय की स्थिति में रहता था कि दामीरो उससे मिलने आएगी या नहीं अर्थात् उसके मन में आशंका-सी बनी रहती थी।

d. प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए अनेक प्रकार के आयोजन किए जाते थे। पशु-पर्व, कुश्ती, दंगल तथा मेलों का आयोजन किया जाता था। पशु-पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं का प्रदर्शन होता था। युवकों की शक्ति-परीक्षा के लिए उन्हें पशुओं से भिड़ाया जाता था। इसमें सभी लोग हिस्सा लेते थे। पासा गाँव में वर्ष में एक ऐसा मेला होता था जिसमें सभी गाँवों के लोग इकट्ठे होते थे। उसमें नृत्य-संगीत और भोजन का भी प्रबंध होता था।

e. रूढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें, तब वास्तव में उनका टूट जाना ही उचित है तथा इनमें परिवर्तन करना श्रेयस्कर होता है, क्योंकि रूढ़ियाँ व्यक्ति को बंधनों में जकड़ लेती हैं, जिससे व्यक्ति का विकास होना बंद हो जाता है। इनके टूट जाने से व्यक्ति के दिलो-दिमाग पर छाया बोझ हट जाता है। व्यक्ति की उन्नति तथा स्वतंत्रता हेतु इन रूढ़ियों को तोड़ देना चाहिए, नहीं तो ये हमारी उन्नति में बाधक बनकर खड़ी रहेंगी।

**प्रश्न 3** निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

a. जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसने शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा।

b. बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी।

**उत्तर-**

a. इसका आशय है कि गाँववालों और वामीरो की माँ दुवारा अपमानित होने के बाद तताँरा के क्रोध का ठिकाना न रहा। क्रोध में ही उसने अपनी तलवार निकालकर उसे पूरी शक्ति से धरती में घोंप दिया और पूरी ताकत से खींचने लगा, जिससे धरती में सीधी दरार आ गई और धरती दो टुकड़ों में बँट गई।

b. तताँरा वामीरो को पहली ही नज़र में बेहद प्रेम करने लगा था। वह उसकी प्रतीक्षा में अपने जीवन की संपूर्ण आस लगाए बैठा था। उसने उसे पुनः साँझ को समुद्री चट्टान पर आने के लिए कहा था। अतः वह छटपटाते हुए अधीरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसके मन में एक आशंका यह भी थी कि कहीं वामीरो न आए। इस आशंका से उसका मन काँप उठता था, परंतु साथ ही एक आशा की किरण भी थी।

c. उसे लगता है कि आशा की यह किरण वामीरो के न आने पर समुद्र में डूबते सूर्य की किरणों के समान कहीं डूब न जाए। तताँरा इस उधेड़बुन में बैठा हुआ था और आशा-निराशा के बीच झूलते हुए अपने प्रेम के सफल होने की कामना कर रहा था।

# तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र

-प्रहलाद अग्रवाल

## सारांश

इस पाठ में लेखक ने गीतकार शैलेन्द्र और उनके द्वारा निर्मित पहली और आखिरी फिल्म तीसरी कसम के बारे में बताया है।

जब राजकपूर की की फिल्म संगम सफल रही तो इसने उनमें गहन आत्मविश्वास भर दिया जिस कारण उन्होंने एक साथ चार फिल्मों - 'मेरा नाम जोकर' , 'अजंता' , 'मैं और मेरा दोस्त' , सत्यम शिवम सुंदरम' के निर्माण की घोषणा की। परन्तु जब 1965 में उन्होंने 'मेरा नाम जोकर' का निर्माण शुरू किया तो इसके एक भाग के निर्माण में छह वर्ष लग गए। इन छह वर्षों के बीच उनके द्वारा अभिनीत कई फ़िल्में प्रदर्शित हुईं जिनमें सन् 1966 में प्रदर्शित कवि शैलेन्द्र की 'तीसरी कसम' फिल्म भी शामिल है। इस फिल्म में हिंदी साहित्य की अत्यंत मार्मिक कथा कृति को सैल्यूलाइड पर पूरी सार्थकता से उतारा गया है। यह फिल्म नहीं बल्कि सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी।

इस फिल्म को 'राष्ट्रपति स्वर्णपदक' मिला, बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फिल्म और कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। मॉस्को फिल्म फेस्टिवल में भी यह फिल्म पुरस्कृत हुई। इस फिल्म में शैलेन्द्र ने अपनी संवेदनशीलता को अच्छी तरह से दिखाया है और राजकपूर का अभिनय भी उतना ही अच्छा है। इस फिल्म के लिए राजकपूर ने शैलेन्द्र से केवल एक रूपया लिया। राजकपूर ने यह फिल्म बनने से पहले शैलेन्द्र को फिल्म की असफलताओं से भी आगाह किया था परन्तु फिर भी शैलेन्द्र ने यह फिल्म बनायीं क्योंकि उनके लिए धन-संपत्ति से अधिक महत्वपूर्ण अपनी आत्मसंतुष्टि थी। महान फिल्म होने पर भी तीसरी कसम को प्रदर्शित करने के लिए बहुत मुश्किल से वितरक मिले। बावजूद इसके कि फिल्म में राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे सितारें थे, शंकर जयकिशन का संगीत था। फिल्म के गाने पहले ही लोकप्रिय हो चुके थे लेकिन फिल्म को खरीदने वाला कोई नहीं था क्योंकि फिल्म की संवेदना आसानी से समझ आने वाली ना थी। इसलिए फिल्म का प्रचार भी काम हुआ और यह कब आई और गयी पता भी ना चला।

शैलेन्द्र बीस सालों से इंडस्ट्री में थे और उन्हें वहाँ के तौर-तरीके भी मालूम थे परन्तु वे इनमें उलझकर अपनी आदमियत नहीं खो सके थे। 'श्री 420' के एक लोकप्रिय गीत 'दसों दिशायें कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति करते हुए कहा की दर्शक चार दिशायें तो समझ सकते हैं परन्तु दस नहीं। शैलेन्द्र गीत बदलने को तैयार नही थे। उनका मानना था की दर्शकों की रूचि के आड़ में हमें उनपर उथलेपन को नहीं थोपना चाहिए। शैलेन्द्र ने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया। वे एक शांत नदी के प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए व्यक्ति थे।

'तीसरी कसम' फिल्म उन चुनिंदा फिल्मों में से है जिन्होनें साहित्य-रचना से शत-प्रतिशत न्याय किया है। शैलेंद्र ने राजकपूर जैसे स्टार को हीरामन बना दिया था और छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी 'हीराबाई' ने वहीदा रहमान की प्रसिद्ध ऊचाईयों को बहुत पीछे छोड़ दिया था। यह फिल वास्तविक दुनिया का पूरा स्पर्श कराती है। इस फिल्म में दु:ख का सहज चित्रण किया गया

है। मुकेश की आवाज़ में शैलेन्द्र का गीत - सजनवा बैरी हो गए हमार चिठिया हो तो हर कोई बाँचै भाग ना बाँचै कोय... अदित्तीय बन गया।

अभिनय की दृष्टि से यह राजकपूर की जिंदगी का सबसे हसीन फिल्म है। वे इस फिल्म में मासूमियत की चर्मोत्कर्ष को छूते हैं। 'तीसरी कसम' में राजकपूर ने जो अभिनय किया है वो उन्होंने 'जागते रहो' में भी नहीं किया है। इस फिल्म में ऐसा लगता है मानो राजकपूर अभिनय नही कर रहा है, वह हीरामन ही बन गया है। राजकपूर के अभिनय-जीवन का वह मुकाम है जब वह एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे।

तीसरी कसम पटकथा मूल कहानी के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने स्वयं लिखी थी। कहानी का हर अंश फिल्म में पूरी तरह स्पष्ट थीं।

## मौखिक प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

a. तीसरी कसम' फ़िल्म को कौन-कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है?

b. शैलेंद्र ने कितनी फ़िल्में बनाई?

c. राजकपूर द्वारा निर्देशित कुछ फ़िल्मों के नाम बताइए।

d. तीसरी कसम' फ़िल्म के नायक व नायिकाओं के नाम बताइए और फ़िल्म में इन्होंने किन पात्रों का अभिनय किया है?

e. फ़िल्म 'तीसरी कसम' का निर्माण किसने किया था?

f. राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय किस बात की कल्पना भी नहीं की थी?

g. राजकपूर की किस बात पर शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया?

h. फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को किस तरह का कलाकार मानते थे?

**उत्तर-**

a. राष्ट्रपति स्वर्णपदक से सम्मानित।

b. बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म को पुरस्कार।

c. मास्को फ़िल्म फेस्टिवल में भी यह पुरस्कृत हुई।

d. शैलेंद्र ने अपने जीवन में केवल एक ही फ़िल्म का निर्माण किया। 'तीसरी कसम' ही उनकी पहली व अंतिम फ़िल्म थी।

e. तीसरी कसम' फ़िल्म के नायक राजकपूर और नायिका वहीदा रहमान थी। राजकपूर ने हीरामन गाड़ीवान का अभिनय किया है और वहीदा रहमान ने नौटंकी कलाकार 'हीराबाई' का अभिनय किया है।

f. शिल्पकार शैलेंद्र ने।

g. राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय कल्पना भी नहीं की थी कि फ़िल्म के पहले भाग के निर्माण में ही छह साल का समय लग जाएगा।

h. राजकपूर की किस बात पर शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया?

i. फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को कला-मर्मज्ञ एवं आँखों से बात करनेवाला कुशल अभिनेता मानते थे।

## लिखित प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

a. 'तीसरी कसम' फ़िल्म को 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' क्यों कहा गया है?

b. तीसरी कसम' फ़िल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे?

c. शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है?

d. फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफाई क्यों कर दिया जाता है?

e. शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं'- इस कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

f. लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं?

g. फ़िल्म 'श्री 420' के गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की?

**उत्तर-**

a. तीसरी कसम' फ़िल्म को सैल्यूलाइड पर लिखी कविता अर्थात् कैमरे की रील में उतार कर चित्र पर प्रस्तुत करना इसलिए कहा गया है, क्योंकि यह वह फ़िल्म है, जिसने हिंदी साहित्य की एक अत्यंत मार्मिक कृति को सैल्यूलाइड पर सार्थकता से उतारा; इसलिए यह फ़िल्म नहीं, बल्कि सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी।

b. इस फिल्म में किसी भी प्रकार के अनावश्यक मसाले जो फिल्म के पैसे वसूल करने के लिए आवश्यक होते हैं, नहीं डाले गए थे। फ़िल्म वितरक उसके साहित्यिक महत्त्व और गौरव को नहीं समझ सकते थे इसलिए उन्होंने उसे खरीदने से इनकार कर दिया।

c. शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य है कि वह उपभोक्ताओं की रुचियों को परिष्कार करने का प्रयत्न करे। उसे दर्शकों की रुचियों की आड़ में सस्तापन/उथलापन नहीं थोपना चाहिए। उसके अभिनय में शांत नदी का प्रवाह तथा समुद्र की गहराई की छाप छोड़ने की क्षमता होनी चाहिए।

d. फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफाई इसलिए किया जाता है जिससे फ़िल्म निर्माता दर्शकों का भावनात्मक शोषण कर सकें। निर्माता-निर्देशक हर दृश्य को दर्शकों की रुचि का बहाना बनाकर महिमामंडित कर देते हैं जिससे उनके द्वारा खर्च किया गया एक-एक पैसा वसूल हो सके और उन्हें सफलता मिल सके।

e. शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं -का आशय है कि राजकपूर के पास अपनी भावनाओं को व्यक्त कर पाने के लिए शब्दों का अभाव था, जिसकी पूर्ति बड़ी कुशलता तथा सौंदर्यमयी ढंग से कवि हृदय शैलेंद्र जी ने की है। राजकपूर जो कहना चाहते थे, उसे शैलेंद्र ने शब्दों के माध्यम से प्रकट किया। राजकपूर अपनी भावनाओं को आँखों के द्वारा व्यक्त करने में कुशल थे। उन भावों को गीतों में ढालने का काम .शैलेंद्र ने किया।

f. शोमैन का अर्थ है-प्रसिद्ध प्रतिनिधि-आकर्षक व्यक्तित्व। ऐसा व्यक्ति जो अपने कला-गुण, व्यक्तित्व तथा आकर्षण के कारण सब जगह प्रसिद्ध हो। राजकपूर अपने समय के एक

महान फ़िल्मकार थे। एशिया में उनके निर्देशन में अनेक फ़िल्में प्रदर्शित हुई थीं। उन्हें एशिया का सबसे बड़ा शोमैन इसलिए कहा गया है क्योंकि उनकी फ़िल्में शोमैन से संबंधित सभी मानदंडों पर खरी उतरती थीं। वे एक सर्वाधिक लोकप्रिय अभिनेता थे और उनका अभिनय जीवंत था तथा दर्शकों के हृदय पर छा जाता था। दर्शक उनके अभिनय कौशल से प्रभावित होकर उनकी फ़िल्म को देखना और सराहना पसंद करते थे। राजकपूर की धूम भारत के बाहर देशों में भी थी। रूस में तो नेहरू के बाद लोग राजकपूर को ही सर्वाधिक जानते थे।

g. संगीतकार जयकिशन ने गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर आपत्ति इसलिए की, क्योंकि उनका ख्याल था कि दर्शक चार दिशाएँ तो समझते हैं और समझ सकते हैं, लेकिन दस दिशाओं का गहन ज़्ञान दर्शकों को नहीं होगा।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

a. राजकपूर द्वारा फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फ़िल्म क्यों बनाई?

b. 'तीसरी कसम' में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है? स्पष्ट कीजिए।

c. लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है?

d. शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषता है? अपने शब्दों में लिखिए।

e. फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

f. शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फ़िल्म में झलकती है-कैसे? स्पष्ट कीजिए।

g. लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, आप कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

a. राजकपूर एक परिपक्व फ़िल्म-निर्माता थे तथा शैलेंद्र के मित्र थे। अतः उन्होंने एक सच्चा मित्र होने के नाते शैलेंद्र को फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह भी किया था, लेकिन शैलेंद्र ने फिर भी 'तीसरी कसम' फिल्म बनाई, क्योंकि उनके मन में इस फिल्म को बनाने की तीव्र इच्छा थी। वे तो एक भावुक कवि थे, इसलिए अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति इस फ़िल्म में करना चाहते थे। उन्हें धन लिप्सा की नहीं, बल्कि आत्म-संतुष्टि की लालसा थी इसलिए उन्होंने यह फिल्म बनाई।

b. राजकपूर एक महान कलाकार थे। फ़िल्म के पात्र के अनुरूप अपने-आप को ढाल लेना वे भली-भाँति जानते थे। जब "तीसरी कसम" फ़िल्म बनी थी उस समय राजकपूर एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे। तीसरी कसम में राजकपूर का अभिनय चरम सीमा पर था। उन्हें एक सरल हृदय ग्रामीण गाड़ीवान के रूप में प्रस्तुत किया गया। उन्होंने अपने-आपको उस ग्रामीण गाड़ीवान हीरामन के साथ एकाकार कर लिया। इस फ़िल्म में एक शुद्ध देहाती जैसा अभिनय जिस प्रकार से राजकपूर ने किया है, वह अद्वितीय है। एक गाड़ीवान की सरलता, नौटंकी की बाई में अपनापन खोजना, हीराबाई की बाली पर रीझना, उसकी भोली सूरत पर

न्योछावर होना और हीराबाई की तनिक-सी उपेक्षा पर अपने अस्तित्व से जूझना जैसी हीरामन की भावनाओं को राजकपूर ने बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। फ़िल्म में राजकपूर कहीं भी अभिनय करते नहीं दिखते अपितु ऐसा लगता है जैसे वे ही हीरामन हों। 'तीसरी कसम' फ़िल्म में राजकपूर का पूरा व्यक्तित्व ही जैसे हीरामन की आत्मा में उतर गया है।

c. यह वास्तविकता है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है। यह फणीश्वरनाथ रेणु की रचना 'मारे गए गुलफाम' पर बनी है। इस फिल्म में मूल कहानी के स्वरूप को बदला नहीं गया। कहानी के रेशे-रेशे को बड़ी ही बारीकी से फिल्म में उतारा गया था। साहित्य की मूल आत्मा को पूरी तरह से सुरक्षित रखा गया था।

d. शैलेंद्र एक कवि और सफल गीतकार थे। उनके लिखे गीतों में अनेक विशेषताएँ दिखाई देती हैं। उनके गीत सरल, सहज भाषा में होने के बावजूद बहुत बड़े अर्थ को अपने में समाहित रखते थे। वे एक आदर्शवादी भावुक कवि थे और उनका यही स्वभाव उनके गीतों में भी झलकता था। अपने गीतों में उन्होंने झूठे दिखावों को कोई स्थान नहीं दिया। उनके गीतों में भावों की प्रधानता थी और वे आम जनजीवन से जुड़े हुए थे। उनके गीतों में करुणा के साथ-साथ संघर्ष की भावना भी दिखाई देती है। उनके गीत मनुष्य को जीवन में दुखों से घबराकर रुकने के स्थान पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देते हैं। उनके गीतों में शांत नदी-सा प्रवाह और समुद्र-सी गहराई होती थी। उनके गीत का एक-एक शब्द भावनाओं की अभिव्यक्ति करने में पूर्णतः सक्षम है।

e. फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की अनेक विशेषताएँ हैं, लेकिन उनमें से प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र ने जीवन के आदर्शवाद एवं भावनाओं को इतने अच्छे तरीके से फ़िल्म 'तीसरी कसम' के माध्यम से सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया, जिसके कारण इसे सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म घोषित किया गया और बड़े-बड़े पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया।
- राजकपूर की सर्वोत्कृष्ट भूमिका को शब्द देकर अत्यंत प्रभावशाली ढंग से दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया है।
- जीवन की मार्मिकता को अत्यंत सार्थकता से एवं अपने कवि हृदय की पूर्णता को बड़ी ही तन्मयता के साथ पर्दे पर उतारा है।

f. शैलेंद्र एक आदर्शवादी संवेदनशील और भावुक कवि थे। शैलेंद्र ने अपने जीवन में एक ही फिल्म का निर्माण किया, जिसका नाम 'तीसरी कसम' था। यह एक संवेदनात्मक और भावनापूर्ण फिल्म थी। शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई उनके निजी जीवन की विशेषता थी और यही विशेषता उनकी फिल्म में भी दिखाई देती है। 'तीसरी कसम' का नायक हीरामन अत्यंत सरल हृदयी और भोला-भाला नवयुवक है, जो केवल दिल की जुबान समझता है, दिमाग की नहीं। उसके लिए मोहब्बत के सिवा किसी चीज़ का कोई अर्थ नहीं। ऐसा ही व्यक्तित्व शैलेंद्र का था, हीरामन को धन की चकाचौंध से दूर रहनेवाले एक देहाती के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

शैलेंद्र स्वयं भी यश और धनलिप्सा से कोसों दूर थे। इसके साथ-साथ फ़िल्म 'तीसँरी कसम' में दुख को भी सहज स्थिति में जीवन सापेक्ष प्रस्तुत किया गया है। शैलेंद्र अपने जीवन में भी दुख को सहज रूप से जी लेते थे। वे दुख से घबराकर उससे दूर नहीं भागते थे। इस प्रकार स्पष्ट है कि शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फ़िल्म में झलकती है।

g. लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म कोई कवि हृदय ही बना सकता था-से हम पूरी तरह से सहमत हैं, क्योंकि कवि कोमल भावनाओं से ओतप्रोत होता है। उसमें करुणा एवं सादगी और उसके विचारों में शांत नदी का प्रवाह तथा समुद्र की गहराई का होना जैसे गुण कूट-कूट कर भरे होते हैं। ऐसे ही विचारों से भरी हुई 'तीसरी कसम' एक ऐसी फ़िल्म है, जिसमें न केवल दर्शकों की रुचियों को ध्यान रखा गया है, बल्कि उनकी गलत रुचियों को परिष्कृत (सुधारने) करने की भी कोशिश की गई है।

**प्रश्न 3** निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

a. ......... वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्मसंतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।

b. उनका यह दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

c. व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।

d. दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है।

e. उनके गीत भाव-प्रवण थे- दुरूह नहीं।

**उत्तर-**

a. इसका आशय है कि शैलेंद्र एक आदर्शवादी भावुक हृदय कवि थे। उन्हें अपार संपत्ति तथा लोकप्रियता की कामना इतनी नहीं थी, जितनी आत्मतुष्टि, आत्मसंतोष, मानसिक शांति, मानसिक सांत्वना आदि की थी, क्योंकि ये सद्वृत्तियाँ धन से नहीं खरीदी जा सकतीं, न ही इन्हें कोई भेंट कर सकता है। इन गुणों की अनुभूति तो अंदर से ईश्वर की कृपा से ही होती है। इन्हीं अलौकिक अनुभूतियों से परिपूर्ण थे- शैलेंद्र, तभी तो वे आत्मतुष्टि चाहते थे।

b. एक आदर्शवादी उच्चकोटि के गीतकार व कवि हृदय शैलेंद्र ने रुचियों की आड़ में कभी भी दर्शकों पर घटिया गीत थोपने का प्रयास नहीं किया। फिल्में आज के दौर में मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम हैं। समाज में हर वर्ग के लोग फिल्म देखते हैं और उनसे प्रभावित भी होते हैं। आजकल जिस प्रकार की फ़िल्मों का निर्माण होता है। उनमें से अधिकतर इस स्तर की नहीं होती कि पूरा परिवार एक साथ बैठकर देख सके। फ़िल्म निर्माताओं की भाँति वे दर्शकों की पसंद का बहाना बनाकर निम्नस्तरीय कला अथवा साहित्य का निर्माण नहीं करना चाहते थे। उनका मानना था कि कलाकार का दायित्व है कि वह दर्शकों की रुचि का परिष्कार करें। उनका लक्ष्य दर्शकों को नए मूल्य व विचार प्रदान करना था।

c. इसका अर्थ है कि व्यथा, पीड़ा, दुख आदि व्यक्ति को कमज़ोर या हतोत्साहित अवश्य

कर देते हैं, लेकिन उसे पराजित नहीं करते बल्कि उसे मजबूत बनाकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। हर व्यथा आदमी को जीवन की एक नई सीख देती है। व्यथा की कोख से ही तो सुख का जन्म होता है इसलिए व्यथा के बाद, दुख के बाद आने वाला सुख अधिक सुखकारी होता है।

d. ‘तीसरी कसम’ फ़िल्म गहरी संवेदनात्मक तथा भावनात्मक थी। उसे अच्छी रुचियों वाले संस्कारी मन और कलात्मक लोग ही समझ-सराह सकते थे। कवि शैलेंद्र की फ़िल्म निर्माण के पीछे धन और यश प्राप्त करने की अभिलाषा नहीं थी। वे इस फ़िल्म के माध्यम से अपने भीतर के कलाकार को संतुष्ट करना चाहते थे। इस फ़िल्म को बनाने के पीछे शैलेंद्र की जो भावना थी उसे केवल धन अर्जित करने की इच्छा करने वाले व्यक्ति नहीं समझ सकते थे। इस फिल्म की गहरी संवेदना उनकी समझ और सोच से ऊपर की बात है।

e. इसका अर्थ है कि शैलेंद्र के द्वारा लिखे गीत भावनाओं से ओत-प्रोत थे, उनमें गहराई थी, उनके गीत जन सामान्य के लिए लिखे गए गीत थे तथा गीतों की भाषा सहज, सरल थी, क्लिष्ट नहीं थी, तभी तो आज भी इनके द्वारा लिखे गए गीत गुनगुनाए जाते हैं। ऐसा लगता है, मानों हृदय को छूकर उसके अवसाद को दूर करते हैं।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** पाठ में आए ‘से’ के विभिन्न प्रयोगों से वाक्य की संरचना को समझिए।

a. राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र की हैसियत से शैलेंद्र को फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह भी किया।

b. रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ।

c. फ़िल्म इंडस्ट्री में रहते हुए भी वहाँ के तौर-तरीकों से नावाकिफ़ थे।

d. दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने के गणित जानने वाले की समझ से परे थी।

e. शैलेंद्र राजकपूर की इस याराना दोस्ती से परिचित तो थे।

**उत्तर-**

छात्र स्वयं समझें।

**प्रश्न 2** इस पाठ में आए निम्नलिखित वाक्यों की संरचना पर ध्यान दीजिए-

a. ‘तीसरी कसम’ फ़िल्म नहीं, सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी।

b. उन्होंने ऐसी फ़िल्म बनाई थी जिसे सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था।

c. फ़िल्म कब आई, कब चली गई, मालूम ही नहीं पड़ा।

d. खालिस देहाती भुच्चे गाड़ीवान जो सिर्फ दिल की जुबान समझता है, दिमाग की नहीं।

**उत्तर-**

छात्र वाक्यों की संरचना पर स्वयं ध्यान दें।

**प्रश्न 3** पाठ में आए निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाइए-

a. चेहरा मुरझाना,

b. चक्कर खा जाना,

c. दो से चार बनाना,

d. आँखों से बोलना

**उत्तर-**

मुहावरा – वाक्य प्रयोग

a. **चेहरा मुरझाना –** आतंकियों ने जैसे ही अपने एरिया कमांडर की मौत की बात सुनी उनके चेहरे मुरझा गए।

b. **चक्कर खा जाना –** क्लर्क के घर एक करोड़ की नकदी पाकर सी०बी०आई० अधिकारी भी चक्कर खा गए।

c. **दो से चार बनाना –** आई०पी०एल० दो से चार बनाने का खेल सिद्ध हो रहा है।

d. **आँखों से बोलना –** मीना कुमारी का अभिनय देखकर लगता था कि वे आँखों से बोल रही हैं।

**प्रश्न 4** निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय दीजिए-

a. शिद्दत – .......

b. याराना – ..........

c. बमुश्किल – .........

d. खालिस – ...........

e. नावाकिफ़ – ........

f. यकीन – ............

g. हावी – ............

h. रेशा – ..........

**उत्तर-**

a. शिद्दत – श्रद्धा

b. याराना – मित्रता

c. बमुश्किल – कठिनाई से

d. खालिस – शुद्ध

e. नावाकिफ़ – अनभिज्ञ

f. यकीन – विश्वास

g. हावी – आक्रामक

h. रेशा – पतले-पतले धागे

**प्रश्न 5** निम्नलिखित संधि विच्छेद कीजिए-

a. चित्रांकन – ......... + .........

b. सर्वोत्कृष्ट – .......... + ...........

c. चर्मोत्कर्ष – ........... + ............

d. रूपांतरण – .......... + ............

e. घनानंद – ........... + .............

**उत्तर-**

a. चित्रांकन – चित्र + अंकन

b. सर्वोत्कृष्ट – सर्व + उत्कर्ष

c. चर्मोत्कर्ष – चर्म + उत्कर्ष

d. रूपांतरण – रूप + अंतरण

e. घनानंद – घन + आनंद

**प्रश्न 6** निम्नलिखित का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए-

(क) कला-मर्मज्ञ

(ख) लोकप्रिय

(ग) राष्ट्रपति

**उत्तर-**

| | **विग्रह** | **समास का नाम** |
|---|---|---|
| (क) कला-मर्मज्ञ | कला का मर्मज्ञ | संबंध तत्पुरुष समास |
| (ख) लोकप्रिय | लोक में प्रिय | अधिकरण तत्पुरुष समास |
| (ग) राष्ट्रपति | राष्ट्र का पति | संबंध तत्पुरुष समास |

# अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुखी होने वाले

**-निदा फ़ाज़ली**

## सारांश

इस पाठ में लेखक ने मानव द्वारों अपने स्वार्थ के लिए किये गए धरती पर किये गए अत्याचारों से अवगत कराया है। पाठ में बताया गया है की किस तरह मानव की न मिटने वाली भूख ने धरती के तमाम जीव-जन्तुओं के साथ खुद के लिए भी मुसीबत खड़ी कर दी है।

ईसा से 1025 वर्ष पहले एक बादशाह थे जिनका नाम बाइबिल के अनुसार सोलोमेन था, उन्हें कुरआन में सुलेमान कहा गया है। वह सिर्फ मानव जाति के ही राजा नहीं थे बल्कि सभी छोटे-बड़े पशु-पक्षी के भी राजा थे। वह इन सबकी भाषा जानते थे। एक बार वे अपने लश्कर के साथ रास्ते से गुजर रहे थे। उस रास्ते में कुछ चीटियाँ घोड़ों की टापों की आवाज़ें सुनकर अपने बिलों की तरफ वापस चल पड़ीं। इसपर सुलेमान ने उनसे घबराने को न कहते हुए कहा कि खुदा ने उन्हें सबका रखवाला बनाया है। वे मुसीबत नहीं हैं बल्कि सबके लिए मुहब्बत हैं। चीटियों ने उनके लिए दुआ की और वे आगे बढ़ चलें।

ऐसी एक घटना का जिक्र करते हुए सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि एक दिन उनके पिता कुएँ से नहाकर घर लौटे तो माँ ने भोजन परोसा। जब उन्होंने रोटी का एक कौर तोड़ा तभी उन्हें अपनी बाजू पर एक काला च्योंटा रेंगता दिखाई दिया। वे भोजन छोड़कर उठ खड़े हुए और पहले उस बेघर हुए च्योंटे को वापस उसके घर कुएँ पर छोड़ आये।

बाइबिल और अन्य ग्रंथों में नूह नामक एक पैगम्बर का जिक्र मिलता है जिनका असली नाम लशकर था परन्तु अरब में इन्हें नूह नाम से याद किया जाता है क्योंकि ये पूरी जिंदगी रोते रहे। एक बार इनके सामने से एक घायल कुत्ता गुजरा चूँकि इस्लाम में कुत्ते को गन्दा माना जाता है इसलिए इन्होनें उसे गंदे कुत्ते दूर हो जा कहा। कुत्ते ने इस दुत्कार को सुनकर जवाब दिया कि ना मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ और ना तुम अपनी पसंद से इंसान हो। बनाने वाला सब एक ही है। इन बातों को सुनकर वे दुखी हो गए और सारी उम्र रोते रहे। महाभारत में भी एक कुत्ते ने युधिष्ठिर का साथ अंत तक दिया था।

भले ही इस संसार की रचना की अलग-अलग कहानियाँ हों परन्तु इतना तय है की धरती किसी एक की नहीं है। सभी जीव-जंतुओं, पशु, नदी पहाड़ सबका इसपर सामान अधिकार है। मानव इस बात को नहीं समझता। पहले उसने संसार जैसे परिवार को तोड़ा फिर खुद टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले लोग मिलजुलकर बड़े-बड़े दालानों-आंगनों में रहते थे पर अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में सिमटने लगे हैं। बढ़ती हुई आबादी के कारण समंदर को पीछे सरकाना पड़ रहा है, पेड़ों को रास्ते से हटाना पड़ रहा है जिस कारण फैले प्रदूषण ने पक्षियों को भागना शुरू कर दिया है। नेचर की भी सहनशक्ति होती है। इसके गुस्से का नमूना हम कई बार अत्यधिक गर्मी, जलजले, सैलाब आदि के रूप में देख रहे हैं।

लेखक की माँ कहती थीं की शाम ढलने पर पेड़ से पत्ते मत तोड़ो, वे रोयेंगे। दीया-बत्ती के वक़्त फूल मत तोड़ो। दरिया पर

जाओ तो सलाम करो कबूतरों को मत सताया करो और मुर्गे को परेशान मत करो वह अज़ान देता है। लेखक बताते हैं उनका ग्वालियर में मकान था। उस मकान के दालान के रोशनदान में कबूतर के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना लिया। एक बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा फोड़ दिया। लेखक की माँ से दूसरा अंडा बचाने के क्रम में फूट गया। इसकी माफ़ी के लिए उन्होंने दिन भर कुछ नहीं खाया और नमाज़ अदा करती रहीं।

अब लेखक मुंबई के वर्सोवा में रहते हैं। पहले यहाँ पेड़, परिंदे और दूसरे जानवर रहते थे परन्तु अब यह शहर बन चुका है। दूसरे पशु-पक्षी इसे छोड़ कर जा चुके हैं, जो नहीं गए वे इधर-उधर डेरा डाले रहते हैं। लेखक के फ्लैट में भी दो कबूतरों ने एक मचान पर अपना घोंसला बनाया, बच्चे अभी छोटे थे। खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी बड़े कबूतरों पर थीं। वे दिन-भर आते जाते रहते थे। लेखक और उनकी पत्नी को इससे परेशानी होती इसलिए उन्होंने जाली लगाकर उन्हें बाहर कर दिया। अब दोनों कबूतर खिड़की के बाहर बैठे उदास रहते हैं परन्तु अब ना सुलेमान हैं न लेखक की माँ जिन्हें इनकी फ़िक्र हो।

## मौखिक प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

a. बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे क्यों धकेल रहे थे?

b. लेखक का घर किस शहर में था?

c. जीवन कैसे घरों में सिमटने लगी है?

d. कबूतर परेशानी में इधर-उधर क्यों फड़फड़ा रहे थे?

**उत्तर-**

a. बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को इसलिए धकेल रहे थे कि ताकि वे समुद्र के किनारे की जमीन पर कब्ज़ा कर सकें और उस पर बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ीकर लोगों को बसा सकें। ऐसा करके वे पैसा कमाना चाहते थे।

b. लेखक का घर पहले ग्वालियर में था परंतु बाद में वह मुंबई के वर्सावा में रहने लगा।

c. पहले जनसंख्या कम थी। लोगों के हिस्से में जमीन अधिक थी। वे बड़े-बड़े घरों और खुले में रहते थे। घर की तरह ही उनका दिल भी बड़ा हुआ करता था, परंतु जनसंख्या बढ़ने के साथ ही वे छोटे-छोटे घरों में रहने को विवश हो गए।

d. कबूतर के जोड़े ने रोशनदान में दो अंडे दिए थे। उनमें से एक को बिल्ली ने फोड़ दिया और दूसरा सँभाल कर रखते हुए माँ से फूट गया। अपने अंडे फूटने से दुखी होने से कबूतर फड़फड़ा रहे थे।

## लिखित प्रश्न

**प्रश्न 2** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

a. अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?

b. लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं और क्यों?

c. प्रकृति में आए असंतुलन को क्या परिणाम हुआ?

d. प्रकृति में आए असंतुलन का दुष्परिणाम बहुत ही भयंकर हुआ; जैसे-

- विनाशकारी समुद्री तूफ़ाने आने लगे।
- अत्यधिक गरमी पड़ने लगी।
- असमय बरसातें होने से जन-धन और फ़सलें क्षतिग्रस्त होने लगीं।
- आधियाँ और तूफ़ान आने लगीं।
- नए-नए रोग उत्पन्न हो गए, जिससे पशु-पक्षी असमय मरने लगे।

e. लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

f. डेरा डालने से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

g. शेख अयाज़ के पिता अपने बाज़ू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए

**उत्तर-**

a. अरब में नूह नाम के एक पैगंबर थे जिनका असली नाम लशकर था। वे अत्यंत दयालु और संवेदनशील थे। एक बार एक कुत्ते को उन्होंने दुत्कार दिया। उस कुत्ते का जवाब सुनकर वे बहुत दुखी हुए और उम्र भर पश्चाताप करते रहे। अपने करुणा भाव के कारण ही वे 'नूह' के नाम से याद किए जाते हैं।

b. लेखक की माँ पशु-पक्षियों के प्रति ही नहीं पेड़-पौधों के प्रति भी संवेदनशील थीं। वे सूरज छिपने के बाद पेड़ों के पत्ते तोड़ने से मना करती थी। उनका मानना था कि ऐसा करने पर पेड़ों को दुख होगा और वे रोते हुए बद्दुआ देते हैं।

c. प्रकृति में आए असंतुलन का दुष्परिणाम बहुत ही भयंकर हुआ; जैसे-

- विनाशकारी समुद्री तूफ़ाने आने लगे।
- अत्यधिक गरमी पड़ने लगी।
- असमय बरसातें होने से जन-धन और फ़सलें क्षतिग्रस्त होने लगीं।
- आधियाँ और तूफ़ान आने लगीं।
- नए-नए रोग उत्पन्न हो गए, जिससे पशु-पक्षी असमय मरने लगे।

d. लेखक की माँ धार्मिक विचारों वाली महिला थी। वे मनुष्य से ही नहीं पशु-पक्षियों तक से प्रेम करती थीं। उनके घर की दालान में कबूतर ने दो अंडे दिए थे। उनमें से एक अंडा बिल्ली ने गिराकर फोड़ दिया था। दूसरा अंडा सँभालते समय उनके हाथ से टूट गया। अंडा टूटने का पछतावा करने के लिए उन्होंने पूरे दिन का रोज़ा रखा।

e. लेखक ने ग्वालियर से मुंबई तक अनेक बदलाव देखे-

- उसके देखते-देखते बहुत सारे पेड़ कट गए।
- नई-नई बस्तियाँ बस गईं।
- चौड़ी सड़कें बन गईं।
- पशु-पक्षी शहर छोड़कर भाग गए। जो बच गए उन्होंने जैसे-तैसे यहाँ-वहाँ घोंसला बना लिया।

f. डेरा डालने का आशय है-अपने रहने की व्यवस्था करना। जिस तरह मनुष्य जब कहीं बाहर जाता है तो अपने रहने का ठिकाना बनाता है। इसी प्रकार पक्षी भी रहने और अंडे देने तथा बच्चों की देखभाल के लिए डेरा डालते हैं।

g. शेख अयाज़ के पिता अत्यंत दयालु और सहृदय व्यक्ति थे। एक बार वे कुएँ से स्नान करके लौटे और भोजन करने बैठ गए। अचानक उन्होंने देखा कि एक काला च्योंटा उनकी बाजू पर रेंग रहा है। उन्होंने भोजन वहीं छोड़ दिया और उसे छोड़ने उसके घर (कुएँ के पास) चल पड़े ताकि उस बेघर को उसका घर मिल सके।

**प्रश्न 3** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

a. बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा?

b. लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली क्यों लगवानी पड़ी?

c. समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला?

d. 'मट्टी से मट्टी मिले,
खो के सभी निशान,
किसमें कितना कौन है,
कैसे हो पहचान'

इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

a. बढ़ती हुई आबादी ने पर्यावरण पर अत्यंत विपरीत प्रभाव डाला। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ी त्यों-त्यों मनुष्य की आवास और भोजन की जरूरत बढ़ती गई। इसके लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की गई ताकि लोगों के लिए घर बनाया जा सके। इसके अलावा सागर के किनारे अतिक्रमण कर नई बस्तियाँ बसाई गईं। इन दोनों ही कार्यों से पर्यावरण असंतुलित हुआ। इससे असमय वर्षा, बाढ़, चक्रवात, भूकंप, सूखा, अत्यधिक गरमी एवं आँधी-तूफ़ान के अलावा तरह-तरह के नए-नए रोग फैलने लगे। इस प्रकार बढ़ती आबादी ने पर्यावरण में जहर भर दिया।

b. पक्षियों का प्राकृतिक आवास नष्ट होने से पक्षी यहाँ-वहाँ शरण लेने को विवश हुआ। लेखक के फ्लैट के रोशनदान में दो कबूतरों ने अपना डेरा जमा लिया और उसमें अंडे दे दिए उन अंडों से बच्चे निकल आए थे। छोटे बच्चों की देखभाल के लिए कबूतर वहाँ बार-बार आया-जाया करते थे। इस आवाजाही में कई वस्तुएँ गिरकर टूट जाती थीं। इसके अलावा वे लेखक की पुस्तकें और अन्य वस्तुएँ गंदी कर देते थे। कबूतरों से होने वाली परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली लगवानी पड़ी।

c. समुद्र के गुस्से की वजह थी-बिल्डरों की लालच एवं स्वार्थपरता। बिल्डरों ने लालच के कारण सागर के किनारे की भूमि पर बस्तियाँ बसाने के लिए ऊँची-ऊँची इमारतें बनानी शुरू कर दीं। इससे समुद्र का आकार घटता गया और वह सिमटता जा रहा था। मनुष्य के स्वार्थ एवं लालच से समुद्र को गुस्सा आ गया। उसने अपने सीने पर दौड़ती तीन जहाजों को बच्चों की गेंद की भाँति उठाकर फेंक दिया जिससे वे औंधे मुँह गिरकर टूट गए। ये जहाज़ पहले जैसे चलने योग्य न बन सके।

d. इन पंक्तियों के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि सब प्राणियों की रचना अनेक तरह की मिट्टियों से हुई है, पर ये मिट्टियाँ आपस में मिलकर अपनी स्वाभाविकता रंग-गंध आदि खो चुकी हैं। अब वे सब मिलकर एक हो चुकी हैं। अब किस व्यक्ति में कौन-सी किस्म की मिट्टी कितनी है, इसकी पहचान

कैसे की जाए। इसी तरह मनुष्य में भी सद्गुणों और दुर्गुणों का मेल है। किसमें कितना सद्गुण है और कितना दुर्गुण है यह कह पाना कठिन है।

**प्रश्न 4** निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

a. नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था।

b. जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है।

c. इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा डाल लिया है।

d. शेख अयाज़ के पिता बोले, 'नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घरवाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुएँ पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में छिपी हुई उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

a. प्रकृति अत्यंत सहनशील और उदार स्वभाववाली है। वह मनुष्य की ज्यादतियों और छेड़छाड़ को एक सीमा तक सहन करती है पर जब पानी सिर के ऊपर हो जाता है तब प्रकृति अपनी विनाशलीला दिखाना शुरू करती है। इस क्रोध में जो भी उसके सामने आता है, वह किसी को नहीं छोड़ती है। प्रकृति ने समुद्री तूफ़ान का रूप धारण कर अपने सीने पर तैरते तीन जहाजों को उठाकर समुद्र से बाहर फेंक दिया।

b. इतिहास गवाह रहा है कि बड़े लोग प्रायः शांत स्वभाव वाले उदार और महान होते हैं। वे क्रोध से दूर ही रहते हैं। उनकी सहनशीलता भी अधिक होती है परंतु जब उन्हें क्रोध आता है तो यह क्रोध विनाशकारी होता है। यही स्थिति विशालाकार समुद्र की होती है जो पहले तो सहता जाता है, सहता जाता है परंतु क्रोधित होने पर भारी तबाही मचाता है।

c. लेखक देखता है कि दिनों दिन जंगलों की सफ़ाई होती जा रही है। समुद्र के किनारे ऊँचे-ऊँचे भवन बनाए जा रहे हैं। इन स्थानों पर मानवों की बस्ती बन जाने से वन्य जीवों का प्राकृतिक आवास नष्ट हुआ है। इस कारण पक्षी एवं जानवर दोनों ही अन्यत्र जाने को विवश होकर शहर से कोसों दूर चले गए हैं। कुछ पक्षी प्राकृतिक आवास के अभाव में इधर-उधर भटक रहे हैं। वे मनुष्य के घरों की दालानों और छज्जों पर घोंसला बनाने को विवश हैं।

d. शेख अयाज़ के पिता जीवों के प्रति दया भाव रखते थे। एक बार वे कुएँ से नहा करके वापस आए और खाना खाने बैठ गए। अभी वे पहला कौर उठाए ही थे कि उन्हें अपनी बाँह पर एक च्योंटा दिखाई दिया। वे भोजन छोड़कर उठ गए और च्योंटे को उसके घर (कुएँ के पास) छोड़ने चल पड़े। उन्होंने पत्नी से कहा कि इस बेघर को उसके घर छोड़कर भोजन करूंगा। उनके इस कथन में जीवों के प्रति संवेदनशीलता और दयालुता का भाव छिपा है।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों में कारक चिह्नों को पहचानकर रेखांकित कीजिए और उनके नाम रिक्त स्थानों में लिखिए; जैसे-

(क) माँ <u>ने</u> भोजन परोसा कर्ता ........

(ख) मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ। ........

(ग) मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया। ........

(घ) कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। ........

(ङ·) दरिया पर जाओ तो उसे सलाम किया करो। ........

**उत्तर-**

(क) माँ ने भोजन परोसा — कर्ता

(ख) मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ। — संप्रदान कारक

(ग) मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया। — कर्ता कारक, कर्म कारक

(घ) कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। — अधिकरण कारक

(ङ·) दरिया पर जाओ तो उसे सलाम किया करो। — अधिकरण कारक, कर्म कारक

**प्रश्न 2** नीचे दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए-

चींटी, घोड़ा, आवाज, बिल, फ़ौज, रोटी, बिंदु, दीवार, टुकड़ा।

**उत्तर-**

चींटियाँ, घोड़े, आवाजें, बिलें, फ़ौजें, रोटियाँ, बिंदुओं, दीवारें, टुकड़े।

**प्रश्न 3** ध्यान दीजिए नुक्ता लगाने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। पाठ में दफा' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ होता है-बार (गणना संबंधी), कानून संबंधी। यदि इस शब्द में नुक्ता लगा दिया जाए तो शब्द बनेगा 'दफ़ा' जिसका अर्थ होता है-दूर करना, हटाना। यहाँ नीचे कुछ नुक्तायुक्त और नुक्तारहित शब्द दिए जा रहे हैं उन्हें ध्यान से देखिए और अर्थगत अंतर को समझिए।

सजा – सज़ा

नाज – नाज़

जरा – ज़रा

तेज – तेज

निम्नलिखित वाक्यों में उचित शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए-

a. आजकल .......... बहुत खराब है। (जमाना/जमाना)

b. पूरे कमरे को ........... दो। (सजा/सजा)

c. ........... चीनी तो देना। (जरा/जरा)

d. माँ दही .......... भूल गई। (जमाना/जमाना)

e. दोषी को .......... दी गई। (सजा/सज़ा)

f. महात्मा के चेहरे पर ............ था। (तेज/तेज़)

**उत्तर-**

a. जमाना

b. सजा

c. जरा

d. जमाना

e. सज़ा

f. तेज

# पतझर में टूटी पत्तियाँ

-रविन्द्र केलेकर

## सारांश

इस पाठ में दो प्रसंग हैं। पहला 'गिन्नी का सोना' का है जिसमें लेखक ने हमें उन लोगों से परिचित कराया है जो इस संसार को जीने और रहने योग्य बनाए हुए हैं। दूसरा प्रसंग है 'झेन की देन' जो हमें ध्यान की उस पध्दित की याद दिलाता है जो बौद्ध दर्शन में दी हुई है जिसके कारण आज भी जापानी लोग अपनी व्यस्ततम दिनचर्या की बीच कुछ चैन के समय निकाल लेते हैं।

### (1) गिन्नी का सोना

शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग होता है। गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया जाता है जिससे यह ज्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मजबूत भी हो जाता है इस कारण औरतें अक्सर इसी के गहनें बनाती हैं। शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने की तरह होता है परन्तु कुछ लोग उसमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिलाकर चलाते हैं जिन्हें हम 'प्रैक्टिकल आइडीयालिस्ट' कहते हैं परन्तु वक़्त के साथ उनके आदर्श पीछे हटने लगते हैं और व्यावहारिक सूझबूझ ही केवल आगे आने लगती है यानी सोना पीछे रह गया और केवल ताँबा आगे रह गया।

कुछ लोग गांधीजी को 'प्रैक्टिकल आइडीयालिस्ट' कहते हैं। वे व्यावहारिकता के महत्व को जानते थे इसलिए वे अपने विलक्षण आदर्श को चला सकें वरना ये देश उनके पीछे कभी न जाता। यह बात सही है परन्तु गांधीजी कभी आदर्श को व्यावहारिकता के स्तर पर नही उतरने देते थे बल्कि वे व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा मिलाकर नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे इसलिए सोना ही हमेशा आगे रहता।

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। हर काम लाभ-हानि का हिसाब लगाकर करते हैं वे जीवन में सफल होते हैं, दूसरों से आगे भी जाते हैं परन्तु ऊपर नहीं चढ़ पाते। खुद ऊपर चढ़ें और साथ में दूसरों को भी ऊपर ले चलें यह काम सिर्फ आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्य जैसा कुछ है तो वो इन्हीं का दिया है। व्यवहारवादी लोग तो केवल समाज को नीचे गिराने का काम किया है।

### (2) झेन की देन

लेखक जापान की यात्रा पर गए हुए थे। वहाँ उन्होंने अपने एक मित्र से पूछा कि यहाँ के लोगों को कौन-सी बीमारियाँ सबसे अधिक होती हैं इसपर उनके मित्र ने जवाब दिया मानसिक। जापान के 80 फीसदी लोग मनोरोगी हैं। लेखक ने जब वजह जानना चाहा तो उनके मित्र ने बताया की जापानियों की जीवन की रफ़्तार बहुत बढ़ गयी है। लोग चलते नहीं, दौड़ते हैं। महीने

का काम एक दिन में पूरा करने का प्रयास करते हैं। दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लग जाने से हजार गुना अधिक तेजी से दौड़ने लगता है। एक क्षण ऐसा आता है जब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है इस कारण मानसिक रोगी बढ़ गए हैं।

शाम को जापानी मित्र उन्हें 'टी-सेरेमनी' में ले गए। यह चाय पीने की विधि है जिसे चा-नो-यू कहते हैं। वह एक छः मंजिली इमारत थी जिसकी छत पर दफ़्ती की दीवारोंवाली और चटाई की ज़मीनवाली एक सुन्दर पर्णकुटी थी। बाहर बेढब-सा एक मिटटी का बरतन था जिसमे पानी भरा हुआ था जिससे उन्होंने हाथ-पाँव धोए। तौलिये से पोंछकर अंदर गए। अंदर बैठे 'चाजीन' ने उठकर उन्हें झुककर प्रणाम किया और बैठने की जगह दिखाई। उसने अँगीठी सुलगाकर उसपर चायदानी रखी। बगल के कमरे से जाकर बरतन ले आया और उसे तौलिये से साफ़ किया। वह सारी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण तरीके से कर रहा था जिससे लेखक को उसकी हर मुद्रा में सुर गूँज हों। वातावरण इतना शांत था की चाय का उबलना भी साफ़ सुनाई दे रहा था।

चाय तैयार हुई और चाजीन ने चाय को प्यालों में भरा और उसे तीनो मित्रों के सामने रख दिया। शान्ति को बनाये रखने के लिए वहाँ तीन व्यक्तियों से ज्यादा को एक साथ प्रवेश नही दिया जाता। प्याले में दो घूँट से ज्यादा चाय नहीं थी। वे लोग ओठों से प्याला लगाकर एक-एक बूँद कर डेढ़ घंटे तक पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तक लेखक उलझन में रहे परन्तु फिर उनके दिमाग की रफ़्तार धीमी पड़ती गयी और फिर बिल्कुल बंद हो गयी। उन्हें लगा वो अनंतकाल में जी रहे हों। उन्हें सन्नाटे की भी आवाज़ सुनाई देने लगी।

अक्सर हम भूतकाल में जीते हैं या फिर भविष्य में परन्तु ये दोनों काल मिथ्या हैं। वर्तमान ही सत्य है और हमें उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते लेखक के दिमाग से दोनों काल हट गए थे। बस वर्तमान क्षण सामने था जो की अनंतकाल जितना विस्तृत था। असल जीना किसे कहते हैं लेखक को उस दिन मालूम हुआ ।

## मौखिक प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

a. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है?

b. प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

c. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या है?

d. लेखक ने जापानियों के दिमाग में ‘स्पीड’ का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

e. जापानी में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं?

f. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

**उत्तर-**

a. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग होता है, क्योंकि गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया जाता है इसलिए | वह ज्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मज़बूत भी होता है। शुद्ध सोने में किसी भी प्रकार की मिलावट नहीं होती।

b. प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट उन्हें कहते हैं जो आदर्शों को व्यवहारिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं। इनका समाज पर गलत प्रभाव पड़ता है क्योंकि ये कई बार आदर्शों से पूरी तरह हट जाते हैं और केवल अपने हानि-लाभ के बारे में सोचते हैं। ऐसे में समाज का स्तर गिर जाता है।

c. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श वे हैं, जिनमें व्यावहारिकता का कोई स्थान न हो। केवल शुद्ध आदर्शों को महत्त्व दिया जाए। शुद्ध सोने में ताँबे का मिश्रण व्यावहारिकता है, तो इसके विपरीत शुद्ध सोना शुद्ध आदर्श है।

d. दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने से वह दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है। जापान के लोग पूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धा में हैं, वे किसी भी तरीके से उन्नति करके अमेरिका से आगे निकलना चाहते हैं। इसलिए उनका मस्तैिष्क सदा तनावग्रस्त रहता है। इस कारण वे मानसिक रोगों के शिकार होते हैं। लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगाने की बात इसलिए कही क्योंकि वे तीव्र गति से प्रगति करना चाहते हैं। महीने के काम को एक दिन में पूरा करना चाहते हैं इसलिए उनका दिमाग भी तेज़ रफ्तार से स्पीड इंजन की भाँति सोचता है।

e. जापानी में चाय पीने की विधि को चा-नो-यू कहते हैं।

f. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वह स्थान पर्णकुटी जैसा सजा होता है। वहाँ बहुत शांति होती है। प्राकृतिक ढंग से सजे हुए इस छोटे से स्थान में केवल तीन लोग बैठकर चाय पी सकते हैं। यहाँ अत्यधिक शांति का वातावरण होता है।

## लिखित प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

a. शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

b. चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?

c. 'टी-सेरेमनी में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

d. चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

**उत्तर-**

a. यह स्पष्ट है कि जीवन में आदर्शवादिता का ही अधिक महत्त्व है। अगर व्यावहारिकता को भी आदर्शों के साथ मिला दिया जाए, तो व्यावहारिकता की सार्थकता है। समाज के पास जो आदर्श रूपी शाश्वत मूल्य हैं, वे आदर्शवादी लोगों की ही देन हैं। व्यवहारवादी तो हमेशा लाभ-हानि की दृष्टि से ही हर कार्य करते हैं। जीवन में आदर्श के साथ व्यावहारिकता भी आवश्यक है, क्योंकि व्यावहारिकता के समावेश से आदर्श सुंदर व मजबूत हो जाते हैं।

b. चाजीन ने टी-सेरेमनी से जुड़ी सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से की। यह सेरेमनी एक पर्णकुटी में पूर्ण हुई। चाजीन द्वारा अतिथियों का उठकर स्वागत करना आराम से अँगीठी सुलगाना, चायदानी रखना, दूसरे कमरे से चाय के बर्तन लाना, उन्हें तौलिए से पोंछना व चाय को बर्तनों में डालने आदि की सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग अर्थात् बड़े ही आराम से, अच्छे व सहज ढंग से की।

c. 'टी-सेरेमनी' में केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता है। ऐसा शांति बनाए रखने के लिए किया जाता है।

d. चाय पीने के बाद लेखक ने महसूस किया कि जैसे उसके दिमाग की गति मंद हो गई हो। धीरे-धीरे उसका दिमाग चलना बंद हो गया हो उसे सन्नाटे की आवाजें भी सुनाई देने लगीं। उसे लगा कि मानो वह अनंतकाल से जी रहा है। वह भूत और भविष्य दोनों का चिंतन न करके वर्तमान में जी रहा हो। उसे वह पल सुखद लगने लगे।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

a. गांधी जी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी; उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

b. आपके विचार से कौन-से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

c. अपने जीवन की किसी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जब

- शुद्ध आदर्श से आपको हानि-लाभ हुआ हो।
- शुद्ध आदर्श में व्यावहारिकता का पुट देने से लाभ हुआ हो।

d. शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना', गांधी जी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? स्पष्ट कीजिए।

e. 'गिरगिट' कहानी में आपने समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल-पल में बदल डालने की एक बानगी देखी। इस पाठ के अंश 'गिन्नी का सोना' के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमें से जीवन में किसका महत्त्व है?

f. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

g. लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

a. वास्तव में गांधी जी के नेतृत्व में अद्भुत क्षमता थी। वे व्यावहारिकता को पहचानते थे, उसकी कीमत पहचानते थे, और उसकी कीमत जानते थे। वे कभी भी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों पर चलाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं, बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, असहयोग आंदोलन व दांडी मार्च जैसे आंदोलनों का नेतृत्व किया तथा सत्य और अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्य समाज को दिए। भारतीयों ने गांधी जी के नेतृत्व से आश्वस्त होकर उन्हें पूर्ण सहयोग दिया। इसी अद्भुत क्षमता के कारण ही गांधी जी देश को आज़ाद करवाने में सफल हुए थे।

b. आज व्यावहारिकता का जो स्तर है, उसमें आदर्शों का पालन नितांत आवश्यक है। व्यवहार और आदर्श दोनों का संतुलन व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है। 'कथनी और करनी' के अंतर ने समाज को आदर्श से हटाकर स्वार्थ और लालच की ओर धकेल दिया है। सत्य, अहिंसा, परोपकार जैसे मूल्य शाश्वत मूल्य हैं। शाश्वत मूल्य वे होते हैं, जो पौराणिक

समय से चले आ रहे हों, वर्तमान में भी जो महत्त्वपूर्ण हों तथा भविष्य में भी जो उपयोगी हों। ये प्रत्येक काल में समान रहे। युग, स्थान तथा साल का इन पर कोई प्रभाव न पड़े। वर्तमान समय में भी इन शाश्वत मूल्यों की प्रासंगिकता बनी हुई है। सत्य और अहिंसा के बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए परोपकार, त्याग, एकता, भाईचारा तथा देश-प्रेम की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। ये शाश्वत मूल्य युगों-युगों तक कायम रहेंगे।

c. इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर स्वयं लिखें।

d. शुद्ध सोना आदर्शों का प्रतीक है और ताँबा व्यावहारिकता का प्रतीक है। गाँधी जी व्यावहारिकता को ऊँचा स्तर देकर आदर्शों के स्तर तक लेकर जाते थे अर्थात् ताँबे में सोना मिलाते थे। वे नीचे से ऊपर उठाने का प्रयास करते थे न कि ऊपर से नीचे गिराने का। इसलिए कई लोगों ने उन्हें प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' भी कहा । वास्तव में वे व्यावहारिकता से परिचित थे, लोगों की भावनाओं को पहचानते थे इसलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके और पूरे देश को अपने पीछे चलाने में कामयाब रहे।

e. 'गिन्नी को सोना' पाठ के आधार पर यह स्पष्ट है कि जीवन में आदर्शवादिता का ही अधिक महत्त्व है। अगर व्यावहारिकता को भी आदर्शों के साथ मिला दिया जाए, तो व्यावहारिकता की सार्थकता है। समाज के पास जो आदर्श रूपी शाश्वत मूल्य हैं, वे आदर्शवादी लोगों की ही देन हैं। व्यवहारवादी तो हमेशा लाभ-हानि की दृष्टि से ही हर कार्य करते हैं।

f. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग का कारण बताया कि जापानियों ने अमरीका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा करने के कारण अपनी दैनिक दिनचर्या की गति बढ़ा दी । यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। वे एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं, इस कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। लेखक के ये विचार सत्य हैं क्योंकि शरीर और मन मशीन की तरह कार्य नहीं कर सकते और यदि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया गया तो उनकी मानसिक संतुलन बिगड़ जाना अवश्यंभावी है।

g. इसका आशय है कि लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है। वर्तमान में जीना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि ऐसा करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है और जीवन में उन्नति होती है। यदि हम भूतकाल के लिए पछताते रहेंगे या भविष्य की योजनाएँ ही बनाते रहेंगे, तो दोनों बेमानी या निरर्थक हो जाएँगे। हम भूतकाल से शिक्षा लेकर तथा भविष्य की योजनाओं को वर्तमान में ही परिश्रम करके कार्यान्वित कर सकते हैं। भगवान कृष्ण ने 'गीता' में भी वर्तमान में ही जीने का संदेश दिया है ताकि मनुष्य तनाव रहित मुक्त रहकर स्वस्थ तथा खुशहाल जीवन बिता सके।

**प्रश्न 3** निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

a. समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

b. जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और

उनकी त्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है।

c. हमारे जीका की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

d. अभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूंज रहे हों।

**उतर-**

इसका आशय है कि समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है, तो वास्तव में यह धरोहर आदर्शवादी लोगों की ही दी हुई है। जैसे-गांधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह का संदेश, राजा हरीशचंद्र की सत्यवादिता तथा भगतसिंह की शहादत आदि अनेक हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। हम इनके दिखाए रास्ते पर चलते हैं और इनके गुणों को आचरण में लाते हैं।

जब आदर्श और व्यवहार में से लोग व्यावहारिकता को प्रमुखता देने लगते हैं और आदर्शों को भूल जाते हैं तब आदर्शों पर व्यावहारिकता हावी होने लगती है। "प्रैक्टिकल आइडियालिस्टक" लोगों के जीवन में स्वार्थ व अपनी लाभ-हानि की भावना उजागर हो जाती है। 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें आदर्श एवं व्यवहार का संतुलन होता है लेकिन यदि आज के समाज को ध्यान में रखे तो इस शब्द में व्यावहारिकता को इतना महत्त्व दे दिया जाता है कि उसकी आदर्शवादी विचारधारा अदृश्य होकर केवल व्यावहारिकता के रूप में ही दिखाई देने लगती है। आदर्श व्यवहार के उस स्तर पर जाकर अपनी गुणवत्ता खो देता है और धीरे-धीरे आदर्श मूल व्यवहार के हाथों समाप्त हो जाता है।

जापान के लोगों के जीवन की गति बहुत अधिक बढ़ गई है इसलिए वहाँ लोग चलते नहीं, बल्कि दौड़ते हैं। कोई बोलता नहीं है, बल्कि जापानी लोग बकते हैं और जब ये अकेले होते हैं, तो स्वयं से ही बड़बड़ाने लगते हैं अर्थात् स्वयं से ही बातें करते रहते हैं।

लेखक जब अपने मित्रों के साथ जापान की 'टी-सेरेमनी में गया तो चाजीन ने झुककर उनका स्वागत किया। लेखक को वहाँ का वातावरण बहुत शांतिमय प्रतीत होता है। लेखक देखता है कि वहाँ की सभी क्रियाएँ अत्यंत गरिमापूर्ण ढंग से की गईं। चाजीन द्वारा लेखक और उसके मित्र का स्वागत करना, अँगीठी जलाना, चायदानी रखना, बर्तन लगाना, उन्हें तौलिए से पोंछना, चाय डालना आदि सभी क्रियाएँ मन को भाने वाली थीं। यह देखकर लेखक भाव-विभोर हो गया। वहाँ की गरिमा देखकर लगता था कि जयजयवंती राग का सुर गूंज रहा हो।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** नीचे दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

a. व्यावहारिकता,

b. आदर्श,

c. सूझबूझ,

d. विलक्षण,

e. शाश्वत

**उतर-**

शब्द – वाक्य प्रयोग

a. **व्यावहारिकता** – सिद्धांत और व्यावहारिकता के मेल से व्यक्ति का व्यवहार अच्छा बन जाता है।

b. **आदर्श** – गांधी जी अपने आदर्श बनाए रखते थे।

c. **सूझबूझ** – सूझबूझ से काम करने पर मुश्किल आसान हो जाती है।

d. **विलक्षण** – सुभाषचंद्र बोस विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।

e. **शाश्वत** – प्रकृति परिवर्तनशील है, यह शाश्वत नियम है।

**प्रश्न 2** लाभ-हानि' का विग्रह इस प्रकार होगा-लाभ और हानि

यहाँ द्वंद्व समास है जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। दोनों पदों के बीच योजक शब्द का लोप करने के लिए योजक चिह्न लगाया जाता है। नीचे दिए गए द्वंद्व समास का विग्रह कीजिए-

a. माता-पिता = ........
b. पाप-पुण्य = .......
c. सुख-दुख = .........
d. रात-दिन = .........
e. अन्न-जल = .........
f. घर-बाहर = ..........
g. देश-विदेश = ..........

**उत्तर-**

a. माता-पिता = माता और पिता
b. पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
c. सुख-दुख = सुख और दुख
d. रात-दिन = रात और दिन
e. अन्न-जल = अन्न और जल
f. घर-बाहर = घर और बाहर
g. देश-विदेश = देश और विदेश

प्रश्न 3 नीचे दिए गए विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

a. सफल = .........
b. विलक्षण = ............
c. व्यावहारिक = ....................
d. सजग = ..........
e. आदर्शवादी = .........
f. शुद्ध = ............

उत्तर-

a. सफल = सफलता
b. विलक्षण = विलक्षणता
c. व्यावहारिक = व्यावहारिकता
d. सजग = सजगता
e. आदर्शवादी = आदर्शवादिता
f. शुद्ध = शुद्धता

**प्रश्न 4** नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए और शब्द के अर्थ को समझिए-

(क) शुद्ध सोना अलग है।

(ख) बहुत रात हो गई अब हमें सोना चाहिए।

ऊपर दिए गए वाक्यों में सोना" का क्या अर्थ है? पहले वाक्य में 'सोना" का अर्थ है धातु 'स्वर्ण'। दूसरे वाक्य में 'सोना' को अर्थ है 'सोना' नामक क्रिया। अलग-अलग संदर्भो में ये शब्द अलग अर्थ देते हैं अथवा एक शब्द के कई अर्थ होते हैं। ऐसे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। नीचे दिए गए शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

a. उत्तर,
b. कर,
c. अंक,
d. नग

**उत्तर-**

a. सड़क की उत्तर दिशा में डाकखाना है।
मुझे इस प्रश्न का उत्तर नहीं मालूम है।

b. कर – हमें आय कर चुका कर देश की प्रगति में योगदान देना चाहिए।
अध्यापक को दखते ही मैंने कर बद्ध प्रणाम किया।

c. अंक – माँ ने सोते बच्चे को अंक में उठा लिया।

एक अंक की कुल 4 संख्याएँ हैं।

d. नग – हिमालय को नग राज कहा जाता है।

उसके घर में कीमती नग जड़ा है।

**प्रश्न 5** नीचे दिए गए वाक्यों को संयुक्त वाक्य में बदलकर लिखिए-

(क) 1. अँगीठी सुलगायी।

2. उस पर चायदानी रखी।

(ख) 1. चाय तैयार हुई।

2. उसने वह प्यालों में भरी।

(ग) 1. बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन ले आया।

2. तौलिये से बरतन साफ़ किए।

**उत्तर-**

(क) अँगीठी सुलगायी और उस पर चायदानी रखी।

(ख) चाय तैयार हुई और उसने वह प्यालों में भरी।

(ग) बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन ले आया और तौलिये से बरतन साफ़ किए।

**प्रश्न 6** नीचे दिए गए वाक्यों से मिश्र वाक्य बनाइए-

(क) 1. चाय पीने की यह एक विधि है।

2. जापानी में चा-नो-यू कहते हैं।

(ख) 1. बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था।

2. उसमें पानी भरा हुआ था।

(ग) 1. चाय तैयार हुई।

2. उसने वह प्यालों में भरी।

3. फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए।

**उत्तर-**

(क) चाय पीने की यह एक विधि है जिसे जापानी में चा-नो-यू कहते हैं।

(ख) उस बर्तन में पानी भरा था जो बाहर बेढब-सा मिट्टी का बना था।

(ग) जब चाय तैयार हुई तब वह प्यालों में भर कर हमारे सामने रखी गई।

# कारतूस

**-हबीब तनवीर**

## सारांश

यह पाठ जाँबाज़ वज़ीर अली के जिंदगी का एक अंश है। इस नाटक में उस हिस्से को बताया गया है जब वज़ीर अली अपने दुश्मन के कैंप में जाकर वहाँ से अपने लिए कारतूस ले जाता है और अपने बहादुरी का गुणगान अपने दुश्मनों से करवाता है।

**नाटक के पात्र -** कर्नल, लेफ्टिनेंट, सिपाही, सवार (वज़ीर अली)

अंग्रेज़ सरकार के आदेशानुसार वज़ीर अली को गिरफ्तार करने के लिए कर्नल कालिंज अपने लेफ्टिनेंट और सिपाहियों के साथ जंगल में डेरा डाले हुए हैं। उन्हें जंगल में आये हुए हफ्ते गुजर गए हैं परन्तु वह अभी तक वजीर अली को गिरफ्तार नही कर पाये हैं। वजीर अली के दिल में अंग्रेज़ों के प्रति नफरत की बातें सुनकर उन्हें रॉबिनहुड की याद आ जाती है। अपने पांच महीने के शासनकाल में उसने अवध के दरबार से अंग्रेजी हुकूमत को साफ़ कर दिया। सआदत अली आसिफउद्दौला का भाई है साथ ही वज़ीर अली का दुश्मन भी है क्योंकि आसिफउद्दौला के यहाँ लड़के की कोई उम्मीद नहीं थी परन्तु वज़ीर अली ने सआदत अली के सारे सपने को तोड़ दिया।

अंग्रेज़ों ने सआदत अली को अवध के तख़्त पर बैठाया क्योंकि वो अंग्रेज़ों से मिलकर रहता है और ऐश पसंद आदमी है। इसके बदले में सआदत अली ने अंग्रेज़ों को आधी दौलत और दस लाख रूपये नगद दिए।

लेफ्टिनेंट कहता है कि सुना है वज़ीर अली ने अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-ज़मा को हिन्दुस्तान पर हमला करने की दावत दी है इसपर कर्नल ने कहा कि अफ़गानिस्तान को हमले की दावत सबसे पहले टीपू सुल्तान ने दी, फिर वज़ीर अली ने भी उसे दिल्ली बुलाया फिर शमसुद्दौला ने भी जो नवाब बंगाल का रिश्ते का भाई है और बहुत खतरनाक है। इस तरह पूरे हिन्दुस्तान में कंपनी के खिलाफ लहर दौड़ गयी है। यदि यह कामयाब हो गयी तो लार्ड क्लाइव ने बक्सर और प्लासी के युद्ध में जो हासिल किया था वह लार्ड वेल्जली के हाथों खो देगी। कर्नल पूरी एक फ़ौज लिए वज़ीर अली का पीछा जंगलों में कर रहा है परन्तु वह पकड़ में नहीं आ रहा है।

कर्नल ने वज़ीर अली द्वारा कंपनी के वकील की हत्या करने का किस्सा सुनाते हुए कहा कि हमने वज़ीर अली को पद से हटाकर तीन लाख रूपए सालना देकर बनारस भेज दिया। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता बुलाया। वज़ीर अली बनारस में रह रहे कंपनी के वकील के पास जाकर पूछा कि उसे कलकत्ता क्यों बुलाया जाता है इसपर वकील ने उसे बुरा-भला कह दिया, जिस कारण वज़ीर अली ने वकील को खंजर से मार दिया। उसके बाद वह अपने कुछ साथियों के साथ आजमगढ़ भाग गया वहां के शासन ने उनलोगों को सुरक्षित घागरा पहुँचा दिया अब वे इन्हीं जंगलों में कई साल से भटक रहे हैं। लेफ्टिनेंट द्वारा पूछे जाने पर कर्नल ने वज़ीर अली की स्कीम बताते हुए कहता है कि वे किसी तरह नेपाल पहुँचना चाहते हैं। अफ़गानी हमले का इंतज़ार करें ताक़त बढ़ाएँ। वह सआदत अली को उसके पद से हटाकर खुद कब्ज़ा करे और अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान

से निकाल दे। लेफ्टिनेंट अपनी शंका जताते हुए कहता है कि हो सकता है की वे लोग नेपाल पहुँच गए हों जिसपर कर्नल उसे भरोसा दिलाते हुए बताता है कि अंग्रेजी और सआदत अली की फौजें बड़ी सख्ती से उनका पीछा कर रही हैं और उन्हें पता है की वह इन्हीं जंगलों में है।

तभी एक सिपाही आकर कर्नल को बताता है कि दूर से धूल उड़ती दिखाई दे रही है लगता है कोई काफिला चला आ रहा हो। कर्नल सभी को मुस्तैद रहने का आदेश देता है। लेफ्टिनेंट और कर्नल देखते हैं की केवल एक ही आदमी है। कर्नल सिपाहियों से उसपर नजर रखने को कहता है। घुड़सवार उनकी ओर आकर रुक जाता है और इज़ाज़त लेकर कर्नल से मिलने अंदर जाता है और एकांत की माँग करता है जिसपर कर्नल सिपाही और लेफ्टिनेंट को बाहर भेज देते हैं। वह कर्नल से कहता है कि वज़ीर अली को पकड़ना कठिन और कारतूस की माँग करता है। कर्नल उसे कारतूस दे देता है। जब वह कारतूस लेकर जाने लगता है तो कर्नल उससे उसका नाम पूछता है। वह अपना नाम वज़ीर अली बताता है और कारतूस देने के कारण उसकी जान बख्शने की बात कहता है। उसके चले जाने के बाद लेफ्टिनेंट जब पूछता है कि कौन था तब कर्नल एक जाँबाज़ सिपाही बतलाता है।

## मौखिक प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

a. कर्नल कालिंज का खेमा जंगल में क्यों लगा हुआ था?

b. वज़ीर अली से सिपाही क्यों तंग आ चुके थे?

c. कर्नल ने सवार पर नज़र रखने के लिए क्यों कहा?

d. सवार ने क्यों कहा कि वज़ीर अली की गिरफ़्तारी बहुत मुश्किल है?

**उत्तर-**

a. कर्नल कालिंज का खेमा जंगल में वज़ीर अली की गिरफ़्तारी के लिए लगा हुआ था। कर्नल कालिंज को यह लग रहा थी कि वज़ीर अली अवश्य ही जंगल में कहीं-न-कहीं छिपा होगा। बरसों से वह कर्नल की पूरी फौज की आँखों में धूल झोंक रहा था। यद्यपि वह इन्हीं जंगलों में घूम रहा था।

b. सिपाही वज़ीर अली से तंग आ चुके थे। क्योंकि हफ़्ते से डेरा डालने और उसे ढूँढ़ने के बाबजूद भी वज़ीर अली पकड़ा नहीं जा रहा था। वे जंगल में रहते-रहते परेशान हो चुके थे।

c. कर्नल ने लेफ्टीनेंट को सवार पर नज़र रखने के लिए इसलिए कहा, ताकि वह यह देख सके कि सवार किस दिशा की तरफ जा रहा है और उसकी गतिविधियों की जाँच हो सके।

d. सवार ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि सवार स्वयं वज़ीर अली था। वह एक जाँबाज़ सिपाही था जिसे अंग्रेज़ अधिकारी साधारण सवार समझ रहे थे। कर्नल के साथ पूरी फौज़ थी फिर भी सवार ने ऐसा कहा क्योंकि उसे कर्नल के खेमे में कोई भी पहचान नहीं पाया था।

## लिखित प्रश्न

**प्रश्न 2** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

a. वज़ीर अली के अफ़साने सुनकर कर्नल को रॉबिनहुड की याद क्यों आ जाती थी?

b. सआदत अली कौन था? उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत क्यों समझा?

c. सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था?

d. कंपनी के वकील का कत्ल करने के बाद वजीर अली ने अपनी हिफ़ाज़त कैसे की?

e. सवार के जाने के बाद कर्नल क्यों हक्का-बक्का रह गया?

**उत्तर-**

a. वज़ीर अली के अफ़साने सुनकर कर्नल को रॉबिन हुड की याद आ जाती थी, क्योंकि उनको जंगल में डेरा डाले हफ़्तों हो गए थे, फिर भी वज़ीर अली भूत की तरह हाथ ही नहीं लगता था। इसी प्रकार रॉबिन हुड भी जंगलों में घूमता रहता था, पर किसी के भी हाथ नहीं लगता था।

b. सआदत अली अवध के नवाब आसिफउद्दौला का भाई और वज़ीर अली को चाचा था। आसिफ अली को जब तक संतान न थी तब तक सआदत अली के अवध का नवाब बनने की पूरी संभावना थी लेकिन वज़ीर अली के पैदा होते ही उसका सपना टूट गया उसे अपनी नवाबी खतरे में लगने लगी। अतः उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत समझा।

c. सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का विशेष मकसद था। दोस्त होने के कारण उसे उसपर पूर्ण विश्वास था कि स्वयं तो वह ऐशो-आराम का जीवन बिताएगा ही, साथ ही उन्हें भी अर्थात् कर्नल को भी दौलत तथा संपत्ति देकर मालामाल कर देगा और उनकी जरूरतों के अनुसार हर तरह की मदद करेगा।

d. वज़ीर अली को उसके पद से हटाने के बाद अंग्रेज़ों ने उसे बनारस भेज दिया और तीन लाख रुपया सालाना वज़ीफा तय कर दिया। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने वज़ीर अली को कलकत्ता बुलाया। वज़ीर अली इस बुलावे से चिढ़कर कंपनी के वकील के पास गया जो बनारस में ही रहता था। वकील ने वजीर अली की शिकायत की कोई परवाह नहीं की, उल्टा उसे बुरा-भला सुना दिया। वज़ीर अली को गुस्सा आ गया और उसने खंजर निकालकर वकील का कत्ल कर दिया। इसके बाद वज़ीर अली अपने सैनिकों के साथ आज़मगढ़ की ओर भाग गया। वहाँ के बादशाह ने उन लोगों को अपनी हिफाज़त में घाघरा तक पहुँचा दिया। तब से वह जंगलों में छिपकर अपनी शक्ति बढ़ाने लगा।

e. सवार के जाने के बाद कर्नल हक्का-बक्का इसलिए रह गया, क्योंकि जिस वज़ीर अली को पकड़ने के लिए वह जंगल में लावलश्कर के साथ लंबे समय से डेरा डाले हुए था, वही वज़ीर अली ऐसा वेश बदलकर आया कि कर्नल को उसके किसी भी हाव-भाव से नहीं पता चला कि वह वज़ीर अली है। इसके अतिरिक्त उसने बड़ी ही होशियारी से अपना परिचय देकर कर्नल से कारतूस लेकर उसकी जान भी बख्श दी और देखते-ही-देखते घोड़े पर सवार होकर चला गया। कर्नल केवल घोड़ों की टापों का शोर ही सुनता रह गया।

**प्रश्न 2** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

a. लेफ्टीनेंट को ऐसा क्यों लगा कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई है?

b. वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का कत्ल क्यों किया?

c. सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किए?

d. वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-**

a. देश में अलग-अलग अनेक स्थानों पर राजा एवं नवाब कंपनी का विरोध कर रहे थे। जब लेफ़्टीनेंट ने देखा कि वज़ीर अली, टीपू सुल्तान तथा बंगाल के नवाब शमसुद्दौला ने बाहरी देशों जैसे अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-ज़मा को हिंदुस्तान पर हमला करने की दावत दे दी है, तो उसे ऐसा लगा कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई है अर्थात् हिंदुस्तान में चारों ओर से कंपनी के खिलाफ युद्ध की तैयारियाँ शुरू हो गई हैं।

b. वज़ीर अली को अंग्रेज़ों ने रहने के लिए बनारस भिजवा दिया था और उसे तीन लाख रुपया सलाना वजीफा देना तय किया था। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने वज़ीर अली को कलकत्ता बुलवाया। वज़ीर अली वहाँ जाना नहीं चाहता था। कंपनी का वकील भी बनारस में रहता था। इसलिए वह गवर्नर की शिकायत लेकर कंपनी के वकील के पास गया। शिकायत पर ध्यान न देकर वकील ने वज़ीर अली को भला-बुरा सुना दिया। इससे वज़ीर अली के स्वाभिमान को गहरा धक्का लगा। दूसरा वज़ीर अली कंपनी सरकार से नफ़रत करता था। इन दोनों कारणों के जुड़ जाने से वज़ीर अली ने वकील का कत्ल कर दिया।

c. सवार, जो कि स्वयं वज़ीर अली था, ने कर्नल से अपनी जाँबाजी और सूझ-बूझ से उसके खेमे में घुसकर, उसकी। जान बख्शकरे, कारतूस हासिल किए अर्थात् कर्नल और उसकी फ़ौज से बिना डरे वज़ीर अली ने कर्नल को उसकी औकात दिखाने के लिए उसी से कारतूस हासिल कर लिए।

d. वज़ीर अली सचमुच एक जाँबाज सिपाही था। वह बहुत हिम्मती और साहसी था। उसे अपना लक्ष्य पाने के लिए जान की बाजी लगानी आती थी। जब उससे अवध की नवाबी ले ली गई तो उसने अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष करना शुरू कर दिया। उसने गवर्नर जनरल के सामने पेश होने को अपना अपमान माना और पेश होने से साफ मना कर दिया। गुस्से में आकर उसने कंपनी के वकील की हत्या कर डाली। यह हत्या शेर की माँद में जाकर शेर को ललकारने जैसी थी। इसके बाद वह आज़मगढ़ और गोरखपुर के जंगलों में भटकता रहा। वहाँ भी निडर होकर अंग्रेज़ों के कैंप में घुस गया था। उसे अपनी जान की भी परवाह नहीं थी। उसके जाँबाज़ सिपाही होने का परिचय उस घटना से मिलता है जब वह अंग्रेज़ों के कैंप में घुसकर कारतूस लेने में सफल हो जाता है तथा कर्नल उसे देखता रह जाता है। इन घटनाओं से पता चलता है कि वह सचमुच जाँबाज़ आदमी था।

**प्रश्न 3** निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

a. मुट्ठीभर आदमी और ये दमखम।

b. गर्द तो ऐसे उड़ रही है जैसे कि पूरा एक काफ़िला चला आ रहा हो मगर मुझे तो एक ही सवार नजर आता है।

**उत्तर-**

a. इसका आशय है कि वज़ीर अली के पास मुट्ठी भर आदमी थे, अर्थात् बहुत कम आदमियों की सहायता या साथ था, फिर भी इतनी शक्ति

और दृढ़ता का परिचय देना कमाल की बात थी। सालों से जंगल में रहने पर भी स्वयं कर्नल, उनकी सेना का बड़ा समूह; जो बहु-संख्या में युद्ध-सामग्री से लैस था, मिलकर भी उसे पकड़ नहीं पाए थे। उसकी अदम्य शक्ति और दृढ़ता को जीत नहीं पाए थे। वह हर काम इतनी सावधानी तथा होशियारी से करता था कि मुट्ठी भर आदमियों ने ही कर्नल के इतने बड़े सेना समूह की नाक में दम कर दिया था।

b. यह कथन अंग्रेज़ों की फौज़ के लेफ़्टीनेंट का है। वज़ीर अली अकेला ही पूरे काफ़िले के समान था। वह तूफान की तरह शक्तिशाली और गतिशील था। उसके घोड़े की टापों से उड़ने वाली धूल ऐसा आभास देती थी मानो पूरी फौज़ चली आ रही है। इस वाक्य से आने वाले सवार के व्यक्तित्व की महानता की झलक मिलती है जो अकेले होते हुए भी अकेला नहीं दिखता। यह सवार वज़ीर अली था जिसका पता किसी को न चला।

## भाषा अध्ययन प्रश्न

**प्रश्न 1** निम्नलिखित शब्दों का एक-एक पर्याय लिखिए-

खिलाफ़, पाक, उम्मीद, हासिल, कामयाब, वजीफ़ा, नफ़रत, हमला, इंतेज़ार, मुमकिन

**उत्तर-** विरुद्ध, पवित्र, आशा, प्राप्त, सफल, छात्रवृत्ति, घृणा, आक्रमण, प्रतीक्षा, संभव

**प्रश्न 2** निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

a. आँखों में धूल झोंकना,
b. कूट-कूटकर भरना,
c. काम तमाम कर देना,
d. जान बख्श देना,
e. हक्का-बक्का रह जाना।

**उत्तर-**

**मुहावरा – वाक्य प्रयोग**

a. **आँखों में धूल झोंकना** – तात्याँटोपे अंग्रेज़ों की आँखों में धूल झोककर रानी लक्ष्मीबाई की मदद करते रहे।

b. **कूट-कूटकर भरना** – चंद्रशेखर में देशभक्ति और देशप्रेम की भावना कूट-कूटकर भरी थी।

c. **काम तमाम कर देना** – पठानकोट में सुरक्षाबलों ने चार आतंकियों का काम तमाम कर दिया।

d. **जान बख्श देना** – मुहम्मद गोरी को बंदी बनाने के बाद भी पृथ्वीराज चौहान ने उसकी जान बख्श दी।

e. **हक्का-बक्का रह जाना** – पाकिस्तान द्वारा आतंकवादियों का पक्ष लेते देख विश्व के कई राष्ट्र हक्के-बक्के रह गए।

**प्रश्न 3** कारक वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध बताता है। निम्नलिखित वाक्यों में कारकों को रेखांकित कर उनके नाम लिखिए-

a. जंगल की जिंदगी बड़ी खतरनाक होती है।
b. कंपनी के खिलाफ़ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई।
c. वज़ीर को उसके पद से हटा दिया गया।
d. फ़ौज के लिए कारतूस की आवश्यकता थी।
e. सिपाही घोड़े पर सवार था।

**उत्तर-**

a. संबंध कारक
b. संबंध कारक, अधिकरण कारक
c. कर्म कारक, अपादान कारक
d. संप्रदान कारक, संबंध कारक
e. अधिकरण कारक

**प्रश्न 4** क्रिया का लिंग और वचन सामान्यतः कर्ता और कर्म के लिंग और वचन के अनुसार निर्धारित होता है। वाक्य में कर्ता और कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार जब क्रिया के लिंग, वचन आदि में परिवर्तन होता है तो उसे अन्विति कहते हैं।

क्रिया के लिंग, वचन में परिवर्तन तभी होता है जब कर्ता या कर्म परसर्ग रहित हों;

जैसे- सवार कारतूस माँग रहा था। (कर्ता के कारण)

सवार ने कारतूस माँगे। (कर्म के कारण)

कर्नल ने वज़ीर अली को नहीं पहचाना। (यहाँ क्रिया, कर्ता और कर्म किसी के भी कारण प्रभावित नहीं है)

अतः कर्ता और कर्म के परसर्ग सहित होने पर क्रिया कर्ता और कर्म से किसी के भी लिंग और वचन से प्रभावित नहीं होती और वह एकवचन पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होती है। नीचे दिए गए वाक्यों में 'ने' लगाकर उन्हें दुबारा लिखिए-

a. घोड़ा पानी पी रहा था।

b. बच्चे दशहरे का मेला देखने गए।

c. रॉबिनहुड गरीबों की मदद करता था।

d. देशभर के लोग उसकी प्रशंसा कर रहे थे।

**उत्तर-**

a. घोड़े ने पानी पीना जारी रखा।

b. बच्चों ने दशहरे का मेला देखने के लिए प्रस्थान किया।

c. रॉबिन हुड ने गरीबों की मदद की।

d. देशभर के लोगों ने उसकी प्रशंसा की।

**प्रश्न 5** निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए-

a. कर्नल ने कहा सिपाहियों इस पर नजर रखो ये किस तरफ़ जा रहा है।

b. सवार ने पूछा आपने इस मकाम पर क्यों खेमा डाला है इतने लाव लश्कर की क्या जरूरत है।

c. खेमे के अंदर दो व्यक्ति बैठे बातें कर रहे थे चाँदनी छिटकी हुई थी और बाहर सिपाही पहरा दे रहे थे एक व्यक्ति कह रहा था दुश्मन कभी भी हमला कर सकता है।

**उत्तर-**

a. कर्नल ने कहा "सिपाहियों इस पर नज़र रखो। ये किस तरफ़ जा रहा है?"

b. सवार ने पूछा, "आपने इस मकाम पर क्यों खेमा डाला है? इतने लाव-लश्कर की क्या जरूरत है?

c. खेमे के अंदर दो व्यक्ति बैठे बातें कर रहे थे। चाँदनी छिटकी हुई थी और बाहर सिपाही पहरा दे रहे थे। एक व्यक्ति कह रहा था, "दुश्मन कभी भी हमला कर सकता है।"

❖❖

# व्याकरण

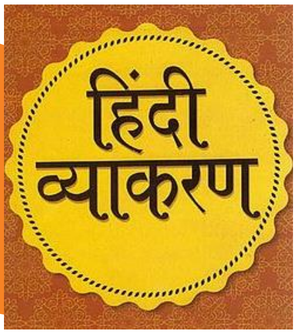


# अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले उपकरणों को अलंकार करते हैं। जैसे अलंकरण धारण करने से शरीर की शोभा बढ़ जाती है, वैसे ही अलंकरण के प्रयोग से काव्य में चमक उत्पन्न हो जाती है। संस्कृत आचार्य दंडी के अनुसार 'अलंकार काव्य का शोभाकारक धर्म है' और आचार्य वामन के अनुसार 'अलंकार ही सौंदर्य है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "कथन की रोचक, सुंदर और प्रभावपूर्ण प्रणाली अलंकार है। गुण और अलंकार में यह अंतर है की गुण सीधे रस का उत्कर्ष करते हैं, अलंकार सीधे रस का उत्कर्ष नहीं करते हैं।

## अलंकार की परिभाषा –

अलंकार दो सब्दो से मिलकर बना है- 'अलम' और 'कार' | जहाँ 'अलम' का शाब्दिक अर्थ है, आभूषण और 'कार' का अर्थ है धारण करना |

जिस प्रकार स्त्रियाँ अपने शरीर की शोभा बढ़ाने के लिए आभूषण को पहनती है उसी प्रकार किसी भाषा या कविता को सुन्दर बनाने के लिए अलंकार का प्रयोग किया जाता है |

दूसरे शब्दों में कहे तो जो "शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।"

**उदाहरण:** "चारु चंद्र की चंचल किरणें "

## अलंकार के भेद -

1) शब्दालंकार
2) अर्थालंकार
3) उभयालंकार

## 1. शब्दालंकार

शब्दालंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है – शब्द + अलंकार। शब्द के दो रूप होते हैं – ध्वनि और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालंकार की सृष्टी होती है। जब अलंकार किसी विशेष शब्द की स्थिति में ही रहे और उस शब्द की जगह पर कोई और पर्यायवाची शब्द के रख देने से उस शब्द का अस्तित्व न रहे उसे शब्दालंकार कहते हैं।

## शब्दालंकार के भेद –

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार

3. पुनरुक्ति अलंकार
4. विप्सा अलंकार
5. वक्रोक्ति अलंकार
6. श्लेष अलंकार

**1. अनुप्रास अलंकार –**

अनुप्रास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – अनु + प्रास | यहाँ पर अनु का अर्थ है- बार-बार और प्रास का अर्थ होता है, – वर्ण। जब किसी वर्ण की बार – बार आवर्ती हो तब जो चमत्कार होता है उसे अनुप्रास अलंकार कहते है।

**अनुप्रास अलंकार के उदाहरण –**

1) "मैया मोरी मैं नही माखन खायो"
[यहाँ पर 'म' वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]

2) "चारु चंद्र की चंचल किरणें"
[यहाँ पर 'च' वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]

3) "कन्हैया किसको कहेगा तू मैया"
[यहाँ पर 'क' वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]

**अनुप्रास के भेद –**

1) छेकानुप्रास अलंकार
2) वृत्यानुप्रास अलंकार
3) लाटानुप्रास अलंकार
4) अन्त्यानुप्रास अलंकार
5) श्रुत्यानुप्रास अलंकार

1. **छेकानुप्रास अलंकार :-** जहाँ पर स्वरुप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृति एक बार हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है।

**उदाहरण :-**

रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै।
साँसैं भरि आँसू भरि कहत दई दई।।

2. **वृत्यानुप्रास अलंकार:-** जब एक व्यंजन की आवर्ती अनेक बार हो वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

**उदाहरण :-**

"चामर-सी, चन्दन – सी, चंद – सी,
चाँदनी चमेली चारु चंद-सुघर है।"

3. **लाटानुप्रास अलंकार :-**

जहाँ शब्द और वाक्यों की आवर्ती हो तथा प्रत्येक जगह पर अर्थ भी वही पर अन्वय करने पर भिन्नता आ जाये वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। अथार्त जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवर्ती उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।

**उदाहरण :–**

तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी के पात्र समर्थ,

तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी थी जिनके अर्थ।

4. **अन्त्यानुप्रास अलंकार :–** जहाँ अंत में तुक मिलती हो वहाँ पर अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।

   **उदाहरण :-**

   "लगा दी किसने आकर आग।

   कहाँ था तू संशय के नाग?"

5. **श्रुत्यानुप्रास अलंकार:-** जहाँ पर कानों को मधुर लगने वाले वर्णों की आवर्ती हो उसे श्रुत्यानुप्रास अलंकार कहते है।

   **उदाहरण:–**

   "दिनान्त था, थे दीननाथ डुबते,

   सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।"

**2. यमक अलंकार –**

यमक शब्द का अर्थ होता है – दो। जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो पर हर बार अर्थ अलग-अलग आये वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

**यमक अलंकार के उदाहरण –**

**उदाहरण :-**

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।

वा खाये बौराए नर, वा पाये बौराये।

**3. पुनरुक्ति अलंकार**

पुनरुक्ति अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है – पुन: +उक्ति। जब कोई शब्द दो बार दोहराया जाता है वहाँ पर पुनरुक्ति अलंकार होता है।

**4. विप्सा अलंकार**

जब आदर, हर्ष, शोक, विस्मयादिबोधक आदि भावों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करने के लिए शब्दों की पुनरावृत्ति को ही विप्सा अलंकार कहते है।

**उदाहरण :–**

मोहि-मोहि मोहन को मन भयो राधामय।

राधा मन मोहि-मोहि मोहन मयी-मयी।।

**5. वक्रोक्ति अलंकार**

जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकाले उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते है।

STEP UP ACADEMY

**वक्रोक्ति अलंकार के भेद :-**

काकु वक्रोक्ति अलंकार

श्लेष वक्रोक्ति अलंकार

1. **काकु वक्रोक्ति अलंकार:–** जब वक्ता के द्वारा बोले गये शब्दों का उसकी कंठ ध्वनी के कारण श्रोता कुछ और अर्थ निकाले वहाँ पर काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है।

   **उदाहरण :-** मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू।

2. **श्लेष वक्रोक्ति अलंकार :-** जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाये वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

   **उदाहरण :–**

   को तुम हौ इत आये कहाँ घनस्याम हौ तौ कितहूँ बरसो।

   चितचोर कहावत है हम तौ तहां जाहुं जहाँ धन सरसों।।

6. **श्लेष अलंकार –**

जहाँ पर कोई एक शब्द एक ही बार आये पर उसके अर्थ अलग अलग निकलें वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है।

**श्लेष अलंकार के उदाहरण –**

**उदाहरण :–**

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।

पानी गए न उबरै मोती मानस चून।।

**श्लेष अलंकार के भेद –**

अभंग श्लेष अलंकार

सभंग श्लेष अलंकार

1. **अभंग श्लेष अलंकार :-** जिस अलंकार में शब्दों को बिना तोड़े ही एक से अधिक या अनेक अर्थ निकलते हों वहां पर अभंग श्लेष अलंकार होता है।

   **उदाहरण :-**

   रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

   पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।।

2. **सभंग श्लेष अलंकार :–** जिस अलंकार में शब्दों को तोडना बहुत अधिक आवश्यक होता है क्योंकि शब्दों को तोड़े बिना उनका अर्थ न निकलता हो वहां पर सभंग श्लेष अलंकार होता है।

   **उदाहरण :–** सखर सुकोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित।

## 2. अर्थालंकार

जहाँ पर अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार होता हो वहाँ अर्थालंकार होता है।

**अर्थालंकार के भेद –**

1. उपमा अलंकार
2. रूपक अलंकार
3. उत्प्रेक्षा अलंकार
4. द्रष्टान्त अलंकार
5. संदेह अलंकार
6. अतिश्योक्ति अलंकार
7. उपमेयोपमा अलंकार
8. प्रतीप अलंकार
9. अनन्वय अलंकार
10. भ्रांतिमान अलंकार
11. दीपक अलंकार
12. अपहृति अलंकार
13. व्यतिरेक अलंकार
14. विभावना अलंकार
15. विशेषोक्ति अलंकार
16. अर्थान्तरन्यास अलंकार
17. उल्लेख अलंकार
18. विरोधाभाष अलंकार
19. असंगति अलंकार
20. मानवीकरण अलंकार
21. अन्योक्ति अलंकार
22. काव्यलिंग अलंकार
23. स्वभावोती अलंकार

**1. उपमा अलंकार –**

उपमा शब्द का अर्थ होता है – तुलना। जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु से की जाए वहाँ पर उपमा अलंकार होता है।

**उपमा अलंकार के उदाहरण –**

**उदाहरण :-**

सागर-सा गंभीर ह्रदय हो,

गिरी-सा ऊँचा हो जिसका मन।

**उपमा अलंकार के अंग –**

1) उपमेय

2) उपमान

3) वाचक शब्द

4) साधारण धर्म

1. **उपमेय :–** उपमेय का अर्थ होता है – उपमा देने के योग्य। अगर जिस वस्तु की समानता किसी दूसरी वस्तु से की जाये वहाँ पर उपमेय होता है।

2. **उपमान :–** उपमेय की उपमा जिससे दी जाती है उसे उपमान कहते हैं। अर्थात उपमेय की जिस के साथ समानता बताई जाती है उसे उपमान कहते हैं।

3. **वाचक शब्द :-** जब उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाती है तब जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे वाचक शब्द कहते हैं।

4. **साधारण धर्म:–** दो वस्तुओं के बीच समानता दिखाने के लिए जब किसी ऐसे गुण या धर्म की मदद ली जाती है जो दोनों में वर्तमान स्थिति में हो उसी गुण या धर्म को साधारण धर्म कहते हैं।

**2. रूपक अलंकार –**

जहाँ पर उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे वहाँ रूपक अलंकार होता है अथार्त जहाँ पर उपमेय और उपमान के बीच के भेद को समाप्त करके उसे एक कर दिया जाता है वहाँ पर रूपक अलंकार होता है।

**रूपक अलंकार के उदाहरण –**

**उदाहरण :-**

"उदित उदय गिरी मंच पर, रघुवर बाल पतंग।

विगसे संत-सरोज सब, हरषे लोचन भ्रंग।।"

**रूपक अलंकार की निम्न बातें :-**

उपमेय को उपमान का रूप देना।

वाचक शब्द का लोप होना।

उपमेय का भी साथ में वर्णन होना।

**3. उत्प्रेक्षा अलंकार –**

जहाँ पर उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए। अथार्त जहाँ पर अप्रस्तुत को प्रस्तुत मान लिया जाए वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। अगर किसी पंक्ति में मनु, जनु, मेरे जानते, मनहु, मानो, निश्चय, ईव आदि आते हैं वहां पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

**उत्प्रेक्षा अलंकार के उदाहरण –**

**उदाहरण :-**

सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल

बाहर सोहत मनु पिये, दावानल की ज्वाल।।

**उत्प्रेक्षा अलंकार के भेद –**

वस्तुप्रेक्षा अलंकार

हेतुप्रेक्षा अलंकार

फलोत्प्रेक्षा अलंकार

1. **वस्तुप्रेक्षा अलंकार :–** जहाँ पर प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना दिखाई जाए वहाँ पर वस्तुप्रेक्षा अलंकार होता है।

**उदाहरण:-**

"सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल।

बाहर लसत मनो पिये, दावानल की ज्वाल।।"

2. **हेतुप्रेक्षा अलंकार :-** जहाँ अहेतु में हेतु की सम्भावना देखी जाती है। अथार्त वास्तविक कारण को छोडकर अन्य हेतु को मान लिया जाए वहाँ हेतुप्रेक्षा अलंकार होता है।

3. **फलोत्प्रेक्षा अलंकार :-** इसमें वास्तविक फल के न होने पर भी उसी को फल मान लिया जाता है वहाँ पर फलोत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

**उदाहरण:-**

खंजरीर नहीं लखि परत कुछ दिन साँची बात।

बाल द्रगन सम हीन को करन मनो तप जात।।

**4. दृष्टान्त अलंकार**

जहाँ दो सामान्य या दोनों विशेष वाक्यों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होता हो वहाँ पर दृष्टान्त अलंकार होता है। इस अलंकार में उपमेय रूप में कहीं गई बात से मिलती-जुलती बात उपमान रूप में दुसरे वाक्य में होती है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

**उदाहरण :-**

'एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रह सकती हैं।

किसी और पर प्रेम नारियाँ, पति का क्या सह सकती है।।

**5. संदेह अलंकार**

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं। जब यह दुविधा बनती है , तब संदेह अलंकार होता है अथार्त जहाँ पर किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे वहाँ संदेह अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

**उदाहरण :-**

यह काया है या शेष उसी की छाया,

क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया।

**संदेह अलंकार की मुख्य बातें :-**

विषय का अनिश्चित ज्ञान।

यह अनिश्चित समानता पर निर्भर हो।

अनिश्चय का चमत्कारपूर्ण वर्णन हो।

6. **अतिश्योक्ति अलंकार –**

जब किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन करने में लोक समाज की सीमा या मर्यादा टूट जाये उसे अतिश्योक्ति अलंकार कहते हैं अथार्त जब किसी वस्तु का बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाये वहां पर अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

**उदाहरण:-**

हनुमान की पूंछ में लगन न पायी आगि।

सगरी लंका जल गई, गये निसाचर भागि।

7. **उपमेयोपमा अलंकार**

इस अलंकार में उपमेय और उपमान को परस्पर उपमान और उपमेय बनाने की कोशिश की जाती है इसमें उपमेय और उपमान की एक दूसरे से उपमा दी जाती है।

**उदाहरण :-** तौ मुख सोहत है ससि सो अरु सोहत है ससि तो मुख जैसो।

8. **प्रतीप अलंकार**

इसका अर्थ होता है उल्टा। उपमा के अंगों में उल्ट – फेर करने से अथार्त उपमेय को उपमान के समान न कहकर उलट कर उपमान को ही उपमेय कहा जाता है वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। इस अलंकार में दो वाक्य होते हैं एक उपमेय वाक्य और एक उपमान वाक्य। लेकिन इन दोनों वाक्यों में सदृश्य का साफ कथन नहीं होता, वह व्यंजित रहता है। इन दोनों में साधारण धर्म एक ही होता है परन्तु उसे अलग-अलग ढंग से कहा जाता है।

**उदाहरण :-** "नेत्र के समान कमल है।"

9. **अनन्वय अलंकार**

जब उपमेय की समता में कोई उपमान नहीं आता और कहा जाता है कि उसके समान वही है, तब अनन्वय अलंकार होता है।

**उदाहरण :-** "यद्यपि अति आरत – मारत है. भारत के सम भारत है।

10. **भ्रांतिमान अलंकार**

जब उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाये वहाँ पर भ्रांतिमान अलंकार होता है अथार्त जहाँ उपमान और उपमेय दोनों को एक साथ देखने पर उपमान का निश्चयात्मक भ्रम हो जाये मतलब जहाँ एक वस्तु को देखने पर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी अंग माना जाता है।

**उदाहरण :-**

पायें महावर देन को नाईन बैठी आय ।

फिरि-फिरि जानि महावरी, एडी भीड़त जाये।।

11. **दीपक अलंकार**

जहाँ पर प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म स्थापित किया जाता है वहाँ पर दीपक अलंकार होता है।

**उदाहरण:-**

चंचल निशि उदवस रहें, करत प्रात वसिराज।

अरविंदन में इंदिरा, सुन्दरि नैनन लाज।।

**12. अपह्नुति अलंकार**

अपह्नुति का अर्थ होता है छिपाव। जब किसी सत्य बात या वस्तु को छिपाकर उसके स्थान पर किसी झूठी वस्तु की स्थापना की जाती है वहाँ अपह्नुति अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

**उदाहरण :-**

"सुनहु नाथ रघुवीर कृपाला,

बन्धु न होय मोर यह काला।"

**13. व्यतिरेक अलंकार**

व्यतिरेक का शाब्दिक अर्थ होता है आधिक्य। व्यतिरेक में कारण का होना जरुरी है। अत: जहाँ उपमान की अपेक्षा अधिक गुण होने के कारण उपमेय का उत्कर्ष हो वहाँ पर व्यतिरेक अलंकार होता है।

**उदाहरण :-** का सरवरि तेहिं देउं मयंकू। चांद कलंकी वह निकलंकू।।

मुख की समानता चन्द्रमा से कैसे दूँ?

**14. विभावना अलंकार**

जहाँ पर कारण के न होते हुए भी कार्य का हुआ जाना पाया जाए वहाँ पर विभावना अलंकार होता है।

**उदाहरण :-**

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।

कर बिनु कर्म करै विधि नाना।

आनन रहित सकल रस भोगी।

बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।

**15. विशेषोक्ति अलंकार**

काव्य में जहाँ कार्य सिद्धि के समस्त कारणों के विद्यमान रहते हुए भी कार्य न हो वहाँ पर विशेषोक्ति अलंकार होता है।

**उदाहरण :-**

नेह न नैनन को कछु, उपजी बड़ी बलाय।

नीर भरे नित-प्रति रहें, तऊ न प्यास बुझाई।।

**16. अर्थान्तरन्यास अलंकार**

जब किसी सामान्य कथन से विशेष कथन का अथवा विशेष कथन से सामान्य कथन का समर्थन किया जाये वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।

**उदाहरण :-**

बड़े न हूजे गुनन बिनु, बिरद बडाई पाए।

कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाए।।

**17. उल्लेख अलंकार**

जहाँ पर किसी एक वस्तु को अनेक रूपों में ग्रहण किया जाए, तो उसके अलग-अलग भागों में बटने को उल्लेख अलंकार कहते हैं। अथार्त जब किसी एक वस्तु को अनेक प्रकार से बताया जाये वहाँ पर उल्लेख अलंकार होता है।

**उदाहरण :-** विन्दु में थीं तुम सिन्धु अनन्त एक सुर में समस्त संगीत।

**18. विरोधाभाष अलंकार**

जब किसी वस्तु का वर्णन करने पर विरोध न होते हुए भी विरोध का आभाष हो वहाँ पर विरोधाभास अलंकार होता है।

**उदाहरण :-**

'आग हूँ जिससे ढुलकते बिंदु हिमजल के।

शून्य हूँ जिसमें बिछे हैं पांवड़े पलकें।'

**19. असंगति अलंकार**

जहाँ आपतात: विरोध दृष्टिगत होते हुए, कार्य और कारण का वैयाधिकरन्य रणित हो वहाँ पर असंगति अलंकार होता है।

**उदाहरण :-** "हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै।"

**20. मानवीकरण अलंकार**

जहाँ पर काव्य में जड़ में चेतन का आरोप होता है वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है अथार्त जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं और क्रियांओं का आरोप हो वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है। जब प्रकृति के द्वारा निर्मित चीजों में मानवीय भावनाओं के होने का वर्णन किया जाए वहां पर मानवीकरण अलंकार होता है।

**उदाहरण :-** बीती विभावरी जागरी, अम्बर पनघट में डुबो रही तास घट उषा नगरी।

**21. अन्योक्ति अलंकार**

जहाँ पर किसी उक्ति के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाए वहाँ पर अन्योक्ति अलंकार होता है।

**उदाहरण :-** फूलों के आस-पास रहते हैं, फिर भी काँटे उदास रहते हैं।

**22. काव्यलिंग अलंकार**

जहाँ पर किसी युक्ति से समर्थित की गयी बात को काव्यलिंग अलंकार कहते हैं अथार्त जहाँ पर किसी बात के समर्थन में कोई-न-कोई युक्ति या कारण जरुर दिया जाता है।

**उदाहरण :-**

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।

उहि खाय बौरात नर, इहि पाए बौराए।।

**23. स्वभावोक्ति अलंकार**

किसी वस्तु के स्वाभाविक वर्णन को स्वभावोक्ति अलंकार कहते हैं।

**उदाहरण :-**

सीस मुकुट कटी काछनी, कर मुरली उर माल।

इहि बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल।।

## 3. उभयालंकार

जो अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आधारित रहकर दोनों को चमत्कारी करते हैं वहाँ उभयालंकार होता है।

**उदाहरण :-** 'कजरारी अंखियन में कजरारी न लखाय।'

# अव्यय

अव्यय ऐसे शब्द क्यों कहते हैं जिन शब्दों में लिंग, कारक, वचन आदि के कारण कोई भी परिवर्तन नहीं आता हो, उन्हें अव्यय अविकारी शब्द के नाम से जाना जाता है। यह शब्द हमेशा परिवर्तित होते हैं।

## परिभाषा-

जो शब्द लिंग, वचन, कारक, पुरूष और काल के कारण नहीं बदलते, वे अव्यय कहलाते हैं|

ऐसे शब्द जिसमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता अव्यय कहलाते हैं।

यह सदैव अपरिवर्तित, अविकारी एवं अव्यय रहते हैं। इनका मूल रूप स्थिर रहता है, वह कभी बदलता नहीं है

**जैसे** – इधर, किंतु, क्यों, जब, तक, इसलिए, आदि।

## अव्यय के प्रकार –

1. क्रिया विशेषण
2. सम्बन्ध बोधक
3. समुच्चय बोधक
4. विस्मयादि बोधक

**1. क्रिया विशेषण** –

वे शब्द जो क्रिया की विशेषता प्रकट करें, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं|

इसके चार भेद हैं

**1. कालवाचक :-**

जिससे क्रिया के करने या होने के समय (काल) का ज्ञान हो, वह कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है|

**जैसे** – परसों मंगलवार हैं, आपको अभी जाना चाहिए, आजकल, कभी, प्रतिदिन, रोज, सुबह, अक्सर, रात को, चार बजे, हर साल आदि।

**2. स्थान वाचक :–** जिससे क्रिया के होने या करने के स्थान का बोध हो, वह स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है।

**जैसे**– यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, आसपास आदि।

**3. परिमाणवाचक :–** जिन शब्दों से क्रिया के परिमाण या मात्रा से सम्बन्धित विशेषता का पता चलता है। परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

**जैसे –**

- वह दूध बहुत पीता है।
- वह थोड़ा ही चल सकी।
- उतना खाओ जितना पचा सको।

4. **रीतिवाचक :–** जिससे क्रिया के होने या करने के ढ़ग का पता चले, वे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

**जैसे –**

- शनैः शनैः जाता है।
- सहसा बम फट गया।
- निश्चिय पूर्वक करूँगा।

2. **सम्बन्ध बोधक –**

जिस अव्यय शब्द से संज्ञा अथवा सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ प्रकट होता है, उसे सम्बन्ध बोधक अव्यय कहते है।

**जैसे-**

- उसके सामने मत ठहरो।
- पेड़ के नीचे बैठो

से पहले, के भीतर, की ओर, की तरफ, के बिना, के अलावा, के बगैर, के बदले, की जगह, के साथ, के संग, के विपरीत आदि।

3. **समुच्चय बोधक या योजक –**

जो अव्यय दो शब्दों अथवा दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं उन्हें समुच्चय बोधक अव्यय कहते है।

**जैसे–** और, तथा, एवं, मगर, लेकिन, किन्तु, परन्तु, इसलिए, इस कारण, अतः, क्योंकि, ताकि, या, अथवा, चाहे आदि।

4. **विस्मयादि बोधक –**

जिन अविकारी शब्दों से हर्ष, शोक, आश्चर्य घृणा, दुख, पीड़ा आदि का भाव प्रकट हो उन्हे विस्मयादि बोधक अव्यय कहते हैं।

**जैसे –** ओह!, हे!, वाह!, अरे!, अति सुंदर!, उफ!, हाय!, धिक्कार!, सावधान!, बहत अच्छा!, तौबा-तौबा!, अति सुन्दर आदि।

❖❖

# उपसर्ग

यह दो शब्दों (उप+सर्ग) के योग से बनता है। 'उप' का अर्थ 'समीप', 'निकट' या 'पास में' है। 'सर्ग' का अर्थ है सृष्टि करना। 'उपसर्ग' का अर्थ है पास में बैठकर दूसरा नया अर्थ वाला शब्द बनाना। 'हार' के पहले 'प्र' उपसर्ग लगा दिया गया, तो एक नया शब्द 'प्रहार' बन गया, जिसका नया अर्थ हुआ 'मारना'।

**आसान अर्थ :** उपसर्ग उप +सर्ग के योग से बना है यह एक संयोग का पद है। उप का मतलब है सहायक या समीप का और सर्ग का मतलब है:- भाग या अंग

अतः उपसर्ग का मतलब हुआ "सहायक या समीप का अंग या भाग"

उपसर्ग शब्दांश होते है अर्थात यह शब्दो का अंग होते है। वह शब्दांश जो शब्दो के आगे जुड़ कर उसके अर्थ मे परिवर्तन कर देते है या अर्थ मे विशेषता ला देते है अथवा अन्य शब्द बना देते है वह उपसर्ग कहलाते है।

उपसर्गों का स्वतंत्र अस्तित्व न होते हुए भी वे अन्य शब्दों के साथ मिलकर उनके एक विशेष अर्थ का बोध कराते हैं। उपसर्ग शब्द के पहले आते हैं।

**जैसे –** 'अन' उपसर्ग 'बन' शब्द के पहले रख देने से एक शब्द 'अनबन' बनता है, जिसका विशेष अर्थ 'मनमुटाव' है। कुछ उपसर्गों के योग से शब्दों के मूल अर्थ में परिवर्तन नहीं होता, बल्कि तेजी आती है।

**जैसे –** 'भ्रमण' शब्द के पहले 'परि' उपसर्ग लगाने से अर्थ में अंतर न होकर तेजी आई। कभी-कभी उपसर्गों के प्रयोग से शब्द का बिल्कुल उलटा अर्थ निकलता है।

उपसर्ग किसी शब्द के आरम्भ मे जुड़ कर अर्थवान हो जाते है जैसे अ उपसर्ग नहीं का अर्थ देता है

**जैसे :**

- अ+ भाव = अभाव
- अ+थाह = अथाह

**इसी प्रकार नि उपसर्ग**

नि + डर = निडर

**जैसे :-**

- अ + सुंदर = असुंदर (यहां अर्थ बदल गया है )
- अति +सुंदर =अतिसुन्दर (यहां शब्द मे विशेषता आई है )

इसी तरह हम अन्य उदाहरण देखेंगे

- आ+हार = आहार (नया शब्द बना है )
- प्रति+हार = प्रतिहार (नया शब्द बना है
- प्र+हार = प्रहार (नया शब्द बना है )

- अति+अल्प = अत्यल्प
- अधि + अक्ष = अध्यक्ष

उपसर्गों के प्रयोग से शब्दों की तीन स्थितियाँ होती हैं –

- शब्द के अर्थ में एक नई विशेषता आती है,
- शब्द के अर्थ में प्रतिकूलता उत्पन्न होती है,
- शब्द के अर्थ में कोई विशेष अंतर नहीं आता।

यहाँ 'उपसर्ग' और 'शब्द' का अंतर समझ लेना चाहिए। शब्द अक्षरों का एक समूह है, जो अपने में स्वतंत्र है, अपना अर्थ रखता है और वाक्यों में स्वतंत्रतापूर्वक प्रयुक्त होता है।

लेकिन, उपसर्ग अक्षरों का समूह होते हुए भी स्वतंत्र नहीं है और न स्वतंत्ररूप से उसका प्रयोग ही होता है। जब तक किसी शब्द के साथ उपसर्ग की संगति नहीं बैठती, तब तक उपसर्ग अर्थवान् नहीं होता।

संस्कृत में शब्दों के पहले लगने वाले कुछ निश्चित शब्दांशों को ही उपसर्ग कहते हैं और शेष को अव्यय। हिंदी में इस तरह का कोई अंतर नहीं है। हिंदी भाषा में 'उपसर्ग' की योजना व्यापक अर्थ में हुई है।

## उपसर्गों की संख्या

हिंदी में जो उपसर्ग मिलते हैं, वे संस्कृत, हिंदी और उर्दू भाषा के हैं। इन भाषाओं से प्राप्त उपसर्गों की संख्या इस तरह निश्चित की गई है:

- संस्कृत उपसर्ग – 19
- हिंदी उपसर्ग – 10
- उर्दू उपसर्ग – 12

इनमें से प्रत्येक इस प्रकार है –

## संस्कृत-हिंदी उपसर्ग

| उपसर्ग | अर्थ | शब्दरूप |
|---|---|---|
| अति | अधिक, ऊपर, उस पार | अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यंत, अत्याचार, अत्युक्ति, अतिव्याप्ति, अतिक्रमण इत्यादि। |
| अधि | श्रेष्ठ, ऊपर, सामीप्य | अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति इत्यादि। |
| अनु | क्रम, पश्चात्, समानता | अनुशासन, अनुकरण, अनुवाद, अनुचर, अनुज, अनुक्रम, अनुपात, अनुरूप, अनुस्वार, अनुकूल, अनुशीलन इत्यादि। |
| अप | लघुता, हीनता, अभाव, विरुद्ध | अपमान, अपशब्द, अपहरण, अपराध, अपकार, अपभ्रंश , अपकीर्ति , अपयश, अपप्रयोग, अपव्यय, अपवाद, अपकर्ष |
| अभि | सामीप्य, आधिक्य, ओर, इच्छा प्रकट करना | अभिभावक, अभियान, अभिशाप, अभिप्राय, अभियोग, अभिसार, अभिमान, अभिनव, अभ्युदय, अभ्यागत, अभिमुख, अभ्यास, अभिलाषा इत्यादि। |

| | | |
|---|---|---|
| अव | हीनता, अनादर, पतन | अवगत, अवलोकन, अवनत, अवस्था, अवसान, अवज्ञा, अवरोहण, अवतार, अवनति, अवशेष इत्यादि। |
| आ | सीमा, और, समेत, कमी, विपरीत | आरक्त, आगमन, आकाश, आकर्षण, आजन्म, आरंभ, आक्रमण, आदान, आचरण, आजीवन, आरोहण, आमुख, आमरण, आक्रोश इत्यादि। |
| उत्+उद् | ऊपर, उत्कर्ष | उत्तम, उत्कण्ठा, उत्कर्ष, उत्पन्न, उन्नति, उद्देश्य, उद्गम, उत्थान, उद्भव, उत्साह, उद्गार, उद्यम, उद्धत इत्यादि। |
| उप | निकटता, सदृश, गौण, सहायक, हीनता | उपकार, उपकूल, उपनिवेश, उपदेश, उपस्थिति, उपमंत्री, उपवन, उपनाम, उपासना, उपभेद इत्यादि। |
| दुर-दुस् | बुरा, कठिन, दुष्ट, हीन | दुरवस्था, दुर्दशा, दुर्लभ, दुर्जन, दुर्लंध्य, दुर्दमनीय, दुराचार, दुस्साहस,<br>दुष्कर्म, दुःसाध्य, दुष्प्राप्य, दुःसह, दुर्गुण, दुर्गम इत्यादि। |
| नि | भीतर, नीचे, अतिरिक्त | निदर्शन, निकृष्ट, निपात, नियुक्त, निवास, निरूपण, निमग्न, निवारण, निम्न, निषेध, निरोध, निदान, निबंध इत्यादि। |
| निर्-निस् | बाहर, निषेध, रहित | निर्वास , निराकरण, निर्भय, निरपराध, निर्वाह, निर्दोष, निर्जीव, नीरोग, निर्मल इत्यादि। |
| परा | उलटा, अनादर, नाश | पराजय, पराक्रम, पराभव, परामर्श, पराभूत इत्यादि। |
| परि | आसपास, चारों ओर, पूर्ण, अतिशय, त्याग | परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण, परिवर्तन, परिणय, पर्याप्त, परिशीलन, परिदोष, परिदर्शन, परिचय इत्यादि। |
| प्र | अधिक, आगे, ऊपर, यश | प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रबल, प्रभु, प्रयोग, प्रगति, प्रसार, प्रस्थान, प्रलय, प्रमाण, प्रसन्न, प्रसिद्धि प्रताप, प्रपंच इत्यादि। |
| प्रति | विरोध, बराबरी, प्रत्येक, परिवर्तन | प्रतिक्षण, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रत्येक, प्रतिदान, प्रतिकूल, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष, प्रत्युपकार इत्यादि। |
| वि | भिन्नता, हीनता, असमानता, विशेषता | विकास, विज्ञान, विदेश, विधवा, विवाद, विशेष, विस्मरण, विराम, विभाग,<br>विकार, विमुख, विनय, विभिन्न, विनाश, इत्यादि। |
| सम् | पूर्णता, संयोग | संकल्प, संग्रह, संतोष, संन्यास, संयोग, संस्कार, संरक्षण, संहार, सम्मेलन, संस्कृत, सम्मुख, संग्राम, संसर्ग इत्यादि। |
| सु | सुखी, अच्छा भाव, सहज, सुंदर | सुकर्म, सुकृत, सुगम, सुलभ, सुदूर, स्वागत, सुयश, सुभाषित, सुवास,<br>सुकिव, सुजन इत्यादि। |

| | | |
|---|---|---|
| अ-अन | निषेध के अर्थ में | अमोल, अपढ़, अजान, अगाध, अथाह, अलग, अनमोल, अनजान इत्यादि |
| अध | आधे के अर्थ में | अधजला, अधपका, अधखिला, अधमरा, अधपई, अधसेरा इत्यादि |
| उन | एक कम | उन्नीस, उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर इत्यादि। |
| औ (अव) | हीनता, निषेध | औगुन, औघट, औसर, औढर इत्यादि |
| दु | बुरा, हीन | दुकाल, दुबला इत्यादि |
| नि | निषेध, अभाव, विशेष | निकम्मा, निखरा, निडर, निहत्था, निधङक, निगोङा इत्यादि |
| विन | निषेध | बिनजाना, बिनब्याहा, बिनबोया, बिनदेखा, बिनखाया, बिनचखा, बिनकाम इत्यादि। |
| भर | पूरा, ठीक | भरपेट, भरसक, भरपूर, भरदिन इत्यादि |
| कु-क | बुराई, हीनता | कुखेत, कुपात्र, कुघङी, कुकाठ, कपूत, कुढंग इत्यादि। |
| सु-स | श्रेष्ठता और साथ के अर्थ में | सुडौल, सुघङ, सुजान, सुपात्र, सपूत, सजग, सगोत्र, सरस, सहित इत्यादि। |

## उर्दू-उपसर्ग (अरबी-फारसी)

| **उपसर्ग** | **अर्थ** | **शब्दरूप** |
|---|---|---|
| अल | निश्चित | अलबत्ता, अलगरज इत्यादि |
| कम | हीन, थोङा | कमउम्र, कमखयाल, कमसिन इत्यादि |
| खुश | श्रेष्ठता के अर्थ में | खुशबू, खुशदिल, खुशकिस्मत, खुशहाल, खुशखबरी इत्यादि। |
| गैर | निषेध | गैरहाजिर, गैरवाजिब, गैरकानूनी, गैरसरकारी इत्यादि। |
| दर | में | दरकार, दरमियान इत्यादि। |
| ना | अभाव | नापसंद, नामुमकिन, नाराज, नालायक, नादान इत्यादि। |
| बद | बुरा | बदमाश, बदनाम, बदकार, बदकिस्मत, बदबू, बदहजमी इत्यादि। |
| बर | ऊपर, पर, बाहर | बरखास्त, बरदाशत, बरवक्त इत्यादि |
| बिल | साथ | बिलकुल |
| बे | बिना | बेईमान, बेवकूफ, बेरहम, बेतरह, बेइज्जत, इत्यादि। |
| ला | बिना | लाचार, लाजवाब, लावारिस, लापरवाह, लापता इत्यादि। |
| हम | बराबर, समान | हमउम्र, हमदर्दी, हमपेशा इत्यादि |

# काल

काल का अर्थ हम “समय “से लेते है। अर्थात क्रिया के जिस रूप से हमें काम के होने के समय का बोध हो उसे काल कहते है। सरल शब्दो मे ज़ब हम या कोई भी व्यक्ति कोई भी कार्य करता है , उस कार्य से हमें उस समय का पता चलता है जिस समय मे वह काम हो रहा है या किया जा रहा है। तो उसे हम काल कहेगे । काल से हमें कार्य के समय का ज्ञान होता है। और कार्य के सही समय का पता चलता है कि काम अभी हो रहा है या पहले हुआ था या आने वाले समय मे होगा।

**उदहारण-**

1. **राधा ने गाना गया था।**

   इससे हमें पता चल रहा है कि गाना गया जा चुका है। काम खत्म हो चुका है। ज़ब कार्य पूर्ण होता है तो था, थे, थी का प्रयोग होता है ।

2. **मीरा कपड़े धो रही थी।**

   यहां मीरा कपड़े धो रही थी ।मतलब काम कर रही थी काम क़ो बीते समय मे यह बताने कि कोशिश की जा रही है। रहा था, रही थी शब्दो से कार्य हो रहा था का पता चलता है ।

3. **मैं खाना बनाता हूँ।**

   यहां खाना बनाना वर्तमान समय मे होना बताया जा रहा है । खाना अभी बन रहा है।

4. **श्याम पत्र लिखता होगा।**

   श्याम पत्र लिखता होगा यहां वर्तमान मे काम कर रहा है ।

5. **हम घूमने जायेगे।**

   इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि हम घूमने जायेगे, अभी गए नहीं है।

   भविष्य मे होने वाले समय का पता चल रहा है।

   हम उम्मीद करतें है कि आप काल के बारे में समझें होंगे

## काल की परिभाषा –

क्रिया के उस रूपांतर को ’काल’ कहते हैं, जिससे कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो।

## काल के भेद

काल के तीन भेद हैं –

1. वर्तमानकाल
2. भूतकाल

3. भविष्यतकाल

**वर्तमानकाल:** क्रियाओं के व्यापार की निरंतरता को 'वर्तमानकाल' कहते हैं। इसमें क्रिया का आरंभ हो चुका होता है।

**जैसे-**

- वह खाता है।
- यहाँ 'खाने' का कार्य-व्यापार चल रहा है, समाप्त नहीं हुआ है।
- वह पढ़ रहा है।
- पक्षी आकाश में उड़ते है।
- वह अभी गया है।
- उसने खाना खा लिया है।

**वर्तमान काल के पाँच भेद हैं –**

1. सामान्य वर्तमान
2. तात्कालिक वर्तमान
3. पूर्ण वर्तमान
4. संदिग्ध वर्तमान
5. संभाव्य वर्तमान।

**1. सामान्य वर्तमान –**

क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का वर्तमानकाल में होना पाया जाए, 'सामान्य वर्तमान' कहलाता है।

जैसे –

- वह आता है ।
- वह देखता है।
- पक्षी आकाश में उड़ते है।
- वह अभी गया है।
- उसने खाना खा लिया है।

**2. तात्कालिक वर्तमान –** इससे यह पता चलता है कि क्रिया वर्तमानकाल में हो रही है।

जैसे –

- मैं पढ़ रहा हूँ ।
- वह जा रहा है।
- हम घूमने जा रहे हैं।
- विद्या कपड़े धो रही है।
- टंकी से पानी बह रहा है।
- बच्चे खिलौनों से खेल रहे हैं।
- बाघ हरिण का पीछा कर रहा है।

- कुछ लोग पंडाल में आ रहे है, कुछ बाहर जा रहे है।

3. **पूर्ण वर्तमान –** इससे वर्तमानकाल में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है।

जैसे –

- वह आया है ।
- लड़के ने पुस्तक पढ़ी है।
- वह चला गया है।
- उसने भोजन कर लिया है।
- मैं तो सुबह ही नहा चुका हूँ।
- घड़ा पानी से भर गया है।

4. **संदिग्ध वर्तमान –** जिससे क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में संदेह न हो।

जैसे –

- राम खाता होगा ।
- वह पढ़ता होगा।
- वह सो रहा होगा।
- उल्लास खेलता होगा।
- छात्र कहानियाँ सुन रहे होंगे।
- पहरेदार जाग रहा होगा।

5. **संभाव्य वर्तमान –** इससे वर्तमानकाल में काम के पूरा होने की संभावना रहती है।

जैसे –

- वह आया हो।
- वह लौटा हो।
- सुधाकर आता है तो काम हो जाना चाहिए।
- वह स्वस्थ होता लगता है।
- वह पढ़े तो पढ़ने देना।
- अब तो देश आगे बढ़ना ही चाहिए।

## भूतकाल

**परिभाषा –** जिस क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- लड़का आया था ।
- वह खा चुका था ।
- मैंने गाया।

- दो दिन पहले जोर की वर्षा हुई थी।
- नेता जी का प्रचार-रथ बङी भीङ के साथ जा रहा था।

**भूतकाल के छः भेद है –**

1. सामान्य भूत
2. आसन्न भूत
3. पूर्ण भूत
4. अपूर्ण भूत
5. संदिग्ध भूत
6. हेतुहेतुमद्भुत।

1. **सामान्य भूत –**

जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का ज्ञान न हो।

जैसे –

- मोहन आया ।
- सीता गई।
- मोहन आया, सीता गई।
- विनय घर गया।
- मैंने खाना खाया।
- वे कल यहाँ आए थे।
- उसने पिछले वर्ष परीक्षा दी।

2. **आसन्न भूत –**

इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है।

जैसे-

- मैंने आम खाया है।
- मैं चला हूँ।
- वे अभी आए हैं।
- बच्चा सो गया है।
- प्रभा बस अभी गयी है।
- वृक्ष गिर गया है।
- वह पिछले सप्ताह गाँव आया है।
- विद्यालय घण्टे भर पहले बन्द हुआ है।
- वे घर आ गए है।

- अनुराधा अभी घर गई है।
- बहुत गर्मी हो गई है।
- मैंने विचार किया है।

**3. पूर्ण भूत –**

क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते हैं, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय का स्पष्ट बोध होता है कि क्रिया को समाप्त हुए काफी समय बीता है।

जैसे –

- उसने मुरारी को मारा था ।
- वह आया था।
- व्यास जी ने महाभारत रचा था।
- वर्षा न होने से खेती सूख गई थी।
- पुलिस के आने से पहले ही लुटेरे भाग चुके थे।
- अब पछताए होत का, चिड़ियाँ चुग गई खेत।
- मैंने दो वर्ष पहले बी. ए. किया था।
- शिवशंकर ने 2009 में यह बच्चा गोद लिया।
- इस मकान में आप कब आए थे।
- अपराधी तो दुर्घटना में मर चुका था।
- ओलों से फसल नष्ट हो चुकी थी।
- सभी सहेलियाँ घरों को जा चुकी थी।

**4. अपूर्ण भूत –**

इससे यह ज़ात होता है कि क्रिया भूतकाल में हो रहा थी, किंतु उसकी समाप्ति का पता नहीं चलता।

जैसे-

- सुरेश गीत गा रहा था ।
- गीता सो रही थी।
- वह सोता था।
- चुनावी रंग निरन्तर बढ़ रहा था।
- रोम जलता था नीरो बंशी बजाता था।
- वे अँधेरे में ही आगे बढ़ रहे थे।
- अँग्रेज झाँसी को हड़पने का षड्यंत्र रच रहे थे।
- सीमा पर हमारे जवान दिन-रात पहरा देते थे।

- हम बचपन में इस पार्क में खेला करते थे।
- बहुत पहले पृथ्वी पर डायनासोर रहा करते थे।
- वह प्रायः शुक्रवार को आता था।
- चिड़ियाँ इन्हीं झाड़ियों में चहकती थी।
- वह हर महीने उधार चुकाती थी।
- झरना मंदगति से बह रहा था।
- शत्रु घात लगाकर आगे बढ़ रहा था।
- बेचारी गाय सड़क पर दम तोड़ रही थी।
- डाकू धीरे-धीरे आगे बढ़ते आ रहे थे।
- पुजारी रोज शाम को आरती किया करता था।
- याद है, हम दोनों नदी किनारे घण्टों घूमा करते थे।

**5. संदिग्ध भूत –**

इसमें यह संदेश बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ था या नहीं।

जैसे-

- तुमने गाया होगा ।
- तू गाया होगा।
- वह चला गया होगा।
- किसान काम बंद करके घर जा चुके होंगे।
- लगता है वह ठीक समय पर पहुँच गया होगा।
- अवश्य ही मरने से पहले, उसने मुझे याद किया होगा।
- शायद सभी छात्र, तब तक जा चुके होंगे।

**6. हेतुहेतुमद्भूत –**

इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी, पर किसी कारण(reason) न हो सकी।

जैसे –

- मैं आता ।
- तू जाता ।
- वह खाता।
- मैं घर पर होता, तो वह अवश्य रुकती।
- दिव्या प्रथम आई होती, तो उसे पुरस्कार मिलता।
- बाढ़ आ गई होती, तो सारा गाँव डूब जाता।

- यदि समय पर चिकित्सा मिल जाती है, तो अनेक घायलों की जानें बच जातीं।
- आतंकवादी सफल हो गए होते, तो सैकड़ों निर्दोष लोगों मारे जाते।
- सही निर्णय लिया गया होता, तो कश्मीर की समस्या उसी समय सुलझ गई होती।

## भविष्यत काल

भविष्य में होने वाली क्रिया को भविष्यत काल की क्रिया कहते हैं।

जैसे –

वह कल घर जाएगा।

भविष्यत काल के तीन भेद है –

1. सामान्य भविष्य
2. संभाव्य भविष्य
3. हेतुहेतुमद् भविष्य।

1. **सामान्य भविष्य –**

   इससे यह प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी।

   जैसे-

   - मैं पढ़ूँगा ।
   - वह जाएगा।
   - वह आएगा।
   - हम पढ़ेंगे।
   - दालें और सस्ती होंगी।
   - उसका विवाह होगा।
   - भवेश पढ़ेगा।
   - बच्चे खेलेंगे।
   - मनीषा पढ़ेगी।
   - लड़कियाँ नाचेंगी।
   - मैं लिखूँगा।
   - मैं लिखूँगी।

2. **संभाव्य भविष्य –**

   जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की संभावना हो ।

   जैसे –

   - संभव है ।

- रमेश कल आया।
- लगता है वे आएँगे।
- सम्भव है पीयूष वहाँ मिले।
- हो सकता है भारत फिर विश्व गुरु हो जाए।
- सम्भावना है कि फसल अच्छी होगी।
- सम्भव है, वर्षा आए।
- लगता है, मजदूर न मिले।
- हो सकता है, हम तुम्हें स्टेशन पर मिलें।
- लगता है, सभी कार्यकर्ता चैराहे पर एकत्र हों।
- सम्भावना है, मैं उससे मिलने जाऊँ।
- लगता है कि तुम सच बोलो।

3. **हेतुहेतुमद् भविष्य –**

इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है।

जैसे –

- वह आए तो मैं जाऊँ ।

  वह कमाए तो खाए।

# क्रिया

हिंदी व्याकरण में चार विकारी शब्द होते हैं संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया। क्रिया को अंग्रेजी में Action Word कहते है। क्रिया का अर्थ होता है करना। जो भी काम हम करते है, वो क्रिया कहलाती है।

## क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द के द्वारा किसी क्रिया के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते है।

or

वाक्य में प्रयुक्त जिस शब्द अथवा शब्द समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा उसकी पूर्णता या अपूर्णता का बोध होता हो, उसे 'क्रिया' कहते हैं।

**जैसे:** पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, खेलना, सोना आदि।

**क्रिया के उदाहरण –**

- विक्रम पढ़ रहा है।
- शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री थे।
- महेश क्रिकेट खेल रहा है।
- सुरेश खेल रहा है।
- राजा राम पुस्तक पढ़ रहा है।
- बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।
- लड़कियाँ गाना गा रही हैं।
- गीता चाय बना रही है।
- महेश पत्र लिखता है।
- उसी ने बोला था।
- राम ही सदा लिखता है।

**क्रिया के भेद –**

क्रिया का वर्गीकरण तीन आधार पर किया गया है- कर्म के आधार पर, प्रयोग एवं संरचना के आधार पर तथा काल के आधार पर.

1. कर्म के आधार पर
2. प्रयोग एवं संरचना के आधार पर
3. काल के आधार पर क्रिया का वर्गीकर

**कर्म के आधार पर क्रिया के भेद**

1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया

## सकर्मक क्रिया

वे क्रियाएँ जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया का अर्थ कर्म के साथ में होता है, अर्थात सकर्मक क्रिया में कर्म पाया जाता है। सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती है।

सकर्मक शब्द 'स' और 'कर्मक' से मिलकर बना है, जहाँ 'स' उपसर्ग का अर्थ 'साथ में' तथा 'कर्मक' का अर्थ 'कर्म के' होता है।

**सकर्मक क्रिया के उदाहरण –**

1. गीता चाय बना रही है।
2. महेश पत्र लिखता है।
3. हमने एक नया मकान बनाया।
4. वह मुझे अपना भाई मानती है।
5. राधा खाना बनाती है।
6. रमेश सामान लाता है।
7. रवि ने आम ख़रीदे।
8. हम सब से शरबत पीया।

## अकर्मक क्रिया

वे क्रियाएँ जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर पड़ता है उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। अकर्मक क्रिया का अर्थ कर्म के बिना होता है, अर्थात अकर्मक क्रिया के साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता है।

अकर्मक शब्द अ और कर्मक से मिलकर बना है, जहाँ अ उपसर्ग का अर्थ बिना तथा कर्मक का अर्थ कर्म के होता है।

**अकर्मक क्रिया के उदाहरण –**

- रमेश दौड़ रहा है।
- मैं एक अध्यापक था।
- वह मेरा मित्र है।
- मैं रात भर नहीं सोया।
- मुकेश बैठा है।
- बच्चा रो रहा है।

**रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद :**

1. सामान्य क्रिया
2. सहायक क्रिया

3. संयुक्त क्रिया
4. सजातीय क्रिया
5. कृदंत क्रिया
6. प्रेरणार्थक क्रिया
7. पूर्वकालीन क्रिया
8. नाम धातु क्रिया
9. नामिक क्रिया
10. विधि क्रिया

## सामान्य क्रिया

**सामान्य क्रिया** – यह क्रिया का सामान्य रूप होता है, जिसमें एक कार्य एवं एक ही क्रिया पद होता है। जब किसी वाक्य में एक ही क्रिया पद प्रयुक्त किया गया हो तो, उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।

**सामान्य क्रिया के उदाहरण**

- रवि पुस्तक पढ़ता है।
- श्याम आम खाता है।
- श्याम जाता है।

## सहायक क्रिया

**सहायक क्रिया** – किसी वाक्य में मुख्य क्रिया की सहायता करने वाले पद को सहायक क्रिया कहते हैं, अर्थात किसी वाक्य में वह पद जो मुख्य क्रिया के साथ लगकर वाक्य को पूर्ण करता है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। सहायक क्रिया वाक्य के काल का परिचायक होती है।

**सहायक क्रिया के उदाहरण**

- रवि पढ़ता है।
- मैंने पुस्तक पढ़ ली है।
- विजय ने अपना खाना मेज़ पर रख दिया है।

## संयुक्त क्रिया

**संयुक्त क्रिया** - वह क्रिया जो दो अलग-अलग क्रियाओं के योग से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

**संयुक्त क्रिया के उदाहरण**

- रजनी ने खाना खा लिया।
- मैंने पुस्तक पढ़ डाली है।
- शंकर ने खाना बना लिया।

**संयुक्त क्रिया के भेद**

1. **आरंभबोधक :-** जिस संयुक्त क्रिया से क्रिया के आरंभ होने का बोध होता है, उसे 'आरंभबोधक संयुक्त क्रिया' कहते है।

   **जैसे** - वह पढ़ने लगा, पानी बरसने लगा, राम खेलने लगा।

2. **समाप्तिबोधक :-**जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया की पूर्णता, व्यापार की समाप्ति का बोध हो, वह 'समाप्तिबोधक संयुक्त क्रिया' है।

   **जैसे** - वह खा चुका है, वह पढ़ चुका है। धातु के आगे 'चुकना' जोड़ने से समाप्तिबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

3. **अवकाशबोधक :-** जिस क्रिया को निष्पन्न करने के लिए अवकाश का बोध हो, वह 'अवकाशबोधक संयुक्त क्रिया' कहते है।

   **जैसे** - वह मुश्किल से सो पाया, जाने न पाया।

4. **अनुमतिबोधक :-** जिससे कार्य करने की अनुमति दिए जाने का बोध हो, वह 'अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया' है।

   **जैसे** - मुझे जाने दो; मुझे बोलने दो। यह क्रिया 'देना' धातु के योग से बनती है।

5. **नित्यताबोधक :-** जिससे कार्य की नित्यता, उसके बंद न होने का भाव प्रकट हो, वह 'नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया' है।

   **जैसे** - हवा चल रही है; पेड़ बढ़ता गया, तोता पढ़ता रहा। मुख्य क्रिया के आगे 'जाना' या 'रहना' जोड़ने से नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया बनती है।

6. **आवश्यकताबोधक :-** जिससे कार्य की आवश्यकता या कर्तव्य का बोध हो, वह 'आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रिया' है।

   **जैसे** - यह काम मुझे करना पड़ता है; तुम्हें यह काम करना चाहिए। साधारण क्रिया के साथ 'पड़ना', 'होना' या 'चाहिए' क्रियाओं को जोड़ने से आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

7. **निश्चयबोधक :–** जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया के व्यापार की निश्चयता का बोध हो, उसे 'निश्चयबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।

   **जैसे** – वह बीच ही में बोल उठा, उसने कहा – मैं मार बैठूँगा, वह गिर पड़ा, अब दे ही डालो। इस प्रकार की क्रियाओं में पूर्णता और नित्यता का भाव वर्तमान है।

8. **इच्छाबोधक :–** इससे क्रिया के करने की इच्छा प्रकट होती है।

   **जैसे** – वह घर आना चाहता है, मैं खाना चाहता हूँ। क्रिया के साधारण रूप में 'चाहना' क्रिया जोड़ने से 'इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाएँ' बनती हैं।

9. **अभ्यासबोधक :-** इससे क्रिया के करने के अभ्यास का बोध होता है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में 'करना' क्रिया लगाने से अभ्यासबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती है।

   **जैसे** – यह पढ़ा करता है, तुम लिखा करते हो, मैं खेला करता हूँ।

10. **शक्तिबोधक :-** इससे कार्य करने की शक्ति का बोध होता है।

    **जैसे** – मैं चल सकता हूँ, वह बोल सकता है। इसमें 'सकना' क्रिया जोड़ी जाती है।

11. **पुनरुक्त संयुक्त क्रिया :-** जब दो समानार्थक अथवा समान ध्वनि वाली क्रियाओं का संयोग होता है, तब उन्हें 'पुनरुक्त संयुक्त क्रिया' कहते हैं।

    **जैसे** – वह पढ़ा-लिखा करता है, वह यहाँ प्रायः आया-जाया करता है, पड़ोसियों से बराबर मिलते-जुलते रहो।

# तत्सम-तद्भव शब्द

'तत्' तथा 'सम' के मेल से तत्सम शब्द बना है। 'तत्' का अर्थ होता है-'उसके' तथा 'सम' का अर्थ है 'समान' ।
अर्थात् उसके समान, ज्यों का त्यों। अतः किसी भाषा में प्रयुक्त उसकी मूल भाषा के शब्द जब ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

**तत्सम शब्द की परिभाषा :-**

**"हिन्दी की मूल भाषा संस्कृत है, अतः संस्कृत भाषा के जो शब्द हिन्दी भाषा में अपरिवर्तित रूप में ज्यों के त्यों प्रयुक्त हो रहे हैं,**

हिन्दी भाषा के तत्सम शब्द कहलाते हैं।"

**जैसे-** अग्नि, आम्र, कर्ण, दुग्ध, कर्म, कृष्ण।

**तद्भव शब्द**

तद्भव शब्द संस्कृत विकास से उत्पन्न होने वाला शब्द है। तद्भव शब्द दो बहुत ही महत्वपूर्ण शब्दों से मिलकर बना हुआ है। तद्भव शब्द तत् और भव शब्द के मिलाप से बना हुआ है। जहां **तत् शब्द का अर्थ उससे** और **भव शब्द का अर्थ उत्पन्न** होता है, अर्थात तद्भव शब्द का शाब्दिक **अर्थ किसी अन्य प्राचीन शब्द से उत्पन्न हुआ शब्द** है।

संस्कृत भाषा के शब्दों में निरंतर धीरे-धीरे परिवर्तन आता गया और संस्कृत भाषा के नए-नए शब्द प्रचलित होने लगे। तद्भव शब्द संस्कृत भाषा की ओर संकेत करता है, अर्थात तद्भव शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से ही हुई है।

**तद्भव शब्द की परिभाषा**

ऐसे शब्द जिन्हें संस्कृत भाषा से उठाकर किसी अन्य भाषा में प्रयुक्त कर लिया जाता है और इन शब्दों के ध्वनि में कुछ गंभीर परिवर्तन नहीं होता, परंतु इन शब्दों की लेखनी बदल जाती है, ऐसे शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं।

**तद्भव शब्द के उदाहरण**

| **तद्भव शब्द** | **प्राचीन शब्द** |
|---|---|
| आधा | अर्ध |
| अनजान | अज्ञान |
| आसिस | आशीष |
| अच्छर | अक्षर |
| अंगुली | अंगुलि |
| उल्लू | उलूक |

**तत्सम तद्भव शब्द को पहचानने के नियम**

1. तत्सम शब्दों के पीछे ‘क्ष‘ वर्ण का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों के पीछे ‘ख‘ या ‘छ‘ शब्द का प्रयोग होता है।

   **जैसे –**

   अक्षर = अक्छर, आखर

   पक्षी = पंछी

2. तत्सम शब्दों में ‘र‘ की मात्रा का प्रयोग होता है।

   **जैसे –**

   अमृत = अमीर

   आम्र = आम

3. तत्सम शब्दों में ‘ऋ’ की मात्रा का उपयोग होता है।

   **जैसे –**

4. तत्सम शब्दों में ‘श्र’ का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में ‘स‘ का प्रयोग हो जाता है।

   **जैसे –**

   धन्नश्रेष्ठी = धन्नासेठी

5. तत्सम शब्दों में ‘व‘ का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में ‘ब’ का प्रयोग होता है।

   **जैसे –**

   वन = बन

6. तत्सम शब्दों में ‘ष’ वर्ण का प्रयोग होता है।

   **जैसे –**

   कृषक = किसान

7. तत्सम शब्दों में ‘श’ का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में ‘स’ का प्रयोग हो जाता है।

   **जैसे –**

   दिपशलाका = दिया सलाई

| तत्सम | तद्भव | तत्सम | तद्भव |
|---|---|---|---|
| चन्द्र | चाँद | ग्राहक | गाहक |
| मयूर | मोर | विद्युत | बिजली |
| वधू | बहू | नृत्य | नाच |
| चर्म | चमड़ा | गौ | गाय |
| ग्रीष्म | गर्मी | अज्ञानी | अज्ञानी |
| अकस्मात् | अचानक | अग्नि | आग |
| आलस्य | आलस | उज्ज्वल | उजला |
| कर्म | काम | नवीन | नया |

| तत्सम | तद्भव | तत्सम | तद्भव |
|---|---|---|---|
| स्वर्ण | सोना | शत | सौ |
| श्रंगार | सिंगार | सर्प | साँप |
| कूप | कुआँ | कोकिल | कोयल |
| मृत्यु | मौत | सप्त | सात |
| घृत | घी | दधि | दही |
| दुग्ध | दूध | धूम्र | धुआँ |
| दन्त | दाँत | छिद्र | छेद |
| अमूल्य | अमोल | आश्चर्य | अचरज |
| अश्रु | आँसू | कर्ण | कान |
| कृषक | किसान | ग्राम | गाँव |
| हस्ती | हाथी | आम्र | आम |
| मक्षिका | मक्खी | शर्कर | शक्कर |
| सत्य | सच | हस्त | हाथ |
| हरित | हरा | शिर | सिर |
| गृह | घर | चूर्ण | चूरन |
| कुम्भकार | कुम्हार | कटु | कड़वा |
| नग्न | नंगा | भगिनी | बहिन |
| वार्ता | बात | भगिनी | बहिन |
| मृत्तिका | मिट्टी | पुत्र | पूत |
| कपाट | किवाड़ | छत्र | छाता |
| धैर्य | धीरज | कर्ण | कान |

**अ से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

अंक – आँक

अंगरक्षक – अँगरखा

अंगुलि – ऊँगली

अंगुष्ठ – अंगूठा

अंचल – आँचल

अंजलि – अँजुरी

अंध – अँधा

अकस्मात – अचानक

अकार्य – अकाज

अक्षत – अच्छत

अक्षर – अच्छर / आखर

अक्षि – आँख

अक्षोट – अखरोट

अगणित – अनगिनत

अगम्य – अगम

अग्नि – आग

अग्र – आगे

अग्रणी – अगाडी / अगुवा

अच्युत – अचूक

अज्ञान – अजान / अनजाना

अट्टालिका – अटारी

अद्य – आज

अन्धकार – अँधेरा

अन्न – अनाज

अमावस्या – अमावस

अमूल्य – अमोल

अमृत – अमिय

अम्बा – अम्मा

अम्लिका – इमली

अर्क – आक

अर्द्ध – आधा

अर्पण – अरपन

अवगुण – औगुण

अवतार – औतार

अश्रु – आँसू

अष्ट – आठ

अष्टादश – अठारह

**आ से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

आदित्यवार – इतवार

आभीर – अहीर

आमलक – आँवला

आम्र – आम

आम्रचूर्ण – अमचूर

आरात्रिका – आरती

आलस्य – आलस

आशीष – असीस

आश्चर्य – अचरज

आश्रय – आसरा

आश्विन – आसोज

**इ, ई से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

इक्षु – ईख

इष्टिका – ईंट

ईप्सा – इच्छा

ईर्ष्या – इरषा

**उ, ऊ, ऋ से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

उच्च – ऊँचा

उच्छवास – उसास

उज्ज्वल – उजला

उत्साह – उछाह

उदघाटन – उघाड़ना

उपरि – ऊपर

उपालम्भ – उलाहना

उलूक – उल्लू

उलूखल – ओखली

उष्ट्र – ऊँट

ऊष्ण – उमस

ऋक्ष – रीछ

**ए, ऐ, ओ, औ से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

एकत्र – इकट्ठा

एकादश – ग्यारह

ओष्ठ – ओँठ

**क से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

कंकण – कंगन

कच्छप – कछुआ

कज्जल – काजल

कटु – कडवा

कण्टक – काँटा

कदली – केला

कन्दुक – गेंद

कपाट – किवाड़

कपोत – कबूतर

कर्ण – कान

कर्तव्य – करतब

कर्पट – कपड़ा

कर्पूर – कपूर

कर्म – काम

कल्लोल – कलोल

काक – काग / कौआ

कार्तिक – कातिक

कार्य – काज / कारज

काष्ठ – काठ

कास – खाँसी

किंचित – कुछ

किरण – किरन

कीट – कीड़ा

कीर्ति – कीरति

कुंभकार – कुम्हार

कुक्कुर – कुत्ता

कुक्षि – कोख

कुपुत्र – कपूत

कुब्ज – कुबड़ा

कुमार – कुआँरा

कुमारी – कुँवारी

कुष्ठ – कोढ़

कूप – कुँआ

कृपा – किरपा

कृषक – किसान

कृष्ण – कान्हा / किसन

केवर्त – केवट

कोकिला – कोयल

कोटि – करोड़

कोण – कोना

कोष्ठिका – कोठी

क्लेश – कलेश

**क्ष से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

क्षण – छिन

क्षत – छत

STEP UP ACADEMY

क्षति – छति
क्षत्रिय – खत्री
क्षार – खार
क्षीण – छीन
क्षीर – खीर
क्षेत्र – खेत

**ख से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

खनि – खान

**ग से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

गम्भीर – गहरा
गर्जर – गाजर
गर्त – गड्ढा
गर्दभ – गधा
गर्भिणी – गाभिन
गर्मी – घाम
गहन – घना
गात्र – गात
गायक – गवैया
गुण – गुन
गुम्फन – गूंथना
गुहा – गुफा
गृध – गीध
गृह – घर
गृहिणी – घरनी
गौ – गाय
गोधूम – गेंहू
गोपालक – ग्वाल
गोमय – गोबर
गोस्वामी – गुसाँई
गौत्र – गोत
गौर – गोरा
ग्रन्थि – गाँठ
ग्रहण – गहन
ग्राम – गाँव
ग्रामीण – गँवार
ग्राहक – गाहक
ग्रीवा – गर्दन
ग्रीष्म – गर्मी

**घ से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

घंटिका – घंटी
घट – घडा
घटिका – घड़ी
घृणा – घिन
घृत – घी
घोटक – घोडा

**च से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

चंचु – चौंच
चंद्र – चाँद
चंद्रिका – चाँदनी
चक्र – चक्कर / चाक
चतुर्थ – चौथ
चतुर्दश – चौदह
चतुर्दिक – चहुंओर
चतुर्विंश – चौबीस
चतुष्कोण – चौकोर
चतुष्पद – चौपाया
चर्म – चमडा / चमड़ी / चाम
चर्मकार – चमार
चवर्ण – चबाना
चिक्कण – चिकना
चित्रक – चीता
चित्रकार – चितेरा
चुंबन – चूमना
चूर्ण – चून / चूरन
चैत्र – चैत
चौर – चोर

**छ से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

छत्र – छाता
छाया – छाँह
छिद्र – छेद

**ज, झ से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

जंघा – जाँघ
जन्म – जनम
जव – जौ
जामाता – जँवाई
जिह्वा – जीभ
जीर्ण – झीना
ज्येष्ठ – जेठ
ज्योति – जोत
झरण – झर

**त से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

तड़ाग – तालाब
तण्डुल – तन्दुल
तपस्वी – तपसी
तप्त – तपन
ताम्बूलिक – तमोली
ताम्र – ताँबा
तिथिवार – त्यौहार
तिलक – टीका
तीक्ष्ण – तीखा
तीर्थ – तीरथ

तुंद – तोंद

तृण – तिनका

तैल – तेल

त्रय – तीन

त्रयोदश – तेरह

त्वरित – तुरंत / तुरत

**द से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

दंड – डंडा

दंत – दाँत

दंतधावन – दातुन

दक्ष – दच्छ

दक्षिण – दाहिना

दद्रु – दाद

दधि – दही

दाह – डाह

दिशान्तर – दिसावर

दीप – दीया

दीपशलाका – दीयासलाई

दीपावली – दिवाली

दुःख – दुख

दुग्ध – दूध

दुर्बल – दुबला

दुर्लभ – दूल्हा

दूर्वा – दूब

दृष्टि – दीठि

दौहित्र – दोहिता

द्वादश – बारह

द्विगुणा – दुगुना

द्वितीय – दूजा

द्विपट – दुपट्टा

द्विप्रहरी – दुपहरी

द्विवर – देवर

**ध से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

धनश्रेष्ठी – धन्नासेठ

धरणी – धरती

धरित्री – धरती

धर्तूर – धतूरा

धर्म – धरम

धान्य – धान

धूम्र – धुँआ

धूलि – धूल

धृष्ठ – ढीठ

धैर्य – धीरज

**न से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

नकुल – नेवला

नक्षत्र – नखत

नग्न – नंगा

नप्तृ – नाती

नम्र – नरम

नयन – नैन

नव – नौ

नवीन – नया

नापित – नाई

नारिकेल – नारियल

नासिका – नाक

निद्रा – नींद

निपुण – निपुन

निम्ब – नीम

निम्बुक – नींबू

निर्वाह – निबाह

निशि – निसि

निष्ठुर – निठुर

नृत्य – नाच

नौका – नाव

**प से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

पंक्ति – पंगत

पंच – पाँच

पंचदश – पन्द्रह

पक्व – पका / पक्का

पक्वान्न – पकवान

पक्ष – पंख

पक्षी – पंछी

पट्टिका – पाटी

पत्र – पत्ता

पथ – पंथ

पद्म – पदम

परमार्थ – परमारथ

परशु – फरसा

परश्वः – परसों

परीक्षा – परख

पर्पट – पापड़

पर्यंक – पलंग

पवन – पौन

पश्चाताप – पछतावा

पाद – पैर

पानीय – पानी

पाश – फन्दा

पाषाण – पाहन

पितृ – पितर / पिता

पितृश्वसा – बुआ

पिपासा – प्यास

पिप्पल – पीपल

पीत – पीला

पुच्छ – पूँछ

पुत्र – पूत

पुत्रवधू – पतोहू

पुष्कर – पोखर

पुष्प – पुहुप

STEP UP ACADEMY

पूर्ण – पूरा
पूर्णिमा – पूनम
पूर्व – पूरब
पृष्ठ – पीठ
पौत्र – पोता
पौष – पूस
प्रकट – प्रगट
प्रतिच्छाया – परछाई
प्रतिवासी – पड़ोसी
प्रत्यभिज्ञान – पहचान
प्रस्तर – पत्थर
प्रस्वेद – पसीना
प्रहर – पहर
प्रहरी – पहरेदार
प्रहेलिका – पहेली
प्रिय – पिय
फणी – फण
फाल्गुन – फागुन

**ब से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

बंध – बांध
बंध्या – बांझ
बधिर – बहरा
बर्कर – बकरा
बलिवर्द – बैल
बालुका – बालू
बिंदु – बूंद
बुभुक्षित – भूखा

**भ से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

भक्त – भगत
भगिनी – बहन
भद्र – भला
भल्लुक – भालू
भस्म – भसम
भागिनेय – भानजा
भाद्रपद – भादो
भिक्षा – भीख
भिक्षुक – भिखारी
भुजा – बाँह
भ्रत्जा – भतीजा
भ्रमर – भौंरा
भ्राता – भाई
भ्रातृजा – भतीजी
भ्रातृजाया – भौजाई
भ्रू – भौं

**म से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

मकर – मगर
मक्षिका – मक्खी
मणिकार – मणिहार
मत्स्य – मछली
मदोन्मत्त – मतवाला
मद्य – मद
मनीचिका – मिर्च
मनुष्य – मानुष
मयूर – मोर
मरीच – मिर्च
मर्कटी – मकड़ी
मल – मैल
मशक – मच्छर
मशकहरी – मसहरी
मश्रु – मूंछ
मस्तक – माथा
महिषी – भैंस
मातुल – मामा
मातृ – माता
मार्ग – मारग
मास – माह
मित्र – मीत
मिष्ट – मीठा
मिष्ठान्न – मिठाई
मुख – मुँह
मुषल – मूसल
मुष्टि – मुट्ठी
मूत्र – मूत
मूल्य – मोल
मूषक – मूसा
मृग – मिरग
मृतघट – मरघट
मृत्तिका – मिट्टी
मृत्यु – मौत
मेघ – मेह
मौक्तिक – मोती

**य से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

यजमान – जजमान
यत्न – जतन
यमुना – जमुना
यश – जस
यशोदा – जसोदा
युक्ति – जुगत
युवा – जवान
योग – जोग
योगी – जोगी
यौवन – जोबन

**र से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

रक्षा – राखी
रज्जु – रस्सी

राजपुत्र – राजपूत
रात्रि – रात
राशि – रास
रिक्त – रीता
रुदन – रोना
रूष्ट – रूठा

**ल से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

लक्ष – लाख
लक्षण – लक्खन
लक्ष्मण – लखन
लक्ष्मी – लछमी
लज्जा – लाज
लवंग – लौंग
लवण – नौन / नून
लवणता – लुनाई
लेपन – लीपना
लोक – लोग
लोमशा – लोमड़ी
लौह – लोहा
लौहकार – लुहार

**व से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

वंश – बाँस
वंशी – बाँसुरी
वक – बगुला
वचन – बचन
वज्रांग – बजरंग
वट – बड
वणिक – बनिया
वत्स – बच्चा / बछड़ा
वधू – बहू
वरयात्रा – बरात
वर्ण – बरन
वर्ष – बरस
वर्षा – बरसात
वत्स – बछड़ा
वाणी – बानी
वानर – बंदर
वार्ता – बात
वाष्प – भाप
विंश – बीस
विकार – बिगाड़
विद्युत – बिजली
विवाह – ब्याह
विष्ठा – बीट
वीणा – बीना
वीरवर्णिनी – बीरबानी
वृक्ष – बिरख
वृद्ध – बुड्ढा / बूढ़ा
वृश्चिक – बिच्छू
वृषभ – बैल
वैर – बैर
व्यथा – विथा
व्याघ्र – बाघ

**श, ष, श्र से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

शकट – छकड़ा
शत – सौ
शप्तशती – सतसई
शय्या – सेज
शर्करा – शक्कर
शलाका – सलाई
शाक – साग
श्राप – शाप
शिक्षा – सीख
शिर – सिर
शिला – सिल
शीतल – सीतल
शीर्ष – सीस
शुक – सुआ
शुण्ड – सूंड
शुष्क – सूखा
शूकर – सुअर
शून्य – सूना
श्मशान – मसान
श्मश्रु – मूँछ
श्मषान – समसान
श्यामल – सांवला
श्यालस – साला
श्याली – साली
श्रंखला – सांकल
श्रावण – सावन
श्रृंग – सींग
श्रृंगार – सिंगार
श्रृगाल – सियार
श्रेष्ठी – सेठ
श्वश्रु – सास
श्वसुर – ससुर
श्वास – साँस
षोडश – सोलह

**स से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

संधि – सेंध
सत्य – सच
सन्ध्या – साँझ
सपत्नी – सौत
सप्त – सात
सरोवर – सरवर
सर्प – साँप
सर्सप – सरसों

साक्षी – साखी
सूची – सुई
सूत्र – सूत
सूर्य – सूरज
सौभाग्य – सुहाग
स्कन्ध – कंधा
स्तन – थन
स्तम्भ – खम्भा
स्थल – थल
स्थान – थान
स्थिर – थिर
स्नेह – नेह

स्पर्श – परस
स्फोटक – फोड़ा
स्वजन – साजन
स्वप्न – सपना
स्वर्ण – सोना
स्वर्णकार – सुनार
स्वसुर – ससुर

**ह से तत्सम शब्द –**

**तत्सम-तद्भव**

हंडी – हांडी
हट्ट – हाट

हरिण – हिरन
हरित – हरा
हरिद्रा – हल्दी
हर्ष – हरख
हस्त – हाथ
हस्ति – हाथी
हस्तिनी – हथिनी
हास्य – हँसी
हिन्दोला – हिण्डोला

# पदबंध

## पदबंध की परिभाषा

वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है।

**पद :-** वाक्य से अलग रहने पर 'शब्द' और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं।

**पदबंध :-** जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें पदबंध कहते हैं।

कई पदों के योग से बने वाक्यांशो को, जो एक ही पद का काम करता है, 'पदबंध' कहते है।

डॉ.हरदेव बाहरी ने 'पदबन्ध' की परिभाषा इस प्रकार दी है-वाक्य के उस भाग को, जिसमें एक से अधिक पद परस्पर सम्बद्ध होकर अर्थ तो देते हैं, किन्तु पूरा अर्थ नहीं देते-पदबन्ध या वाक्यांश कहते हैं।

**जैसे –**

- सबसे तेज दौड़ने वाला छात्र जीत गया।
- यह लड़की अत्यंत सुशील और परिश्रमी है।
- नदी बहती चली जा रही है।
- नदी कल-कल करती हुई बह रही थी।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द पदबंध है। पहले वाक्य के 'सबसे तेज दौड़ने वाला छात्र' में पाँच पद है, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात संज्ञा का कार्य कर रहे हैं। दूसरे वाक्य के 'अत्यंत सुशील और परिश्रमी' में भी चार पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात विशेषण का कार्य कर रहे हैं।

तीसरे वाक्य के 'बहती चली जा रही है' में पाँच पद हैं किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात क्रिया का काम कर रहे हैं। चौथे वाक्य के 'कल-कल करती हुई' में तीन पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात क्रिया विशेषण का काम कर रहे हैं।

इस प्रकार रचना की दृष्टि से पदबन्ध में तीन बातें आवश्यक हैं-एक तो यह कि इसमें एक से अधिक पद होते हैं। दूसरे ये पद इस तरह से सम्बद्ध होते हैं कि उनसे एक इकाई बन जाती है। तीसरे, पदबन्ध किसी वाक्य का अंश होता है।

अंग्रेजी में इसे phrase कहते हैं। इसका मुख्य कार्य वाक्य को स्पष्ट, सार्थक और प्रभावकारी बनाना है। शब्द-लाघव के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है- खास तौर से समास, मुहावरों और कहावतों में। ये पदबंध पूरे वाक्य नहीं होते, बल्कि वाक्य के टुकड़े हैं, किन्तु निश्चित अर्थ और क्रम के परिचायक हैं। हिंदी व्याकरण में इनपर अभी स्वतन्त्र अध्ययन नहीं हुआ है।

## पदबंध के भेद

मुख्य पद के आधार पर पदबंध के पाँच प्रकार होते हैं-

- संज्ञा-पदबंध
- विशेषण-पदबंध

- सर्वनाम पदबंध
- क्रिया पदबंध
- अव्यय पदबंध

**1. संज्ञा-पदबंध**

वह पदबंध जो वाक्य में संज्ञा का कार्य करे, संज्ञा पदबंध कहलाता है।

**दूसरे शब्दों में :-** पदबंध का अंतिम अथवा शीर्ष शब्द यदि संज्ञा हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हो तो वह 'संज्ञा पदबंध' कहलाता है।

**जैसे –**

a) चार ताकतवर मजदूर इस भारी चीज को उठा पाए।

b) राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।

c) अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।

d) आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'संज्ञा पदबंध' है।

**2. विशेषण पदबंध**

वह पदबंध जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाता हुआ विशेषण का कार्य करे, विशेषण पदबंध कहलाता है।

**दूसरे शब्दों में :-** पदबंध का शीर्ष अथवा अंतिम शब्द यदि विशेषण हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हों तो वह 'विशेषण पदबंध' कहलाता है।

**जैसे –**

a) तेज चलने वाली गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।

b) उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।

c) उसका घोड़ा अत्यंत सुंदर, फुरतीला और आज्ञाकारी है।

d) बरगद और पीपल की घनी छाँव से हमें बहुत सुख मिला।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'विशेषण पदबंध' है।

**3. सर्वनाम पदबंध**

वह पदबंध जो वाक्य में सर्वनाम का कार्य करे, सर्वनाम पदबंध कहलाता है।

**उदाहरण**

**बिजली-सी फुरती दिखाकर** आपने बालक को डूबने से बचा लिया।

**शरारत करने वाले छात्रों में से कुछ** पकड़े गए।

**विरोध करने वाले लोगों में से कोई** नहीं बोला।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द सर्वनाम पदबंध हैं क्योंकि वे क्रमशः 'आपने' 'कुछ' और 'कोई' इन सर्वनाम शब्दों से सम्बद्ध हैं।

**4. क्रिया पदबंध**

वह पदबंध जो अनेक क्रिया-पदों से मिलकर बना हो, क्रिया पदबंध कहलाता है।

क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया पहले आती है। उसके बाद अन्य क्रियाएँ मिलकर एक समग्र इकाई बनाती है। यही 'क्रिया पदबंध' है।

**जैसे –**

a) वह बाजार की ओर आया होगा।

b) मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।

c) सुरेश नदी में डूब गया।

d) अब दरवाजा खोला जा सकता है।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'क्रिया पदबंध' है।

**5. अव्यय पदबंध**

वह पदबंध जो वाक्य में अव्यय का कार्य करे, अव्यय पदबंध कहलाता है।

इस पदबंध का अंतिम शब्द अव्यय होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य देखिए-

अपने सामान **के साथ** वह चला गया।

**सुबह से शाम** तक वह बैठा रहा।

इन वाक्यों में काला छपे शब्द अव्यय पदबंध हैं।

## पदबन्ध और उपवाक्य में अन्तर

उपवाक्य (Clause) भी पदबन्ध (Phrase) की तरह पदों का समूह है, लेकिन इससे केवल आंशिक भाव प्रकट होता है, पूरा नहीं। पदबन्ध में क्रिया नहीं होती, उपवाक्य में क्रिया रहती है

**जैसे** -'ज्योंही वह आया, त्योंही मैं चला गया।' यहाँ 'ज्योंही वह आया' एक उपवाक्य है, जिससे पूर्ण अर्थ की प्रतीति नहीं होती।

❖❖

# पर्यायवाची शब्द

'पर्याय' का अर्थ है - 'समान' तथा 'वाची' का अर्थ है - 'बोले जाने वाले' अर्थात जिन शब्दों का अर्थ एक जैसा होता है, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी कह सकते है - जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते है।

समान अर्थवाले शब्दों को 'पर्यायवाची शब्द' या समानार्थक भी कहते है।

**जैसे** - सूर्य, दिनकर, दिवाकर, रवि, भास्कर, भानु, दिनेश - इन सभी शब्दों का अर्थ है 'सूरज'।

इस प्रकार ये सभी शब्द 'सूरज' के पर्यायवाची शब्द कहलायेंगे।

पर्यायवाची शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या होता है

पर्यायवाची शब्द दो पदों से मिल कर बना है – **पर्याय + वाची।**

- पर्याय का मतलब है - अर्थ
- वाची का मतलब है - बताने वाला

अतः पर्यायवाची शब्द से तात्पर्य है - अर्थ बताने वाला। पर्यायवाची शब्दों से हमें एक ही शब्द के लिए प्रयोग होने वाले अन्य शब्दों का पता चलता है। इन सभी सभी शब्दों का एक ही अर्थ होता है।

इसी प्रकार समानार्थक / समानार्थी शब्द भी दो पदों से मिलकर बना है –

**समान + अर्थक / समान + अर्थी**

- समान - एक जैसे
- अर्थक /अर्थी - अर्थ वाले

अतः समानार्थक / समानार्थी का शाब्दिक अर्थ है - एक जैसे अर्थ वाले शब्द।

पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं

पर्यायवाची शब्द की व्याकरणीय परिभाषा

- किसी शब्द-विशेष के लिए प्रयोग किए जाने वाले समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहते हैं।
- जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द या समानार्थक शब्द कहते हैं।

## पर्यायवाची शब्द की परिभाषा (सरल शब्दों में)

जिन शब्दों की ध्वनियाँ (या रूप) अलग-अलग होती हैं, लेकिन अर्थ एक जैसे होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द या समानार्थक शब्द कहा जाता है। ऐसे शब्द दिखते तो अलग-अलग हैं, लेकिन इनका मतलब एक ही होता है।

## पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण

### (अ)

**अतिथि :-** मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहूना।

**अमृत :-** सुरभोग सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, जीवनोदक ।

**अग्नि :-** आग, ज्वाला, दहन, धनंजय, वैश्वानर, रोहिताश्व, वायुसखा, विभावसु, हुताशन, धूमकेतु, अनल, पावक, वहनि, कृशानु, वह्नि, शिखी।

**अनुपम :-** अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा, अद्वितीय, अदभुत, अनन्य।

**अनबन :-** मतभेद, वैमनस्य, विरोध, असहमति, झगड़ा, तकरार, विवाद, बखेड़ा, टंटा।

**अनमना :-** उदास, अन्यमनस्क, उन्मन, विमुख, विरक्त, उदास, गतानुराग, अन्यमनस्क।

### (आ)

**आँख :-** लोचन, अक्षि, नैन, अम्बक, नयन, नेत्र, चक्षु, दृग, विलोचन, दृष्टि, अक्षि।

**आकाश :-** नभ, गगन, द्यौ, तारापथ, पुष्कर, अभ्र, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान, अंतरिक्ष,

**आनंद :-** हर्ष, सुख, आमोद, मोद, प्रसन्नता, आह्लाद, प्रमोद, उल्लास।

**आश्रम :-** कुटी, स्तर, विहार, मठ, संघ, अखाड़ा ।

**आम :-** रसाल, आम्र, अतिसौरभ, मादक, अमृतफल, चूत, सहकार, च्युत (आम का पेड़)

**आंसू :-** नेत्रजल, नयनजल, चक्षुजल, अश्रु।

**आत्मा :-** जीव, देव, चैतन्य, चेतनतत्तव, अंतःकरण।

### (इ)

**इंसाफ :-** न्याय, फैसला, अद्ल।

**इजाजत :-** स्वीकृति, मंजूरी, अनुमति।

**इज्जत :-** मान, प्रतिष्ठा, आदर, आबरू।

**इनाम :-** पुरस्कार, पारितोषिक, पारितोषित करना, बख्शीश।

**इकट्ठा :-** समवेत, संयुक्त, समन्वित, एकत्र, संचित, संकलित, संग्रहीत।

### (ई)

**ईश्वर :-** परमपिता, परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता।

**ईख :-** गन्ना, ऊख, इक्षु।

**ईप्सा :-** इच्छा, ख्वाहिश, कामना, अभिलाषा।

**ईमानदारी :-** सच्चा, सत्यपरायण, नेकनीयत, यथार्थता, सत्यता, निश्छलता, दयानतदारी

**ईर्ष्या :-** विद्वेष, जलन, कुढ़न, ढाह।

**ईसा :-** यीशु, ईसामसीह, मसीहा।

(उ)

**उपवन :-** बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, पुष्पोद्यान, फुलवारी, पुष्पवाटिका, गुलिस्तान, चमन

**उक्ति :-** कथन, वचन, सूक्ति।

**उग्र :-** प्रचण्ड, उत्कट, तेज, महादेव, तीव्र, विकट।

**उचित :-** ठीक, मुनासिब, वाज़िब, समुचित, युक्तिसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत, योग्य।

**उच्छृंखल :-** उद्दंड, अक्खड़, आवारा, अंडबंड, निरकुंश, मनमर्जी, स्वेच्छाचारी।

**उजड्ड :-** अशिष्ट, असभ्य, गँवार, जंगली, देहाती, उद्दंड, निरकुंश।

**उजला :-** उज्ज्वल, श्वेत, सफ़ेद, धवल।

**उजाड :-** जंगल, बियावान, वन।

**उजाला :-** प्रकाश, रोशनी, दीप्ति, द्योत, प्रभा, विभा, आलोक, तेज, ओज, चाँदनी।

(ऊ)

**ऊँचा :-** तुंग, उच्च, बुलंद, उर्ध्व, उत्ताल, उन्नत, ऊपर, शीर्षस्थ, उच्च कोटि का, बढ़िया।

**ऊँचाई :-** बुलंदी, उठान, उच्चता, तुंगता, बुलन्दी।

**ऊँचा करना :-** उन्नत करना, उत्थित करना, ऊपर उठाना।

**ऊँट :-** करभ, उष्ट्र, लंबोष्ठ, साँड़िया।

**ऊखल :-** ओखली, उलूखल, कूँडी।

**ऊसर :-** अनुपजाऊ, बंजर, अनुर्वर, वंध्या, भूमि।

(ऋ)

**ऋक्ष :-** भालू, रीछ, भीलूक, भल्लाट, भल्लूक।

**ऋक्षेश :-** चंद्रमा, चंदा, चाँद, शशि, राकेश, कलाधर, निशानाथ।

**ऋण :-** कर्ज, कर्जा, उधार, उधारी।

**ऋणी :-** कर्जदार, देनदार।

**ऋतु :-** रुत, मौसम, मासिक धर्म, रज:स्राव।

**ऋतुराज :-** बहार, मधुमास, वसंत, ऋतुपति, मधुऋतु।

**ऋषभ :-** वृष, वृषभ, बैल, पुंगव, बलीवर्द, गोनाथ।

(ए)

**एकतंत्र :-** राजतंत्र, एकछत्र, तानाशाही, अधिनायकतंत्र।

**एकदंत :-** गणेश, गजानन, विनायक, लंबोदर, विघ्नेश, वक्रतुंड।

**एतबार :-** विश्वास, यकीन, भरोसा।

**एषणा :-** इच्छा, आकांक्षा, कामना, अभिलाषा, हसरत।

**एहसान :-** कृपा, अनुग्रह, उपकार।

**एक करना :-** एकीकरण करना, सम्मिलित करना, मिलाना, जोड़ना, संघटित करना, संगठन बनाना।

**(ऐ)**

**ऐंठ :-** कड़, दंभ, हेकड़ी, ठसक।

**ऐबी :-** बुरा, खोटा, दुष्ट, अवगुण, गलती, त्रुटि, खामी, खराबी, कमी, अवगुण।

**ऐयार :-** धूर्त, मक्कार, चालाक।

**ऐहिक :-** सांसारिक, लौकिक, दुनियावी।

**ऐक्य :-** एकत्व, एका, एकता, मेल।

**ऐश्वर्य :-** धन-सम्पत्ति, विभूति, वैभव, समृद्धि, सम्पन्नता, ऋद्धि-सिद्धि।

**(ओ)**

**ओज :-** तेज, शक्ति, बल, चमक, कांति, दीप्ति, वीर्य।

**ओजस्वी :-** बलवान, बलशाली, बलिष्ठ, पराक्रमी, जोरावर, ताकतवर, शक्तिशाली।

**ओंठ :-** ओष्ठ, अधर, लब, रदनच्छद, होठ।

**ओला :-** हिमगुलिका, उपल, करका, बिनौरी, तुहिन, जलमूर्तिका, हिमोपल।

**(औ)**

**औचक :-** अचानक, यकायक, सहसा।

**औरत :-** स्त्री, जोरू, घरनी, महिला, मानवी, तिरिया, नारी, वनिता, घरवाली।

**औचित्य :-** उपयुक्तता, तर्कसंगति, तर्कसंगतता।

**औलाद :-** संतान, संतति, आसऔलाद, बाल-बच्चे।

**औषधालय :-** चिकित्सालय, दवाखाना, अस्पताल, हस्पताल, चिकित्सा भवन, शफाखाना।

**(क)**

**कमल :-** नलिन, अरविन्द, उत्पल, अम्भोज, तामरस, पुष्कर, महोत्पल, वनज, कंज।

**किरण :-** गभस्ति, रश्मि, अंशु, अर्चि, गो, कर, मयूख, मरीचि, ज्योति, प्रभा।

**कामदेव :-** मदन, मनोज, अनंग, आत्मभू, कंदर्प, दर्पक, पंचशर, मनसिज, काम, रतिपति।

**(ख)**

**खाना :-** भोज्य सामग्री, खाद्यय वस्तु, आहार, भोजन।

**खग :-** पक्षी, द्विज, विहग, नभचर, अण्डज, शकुनि, पखेरू।

**खंभा :-** स्तूप, स्तम्भ, खंभ।

**खद्योत :-** जुगनू, सोनकिरवा, पटबिजना, भगजोगिनी।

**खर :-** गधा, गर्दभ, खोता, रासभ, वैशाखनंदन।

**खरगोश :-** शशक, शशा, खरहा।

**(ग)**

**गणेश :-** विनायक, गजानन, गौरीनंदन, मूषकवाहन, गजवदन, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन।

**गंगा :-** देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विश्नुपगा, देवपगा, ध्रुवनंदा, सुरसरिता, देवनदी।

**गज :-** हाथी, हस्ती, मतंग, कूम्भा, मदकल।

**गाय :-** गौ, धेनु, सुरभि, भद्रा, दोग्धी, रोहिणी।

**गृह :-** घर, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आगार, आलय, आवास, मंदिर।

**गर्मी :-** ताप, ग्रीष्म, ऊष्मा, गरमी, निदाघ।

## (घ)

**घट :-** घड़ा, कलश, कुम्भ, निप।

**घर :-** आलय, आवास, गेह, गृह, निकेतन, निलय, निवास, भवन, वास, वास-स्थान, शाला, सदन।

**घटना :-** हादसा, वारदात, वाक्या।

**घना :-** घन, सघन, घनीभूत, घनघोर, गझिन, घनिष्ठ, गहरा, अविरल।

**घपला :-** गड़बड़ी, गोलमाल, घोटाला।

**घमंड :-** दंभ, दर्प, गर्व, गरूर, गुमान, अभिमान, अहंकार।

## (च)

**चिराग :-** दीया, दीपक, दीप, शमा।

**चेला :-** शागिर्द, शिष्य, विद्यार्थी।

**चेहरा :-** शक्ल, आनन, मुख, मुखड़ा।

**चोरी :-** स्तेय, चौर्य, मोष, प्रमोष।

**चौकन्ना :-** सचेत, सजग, सावधान, जागरूक, चौकस।

**चौकीदार :-** प्रहरी, पहरेदार, रखवाला।

## (छ)

**छतरी :-** छत्र, छाता, छत्ता।

**छली :-** छलिया, कपटी, धोखेबाज।

**छवि :-** शोभा, सौंदर्य, कान्ति, प्रभा।

**छानबीन :-** जाँच, पूछताछ, खोज, अन्वेषण, शोध, गवेषण।

**छँटनी :-** कटौती, छँटाई, काट-छाँट।

## (ज)

**जल :-** मेघपुष्प, अमृत, सलिल, वारि, नीर, तोय, अम्बु, उदक, पानी, जीवन, पय, पेय।

**जहर :-** गरल, कालकूट, माहुर, विष ।

**जगत :-** संसार, विश्व, जग, जगती, भव, दुनिया, लोक, भुवन।

**जंगल :-** विपिन, कानन, वन, अरण्य, गहन, कांतार, बीहड़, विटप।

**जेवर :-** गहना, अलंकार, भूषण, आभरण, मंडल।

**ज्योति :-** आभा, छवि, द्युति, दीप्ति, प्रभा, भा, रुचि, रोचि।

## (झ)

**झरना :-** उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, प्रस्त्रवण।

**झण्डा :-** ध्वजा, पताका, केतु।

**झंझा :-** अंधड़, आँधी, बवंडर, झंझावत, तूफान।

**झाँसा :-** दगा, धोखा, फरेब, ठगी।

**झींगुर :-** घुरघुरा, झिल्ली, जंजीरा, झिल्लिका।

**झंझट :-** झमेला, बखेड़ा, पचड़ा, प्रपंच, कलह, झगड़ा-झंझट, बवंडर, बवाल।

**झगड़ा :-** कलह, तकरार, कहासुनी, वैमत्य, मतभेद, खटपटा, टंटा, लड़ाई, विवाद, विरोध, संघर्ष।

## (ट)

**टंकार :-** टंकोर, ध्वनि, झनकार।

**टकराना :-** टक्कर खाना, भिड़ना, चोट खाना, लड़ जाना, ठोकर खाना।

**टका :-** सिक्का, रुपया, धन, द्रव्य।

**टक्कर :-** ठोकर, मुठभेड़, भिडंत, समाघात, धक्का, संघर्ष, बराबरी, सामना, घाटा, हानि।

**टपकना :-** चूना, झरना, रिसना, स्रावित होना।

**टहलना :-** सैर-सपाटा, घूमना, भ्रमण करना, चलना, फिरना।

## (ठ)

**ठंडा :-** शीतल, सर्द, शांत, गम्भीर, सुस्त, मंद, धीमा, उदासीन, भावहीन।

**ठगना :-** छलना, धोखा देना, चकमा देना, भुलावा, लूटना, लूट लेना, चूना लगाना, ऐंठना।

**ठगी :-** कपट, मायाजाल, छल, बेईमानी, धोखेबाजी, उचक्कापन, जालासाजी।

**ठसक :-** नखर, चोंचला, मान, अभिमान, शान, गर्व, घमंड।

**ठहरना :-** रुकना, थमना, टिकना, विराम, स्थित होना, प्रतीक्षा करना, इंतजार करना।

**ठाट :-** तड़क-भड़क, शोभा, सजावट, आयोजन, तैयारी, व्यवस्था, प्रबंध, झुंड, दल, समूह।

**ठिकाना :-** स्थान, जगह, अड्डा, आयोजन, प्रबंध, व्यवस्था।

## (ड)

**डकारना :-** डकार लेना, गरजना, दहाड़ना।

**डगमगाना :-** डावाँडोल होना, अस्थिर होना, काँपना, हिलना, लड़खड़ाना, थरथराना, विचलित होना।

**डफला :-** डफ, चंग, खंजरी।

**डब्बा :-** डिब्बा, ढक्कनदार, बर्तन, केस, कम्पार्टमेन्ट।

**डरना :-** भयभीत होना, त्रास पाना, आतंकित होना, भय खाना, त्रस्त होना।

**डरपोक :-** भीरु, भयभीत, त्रस्त, कायर, कापुरुष, आतंकित करना।

## (ढ)

**ढब :-** ढंग, रीति, तरीका, ढर्रा।

**ढाँचा :-** पंजर, ठठरी।

**ढीला-ढाला :-** शिथिलता, आलसी, सुस्ती, अतत्परता।

**ढिंढोरा :-** मुनादी, ढँढोरा, डुगडुगी, डौंड़ी।

**ढिग :-** समीप, निकट, पास, आसन्न।

**(त)**

**तालाब :-** सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, ह्रद, पद्माकर , पोखरा, जलवान, सरसी, तड़ाग।

**तोता :-** सुग्गा, शुक, सुआ, कीर, रक्ततुण्ड, दाड़िमप्रिय।

**तरुवर :-** वृक्ष, पेड़, द्रुम, तरु, विटप, रूंख, पादप।

**तलवार :-** असि, कृपाण, करवाल, खड्ग, शमशीर चन्द्रहास।

**तरकस :-** तूण, तूणीर, त्रोण, निषंग, इषुधी।

**(थ)**

**थोड़ा :-** अल्प, न्यून, जरा, कम।

**थाती :-** जमापूँजी, धरोहर, अमानत।

**थाक :-** ढेर, समूह।

**थप्पड़ :-** तमाचा, झापड़।

**थकान :-** थकावट, श्रांति, थकन, परिश्रांति, क्लांति।

**थल :-** स्थान, स्थल, भूमि, धरती, जमीन, जगह।

**(द)**

**दूध :-** दुग्ध, दोहज, पीयूष, क्षीर, पय, गौरस, स्तन्य।

**दास :-** नौकर, चाकर, सेवक, परिचारक, अनुचर, भृत्य, किंकर।

**दासी :-** परिचारिका, अनुचरी, बाँदी, नौकरानी।

**देवता :-** सुर, देव, अमर, वसु, आदित्य, निर्जर, त्रिदश, गीर्वाण, अदितिनंदन, अमर्त्य, अस्वप्न।

**(ध)**

**धन :-** दौलत, संपत्ति, सम्पदा, वित्त।

**धरती :-** धरा, धरती, वसुधा, ज़मीन, पृथ्वी, भू, भूमि, धरणी, वसुंधरा, अचला, मही।

**धंधा :-** आजीविका, उद्योग, कामधंधा, व्यवसाय।

**धनंजय :-** अर्जुन, सव्यसाची, पार्थ, गुड़ाकेश, बृहन्नला।

**धनु :-** धनुष, पिनाक, शरासन, कोदंड, कमान, धनुही।

**(न)**

**नदी :-** तनूजा, सरित, शौवालिनी, स्रोतस्विनी, आपगा, निम्नगा, कूलंकषा, तटिनी, सरि, सारंग, जयमाला, तरंगिणी, दरिया, निर्झरिणी।

**नौका :-** नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा, डोंगी, तरी, पतंग।

**नाग :-** विषधर, भुजंग, अहि, उरग, काकोदर, फणीश, सारंग, व्याल, सर्प, साँप।

**नर्क :-** यमलोक, यमपुर, नरक, यमालय।

**(प)**

**पुत्र :-** बेटा, लड़का, आत्मज, सुत, वत्स, तनुज, तनय, नंदन।

**पुत्री :-** बेटी, आत्मजा, तनूजा, दुहिता, नन्दिनी, लड़की, सुता, तनया।

**पृथ्वी :-** धरा, धरती, भू, धरित्री, धरणी, अवनि, मेदिनी, मही, वसुंधरा, वसुधा, जमीन, भूमि।

**पुष्प :-** फूल, सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुहुप।

**पानी :-** जल, नीर, सलिल, अंबु, अंभ, उदक, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प, सारंग।

**परिवार :-** कुटुंब, कुनबा, खानदान, घराना।

**परिवर्तन :-** बदलाव, हेरफेर, तबदीली, फेरबदल।

**(फ)**

**फल :-** फलम, बीजकोश।

**फ़ख :-** गौरव, नाज, गर्व, अभिमान।

**फजर :-** भोर, सवेरा, प्रभात, सहर, सकार।

**फतह :-** सफलता, विजय, जीत, जफर।

**फरमान :-** हुक्म, राजादेश, राजाज्ञा।

**फलक :-** आसमान, आकाश, गगन, नभ, व्योम।

**फसल :-** शस्य, पैदावार, उपज, खिरमन, कृषि- उत्पाद।

**(ब)**

**बाण :-** सर, तीर, सायक, विशिख, आशुग, इषु, शिलीमुख, नाराच।

**बिजली :-** घनप्रिया, इन्द्रवज्र, चंचला, सौदामनी, चपला, बीजुरी, क्षणप्रभा।

**ब्रह्मा :-** विधि, विधाता, स्वयंभू, प्रजापति, आत्मभू, लोकेश, पितामह, चतुरानन, विरंचि।

**बहुत :-** अनेक, अतीव, अति, बहुल, भूरि, बहु, प्रचुर, अपरिमित, प्रभूत, अपार।

**बादल :-** मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, सारंग, पयोद, पयोधर।

**(भ)**

**भौंरा :-** अलि, मधुव्रत, शिलीमुख, मधुप, मधुकर, द्विरेप, षट्पद, भृंग, भ्रमर।

**भोजन :-** खाना, भोज्य सामग्री, खाद्यय वस्तु, आहार।

**भय :-** भीति, डर, विभीषिका।

**भाई :-** तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।

**भंवरा :-** भौंरा, भ्रमर, मधुकर, मधुप, मिलिंद, अलि, अलिंद, भृंग।

**भक्त :-** आराधक, अर्चक, पुजारी, उपासक, पूजक।

**(म)**

**मछली :-** मीन, मत्स्य, झख, झष, जलजीवन, शफरी, मकर।

**महादेव :-** शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, भव, भूतेश।

**मेघ :-** घन, जलधर, वारिद, बादल, नीरद, वारिधर, पयोद, अम्बुद, पयोधर।

**मुनि :-** यती, अवधूत, संन्यासी, वैरागी, तापस, सन्त, भिक्षु, महात्मा, साधु, मुक्तपुरुष।

**मित्र :-** सखा, सहचर, स्नेही, स्वजन, सुहृदय, साथी, दोस्त।

**मोर :-** केक, कलापी, नीलकंठ, शिखावल, सारंग, ध्वजी, शिखी, मयूर, नर्तकप्रिय।

## (य)

**यम :-** सूर्यपुत्र, जीवितेश, श्राद्धदेव, कृतांत, अन्तक, धर्मराज, दण्डधर, कीनाश, यमराज।

**यमुना :-** कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, तरणि-तनूजा, तरणिजा, अर्कजा, भानुजा।

**यंत्रणा :-** व्यथा, तकलीफ, वेदना, यातना, पीड़ा।

**यकीन :-** भरोसा, ऐतबार, आस्था, विश्वास।

**यज्ञोपवीत :-** जनेऊ, उपवीत, ब्रह्मसूत्र।

**यतीम :-** बेसहारा, अनाथ, माँ-बापविहीन।

**यशस्वी :-** मशहूर, विख्यात, नामवर, कीर्तिवान, ख्यातिवान।

## (र)

**रात्रि :-** निशा, क्षया, रैन, रात, यामिनी, रजनी, त्रियामा, क्षणदा, शर्वरी, तमस्विनी।

**रात :-** रात्रि, रैन, रजनी, निशा, यामिनी, तमी, निशि, यामा, विभावरी।

**राजा :-** नृपति, भूपति, नरपति, नृप, महीप, राव, सम्राट, भूप, भूपाल, नरेश।

**रवि :-** सूरज, दिनकर, प्रभाकर, दिवाकर, सविता, भानु, दिनेश, अंशुमाली, सूर्य।

**रामचन्द्र :-** अवधेश, सीतापति, राघव, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, रघुराज, रघुवीर।

**रावण :-** दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश, दशकंध, दैत्येन्द्र।

**रक्त :-** खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित।

## (ल)

**लक्ष्मी :-** चंचला, कमला, पद्मा, रमा, हरिप्रिया, श्री, इंदिरा, पद्ममा, सिन्धुसुता, कमलासना।

**लड़का :-** बालक, शिशु, सुत, किशोर, कुमार।

**लड़की :-** बालिका, कुमारी, सुता, किशोरी, बाला, कन्या।

**लक्ष्मण :-** लखन, शेषावतार, सौमित्र, रामानुज, शेष।

**लता :-** बल्लरी, बल्ली, लतिका, बेली।

**लंघन :-** उपवास, व्रत, रोजा, निराहार।

## (व)

**वृक्ष :-** तरू, अगम, पेड़, पादप, विटप, गाछ, दरख्त, शाखी, विटप, द्रुम।

**विवाह :-** शादी, गठबंधन, परिणय, व्याह, पाणिग्रहण।

**वायु :-** हवा, पवन, समीर, अनिल, वात, मारुत।

**वसन :-** अम्बर, वस्त्र, परिधान, पट, चीर।

**विधवा :-** अनाथा, पतिहीना।

**विष :-** ज़हर, हलाहल, गरल, कालकूट।

**विश्व :-** जगत, जग, भव, संसार, लोक, दुनिया।

**वारिश :-** वर्षण, वृष्टि, वर्षा, पावस, बरसात।

**(श)**

**शेर :-** हरि, मृगराज, व्याघ्र, मृगेन्द्र, केहरि, केशरी, वनराज, सिंह, शार्दूल, हरि, मृगराज।

**शिव :-** भोलेनाथ, शम्भू, त्रिलोचन, महादेव, नीलकंठ, शंकर।

**शत्रु :-** रिपु, दुश्मन, अमित्र, वैरी, प्रतिपक्षी, अरि, विपक्षी, अराति।

**शिक्षक :-** गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।

**शेषनाग :-** अहि, नाग, भुजंग, व्याल, उरग, पन्नग, फणीश, सारंग।

**(ष)**

**षंजन :-** आलिंगन, मिलन।

**षंडाली :-** तालाब, ताल।

**षड्यंत्र :-** साजिश, कुचक्र, कूट-योजना।

**षडानन :-** षटमुख, कार्तिकेय, षाण्मातुर।

**(स)**

**समुद्र :-** सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, नीरनिधि, अर्णव, पयोनिधि, अब्धि, वारीश, जलधाम, नीरधि, जलधि, सिंधु, रत्नाकर, वारिधि।

**समूह :-** दल, झुंड, समुदाय, टोली, जत्था, मण्डली, वृंद, गण, पुंज, संघ, समुच्चय।

**सुमन :-** कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुष्प, फूल ।

**सीता :-** वैदेही, जानकी, भूमिजा, जनकतनया, जनकनन्दिनी, रामप्रिया।

**सर्प :-** साँप, अहि, भुजंग, ब्याल, फणी, पत्रग, नाग, विषधर, उरग, पवनासन।

**(ह)**

**हंगामा :-** कोलाहल, अशांति, शोरगुल, हल्ला, शोर 2. उत्पात, उपद्रव, हुड़दंग।

**हँसमुख :-** आनंदित, उल्लसित, मगन, प्रसन्नचित्त, खुशमिजाज।

**हँसी :-** मुस्कान, मुस्कारहट, ठहाका, खिलखिलाहट, मजाक, दिल्लगी, खिल्ली।

**हत्या :-** वध, हिंसा, कत्ल, खून।

**हत्यारा :-** हिंसक, खूनी, जीवघाती, कातिल, घातक।

# प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं और नए अर्थ का बोध कराते हैं उसे प्रत्यय कहते हैं। भाषा में प्रत्यय का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि उसके प्रयोग से मूल शब्द के अनेक अर्थों को प्राप्त किया जा सकता है। यौगिक शब्द बनाने में प्रत्यय का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

**प्रत्यय के उदाहरण –**

| | |
|---|---|
| खिल + आड़ी | खिलाड़ी |
| मिल + आवट | मिलावट |
| पढ़ + आकू | पढ़ाकू |
| झूल + आ | झूला |

**प्रत्यय तीन प्रकार–**

1. संस्कृत प्रत्यय
2. हिन्दी प्रत्यय
3. विदेशी प्रत्यय

**हिन्दी प्रत्यय के दो प्रकार होते है –**

- कृत् प्रत्यय
- तद्धित प्रत्यय

**1. संस्कृत प्रत्यय –**

जैसे –

| | |
|---|---|
| इत | हर्षित, गर्वित, लज्जित, पल्लवित |
| इक | मानसिक, धार्मिक, मार्मिक, पारिश्रमिक |
| ईय | भारतीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय |
| एय | आग्नेय, पाथेय, राधेय, कौंतेय |
| तम | अधिकतम, महानतम, वरिष्ठतम, श्रेष्ठतम |
| वान् | धनवान, बलवान, गुणवान, दयावान |

| | |
|---|---|
| मान् | श्रीमान्, शोभायमान, शक्तिमान, बुद्धिमान |
| त्व | गुरुत्व, लघुत्व, बंधुत्व, नेतृत्व |
| शाली | वैभवशाली, गौरवशाली, प्रभावशाली, शक्तिशाली |
| तर | श्रेष्ठतर, उच्चतर, निम्नतर, लघूत्तर |

**2. हिन्दी प्रत्यय –**

हिंदी प्रत्यय मुख्यतया दो प्रकार के होते है –

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

**1. कृत् प्रत्यय**

वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना होती है।

**संज्ञा की रचना करने वाले कृत प्रत्यय –**

**कृत प्रत्यय उदाहरण –**

| | |
|---|---|
| न | बेलन, बंधन, नंदन, चंदन |
| ई | बोली, सोची, सुनी, हँसी |
| आ | झूला, भूला, खेला, मेला |
| अन | मोहन, रटन, पठन |
| आहट | चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट |

जैसे –**विशेषण की रचना करने वाले कृत प्रत्यय –**

| | |
|---|---|
| आड़ी | खिलाड़ी, अगाड़ी, अनाड़ी, पिछाड़ी |
| एरा | लुटेरा, बसेरा |
| आऊ | बिकाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ |
| ऊ | डाकू, चाकू, चालू, खाऊ |

**कृत् प्रत्यय के भेद**

1. कृत् वाचक
2. कर्म वाचक
3. करण वाचक
4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

**1. कृत् वाचक –**

कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कृत् वाचक प्रत्यय कहलाते है।

**कृत् वाचक प्रत्यय उदाहरण –**

| | |
|---|---|
| हार | पालनहार, चाखनहार, राखनहार |
| वाला | रखवाला, लिखनेवाला, पढ़नेवाला |
| क | रक्षक, भक्षक, पोषक, शोषक |
| अक | लेखक, गायक, पाठक, नायक |
| ता | दाता, माता, गाता, नाता |

**2. कर्म वाचक कृत् प्रत्यय –**

कर्म का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय कर्म वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

**कर्म वाचक कृत् प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| औना | खिलौना, बिछौना |
| नी | ओढ़नी, मथनी, छलनी |
| ना | पढ़ना, लिखना, गाना |

**3. करण वाचक कृत् प्रत्यय –**

साधन का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय करण वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

**करण वाचक कृत प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| अन | पालन, सोहन, झाड़न |
| नी | चटनी, कतरनी, सूँघनी |
| ऊ | झाड़ू, चालू |
| ई | खाँसी, धाँसी, फाँसी |

**4. भाव वाचक कृत् प्रत्यय –**

क्रिया के भाव का बोध कराने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

**भाववाचक कृत् प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| आप | मिलाप, विलाप |
| आवट | सजावट, मिलावट, लिखावट |
| आव | बनाव, खिंचाव, तनाव |
| आई | लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई |

**5. क्रियावाचक कृत् प्रत्यय –**

क्रिया शब्दों का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय क्रिया वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं

**क्रिया वाचक कृत प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| या | आया, बोया, खाया |
| कर | गाकर, देखकर, सुनकर |
| आ | सूखा, भूला |
| ता | खाता, पीता, लिखता |

**तद्धित प्रत्यय –**

क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

**तद्धित प्रत्यय उदाहरण –**

| | |
|---|---|
| मानव + ता | मानवता |
| जादू + गर | जादूगर |
| बाल +पन | बालपन |
| लिख + आई | लिखाई |

**तद्धित प्रत्यय के भेद**

1. कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय
2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय
3. सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय
4. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय
5. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय
6. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय
7. स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय

**1. कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय –**

कर्ता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय कर्तृवाचक तद्धति प्रत्यय कहलाते हैं।

**कर्तृवाचक तद्धति प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| आर | सुनार, लुहार, कुम्हार |
| ई | माली, तेली |
| वाला | गाड़ीवाला, टोपीवाला, इमलीवाला |

**2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय –**

भाव का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

**भाववाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| आहट | कड़वाहट |
| ता | सुन्दरता, मानवता, दुर्बलता |
| आपा | मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा |
| ई | गर्मी, सर्दी, गरीबी |

**3. सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय –**

सम्बन्ध का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

**सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| इक | शारीरिक, सामाजिक, मानसिक |
| आलु | कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु |
| ईला | रंगीला, चमकीला, भड़कीला |
| तर | कठिनतर, समानतर, उच्चतर |

**4. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय –**

गुण का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

**गुणवाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| वान | गुणवान, धनवान, बलवान |
| ईय | भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय |
| आ | सूखा, रूखा, भूखा |
| ई | क्रोधी, रोगी, भोगी |

**5. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय –**

स्थान का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

**स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| वाला | शहरवाला, गाँववाला, कस्बेवाला |
| इया | उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया |
| ई | रूसी, चीनी, राजस्थानी |

**6. ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय –**

लघुता का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे –

| | |
|---|---|
| इया | लुटिया |
| ई | प्याली, नाली, बाली |
| ड़ी | चमड़ी, पकड़ी |
| ओला | खटोला, संपोला, मंझोला |

**7. स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय –**

स्त्रीलिंग का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

**स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| आइन | पंडिताइन, ठकुराइन |
| इन | मालिन, कुम्हारिन, जोगिन |
| नी | मोरनी, शेरनी, नन्दनी |
| आनी | सेठानी, देवरानी, जेठानी |

**उर्दू के प्रत्यय**

उर्दू भाषा का हिन्दी के साथ लम्बे समय तक प्रचलन में रहने के कारण हिन्दी भाषा में उर्दू भाषा प्रत्यय भी प्रयोग में आने लगे हैं।

जैसे –

| | |
|---|---|
| गी | ताजगी, बानगी, सादगी |
| गर | कारीगर, बाजीगर, सौदागर |
| ची | नकलची, तोपची, अफीमची |
| दार | हवलदार, जमींदार, किरायेदार |
| खोर | आदमखोर, चुगलखोर, रिश्वतखोर |
| गार | खिदमतगार, मददगार, गुनहगार |
| नामा | बाबरनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा |
| बाज | धोखेबाज, नशेबाज, चालबाज |
| मन्द | जरूरतमन्द, अहसानमन्द, अकलमन्द |
| आबाद | सिकन्दराबाद, औरंगाबाद, मौजमाबादइन्दा – बाशिन्दा, शर्मिन्दा, परिन्दा |

| | |
|---|---|
| इश | साजिश, ख्वाहिश, फरमाइश |
| गाह | ख्वाबगाह, ईदगाह, दरगाह |
| गीर | आलमगीर, जहाँगीर, राहगीर |
| आना | नजराना, दोस्ताना, सालाना |
| इयत | इंसानियत, खैरियत, आदमियत |
| ईन | शौकीन, रंगीन, नमकीन |
| कार | सलाहकार, लेखाकार, जानकार |
| दान | खानदान, पीकदान, कूङादान |
| बन्द | कमरबंद, नजरबंद, दस्तबंद |

# रस

**रस का शाब्दिक अर्थ** है – निचोड़। काव्य में जो आनन्द आता है वह ही काव्य का रस है। काव्य में आने वाला आनन्द अर्थात् रस लौकिक न होकर **अलौकिक** होता है। रस **काव्य की आत्मा** है। संस्कृत में कहा गया है कि **"रसात्मकम् वाक्यम् काव्यम्"** अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

- भरतमुनि के अनुसार 8 रस हैं।
- शांतरस को 9 वाँ रस माननेवाले – उद्भट
- वात्सल्य रस को 10 वाँ रस माननेवाले – पं. विश्वनाथ
- भक्तिरस को 11 वाँ रस माननेवाले – भानुदत्त, गोस्वामी
- प्रेयान नामक रस के प्रतिष्ठापक – रुद्रट

| **रस** | **स्थायी भाव** |
|---|---|
| श्रृंगार | रति |
| हास्य | हास |
| करुण | शोक |
| रौद्र | क्रोध |
| वीर | उत्साह |
| भयानक | भय |
| वीभत्स | जुगुप्सा |
| अद्भुत | विस्मय |
| शांत | निर्वेद |
| वात्सल्य | वत्सलता |
| भक्ति | ईश्वर विषयकरति |
| प्रेयान | स्नेह |

भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों में रस सिद्धान्त सबसे प्राचीन सिद्धान्त है। रस सिद्धान्त का विशद एवं प्रामाणिक विवेचन भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में ही सर्वप्रथम उपलब्ध होता है।

**आचार्य विश्वनाथ –** 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'

- काव्य के पठन – श्रवण, दर्शन से प्राप्त होने वाला लोकोत्तर आनन्द ही आस्वाद दशा में रस कहलाता है।

- रस की निष्पत्ति सामाजिक के हृदय में तभी होती है, जब उसके हृदय में रजोगुण और तमोगुण का तिरोभाव होकर सत्वगुण का उद्रेक होता है। इसमें ममत्व और परत्व की भावना तथा सांसारिक राग-द्वेष का पूर्णतया लोप हो जाता है
- रस अखण्ड होता है। सहृदय को विभाव अनुभाव व्यभिचारी भावों की पृथक्-पृथक् अनुभूति न होकर समन्वित अनुभूति होती है।

**रस की विशेषताएँ**

- रस वेद्यान्तर स्पर्श शून्य है।
- रस स्वप्रकाशानन्द तथा चिन्मय है।
- रस को ब्रह्मानन्द सहोदर माना गया है। (साहित्य दर्पण-आचार्य विश्वनाथ)
- रसानुभूति अलौकिक चमत्कार के समान है।
- रस को कुछ आचार्य सुख-दुखात्मक मानते हैं।
- रस मूलतः आस्वाद रूप है, आस्वाद्य पदार्थ नहीं है, फिर भी व्यवहार में 'रस का आस्वाद किया जाता है' ऐसा प्रयोग गौण रूप से प्रचलित है। इसलिए रस अपने रूप से जनित है।
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में रस सूत्र दिया है।

  **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पति'**

  इस मत के अनुसार जिस प्रकार नाना व्यंजनों के संयोग से भोजन करते समय पाक रसों का आस्वादन होता है। उसी प्रकार काव्य या नाटक के अनुशीलन से अनेक भावों का संयोग होता है, जो आस्वाद-दशा में 'रस' कहलाता है।

**रस के अवयव**

**1. स्थायी भाव**

- मन के भीतर स्थायी रूप से रहने वाला सुषुप्त संस्कार या वासना को स्थायी भाव कहते हैं।
- स्थायी भाव अनुमूल आलम्बन तथा उद्दीपन रूप उद्बोधन सामग्री के संयोग से रस रूप में अभिव्यक्त होते हैं।
- स्थायी भाव ऐसा सागर है जो सभी विरोधी अविरोधी भावों को आत्मसात् करके अपने अनुरूप बना लेता है।
- मम्मट आदि आचार्यों ने (1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) भय (6) जुगुप्सा (7) निर्वेद (8) विस्मय नौ स्थायी भाव माने हैं।

  रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहो भयं तथा।

  जगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः।

  निर्वेदः स्थायिभावोस्ति शान्तोऽ्पि नवमो रसः।।
- भरत मुनि के समय प्रारम्भ में निर्वेद को छोङ आठ भाव ही माने गए थे।
- परवर्ती काल में हिन्दी के कवियों एवं आचार्यों ने वात्सल्य रस का स्थायी भाव 'वत्सल' स्वीकार किया है तथा भक्ति रस में भक्तवत्सल्य रति को ग्यारहवाँ स्थायी भाव स्वीकार किया है।

**2. विभाव**

जो कारण हृदय में स्थित स्थायी भाव को जाग्रत तथा उद्दीप्त करें अर्थात् रसानुभूति के कारण को विभाव कहते हैं।

विभाव के दो भेद हैं –

1. **आलम्बन विभाव –** जिस व्यक्ति या वस्तु के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं।

   आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य या नाट्य में वर्णित नायक-नायिका आदि पात्रों को आलम्बन विभाव कहते हैं।

2. **उद्दीपन विभाव –** स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण उद्दीपन विभाव होते हैं।

   नायक नायिका का रूप सौन्दर्य, पात्रों की चेष्टाएँ, ऋतु, उद्यान, चाँदनी, देश-काल आदि उद्दीपन विभाव होते हैं।

   इन्हें दो भागों में विभाजित किया जाता है –

   1. विषयनिष्ठ उद्दीपन विभाव
   2. बाह्य उद्दीपन विभाव।

   शारीरिक चेष्टाएँ, हाव-भाव विषयनिष्ठ उद्दीपन विभाव तथा प्राकृतिक वातावरण, देशकाल आदि बाह्य उद्दीपन विभाव होते हैं।

**3. अनुभाव**

'अनुभावो भाव बोधक' अर्थात् भाव का बोध कराने वाले अनुभाव होते हैं।

रसानुभूति में विभाव कारण रूप हैं तो अनुभाव कार्य रूप होते हैं। अनुभव कराने के कारण ही ये अनुभाव कहलाते हैं।

आलम्बन उद्दीपन विभाव द्वारा रस को पुष्ट करने वाली शारीरिक मानसिक अथवा अनायास होने वाली चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती हैं।

भरत मुनि ने अनुभााव के तीन भेद (आंगिक, वाचिक, सात्त्विक) किए हैं। भानुदत्त ने इसके चार भेद माने जो परवर्ती आचार्यों ने स्वीकार किए –

1. **आंगिक या कायिक अनुभाव –** शरीर की चेष्टाओं से व्यक्त कार्य, जैसे-भ्रू संचालन, आलिंगन, कटाक्षपात, चुम्बन आदि आंगिक अनुभाव होते हैं।
2. **वाचिक अनुभाव –** वाणी के द्वारा मनोभावों की अभिव्यक्ति (परस्परालाप) इसमें होती है, इसे 'मानसिक' अनुभाव भी कहा गया है।
3. **सात्विक अनुभाव –** ये अन्तःकरण की वास्तविक दशा के प्रकाशक होते हैं। सत्व से उत्पन्न होने के कारण इन्हें सात्विक कहा जाता है। सात्विक अनुभाव आठ हैं-स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, वेपथु, स्वरभंग, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय।
4. **आहार्य अनुभाव –** नायक-नायिका के द्वारा पात्रानुसार, वेशभूषा, अलंकार आदि को धारण करना अथवा देशकाल का कृत्रिम रूप में उपस्थापन करना आहार्य अनुभाव कहलाता है।

**4. व्यभिचारी (संचारी) भाव**

**विविधम् आभिमुख्येन रसेषु चरन्तीति व्याभिचारिणः**

व्यभिचारी (संचारी) भाव स्थायी भाव के साथ-साथ संचरण करते हैं, इनके द्वारा स्थायी भाव की स्थिति की पुष्टि होती है। एक रस के स्थायी भाव के साथ अनेक संचारी भाव आते हैं तथा एक संचारी किसी एक स्थायी भाव के साथ या रस के साथ नहीं रहता है, वरन् अनेक रसों के साथ संचरण करता है, यही उसकी व्यभिचार की स्थिति है।

संचारी भाव उसी प्रकार उठते हैं और लुप्त होते हैं जैसे जल में बुदबुदे और लहरें उठती हैं और विलीन होती रहती है।

भरत मुनि ने **तैंतीस** संचारी भावों का उल्लेख किया है –

- निर्वेद
- ग्लानि
- शंका
- असूया
- मद
- श्रम
- आलस्य
- दैन्य
- चिन्ता
- मोह
- स्मृति
- धृति
- व्रीड़ा
- चपलता
- हर्ष
- आवेग
- जड़ता
- गर्व
- विषाद
- औत्सुक्य
- निद्रा
- अपस्मार
- सुप्त
- विबोध
- अमर्ष
- अवहित्था
- उग्रता
- मति
- व्याधि
- उन्माद
- मरण
- त्रास
- वितर्

**रसों के प्रकार**

नाट्यशास्त्र में आठ स्थायी भावों और उन पर आधृत आठ रसों की विवेचना प्रस्तुत की लेकिन पश्चवर्ती आचार्यों ने रसों की संख्या नौ निर्धारित की –

'श्रृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानकाः।

वीभत्साद्भुतसंज्ञो चेच्छान्तोऽपि नवमो रसः।'

'नागानन्द' रचना के पश्चात् 'शान्त रस', महाकवि सूरदास की रचनाओं से 'वात्सल्य रस', 'भक्तिरसामृत सिंधु' और 'उज्जवलनीलमणि' नामक ग्रन्थों की रचना के पश्चात् 'भक्ति रस' को स्वीकार किया गया। इस प्रकार रसों की कुल संख्या ग्यारह हो गई।

**रस के उदाहरण**

1. **श्रृंगार रस**

श्रृंगार रस को रसराज कहा जाता है।

**स्थायी भाव** – रति

**आलम्बन विभाव** – नायक या नायिका

**उद्दीपन विभाव** – नायिका के कुच, नितम्बादि अंग, एकान्त, वन-उपवन, चन्द्र-ज्यौत्स्ना, वसन्त, पुष्प, नायिका अथवा अनुभाव के चेष्टाएँ – हावभाव, तिरछी चितवन, मुस्कान।

**संचारी भाव** – तैंतीस संचारियों में उग्रता, मरण, आलस्य, जुगुप्सा को छोड़कर शेष सभी संचारी भाव, मुख्यतः लज्जा, शर्म, चपलता।

श्रृंगार रस दो भागों में विभक्त किया गया है –

1) **संयोग श्रृंगार**

आचार्य धनंजय – 'जहाँ अनुकुल विलासी एक-दूसरे के दर्शन-स्पर्शन इत्यादि का सेवन करते हैं। वह आनन्द से युक्त संयोग श्रृंगार कहलाता है।'

आचार्य विश्वनाथ – 'जहाँ एक-दूसरे के प्रेम में अनुरक्त नायक-नायिका दर्शन-स्पर्शन आदि का सेवन करते हैं वह संयोग श्रृंगार कहलाता है।'

संयोग- शृंगार के वण्र्य विषय में प्रेम की उत्पत्ति, आलम्बन एवं क्रीङाएँ होती हैं। उत्पत्ति प्रत्यक्ष दर्शन, गुण श्रवण, चित्र दर्शन या स्वप्न दर्शन द्वारा होती है। यथा-

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैनन ही सौं बात।। (बिहारी)

**संयोग शृंगार रस के अन्य उदाहरण –**

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनु हंसे देन कहै नटि जाय।। (बिहारी)
देखन मिस मृग-बिहँग-तरु, फिरति बहोरि-बहोरि।
निरखि-निरखि रघुवीर-छवि, बाढी प्रीति न थोरि।।
देखि रूप लोचन ललचाने। हरखे जनु निज निधि पहिचाने।।
थके नयन रघुपति-छवि देखी। पलकन हू परहरी निमेखी।।
अधिक सनेह देह भइ भोरी। सरद-ससिहि जनु चितव चकोरी।।
लोचन-मग रामहिं उर आनी। दीन्हे पलक-कपाट सयानी।।

**(रामचरितमानस)**

2) **वियोग शृंगार**

**आचार्य भोज –** ''जहाँ रति नामक भाव प्रकर्ष को प्राप्त हो, लेकिन अभीष्ट को न पा सके। वहाँ विप्रलम्भ शृंगार कहा जाता है।''

**आचार्य भानुदत्त –** ''युवा और युवती की परस्पर मुदित पंचेन्द्रियों के पारस्परिक सम्बन्ध का अभाव अथवा अभीष्ट की अप्राप्ति विप्रलम्भ है।''

वियोग शृंगार की 10 दशाएँ निर्धारित हैं –

1. अभिलाषा 2. चिन्ता 3. स्मरण 4. गुणकथन 5. उद्वेग 6. प्रलाप 7. उन्माद 8. व्याधि 9. जङता 10. मरण।

**वियोग शृंगार के चार प्रकार हैं**

1. पूर्वराग
2. मान
3. प्रवास
4. भिशाप या करुणात्मक।

**यथा –**

घङी एक नहिं आवङै, तुम दरसण बिन मोय।
तुम हो मेरे प्राण जी, काँसू जीवन होय।।
धान न भावै, नींद न आवै, विरह सतावे मोइ।
घायल सी घूमत फिरुं रे, मेरो दरद न जाणै कोइ।।

**(मीरा)**

**वियोग शृंगार रस के अन्य उदाहरण –**

बैठि, अटा सर औधि बिसूरति, पाय सँदेस नी 'श्रीपति' पी के।
देखत छाती फटै निपटै, उछटै, जब बिज्जु-छटा छबि नीके।।
कोकिल कूकंै, लगैं तक लूकैं, उठैं हिय हूकैं बियोगिनि ती के।
बारि के बाहक, देह के दाहक, आये बलाहक गाहक जी के।।

**(श्रीपति)**

अति मलीन बृखभानु-कुमारी,
अध मुख रहित, उरध नहिं चितवति, ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।
छूटे चिकुर, बदन कुम्हिलानो, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी।।

**1. हास्य रस**

- स्थायी भाव – हास
- आलम्बन विभाव – हास्यास्पद वचन, विकृत वेश या विकृत कार्य
- उद्दीपन विभाव – अनुपयुक्त वचन, अनुपयुक्त वेश, अनुपयुक्त चेष्टा
- अनुभाव – मुख का फुलाना, हँसना, आँखें बन्द होना, ओठ नथूने आदि का स्फुरण।
- संचारी भाव – चापल्य, उत्सुकता, निद्रा, आलस्य, अवहित्था।

**हास्य रस में छः प्रकार के हास्य का उल्लेख होता है।**

- स्मित – आँखों में खुशी झलकना
- हसित – मुस्कुराना
- विहसित – दंतावली दिखाई देना
- अवहसित – कंधे उचकाना एवं हँसी की आवाज आना
- अतिहसित – जोर-जोर से ठहाके लगाना
- अपहसित – हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाना, इधर-उधर गिरना।

**यथा –**

नाक चढै सी-सी करै, जितै छबीली छैल।
फिरि फिरि भूलि वही गहै, प्यौ कंकरीली गैल।।

**(बिहारी)**

**हास्य रस के अन्य उदाहरण –**

सखि! बात सुनो इक मोहन की, निकसी मटुकी सिर रीती ले कै।
पुनि बाँधि लयो सु नये नतना, रू कहँू-कहँू बुन्द करी छल कै।।
निकसी उहि गैल हुते जहाँ मोहन, लीनी उतारि तबै चल कै।

पतुकी धरि स्याम खिसाय रहे, उत ग्वारि हँसी मुख आँचल कै।।

तेहि समाज बैठे मुनि जाई। हृदय रूप-अहमिति अधिकाई।।

तहँ बैठे महेस-गन दोऊ! विप्र बेस गति लखइ न कोऊ।।

सखी संग दै कुँवर तब चलि जनु राज-मराल।

देखत फिरइ महीप सब कर-सरोज जय-माल।।

जेहि दिसि नारद बैठे फूली। सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली।।

पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर-गन मुसकाहीं।।

**3. करुण रस**

स्थायी भाव – शोक

आलम्बन विभाव – प्रिय व्यक्ति का दुख, मृत शरीर, इष्टनाश।

उद्दीपन विभाव – आलम्बन का रुदन, मृतक दाह, यादें, स्मरण।

अनुभाव – अश्रुपात, विलाप, भाग्यनिन्दा, भूमिपतन, उच्छवास।

संचारी भाव – निर्वेद्र, मोह, अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जङता, उन्माद।

**यथा –**

राघौ गीध गोद करि लीन्हो।

नयन सरोज सनेह सलिल सुचि मनहुं अरघ जल दीन्हों।।

**करुण रस के अन्य उदाहरण**

प्रिय मृत्यु का अप्रिय महा संवाद पाकर विष-भरा।

चित्रस्थ-सी, निर्जीव सी, हो रह गयी हत उत्तरा।।

संज्ञा-रहित तत्काल ही वह फिर धरा पर गिर पङी।

उस समय मूर्छा भी अहो! हितकर हुई उसको बङी।।

फिर पीटकर सिर और छाती अश्रु बरसाती हुई।

कुररी-सदृश सकरुण गिरा से दैन्य दरसाती हुई।।

बहुविधि विलाप-प्रलाप वह करने लगी उस शोक में।

निज प्रिय-वियोग समान दुख होता न कोई लोक में।।

देखि सुदामा की दीन दसा करूना करि कै करुनानिधि रोये।

पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैननि के जल सों पग धोये।।

**4. रौद्र रस**

- स्थायी भाव – क्रोध
- आलम्बन विभाव – अपराधी व्यक्ति, शत्रु, विपक्षी, द्रोही, दुराचार।

- उद्दीपन विभाव – कटुवचन, शत्रु के अपराध, शत्रु की गर्वोक्ति।
- अनुभाव – नेत्रों का रक्तिम होना, त्यौरी चढ़ाना, ओठ चबाना।
- संचारी भाव – मद, उग्रता, अमर्ष, स्मृति, जङता, गर्व।

**यथा –**

तुमने धनुष तोङा शशिशेखर का,

मेरे नेत्र देखो,

इनकी आग में डूब जाओगे सवंश राघव।

गर्व छोङो

काटकर समर्पित कर दो अपने हाथ।

मेरे नेत्र देखो।

**रौद्र रस के अन्य उदाहरण –**

श्री कृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे।

सब शोक अपना भूलकर करतल-युगल मलने लगे।।

संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पङे।

करते हुए यह घोषणा वे हो गये उठकर खङे।।

उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।

मानो हवा के जोरे से सोता हुआ सागर जगा।

मुख बालरवि सम लाल होकर ज्वाल-सा बोधित हुआ।

प्रलयार्थ उनके मिस वहाँ क्या काल ही क्रोधित हुआ।।

भाखे लखन, कुटिल भयी भौंहें।

रद-पट फरकत नैन रिसौहैं।।

कहि न सकत रघुवीर डर, लगे वचन जनु बान।

नाइ राम-पद-कमल-जुग, बोले गिरा प्रसाद।।

भाषे लखन कुटिल भई भौंहे, रद-पट फरकत नयन रिसौहें।

रघुवंशिन्ह मैं जहँ कोऊ होई, तेहि समाज अह कहई न कोई।।(रौद्र)

आश्रय – लक्ष्मण

विषय (आलंबन) – जनक के वचन

उद्दीपन विभाव – पूर्वजों की वीरता, जनक के वचन की कठोरता

अनुभाव – होठ फङकना, भौंहे टेढी होना

संचारी भाव – अमर्श, गर्व

स्थायी भाव – क्रोध

रस – रौद्र

उस काल मारे क्रोध के तूने काँपने उसका लगा,मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।

मुख बाल रवि सम लाल होकर ज्वाला सा बोधित हुआ, प्रलयार्थ उनके मिस वहाँ, क्या काल ही क्रोधित हुआ।। (रौद्र)

- आश्रय – योद्धा
- विषय (आलंबन) – शत्रु
- उद्दीपन विभाव – शत्रु की कड़वी बातें
- अनुभाव – शरीर का काँपना, मुख का लाल होना
- संचारी भाव – अमर्श, गर्व, उग्रता
- स्थायी भाव – क्रोध
- रस – रौद्र

गर्भ के अर्भक काटन को, पटुधार कुठार कराल है जाको।

सोई हौं बूझत राजसभा, धनु को दल्यौ हौं दलिहौं बल ताको।

लघु आनन उतर देत बड़ो, लरिहै मरिहै करिहै कछु साको।

गोरो गरुर गुमान भर्यो, कहु कौसिक छोटो सो छोटो है काको ।। (रौद्र)

- आश्रय – परशुरामजी
- विषय (आलंबन) – लक्ष्मण
- उद्दीपन विभाव – लक्ष्मण द्वारा परशुराम का परिहास, अपमान एवं व्यंग्यपूर्ण वचन
- अनुमान – कुठार दिखाना, दाँत पीसना, आँखे लाल करना, भौंहे टेढी करना
- संचारी भाव – गर्व, आवेग, उग्रता, अमर्श
- स्थायी भाव – क्रोध
- रस – रौद्र

**5. वीर रस**

- स्थायी भाव – उत्साह
- आलम्बन विभाव – शत्रु, शत्रु का उत्कर्ष।
- आश्रय – नायक (वीर पुरुष)।
- उद्दीपन विभाव – रिपु की गर्वोक्ति, मारु आदि राग, रणभेरी, रण कोलाहल।
- अनुभाव – अंग स्फुरण, रक्तिम नेत्र, रोमांच।
- संचारी भाव – हर्ष, धृति, गर्व, असूया आदि।

वीर रस के अन्तर्गत चार प्रकार के वीरों का उल्लेख किया गया है –

1) युद्धवीर (भीम, दुर्योधन)

2) धर्मवीर (युधिष्ठिर)

3) दानवीर (कर्ण)

4) दयावीर (राजा शिवि)

**वीर रस के उदाहरण –**

सकल सूरसामंत, समरि बल जंत्र मंत्र तस।
उट्ठिराज प्रथिराज, बाग मनो लग वीर नट।
कढत तेग मनो वेग, लागत मनो बीज झट्ट घट।
थकि रहे सूर कौतिग गिगन, रगन मगन भइ श्रोन धर।
हर हरिष वीर जग्गे हुलस हुरव रंगि जब रत्त वर।।

**(चन्दबरदाई)**

स्व-जाति की देख अतीव दुर्दशा
विगर्हणा देख मनुष्य-मात्र की।
निहार के प्राणि-समूह-कष्ट को
हुए समुत्तेजित वीर-केसरी।
हितैषणा से निज जन्म-भूमि की
अपार आवेश ब्रजेश को हुआ।
बनी महा बंक गठी हुई भवे,
नितान्त विस्फारित नेत्र हो गये।।

मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा जानो मुझे।
हे सारथे! हैं द्रोण क्या? आवें स्वयं देवेन्द्र भी।
वे भी न जीतेंगे समर में आज क्या मुझसे कभी।।

**6. भयानक रस**

- स्थायी भाव – भय
- आलम्बन विभाव – बाघ, चोर, भयंकर वन, शक्तिशाली का कोप, भयानक दृश्य।
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन की चेष्टाएँ, नीरवता, कोलाहल।
- अनुभाव – गिड़गिड़ाना, श्लथ होना, आँखें बन्द करना, स्वर भंग, पलायन, मूर्छा ।
- संचारी भाव – दैन्य, जड़ता, आवेग, शंका, चिन्ता आदि।

**यथा –**

और जब आई घोर काल रात्रि,

वे आततायी टूट पडे अबलाओं पर,

नोंचते, चबाते उनका माँस, भोगते,

कर्णबेधी-चीत्कार, हाहाकार,

दुराचार दृष्टिवेधी

देख नहीं सकी अबला, अचेत हो गई -सुलक्षणा

**भयानक रस के अन्य उदाहरण –**

समस्त सर्पों सँग श्याम ज्यों कढे,

कलिंद की नन्दिनि के सु-अंक से।

खडे किनारे जितने मनुष्य थे,

सभी महाशंकित भीत हो उठे।।

हुए कई मूर्छित घोर त्रास से,

कई भगे, मेदिनि में गिरे कई।

हुई यशोदा अति ही प्रकंपिता,

ब्रजेश भी व्यस्त-समस्त हो गये।।

उधर गरजती सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के जालों सी।

चली आ रही फैन उगलती, फन फैलायें व्यालों सी।।

**(जयशंकर प्रसाद)**

**7. वीभत्स रस**

- स्थायी भाव – जुगुप्सा
- आलम्बन विभाव – घृणास्पद वस्तु या कार्य, माँस, रक्त, अस्थि, श्मशान, दुर्गन्ध।
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन के कार्य, रक्त, माँस आदि का सडना, कुत्ते-गिद्ध आदि द्वारा शव नोंचना।
- अनुभाव – मुँह मोडना, नाक-आँख बंद करना, थूकना।
- संचारी भाव – मोह, असूया, अपस्मार, आवेग, व्याधि जडता आदि।

**वीभत्स रस के उदाहरण –**

कहाँ कमध कहाँ मथ्थ कहाँ कर चरन अंत रूरि।

कहाँ कध वहि तेग, कहौं सिर जुट्टि फुट्टि उर।

कहौ दंत मत्त हय षुर षुपरि, कुम्भ भ्रसुंडह रूंड सब।

हिंदवान रान भय भान मुष, गहिय तेग चहुवान जब।।

**(चन्दबरदाई)**

सिर पर बैठो काग आंखि दोउ खात निकारत

खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनन्द डर धारत।

8. **अद्भुत रस**

- स्थायी भाव – विस्मय (आश्चर्य)
- आलम्बन विभाव – अलौकिक या आश्चर्यजनक वस्तु
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन का गुण या कार्य।
- अनुभाव – रोमाँच, कँप, स्वेद, संभ्रम।
- संचारी भाव – वितर्क, भ्रान्ति, हर्ष, शंका, आवेग, मोह।

**यथा –**

एक अचम्भा देख्यौ रे भाई।

ठाढा सिंह चरावै गाई।।

जल की मछली तरवर ब्याई।

पकडि बिलाइ मुरगै खाई।।

**(कबीर)**

**अद्भुत रस के अन्य उदाहरण –**

अखिल भुवन चर-अचर जग हरिमुख में लखि मातु।

चकित भयी, गदगद वचन, विकसित दृग, पुलकातु।।

दिखरावा निज मातहि उद्भुत रूप अखंड।

रोम-रोम प्रति लागे कोटि-कोटि ब्रह्मांड।।

अगनित रवि-ससि सिव चतुरानन।

बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन।

तनु पुलकित, मुख बचन न आवा।

नयन मूँदि चरनन सिर नावा।।

9. **शान्त रस**

- स्थायी भाव – निर्वेद या वैराग्य
- आलम्बन विभाव – निर्वेद उत्पन्न करने वाली वस्तु, सांसारिक नश्वरता।
- उद्दीपन विभाव – सत्संग, पुण्याश्रम, तीर्थ, एकान्त।
- अनुभाव – रोमांच, दृढ़ता, कथन, चेतावनी, संकल्प।
- संचारी भाव – धृति, मोह, निर्वेद, हर्ष, विमर्श।
- आश्रय – ज्ञानी व्यक्ति।

**यथा –**

जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।

फूटा कुम्भ जल जलहिं समाना यह तथ कह्यो गियानी।।

**(कबीर)**

**शान्त रस के अन्य उदाहरण –**

थिर नहिं जउबन थिर नहिं देह

थिर नहिं रहए बालमु सओं नेह।

थिर जनु जानह ई संसार

एक पए थिर रह पर उपकार।।

**(विद्यापति)**

बुद्ध का संसार त्याग –

क्या भाग रहा हूँ भार देख?

तू मेरी ओर निहार देख-

मैं त्याग चला निस्सार देख।

अटकेगा मेरा कौन काम।

ओ क्षणभंगुर भव! राम-राम!

रूपाश्रय तेरा तरुण गात्र,

कह कब तक है वह प्राण-मात्र?

भीतर भीषण कंकाल-मात्र,

बाहर-बाहर है टीमटाम।

ओ क्षणभंगुर भव! राम-राम!

**10. वात्सल्य रस**

- स्थायी भाव – वत्सलता
- आलम्बन विभाव – बच्चा (संतान)
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन की चेष्टाएँ
- अनुभाव – स्नेह से देखना, आलिंगन, चुम्बन, पालने झुलाना।
- संचारी भाव – हर्ष, गर्व आदि।
- आश्रय – माता-पिता।

**यथा –**

जसोदा हरि पालने झुलावै
हलरावै दुलराय मल्हावै जोइ सोई कछु गावै।
मेरे लाल को आओ निन्दरिया काहे न आनि सुलावै।
कबहुँ पलक हरि मूंद लेत कबहुँ अधर फरकावै।।

**(सूरदास)**

**वात्सल्य रस के अन्य उदाहरण –**

हरि अपने रँग में कछु गावत।
तनक तनक चरनन सों नाचत, मनहिं-मनहिं रिझावत।
बाँहि उँचाई काजरी-धौरी गैयन टेरि बुलावत।
माखन तनक आपने कर ले तनक बदन में नावत।
कबहुँ चितै प्रतिबिंब खंभ में लवनी लिये खवावत।
दुरि देखत जसुमति यह लीला हरखि अनन्द बढ़ावत।।
मैया कबहुँ बढ़ेगी चोटी।
कितनी बार मोहिं दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।।

**(सूरदास)**

**11. भक्ति रस**

- स्थायी भाव – भगवद्विषयक रति
- आलम्बन विभाव – आराध्य देव, गुरुजन, इष्ट
- उद्दीपन विभाव – आराध्य या आलम्बन का रूप, उनके कार्य एवं लीलाएँ।
- अनुभाव – अश्रु, रोमांच, कंठावरोध, गद्गद् होना, नेत्र बंद होना।
- संचारी भाव – जगुप्सा, आलस्य आदि के अतिरिक्त सभी मुख्यतः हर्ष, आवेग, दैन्य, स्मरण।

शास्त्रों में **नौ प्रकार की भक्ति (नवधाभक्ति)** का उल्लेख मिलता है–

1. श्रवण 2. कीर्तन 3. स्मरण 4. पाद सेवन 5. अर्चन 6. वंदन 7. दास्य 8. साख्य 9. आत्म निवेदन।

**भक्ति रस के उदाहरण –**

राम जपु राम जपु राम बावरे।
घोर भव नीर निधि नाम निज नाव रे।।

**(तुलसी)**

बसौ मेरे नैनन में नन्दलाल।

मोहनी सूरत सांवरी सूरत, नैणा बने विसाल।

अधर सुधारस मुरली राजती, उर वैयन्ती माल।

क्षुद्र घटिका कटि तट सोभित नुपुर सबद रसाल।

मीरा के प्रभु सन्तन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

**(मीरा)**

जाको हरि दृढ करि अंग कर्यो।

सोई सुसील, पुनीत, बेद-बिद विद्या-गुननि भर्यो।

उतपति पांडु-सुतन की करनी सुनि सतपंथ डर्यो।

ते त्रैलोक्य-पूज्य, पावन जस सुनि-सुनि लोक तर्यो।

जो निज धरम बेद बोधित सो करत न कछु बिसरयो।

बिनु अवगुन कृकलासकूप मज्जित कर गहि उधर्यो।।

STEP UP ACADEMY

# लिंग

शब्द के जिस रूप से उसकी जाति (नर, मादा) का बोध होता है, उसे लिंग (Gender in hindi) कहते हैं।

**लिंग दो प्रकार के होते हैं –**

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग

शब्दों के जिस रूप में उनके 'नरत्व' (पुरुषत्व) का बोध होता है, उसे 'पुल्लिंग ' तथा शब्दों के जिस रूप से उसके 'स्त्रीत्व' का बोध होता है, उसे 'स्त्रीलिंग' कहते हैं |

**जैसे –**

**पुल्लिंग शब्द –** लङका, बैल, पेङ, नगर आदि।

**स्त्रीलिंग शब्द –** गाय, लङकी, लता, नदी आदि।

हिन्दी भाषा में सृष्टि के समस्त पदार्थों को दो ही लिंगों में विभक्त किया गया है।

निर्जीव शब्दों का लिंग निर्धारण कठिन होता है, सजीव शब्दों का लिंग निर्धारण सरलता से हो जाता है।

संस्कृत के पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग शब्द, जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, उसी रूप में स्वीकार कर लिए गए हैं, जैसे- तन, मन, धन, देश, जगत् आदि पुल्लिंग तथा सुन्दरता, आशा, लता दिशा जैसे शब्द स्त्रीलिंग है।

## पुल्लिंग

हिन्दी में जो शब्द रूप या बनावट के आधार पर पुल्लिंग होते हैं, उनका परिचय इस प्रकार है

- **अकारान्त पुल्लिंग शब्द-** राम, बालक, गृह, सूर्य, सागर आदि।
- **आकारान्त पुल्लिंग शब्द-** घङा, चूना, बूरा आदि।
- **इकारान्त पुल्लिंग शब्द-** कवि, हरि, कपि, वारि।
- **ईकारान्त पुल्लिंग शब्द-** मोती, पानी, घी आदि।
- **उकारान्त पुल्लिंग शब्द-** भानु, शिशु, गुरु आदि।
- **ऊकारान्त पुल्लिंग शब्द-** बाबू, चाकू, आलू, भालू आदि।
- **प्रत्यान्त पुल्लिंग शब्द –** आव या आवा (घुमाव, पङाव, बढ़ावा, चढ़ावा), ना (चलना, तैरना, सोना, जागना,) पन (लङकपन, भोलापन, बङप्पन, बचपन), आन (मिलान, खानपान, लगान), खाना (डाकखाना, चिङियाखाना)।
- अर्थ की दृष्टि से पुल्लिंग शब्द प्रायः धातुओं और रत्नों के नाम – सोना, लोहा, हीरा, मोती आदि **(चाँदी को छोङकर)**।
- भोज्य पदार्थ पेङा, लड्डू, हलुवा, अनाजों के नाम गेहूँ, जौ, चना।

- दिनों-महीनों के नाम सोमवार से रविवार तक सभी दिन, हिन्दी महीनों के नाम चैत्र, बैसाख, सावन, भादों आदि।
- हिमालय, हिन्दमहासागर, भारत, चन्द्रमा आदि पर्वत, सागर, देश और ग्रहों के नाम (पृथ्वी) पुल्लिंग होते हैं।

## स्त्रीलिंग

**रूप या बनावट के आधार पर**

- **आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द** - लता, सरिता, मामला, उदारता
- **इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द** - मति, रुचि, छवि।
- अग्नि संस्कृत में पुल्लिंग है, परन्तु हिन्दी में स्त्रीलिंग है। (**अपवाद**)।
- **ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द** - नदी, सरस्वती।
- **उकारान्त एवं ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द**- धातु, बालू, सरयू।
- **प्रत्यान्त स्त्रीलिंग शब्द** – 'इया' (डिबिया, खटिया, बछिया, बिटिया)। 'अन' (लगन, जलन, उलझन, तपन, सूजन), 'अ' (चहक, महक, तड़प आदि।) 'आई' (लड़ाई, मिठाई, लिखाई, पढ़ाई, खटाई), 'त' (अदालत, वकालत, कीमत, इज्जत, वसीयत आदि)।
- वे संज्ञा, जिनके अन्त में 'ख' स्त्रीलिंग-भूख, आँख, साख, कोख आदि।
- अपवाद दुःख, सुख, मुख आदि पुल्लिंग हैं।

## अर्थ की दृष्टि से

नक्षत्रों (रोहिणी, भरणी), नदियों व झीलों (गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू, सांभर, डल), तिथियों (पड़वा, दोयज, तीज), भाववाचक संज्ञाएँ इच्छा, अर्चना, ऋद्धि-सिद्धि कटुता, महानता, सरलता आदि।

## वाक्य रचना में लिंग के शुद्ध प्रयोग

- संज्ञा शब्द पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होते हैं।
- सर्वनाम में लिंग भेद नहीं होता, क्योंकि सर्वनाम का लिंग निर्णय 'क्रिया' के आधार पर होता है।
- विशेषण पद प्रायः अपने निकटतम विशेष्य के अनुसार ही स्त्रीलिंग या पुल्लिंग होते हैं – अच्छा लड़का, अच्छी बात, काला बछड़ा, काली गाय, बड़ा बेटा, बड़ी बेटी आदि।
- क्रिया पदों का लिंग कर्ता के अनुसार होता है, नदी बहती है। झरना बहता है।
- कर्ता में विकल्प होने पर क्रिया का लिंग बाद वाले कर्ता के समान होता है, जैसे-राम या सीता गई। वहाँ कुआँ या नदी दिखाई पड़ेगी।

## लिंग – परिवर्तन

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कतिपय नियम इस प्रकार हैं –

1. **शब्दान्त 'अ' को 'आ' में बदलकर-**

छात्र-छात्रा

वृद्ध-वृद्धा

पूज्य-पूज्या

भवदीय-भवदीया

सुत-सुता

अनुज-अनुजा

**2. शब्दान्त 'अ' को 'ई' में बदलकर –**

देव-देवी

पुत्र -पुत्री

ब्राह्मण-ब्राह्मणी

मेंढक-मेंढकी

गोप-गोपी

दास-दासी

**3. शब्दान्त 'आ' को 'ई' में बदलकर-**

नाना-नानी

बेटा-बेटी

लड़का-लड़की

रस्सा-रस्सी

घोड़ा-घोड़ी

चाचा-चाची

**4. शब्दान्त 'आ' को 'इया' में बदलकर –**

बूढ़ा-बुढ़िया

चूहा-चुहिया

कुत्ता-कुतिया

डिब्बा-डिबिया

बेटा-बेटिया

लोटा-लुटिया

**5. शब्दान्त प्रत्यय 'अक' को 'इका' में बदलकर –**

बालक-बालिका

लेखक-लेखिका

पाठक-पाठिका

गायक-गायिका

नायक-नायिका

**6. 'आनी' प्रत्यय लगाकर –**

देवर-देवरानी

चौधरी -चौधरानी

भव-भवानी

जेठ-जेठानी

सेठ-सेठानी

**7. 'नी' प्रत्यय लगाकर –**

शेर-शेरनी

मोर-मोरनी

सिंह-सिंहनी

ऊँट-ऊँटनी

जाट-जाटनी

भील-भीलनी

**8. शब्दान्त में 'ई' के स्थान पर 'इनी' लगाकर –**

हाथी-हथिनी

तपस्वी-तपस्विनी

स्वामी-स्वामिनी

**9. 'इन' प्रत्यय लगाकर –**

माली-मालिन

चमार-चमारिन

नाई-नाइन

कुम्हार-कुम्हारिन

धोबी-धोबिन

सुनार-सुनारिन

**10. 'आइन' प्रत्यय लगाकर –**

चौधरी – चौधराइन

ठाकुर-ठकुराइन

मुंशी -मुंशियाइन

**11. शब्दान्त 'मान' के स्थान पर 'मती' लगाकर –**

श्रीमान्-श्रीमती

बुद्धिमान-बुद्धिमती

आयुष्मान-आयुष्मती

**12. शब्दान्त 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर –**

कर्ता -कर्त्री

नेता-नेत्री

दाता-दात्री

**13. शब्द के पूर्व में 'मादा' शब्द लगाकर –**

खरगोश-मादा खरगोश

| | |
|---|---|
| भालू-मादा भालू | राजा-रानी |
| भेड़िया-मादा भेड़िया | पुरुष-स्त्री |

**14. भिन्न रूप वाले कतिपय शब्द –**

| | |
|---|---|
| कवि-कवयित्री | बादशाह-बेगम |
| वर-वधू | युवक-युवती |
| वीर-वीरांगना | विद्वान-विदुषी |
| मर्द-औरत | साधु-साध्वी |
| दूल्हा-दुलहिन | बैल-गाय |
| नर-नारी | भाई-भाभी |
| | ससुर-सास |

## महत्त्वपूर्ण तथ्य –

- शब्द के जिस रूप से उसकी जाति (नर-मादा) का बोध हो, वह लिंग है।
- हिन्दी में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का निर्धारण 'रूप या बनावट' तथा 'अर्थ' की दृष्टि से किया जाता है।

# वचन

“शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध होता है, उसे हिन्दी व्याकरण में ‘वचन’ कहते है।“

## वचन की परिभाषा

दूसरे शब्दों में- “संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे ‘वचन’ कहते है अर्थात जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु के एक या एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

**जैसे:**

- लडकी खेलती है।
- लडकियाँ खेलती हैं।
- फ्रिज में सब्जियाँ रखी हैं।
- तालाब में मछलियाँ तैर रही हैं।
- माली पौधों को सींच रहा है।
- कछुआ खरगोश के पीछे है।

उपर्युक्त वाक्यों में लडकी, फ्रिज, तालाब, बच्चे, माली, कछुआ शब्द उनके एक होने का तथा लडकियाँ, सब्जियाँ, मछलियाँ, पौधे, खरगोश शब्द उनके एक से अधिक होने का ज्ञान करा रहे हैं। अतः यहाँ लडकी, फ्रिज, तालाब, माली, कछुआ एकवचन के शब्द हैं तथा लडकियाँ, सब्जियाँ, मछलियाँ, पौधे, खरगोश बहुवचन के शब्द।

वचन का शाब्दिक अर्थ संख्यावचन होता है। संख्यावचन को ही संक्षेप में वचन कहते हैं। वचन का एक अर्थ कहना भी होता है।

## वचन के भेद या वचन के प्रकार

वचन के दो भेद होते हैं:

1. एकवचन
2. बहुवचन

1. **एकवचन:** संज्ञा के जिस रूप से एक व्यक्ति या एक वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे एकवचन कहते है अर्थात जिस शब्द के कारण हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक होने का पता चलता है उसे एकवचन कहते हैं।

   **जैसे :-** लड़का, लडकी, गाय, सिपाही, बच्चा, कपड़ा, माता, पिता, माला, पुस्तक, स्त्री, टोपी, बन्दर, मोर, बेटी, घोडा, नदी, कमरा, घड़ी, घर, पर्वत, मैं, वह, यह, रुपया, बकरी, गाड़ी, माली, अध्यापक, केला, चिड़िया, संतरा, गमला, तोता, चूहा आदि।

2. **बहुवचन:** शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु होने का ज़ान हो, उसे बहुवचन कहते है अर्थात जिस शब्द के कारण हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक से अधिक या अनेक होने का पता चलता है उसे बहुवचन कहते हैं।

**जैसे :-** लडके, लडकियाँ, गायें, कपड़े, टोपियाँ, मालाएँ, माताएँ, पुस्तकें, वधुएँ, गुरुजन, रोटियां, पेंसिलें, स्त्रियाँ, बेटे, बेटियाँ, केले, गमले, चूहे, तोते, घोड़े, घरों, पर्वतों, नदियों, हम, वे, ये, लताएँ, गाड़ियाँ, बकरियां, रुपए आदि।

1. आदरणीय या सम्मानीय व्यक्तियों के लिए सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है. इसके लिए एकवचन व्यक्तिवाचक संज्ञा को ही बहुवचन में प्रयोग कर दिया जाता है।

   **जैसे :-**

   - गांधीजी चंपारन आये थे।
   - शास्त्रीजी बहुत ही सरल स्वभाव के थे।
   - गुरूजी आज नहीं आये।
   - पापाजी कल कलकत्ता जायेंगे।
   - अम्बेडकर जी छुआछुत के विरोधी थे।
   - श्री रामचन्द्र वीर थे।

2. सम्बन्ध दर्शाने वाली कुछ संज्ञायें एकवचन और बहुवचन में एक समान रहती है।

   **जैसे –** नाना, मामी, ताई, ताऊ, नानी, मामा, चाचा, चाची, दादा, दादी आदि।

3. द्रव्यसूचक संज्ञाओं का प्रयोग केवल एकवचन में ही होता है।

   **जैसे –** तेल, घी, पानी, दूध, दही, लस्सी, रायता आदि।

4. कुछ शब्द सदैव बहुवचन में प्रयोग किये जाते है।

   **जैसे –** दाम, दर्शन, प्राण, आँसू, लोग, अक्षत, होश, समाचार, हस्ताक्षर, दर्शक, भाग्य, केश, रोम, अश्रु, आशीर्वाद आदि।

   **उदाहरण-**

   - आपके हस्ताक्षर बहुत ही अलग हैं।
   - लोग कहते रहते हैं।
   - आपके दर्शन सौभाग्य वालों को मिलते हैं।
   - इसके दाम ज्यादा हैं।
   - आज के समाचार क्या हैं?
   - आपका आशीर्वाद पाकर मैं धन्य हो गया हूँ।

5. पुल्लिंग ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्द दोनों वचनों में समान रहते है।

   **जैसे-** एक मुनि, दस मुनि, एक डाकू, दस डाकू, एक आदमी, दस आदमी आदि।

6. बड़प्पन दिखाने के लिए कभी -कभी वक्ता अपने लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करता है।

**जैसे –**

- हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं
- मालिक ने नौकर से कहा कि हम मीटिंग में जा रहे हैं।
- जब गुरूजी घर आये तो वे बहुत खुश थे।
- हमे याद नहीं हमने कभी 'आपसे' ऐसा कहा था।

7. व्यवहार में 'तुम' के स्थान पर 'आप' का प्रयोग करना अच्छा माना जाता है।

**जैसे-**

- आप कहाँ पर गये थे।
- आप आइयेगा जरुर, हमें आपकी प्रतीक्षा रहेगी

8. जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग दोनों वचनों में किया जाता है।

**जैसे-**

- कुत्ता भौंक रहा है।
- कुत्ते भौंक रहे हैं।
- शेर जंगल का राजा है।
- बैल के चार पाँव होते हैं।

9. परन्तु धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञायें एकवचन में ही प्रयुक्त होती है।

**जैसे-**

- सोना बहुत महँगा है।
- चाँदी सस्ती है।
- उसके पास बहुत धन है।

10. गुण वाचक और भाववाचक दोनों संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन और बहुवचन दोनों में ही किया जाता है।

**जैसे-**

- मैं उनके धोखे से ग्रस्त हूँ।
- इन दवाईयों की अनेक खूबियाँ हैं।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद की सज्जनता पर सभी मोहित थे।
- मैं आपकी विवशता को जानता हूँ।

11. कुछ शब्द जैसे हर, प्रत्येक, और हर एक का प्रयोग सिर्फ एकवचन में होता है।

**जैसे-**

- हर एक कुआँ का पानी मीठा नही होता।
- प्रत्येक व्यक्ति यही कहेगा।
- हर इन्सान इस सच को जानता है।

12. समूहवाचक संज्ञा का प्रयोग केवल एकवचन में ही किया जाता है।

**जैसे-**

- इस देश की बहुसंख्यक जनता अनपढ़ है।
- लंगूरों की एक टोली ने बहुत उत्पात मचा रखा है।

13. ज्यादा समूहों का बोध करने के लिए समूहवाचक संज्ञा का प्रयोग बहुवचन में किया जाता है।

**जैसे-** विद्यार्थियों की बहुत सी टोलियाँ इधर गई हैं।

14. एक से ज्यादा अवयवों को इंगित करने वाले शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है लेकिन अगर उनको एकवचन में प्रयोग करना है तो उनके आगे एक लगा दिया जाता है।

**जैसे-** आँख, कान, ऊँगली, पैर, दांत, अंगूठा आदि।

**उदाहरण-**

- राधा के दांत चमक रहे थे।
- मेरे बाल सफेद हो चुके हैं।
- मेरा एक बाल टूट गया।
- मेरी एक आँख में खराबी है।
- मंजू का एक दांत गिर गया।

15. करण कारक के शब्द जैसे- जाड़ा, गर्मी, भूख, प्यास आदि को बहुवचन में ही प्रयोग किया जाता है।

**जैसे-**

- बेचारा बन्दर जाड़े से ठिठुर रहा है।
- भिखारी भूखे मर रहे हैं।

16. कभी कभी कुछ एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ गुण, लोग, जन, समूह, वृन्द, दल, गण, जाति आदि लगाकर उन शब्दों को बहुवचन में प्रयोग किया जाता है।

**जैसे-**

- छात्रगण बहुत व्यस्त होते हैं।
- मजदूर लोग काम कर रहे हैं।
- स्त्रीजाति बहुत संघर्ष कर रही है।

## एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम

विभिक्तिरहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम-

1. **आकारान्त पुल्लिंग शब्दों में 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाने से-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| जूता | जूते |
| तारा | तारे |

| | |
|---|---|
| लड़का | लड़के |
| घोड़ा | घोडे |
| बेटा | बेटे |
| मुर्गा | मुर्गे |
| कपड़ा | कपड़े |
| बालिका | बालिकाएं |

**2. अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'अ' के स्थान पर 'ए' लगाने से-**

| **कवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| कलम | कलमें |
| बात | बातें |
| रात | रातें |
| आँख | आखें |
| पुस्तक | पुस्तकें |
| सड़क | सड़कें |
| चप्पल | चप्पलें |

**3. जिन स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'या' आता है, उनमें 'या' के ऊपर चन्द्रबिन्दु लगाने से बहुवचन बनता है। जैसे-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| बिंदिया | बिंदियाँ |
| चिडिया | चिडियाँ |
| डिबिया | डिबियाँ |
| गुडिया | गुडियाँ |
| चुहिया | चुहियाँ |

**4. ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के 'इ' या 'ई' के स्थान पर 'इयाँ' लगाने से-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| तिथि | तिथियाँ |
| नारी | नारियाँ |
| गति | गतियाँ |
| थाली | थालियाँ |

5. **आकारांत स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा-शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाने से बहुवचन बनता है।**

**जैसे-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| लता | लताएँ |
| अध्यापिका | अध्यापिकाएँ |
| कन्या | कन्याएँ |
| माता | माताएँ |
| भुजा | भुजाएँ |
| पत्रिका | पत्रिकाएँ |
| शाखा | शाखाएँ |
| कामना | कामनाएँ |
| कथा | कथाएँ |

6. **इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'याँ' लगाने से-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| जाति | जातियाँ |
| रीति | रीतियाँ |
| नदी | नदियाँ |
| लड़की | लड़कियाँ |

7. **उकारान्त व ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाते है। 'ऊ' को 'उ' में बदल देते है-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| वस्तु | वस्तुएँ |
| गौ | गौएँ |
| बहु | बहुएँ |
| वधू | वधुएँ |
| गऊ | गउएँ |

8. **संज्ञा के पुंलिंग अथवा स्त्रीलिंग रूपों में 'गण' 'वर्ग' 'जन' 'लोग' 'वृन्द' 'दल' आदि शब्द जोड़कर भी शब्दों का बहुवचन बना देते हैं।**

**जैसे-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| स्त्री | स्त्रीजन |
| नारी | नारीवृन्द |

| | |
|---|---|
| अधिकारी | अधिकारीवर्ग |
| पाठक | पाठकगण |
| अध्यापक | अध्यापकवृंद |
| विद्यार्थी | विद्यार्थीगण |
| आप | आपलोग |
| श्रोता | श्रोताजन |
| मित्र | मित्रवर्ग |
| सेना | सेनादल |
| गुरु | गुरुजन |
| गरीब | गरीब लोग |

9. **कुछ शब्दों में गुण, वर्ण, भाव आदि शब्द लगाकर बहुवचन बनाया जाता है।**

**जैसे-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| व्यापारी | व्यापारीगण |
| मित्र | मित्रवर्ग |
| सुधी | सुधिजन |

## विभक्तिसहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम-

विभक्तियों से युक्त होने पर शब्दों के बहुवचन का रूप बनाने में लिंग के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।

इसके कुछ सामान्य नियम निम्नलिखित है-

1. **अकारान्त, आकारान्त (संस्कृत-शब्दों को छोड़कर) तथा एकारान्त संज्ञाओं में अन्तिम 'अ', 'आ' या 'ए' के स्थान पर बहुवचन बनाने में 'ओं' कर दिया जाता है।**

**जैसे-**

| **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| लडका | लडकों |
| घर | घरों |
| गधा | गधों |
| घोड़ा | घोड़ों |
| चोर | चोरों |

2. **संस्कृत की आकारान्त तथा संस्कृत-हिन्दी की सभी उकारान्त, ऊकारान्त, अकारान्त, औकारान्त संज्ञाओं को बहुवचन का रूप देने के लिए अन्त में 'ओं' जोड़ना पड़ता है। उकारान्त शब्दों में 'ओं' जोड़ने के पूर्व 'ऊ' को 'उ' कर दिया जाता है।**

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| लता | लताओं |
| साधु | साधुओं |
| वधू | वधुओं |
| घर | घरों |
| जौ | जौओं |

3. **सभी इकारान्त और ईकारान्त संज्ञाओं का बहुवचन बनाने के लिए अन्त में 'यों' जोड़ा जाता है। 'इकारान्त' शब्दों में 'यों' जोड़ने के पहले 'ई' का इ' कर दिया जाता है।**

**जैसे-**

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| मुनि | मुनियों |
| गली | गलियों |
| नदी | नदियों |
| साड़ी | साड़ियों |
| श्रीमती | श्रीमतियों |

## वचन की पहचान

वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा उसमे प्रयुक्त क्रिया के द्वारा होती है.

1. हिंदी भाषा में आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

**जैसे-**

- गाँधी जी हमारे राष्ट्रपिता हैं।
- पिता जी, आप कब आए?
- मेरी माता जी मुंबई गई हैं।
- शिक्षक पढ़ा रहे हैं।
- नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री हैं।

2. कुछ शब्द सदैव एकवचन में रहते है।

**जैसे-**

- निर्दलीय नेता का चयन जनता द्वारा किया गया।
- नल खुला मत छोड़ो, वरना सारा पानी खत्म हो जाएगा।

- मुझे बहुत क्रोध आ रहा है।
- राजा को सदैव अपनी प्रजा का ख्याल रखना चाहिए।
- गाँधी जी सत्य के पुजारी थे।

3. द्रव्यवाचक, भाववाचक तथा व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ सदैव एकवचन में प्रयुक्त होती है।

   **जैसे-**

- चीनी बहुत महँगी हो गई है।
- पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।
- बुराई की सदैव पराजय होती है।
- प्रेम ही पूजा है।
- किशन बुद्धिमान है।

4. कुछ शब्द सदैव बहुवचन में रहते है।

   **जैसे-**

- दर्दनाक दृश्य देखकर मेरे तो प्राण ही निकल गए।
- आजकल मेरे बाल बहुत टूट रहे हैं।
- रवि जब से अफसर बना है, तब से तो उसके दर्शन ही दुर्लभ हो गए हैं।
- आजकल हर वस्तु के दाम बढ़ गए हैं।

## वचन सम्बन्धी विशेष निर्देश

1. 'प्रत्येक' तथा 'हर एक' का प्रयोग सदा एकवचन में होता है।

   **जैसे-**

- प्रत्येक व्यक्ति यही कहेगा
- हर एक कुआँ मीठे जल का नहीं होता।

2. दूसरी भाषाओं के तत्सम या तदभव शब्दों का प्रयोग हिन्दी व्याकरण के अनुसार होना चाहिए।

   **जैसे**, अँगरेजी के 'फुट' (foot) का बहुवचन 'फीट' (feet) होता है किन्तु हिन्दी में इसका प्रयोग इस प्रकार होगा - दो फुट लम्बी दीवार है न कि 'दो फीट लम्बी दीवार है'।

3. प्राण, लोग, दर्शन, आँसू, होंठ, दाम, अक्षत इत्यादि शब्दों का प्रयोग हिन्दी में बहुवचन में होता है।

   **जैसे-**

- आपके होंठ खुले कि प्राण तृप्त हुए।
- आप लोग आये, आर्शीवाद के अक्षत बरसे, दर्शन हुए।

4. द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है।

   **जैसे-**

- उनके पास बहुत सोना है।
- उनका बहुत-सा धन बर्बाद हुआ।
- न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।

किन्तु, यदि द्रव्य के भिन्न-भिन्न प्रकारों का बोध हों, तो द्रव्यवाचक संज्ञा बहुवचन में प्रयुक्त होगी।

**जैसे-**

- यहाँ बहुत तरह के लोहे मिलते हैं।
- चमेली, गुलाब, तिल इत्यादि के तेल अच्छे होते हैं।

## कुछ महत्वपूर्ण वचन परिवर्तन

| **कवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| पत्ता | पत्ते |
| बेटा | बेटे |
| कवि | कविगण |
| छुट्टी | छुट्टियाँ |
| दवाई | दवाईयाँ |
| अलमारी | अलमारियाँ |
| गुरु | गुरुजन |
| घड़ी | घड़ियाँ |
| मिठाई | मिठाइयाँ |
| हड्डी | हड्डियाँ |
| कुर्सी | कुर्सियां |
| चिड़िया | चिड़ियाँ |
| कहानी | कहानियाँ |
| गुडिया | गुड़ियाँ |
| चुहिया | चुहियाँ |
| कविता | कविताएँ |
| बुढिया | बुढियां |
| लता | लताएँ |
| वस्तु | वस्तुएँ |
| ऋतु | ऋतुएँ |
| कक्षा | कक्षाएँ |
| अध्यापिका | अध्यापिकाएँ |
| सेना | सेनाएँ |
| भाषा | भाषाएँ |
| कमरा | कमरे |
| रुपया | रुपए |

| | |
|---|---|
| तिनका | तिनके |
| भेड़ | भेड़ें |
| बहन | बहनें |
| घोडा | घोड़े |
| तस्वीर | तस्वीरें |
| लड़का | लडके |
| किताब | किताबें |
| पुस्तक | पुस्तकें |
| आँख | आँखें |
| बात | बातें |
| बच्चा | बच्चे |
| कपड़ा | कपड़े |

# वाक्य

दो या दो से अधिक पदों के **सार्थक समूह** को, जिसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है, **वाक्य** कहते हैं।

**उदाहरण :** 'सत्य कड़वा होता है ।'

एक **वाक्य** है क्योंकि इसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है किन्तु **'सत्य होता कड़वा।'** वाक्य नहीं है क्योंकि इसका अर्थ नहीं निकलता है।

## वाक्य की परिभाषा –

दो या दो से अधिक शब्दों के समूह जिसका कोई अर्थ हो उसे वाक्य कहा जाता है। एक सामान्य वाक्य को बनाने के लिए कर्ता, कर्म और क्रिया का इस्तेमाल किया जाता है।

**जैसे :-**

1. मनुष्य का कर्म ही उसका धर्म है।
2. जीत सदैव सत्य की होती है।

## वाक्य के भेद –

वाक्य का विभाजन दो आधार पर किया गया है|

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

### 1. रचना के आधार पर –

1) साधारण वाक्य
2) संयुक्त वाक्य
3) मिश्रित वाक्य

**1. साधारण वाक्य –**

ऐसे वाक्य जिन्हें एक ही विधेय और एक ही क्रिया होती है, इन्हें साधारण वाक्य कहा जाता है।

**साधारण वाक्य के उदाहरण -**

**जैसे :-**

- राहुल पड़ता है।
- मैंने भोजन कर लिया।
- रीना घर जा रही है।

2. **संयुक्त वाक्य –**

जब दो या दो से अधिक साधारण वाक्य समानाधिकरण समुच्चयबोधको से जुड़े होते हैं, तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहा जाता है।

**संयुक्त वाक्य के उदाहरण -**

**जैसे :-**

- राहुल चला गया और गीता आ गई।
- मैं जा रहा हूं लेकिन तुम आ रहे हो।
- मैंने एक काम कर लिया पर दूसरा काम छोड़ दिया।

3. **मिश्रित वाक्य –**

ऐसे वाक्य जिनमें एक वाक्य मुख्य हो और दूसरा वाक्य उस पर आश्रित हो या उपवाक्य हो, तो ऐसे वाक्यों को मिश्रित वाक्य कहा जाता है।

**मिश्रित वाक्य के उदाहरण –**

**जैसे:-**

- ज्यों ही अध्यापक में कक्षा में प्रवेश किया वैसे ही छात्र शांत हो गए।
- यदि परिश्रम करोगे तो तुम अवश्य सफल हो जाओगे।
- मैं जानता हूं कि तुम्हें क्या अच्छा लगता है।

## 2. अर्थ के आधार पर –

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं।

1. विधानवाचक वाक्य
2. निषेधवाचक वाक्य
3. आज्ञावाचक वाक्य
4. प्रश्नवाचक वाक्य
5. विस्मयादिबोधक वाक्य
6. इच्छावाचक वाक्य
7. संदेहवाचक वाक्य
8. संकेतवाचक वाक्य

1. **विधानवाचक वाक्य**

ऐसे वाक्य जिनमें किसी भी कार्य के होने का या किसी के अस्तित्व का पता चलता है या बोध होता है, उन वाक्य को विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

विधानवाचक वाक्य को दूसरे शब्दों में **विधि वाचक वाक्य** भी कहा जाता है।

**विधानवाचक वाक्य के उदाहरण**

- राजस्थान मेरा राज्य है।
- विशाल ने आम खा लिया।
- पवन के पिता का नाम किशोर सिंह है।

**2. निषेधवाचक वाक्य**

ऐसे वाक्य जिनमें किसी भी कार्य के निषेध का बोध होता है, उन वाक्यों को निषेधवाचक वाक्य कहा जाता है।

**निषेधवाचक वाक्य के उदाहरण**

- राधा आज स्कूल नहीं जाएगी।
- आज मैं फिल्म देखने नहीं जाऊंगा।
- हम आज कहीं पर भी घूमने नहीं जाएंगे।

**3. आज्ञावाचक वाक्य**

वह वाक्य जिनमें आदेश, आज्ञा या अनुमति का पता चलता हो, उन वाक्य को आज्ञा वाचक वाक्य कहा जाता है।

**आज्ञावाचाक वाक्य के उदाहरण**

- कृपया वहां पर बैठ जाइए।
- कृपया करके शांति बनाए रखें।
- आपको अपनी मदद स्वयं करनी पड़ेगी।

**4. प्रश्नवाचक वाक्य**

ऐसे वाक्य जिनमें किसी प्रश्न का बोध हो, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहा जाता है। प्रश्नवाचक वाक्य के नाम से ही पता चलता है कि इस वाक्य में प्रश्नों का बोध होने वाला है।

इन वाक्यों के माध्यम से प्रश्न पूछकर वस्तु या किसी अन्य के बारे में जानकारी जानने की कोशिश की जाती है। इसके अलावा इन वाक्यों के पीछे (?) यह चिन्ह लगता है।

**प्रश्नवाचक वाक्य के उदाहरण**

- तुम्हारा **कौन सा** देश है?
- तुम **कौन** से गांव में रहते हो?
- तुम्हारा नाम **क्या** है?
- तुम्हारी बहन **क्या** काम करती है?

**5. विस्मयादिबोधक वाक्य**

जिन वाक्य में **आश्चर्य, घृणा, अत्यधिक, खुशी, शौक** का बोध होता हो, उन वाक्य को विस्मयादिबोधक वाक्य कहा जाता है। इसके अलावा इन वाक्यों में विस्मय शब्द होते हैं और इन शब्दों के पीछे (!) विस्मयसूचक लगता है और इसी से इन वाक्य की पहचान बनती है। मतलब यह है कि इसी सूचक चिन्ह के आधार पर इन वाक्यों को आसानी से पहचाना जाता है।

**विस्मयादिबोधक वाक्य के उदाहरण**

- **ओह!** आज दिन कितना ठंडा है।
- **बल्ले बल्ले!** हमें जीत मिल गई।
- **अरे!** तुम यहां कब पहुंचे।

**6. इच्छावाचक वाक्य**

वे वाक्य जिसमें हमें वक्ता की कोई इच्छा, आकांक्षा, आशीर्वाद, कामना इत्यादि का पता चलता है, उन वाक्य को इच्छा वाचक वाक्य कहते हैं।

**इच्छावाचक वाक्य के उदाहरण**

- सदा खुश रहो।
- दीपावली की आपके परिवार को शुभकामनाएं।
- तुम्हारा कल्याण हो।

**7. संदेहवाचक वाक्य**

जिन वाक्य में किसी भी प्रकार की संभावना और सदेंह का बोध होता हो, उन वाक्य को संदेहवाचक वाक्य कहा जाता है।

**संदेहवाचक वाक्य के उदाहरण**

- लगता है राम अब ठीक हो गया है।
- शायद आज बारिश हो सकती है।
- शायद मेरा भाई इस काम के लिए मान गया है।

**8. संकेतवाचक वाक्य**

वह वाक्य जिनमें एक क्रिया या दूसरी क्रिया पर पूरी तरह से निर्भर हो, उन वाक्य को संकेतवाचक वाक्य कहा जाता है।

**संकेतवाचक वाक्य के उदाहरण**

- अच्छे से प्रैक्टिस करते,तो मैडल मिल जाता।
- अच्छी तैयारी की होती, तो सिलेक्शन हो जाता।
- कार को धीरे चलाते, तो पेट्रोल खत्म नहीं होता।

# वाच्य

**वाच्य का अर्थ** – वाक्य में कथन की प्रधानता

अब बात करें कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव किसकी प्रधानता है, वाक्य में इसका पता चलता है, इसे वाच्य कहते है।

वाच्य से यह पता चलता है कि वाक्य में **कर्ता, कर्म और भाव** में से किसकी प्रधानता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष – कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार है।

## परिभाषा –

वाच्य क्रिया के उस रूपान्तर को कहते हैं, जिससे कर्ता, कर्म और भाव के अनुसार क्रिया के परिवर्तन ज्ञात होते हैं।

यथा –

- रमा पुस्तक पढ़ती है।(कर्तृवाच्य)
- पुस्तक पढ़ी जाती है।(कर्ता वाचक)
- मोहन से पढ़ा नहीं जाता है।(भाववाचक)

ऊपर के वाक्यों में उनकी क्रियाएँ क्रमशः कर्ता, कर्म और भाव के अनुसार हैं। पहले वाक्य में रमा कर्ता है और उसके अनुसार क्रिया हैं – पढ़ती है।

दूसरे वाक्य में कर्म पुस्तक के अनुसार क्रिया है -पढ़ी जाती है। अन्तिम वाक्य में पढ़ा नहीं जाता है से न पढ़ने का भाव स्पष्ट है। अतः यहाँ क्रिया भाव के अनुसार है।

## वाच्य के भेद –

वाच्य के तीन भेद होते हैं-

- कर्तृवाच्य
- कर्मवाच्य
- भाववाच्य

ऊपर के तीनों वाक्यों से वाच्य के ये तीनों भेद स्पष्ट है।

## कर्तृवाच्य

जिस वाक्य में क्रिया कर्ता के अनुसार हो, उसे 'कर्तृवाच्य' कहते हैं।

यथा –

- राम पत्र लिखता है।
- सीता पुस्तक पढ़ती है।

ऊपर के इन दो वाक्यों की क्रियाएँ **लिखता** और **पढ़ती** कर्ता **राम और सीता** के अनुसार है। अतः ये वाक्य **कर्तृवाच्य** में है।

## कर्मवाच्य

वाक्य में **कर्म** की प्रधानता होती है। जिस वाक्य में क्रिया **कर्म के अनुसार हो**, उसे 'कर्मवाच्य' कहते हैं।

यथा –

- पत्र लिखा जाता है।
- पुस्तक पढ़ी जाती है।
- राम ने चिट्ठी लिखी।

ऊपर के दोनों वाक्यों में पत्र और पुस्तक कर्म है और इनके अनुसार क्रियाएँ हैं –

लिखा जाता और पढ़ी जाती।

अतः ये वाक्य **कर्मवाच्य** के उदाहरण हैं।

**नोट :** ज्यादातर **सकर्मक क्रिया** के उदाहरण **कर्म वाच्य** में आते है

## भाववाच्य

जिस वाक्य में क्रिया कर्ता और कर्म को छोड़कर भाव के अनुसार हो, उसे 'भाववाच्य' कहते हैं।

यथा –

- उससे बैठा नहीं जाता।
- राम से खाया नहीं जाता।
- उससे रोया नहीं जाता।

ऊपर के वाक्यों में बैठा नहीं जाता, खाया नहीं जाता से एक भाव स्पष्ट होता है। इन सब वाक्यों में न कर्ता की प्रधानता है, न कर्म की। इनमें निहित सभी क्रियाएँ भाव के अनुसार हैं।

अतः भाव के अनुसार क्रिया होने से ये सभी **भाववाच्य** के उदाहरण हैं।

**टिप्पणी:** कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाएँ होती है।

कर्मवाच्य में क्रिया केवल सकर्मक होती हैं। क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होता है। कर्मवाच्य का प्रयोग विधान और निषेध दोनों स्थितियों में होता है।

भाववाच्य में क्रियाएँ प्रायः **अकर्मक** होती हैं। इसकी क्रिया सदा एकवचन, अन्य पुरुष और पुल्लिंग में होती है। इसमें असमर्थता और निषेध होने से वाक्य प्रायः नकारात्मक होते हैं।

**नोट :** क्रिया सदा एकवचन में होगी।

## कर्मवाच्य के प्रयोग

अंग्रेजी व्याकरण में कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदलने की प्रक्रिया होती है। परन्तु, हिन्दी में ऐसा नहीं होता। हिन्दी में कुछ सामान्यतः कर्तृ रूप में ही चलते हैं और कुछ कर्म रूप में ही।

हिन्दी में 'राम श्याम द्वारा पीटा गया' जैसा वाक्य नहीं चलता। हिन्दी की प्रकृति के अनुसार सही वाक्य 'श्याम ने राम को पीटा' होगा।

हिन्दी में कर्मवाच्य का प्रयोग विशिष्ट स्थितियों में ही होता है।

**यथा –**

1. जब कर्ता अज्ञात हो अथवा ज्ञात कर्ता का उल्लेख करने की आवश्यकता न हो –
   - परीक्षाफल कल प्रकाशित किया जाएगा।
   - चोर समझकर संन्यासी पकड़ा गया।
2. कानूनी तथा सरकारी व्यवहार में अधिकतर व्यक्त करने के लिए –
   - बिना टिकट यात्रियों को सख्त सजा दी जाएगी।
   - आपको सूचित किया जाता है कि......
3. कर्ता पर जोर देने के लिए –
   - रावण राम के द्वारा मारा गया।
4. अशक्यता के प्रसंग में –
   - यह काम मुझसे नहीं होगा।
5. अपना प्रभाव व्यक्त करने के लिए –
   - उसे पेश किया जाए।
   - कल देखा जाएगा।
6. सम्भावना व्यक्त करने के लिए –
   - उत्पादन बढ़ने पर बोनस दिया जाएगा।

STEP UP ACADEMY

# विराम चिन्ह

जैसा कि विराम का अर्थ रुकना होता है, उसी प्रकार हिंदी व्याकरण में विराम शब्द का अर्थ है – ठहराव या रुक जाना। एक व्यक्ति अपनी बात कहने के लिए, उसे समझाने के लिए, किसी कथन पर बल देने के लिए, आश्चर्य आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए कहीं कम, कहीं अधिक समय के लिए ठहरता है। भाषा के लिखित रूप में कुछ समय ठहरने के स्थान पर जो निश्चित संकेत चिह्न लगाये जाते है, उन्हें विराम–चिह्न कहते है।

वाक्य में विराम–चिह्नों के प्रयोग से भाषा में स्पष्टता और सुन्दरता आ जाती है तथा भाव समझने में भी आसानी होती है। यदि विराम–चिह्नों का यथा स्थान उचित प्रयोग न किया जाये तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

**उदाहरण-**

- रोको, मत जाने दो।
- रोको मत, जाने दो।

इस प्रकार विराम–चिह्नों से अर्थ एवं भाव में परिवर्तन हो जाता है। इनका ध्यान रखना आवश्यक है।

## विराम चिन्ह

| **नाम** | **विराम चिह्न** |
|---|---|
| अल्प विराम | ( , ) |
| अर्द्ध विराम | ( ; ) |
| पूर्ण विराम | ( । ) |
| प्रश्नवाचक चिह्न | ( ? ) |
| विस्मयसूचक चिह्न | ( ! ) |
| अवतरण या उद्धरण चिह्न | इकहरा — ( ‘ ’ ),दुहरा — ( “ ” ) |
| योजक चिह्न | ( – ) |
| कोष्ठक चिह्न | ( ) { } [ ] |
| विवरण चिह्न | ( :– ) |
| लोप चिह्न | ( …… ) |
| विस्मरण चिह्न | ( ^ ) |
| संक्षेप चिह्न | ( . ) |

| | |
|---|---|
| निर्देश चिह्न | ( – ) |
| तुल्यतासूचक चिह्न | ( = ) |
| संकेत चिह्न | ( * ) |
| समाप्ति सूचक चिह्न | ( – : –) |

## विराम–चिह्नों का प्रयोग–

### 1. अल्प विराम-

अल्प विराम का अर्थ है, थोड़ी देर रुकना या ठहरना। अंग्रेजी में इसे हम 'कोमा' कह कर पुकारते है।

1. वाक्य में जब दो या दो से अधिक समान पदों पदांशो अथवा वाक्यों में संयोजक अव्यय 'और' की संभावना हो, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग होता है।

**उदाहरण-**

- पदों में—पंकज, लक्ष्मण, राजेश और मोहन ने विद्यालय में प्रवेश किया।
- वाक्यों में—मोहन रोज खेल के मैदान में जाता है, खेलता है और वापस अपने घर चला जाता है।
- वह काम करता है, क्योंकि वह गरीब है।
- आज मैं बहुत थका हूँ, इसलिए जल्दी घर जाऊँगा।

यहाँ अल्प विराम द्वारा पार्थक्य/अलगाव को दिखाया गया है।

2. जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति की जाए और भावों की अधिकता के कारण उन पर अधिक बल दिया जाए।

**उदाहरण-**

सुनो, सुनो, वह नाच रही है।

3. जब कई शब्द जोड़े से आते है, तब प्रत्येक जोड़े के बाद अल्प विराम लगता है।

**उदाहरण-**

सुख और दु:ख, रोना और हँसना,

4. क्रिया विशेषण वाक्यांशों के साथ,

**उदाहरण-**

वास्तव में यह बात, यदि सच पूछो तो, मैं भूल ही गया था।

5. संज्ञा वाक्य के अलावा, मिश्र वाक्य के शेष बड़े उपवाक्यों के बीच में।

**उदाहरण-**

- यह वही पैन है, जिसकी मुझे आवश्यकता है।
- चिंता चाहे जैसी भी हो, मनुष्य को जला देती है।

6. वाक्य के भीतर एक ही प्रकार के शब्दों को अलग करने में।

**उदाहरण-**

मोहन ने सेब, जामुन, केले आदि खरीदे।

7. उद्धरण चिह्नों के पहले,

**उदाहरण-**

वह बोला, "मैं तुम्हें नहीं जानता।"

8. समय सूचक शब्दों को अलग करने में।

**उदाहरण-**

कल शुक्रवार, दिनांक 18 मार्च से परीक्षाएँ प्रारम्भ होंगी।

9. पत्र में अभिवादन, समापन के साथ।

**उदाहरण-**

- पूज्य पिताजी,
- भवदीय,
- मान्यवर ,

## 2. अर्द्ध विराम चिह्न-

अर्द्ध विराम का प्रयोग प्रायः विकल्पात्मक रूप में ही होता है। अंग्रेजी में इसे 'सेमी कॉलन' कहते है।

1. जब अल्प विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम ठहरना पड़े तो अर्द्ध विराम( ; ) का प्रयोग होता है।

**उदाहरण-**

- बिजली चमकी ; फिर भी वर्षा नहीं हुई
- एम.ए. ; एम.एड.
- शिक्षक ने मुझसे कहा; तुम पढ़ते नहीं हो।
- शिक्षा के क्षेत्र में छात्राएँ बढ़ती गई; छात्र पिछड़ते गए।

2. एक प्रधान पर आश्रित अनेक उपवाक्यों के बीच में।

**उदाहरण-**

- जब तक हम गरीब है; बलहीन है; दूसरे पर आश्रित है; तब तक हमारा कुछ नहीं हो सकता।
- जैसे ही सूर्योदय हुआ; अँधेरा दूर हुआ; पक्षी चहचहाने लगे और मैं प्रातः भ्रमण को चल पड़ा।

## 3. पूर्ण विराम ( । )-

पूर्ण विराम का अर्थ है पूरी तरह से विराम लेना, अर्थात् जब वाक्य पूर्णतः अपना अर्थ स्पष्ट कर देता है तो पूर्ण विराम का प्रयोग होता है अर्थात जिस चिह्न के प्रयोग करने से वाक्य के पूर्ण हो जाने का ज्ञान होता है, उसे पूर्ण विराम कहते है। हिन्दी में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है। पूर्ण विराम का प्रयोग नीचे उदाहरणों में देखें –

1. साधारण, मिश्र या संयुक्त वाक्य की समाप्ति पर।

**उदाहरण-**

- अजगर करे ना चाकरी, पंछी करें ना काम।
- दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।

- पंछी डाल पर चहचहा रहे थे।
- राम स्कूल जाता है।
- प्रयाग में गंगा–यमुना का संगम है।
- यदि सुरेश पढ़ता, तो अवश्य पास होता।

2. प्रायः शीर्षक के अन्त में भी पूर्ण विराम का प्रयोग होता है।

**उदाहरण-**

नारी और वर्तमान भारतीय समाज।

3. अप्रत्यक्ष प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है।

**उदाहरण-**

उसने मुझे बताया नहीं कि वह कहाँ जा रहा है।

## 4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)-

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग प्रश्न सूचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम के स्थान पर किया जाता है। इसका प्रयोग निम्न स्थिति में किया जाता है–

- क्या बोले, वे चोर है?
- क्या वे घर पर नहीं हैं?
- कल आप कहाँ थे?
- आप शायद यू. पी. के रहने वाले हो?
- जहाँ भ्रष्टाचार है, वहाँ ईमानदारी कैसे रहेगी?
- इतने लड़के कैसे आ पाएँगे?

## 5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)-

जब वाक्य में हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय आदि भाव व्यक्त किए जाएँ तो वहाँ इस विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा आदर सूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अन्त में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण-**

1. **हर्ष सूचक–**

- तुम्हारा कल्याण हो !
- हे भगवान! अब तो तुम्हारा ही आसरा है।
- हाय! अब क्या होगा।
- छिः! छिः! कितनी गंदगी है।
- शाबाश! तुमने गाँव का नाम रोशन कर दिया।

2. **करुणा सूचक–**

हे प्रभु! मेरी रक्षा करो

3. **घृणा सूचक–**

इस दुष्ट पर धिक्कार है!

4. **विषाद सूचक–**

हाय राम! यह क्या हो गया।

5. **विस्मय सूचक–**

सुनो! मोहन पास हो गया।

## 6. उद्धरण या अवतरण चिह्न-

जब किसी कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है तो उस कथन के दोनों ओर इसका प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे अवतरण चिह्न या उद्धरण चिह्न कहते है। इस चिह्न के दो रूप होते है–

1. **इकहरा उद्धरण ( ‘ ’ )-**

जब किसी कवि का उपनाम, पुस्तक का नाम, पत्र–पत्रिका का नाम, लेख या कविता का शीर्षक आदि का उल्लेख करना हो तो इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है।

**उदाहरण-**

- रामधारीसिंह ‘दिनकर’ ओज के कवि है।
- सूर्यकांत त्रिपाठी ’निराला’
- तुलसीदास ने कहा- ’’सिया राममय सब जग जानी, करउं प्रणाम जोरि जुग पानि।’’
- ‘रामचरित मानस’ के रचयिता तुलसीदास है।
- ‘राजस्थान पत्रिका’ एक प्रमुख समाचार–पत्र है।
- कहावत सही है कि, ‘उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे’।

2. **दुहरा उद्धरण ( “ ” )**

जब किसी व्यक्ति या विद्वान तथा पुस्तक के अवतरण या वाक्य को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाए, तो वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण-**

- “स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।”—तिलक।
- “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।”—सुभाषचन्द्र बोस।

## 7. योजक चिह्न (-)

इसे समास चिह्न भी कहते है।अंग्रेजी में प्रयुक्त हाइफन (-) को हिन्दी में योजक चिह्न कहते है। हिन्दी में अधिकतर इस चिह्न (-) के स्थान पर डेश (–) का प्रयोग प्रचलित है। यह चिह्न सामान्यतः दो पदों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है लेकिन दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहता है।

- कमल-से पैर।
- कली-सी कोमलता।
- कभी-कभी
- खेलते-खेलते
- रात-दिन
- माता-पिता

1. दो शब्दों को जोड़ने के लिए तथा द्वन्द्व एवं तत्पुरुष समास में।

   **उदाहरण-**

   सुख-दुःख, माता-पिता,।

2. पुनरुक्त शब्दों के बीच में।

   **उदाहरण-**

   धीरे-धीरे, घर -घर, रोज -रोज।

3. तुलना वाचक सा, सी, से के पहले लगता है।

   **उदाहरण-**

   भरत-सा भाई, सीता-सी माता।

4. शब्दों में लिखी जाने वाली संख्याओं के बीच।

   **उदाहरण-**

   एक-चौथाई

## 8. कोष्ठक चिह्न ( )-

किसी की बात को और स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। कोष्ठक में लिखा गया शब्द प्रायः विशेषण होता है।

इस चिह्न का प्रयोग–

1. वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने हेतु।

   **उदाहरण-**

   - आपकी ताकत (शक्ति) को मैं जानता हूँ।
   - आवेदन-पत्र जमा कराने की तिथि में सात दिन की छूट दी गई है।
   - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति) बेहद सादगी पसन्द थे।

2. नाटक या एकांकी में पात्र के अभिनय के भावों को प्रकट करने के लिए।

   **उदाहरण-**

   राम – (हँसते हुए) अच्छा जाइए।

## 9. विवरण चिह्न (:–)-

किसी कही हुई बात को स्पष्ट करने के लिए या उसका विवरण प्रस्तुत करने के लिए वाक्य के अंत में इसका प्रयोग होता है। इसे अंग्रेजी में 'कॉलन एंड डेश' कहते है।

**उदाहरण-**

- सर्वनाम छः प्रकार के होते है:- पुरुषवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक, निश्चितवाचक, अनिश्चितवाचक, प्रश्नवाचक।
- वेद चार है:- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।
- पुरुषार्थ चार है:– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

## 10. लोप सूचक चिह्न (....)-

जहाँ किसी वाक्य या कथन का कुछ अंश छोड़ दिया जाता है, वहाँ लोप सूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण-**

- तुम मान जाओ वरना..........।
- मैं तो परिणाम भोग रहा हूँ, कहीं आप भी......।

## 11. विस्मरण चिह्न (^)-

इसे हंस पद या त्रुटिपूरक चिह्न भी कहते है। जब किसी वाक्य या वाक्यांश में कोई शब्द लिखने से छूट जाये तो छूटे हुए शब्द के स्थान के नीचे इस चिह्न का प्रयोग कर छूटे हुए शब्द या अक्षर को ऊपर लिख देते है।

**उदाहरण-**

- मेरा भारत ^ देश है।
- मुझे आपसे ^ परामर्श लेना है।

## 12. संक्षेप चिह्न या लाघव चिह्न (०)-

किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने हेतु उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे यह चिह्न लगा देते है। प्रसिद्धि के कारण लाघव चिह्न होते हुए भी वह पूर्ण शब्द पढ़ लिया जाता है।

**उदाहरण-**

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय – रा० उ० मा० वि०।
- भारतीय जनता पार्टी = भा० ज० पा०
- मास्टर ऑफ आर्ट्स = एम० ए०
- प्राध्यापक – प्रा०।
- डॉक्टर – डॉ०।
- पंडित – पं०।

## 13. निर्देशक चिह्न (–)-

यह चिह्न योजक चिह्न (-) से बड़ा होता है। इस चिह्न के दो रूप है–1. (–) 2. (—)। अंग्रेजी में इसे 'डैश' कहते है।

- महाराज- द्वारपाल! जाओ।
- द्वारपाल- जो आज्ञा स्वामी!

1. उद्धत वाक्य के पहले।

   **उदाहरण-**

   वह बोला –"मैं नहीं जाऊँगा।"

2. समानाधिकरण शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों के बीच में।

   **उदाहरण-**

   आँगन में ज्योत्सना–चाँदनी–छिटकी हुई थी।

## 14. तुल्यतासूचक चिह्न (=)-

समानता या बराबरी बताने के लिए या मूल्य अथवा अर्थ का ज्ञान कराने के लिए तुल्यतासूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण-**

- 1 लीटर = 1000 मिलीलीटर
- वायु = समीर

## 15. संकेत चिह्न (*)-

जब कोई महत्त्वपूर्ण बातें बतानी हो तो उसके पहले संकेत चिह्न लगा देते है।

**उदाहरण-**

स्वास्थ्य सम्बन्धी निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- प्रातःकाल उठना चाहिए।
- भ्रमण के लिए जाना चाहिए।

## 16. समाप्ति सूचक चिह्न या इतिश्री चिह्न (–o–)-

किसी अध्याय या ग्रन्थ की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह चिह्न कई रूपों में प्रयोग किया जाता है।

**उदाहरण-**

(– :: –), (—x—x—)

# विलोम शब्द

## विलोम शब्द की परिभाषा:

जो शब्द किसी दूसरे शब्द का उल्टा अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहते है। जैसे- अपेक्षा- नगद, आय- व्यय, आजादी-गुलाम, नवीन- प्राचीन शब्द एक दूसरे के उलटे अर्थ वाले शब्द है। अतः इन्हें 'विलोम शब्द' कहते हैं। अत: विलोम का अर्थ है- उल्टा या विरोधी अर्थ देने वाला।विलोम शब्द अपने सामनेवाले शब्द के सर्वदा विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं।

### (अ, आ)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| अमृत | विष | अथ | इति |
| अन्धकार | प्रकाश | अल्पायु | दीर्घायु |
| अनुराग | विराग | आदि | अंत |
| आगामी | गत | आग्रह | दुराग्रह |
| अनुज | अग्रज | आकर्षण | विकर्षण |
| अधिक | न्यून | आदान | प्रदान |
| आलस्य | स्फूर्ति | अर्थ | अनर्थ |
| अपेक्षा | नगद | अतिवृष्टि | अनावृष्टि |
| आदर्श | यथार्थ | आय | व्यय |
| आहार | निराहार | आविर्भाव | तिरोभाव |
| आमिष | निरामिष | अभिज्ञ | अनभिज्ञ |
| आजादी | गुलामी | अनुकूल | प्रतिकूल |
| आर्द्र | शुष्क | अल्प | अधिक |
| अनिवार्य | वैकल्पिक | अमृत | विष |
| अगम | सुगम | अभिमान | नम्रता |
| आकाश | पाताल | आशा | निराशा |
| अनुग्रह | विग्रह | अपमान | सम्मान |
| आश्रित | निराश्रित | अनुज | अग्रज |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| अरुचि | रुचि | आदि | अंत |
| आदान | प्रदान | आरंभ | अंत |
| आय | व्यय | अर्वाचीन | प्राचीन |
| अवनति | उन्नति | आदर | अनादर |
| आयात | निर्यात | अनुपस्थित | उपस्थित |
| आलस्य | स्फूर्ति | अतिवृष्टि | अनावृष्टि |
| आस्तिक | नास्तिक | आलस्य | स्फूर्ति |
| आदर्श | यथार्थ | अच्छा | साफ |
| अच्छा | सुन्दर | अजीब | अनोखा |
| अक्सर | कभी कभार | अनुमति देना | मना करना |
| अमावस्या | पूर्णिमा | अस्त | उदय |
| अनुलोम | प्रतिलोम | अनुरक्ति | विरक्ति |
| अमर | मर्त्य | अग्नि | जल |
| अल्पसंख्यक | बहुसंख्यक | आधुनिक | बहुसंख्यक |
| आधुनिक | प्राचीन | आगामी | विगत |
| आचार | अनाचार | आत्मा | पपरमात्मा |
| आदान | प्रदान | आयात | निर्यात |
| आकाश | पाताल | आग्रह | अनाग्रह |
| आकीर्ण | विकीर्ण | आधार | आधेय |
| आसक्त | अनासक्त | आभ्यन्तर | बाह्य |
| अतिथि | आतिथेय | आदत्त | प्रदत्त |
| आना | जाना | आहान | विसर्जन |
| अदोष | सदोष | अनाथ | सनाथ |
| अनुरक्ति | विरक्ति | अराग | सुराग |
| अस्वस्थ | स्वस्थ | अगला | पिछला |
| अवनि | अम्बर | अनाहूत | आहूत |
| अतुकान्त | तुकान्त | अत्यधिक | अत्यल्प |
| अधः | उपरि | अधुनातन | पुरातन |
| अनुग्रह | विग्रह | अर्पित | गृहीत |
| अर्जन | वर्जन | अपेक्षा | उपेक्षा |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| अधम | उत्तम | अंगीकार | अस्वीकार |
| अज्ञ | विज्ञ | अघ | अनघ |
| अकाल | सुकाल | अर्थी | प्रत्यर्थी |
| अनैक्य | ऐक्य | अंत | अनंत |
| अचर | चर | अर्वाचीन | प्राचीन |
| आवश्यक | अनावश्यक | आधुनिक | प्राचीन |
| आदि | अनादि | आगत | अनागत |
| आश्रित | निराश्रित | आरोह | अवरोह |
| आवृत | अनावृत | आस्था | अनास्था |
| आकुंचन | प्रसारण | अवर | प्रवर |
| अकाम | सुकाम | अन्तरंग | बहिरंग |
| अर्पण | ग्रहण | अवनति | उन्नति |
| अति | अल्प | अनेकता | एकता |
| अनित्य | नित्य | अतल | वितल |
| अधिकारी | अनाधिकारी | अंतर्मुखी | वहिर्मुखी |
| अश्रु | हास | अभिज्ञ | अनभिज्ञ |
| अग्र | पश्च | अपमान | सम्मान |
| अथ | इति | अन्तर्द्वन्द्व | बहिर्द्वन्द्ध |
| अपना | पराया | अनेक | एक |
| अवनत | उन्न्त | अजेय | जेय |
| अदेय | देय | आशा | निराशा |
| आग्रही | दुराग्रही | आतुर | अनातुर |
| आकर्षण | विकर्षण | आधार | निराधार |
| आच्छादित | अनाच्छादित | आभ्यन्तर | बाह्रय |
| आगम | लोप | आगामी | विगत |
| आदिष्ट | निषिद्ध | आलोक | अंधकार |

## (इ, ई)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| इच्छा | अनिच्छा | इष्ट | अनिष्ट |
| ईद | मुहर्रम | ईश्वर | जीव |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| इच्छित | अनिच्छित | इहलोक | परलोक |
| इति | अथ | इसका | उसका |
| ईषत | अलम | इकट्ठा | अलग |
| ईश | अनीश | | |

(उ, ऊ,)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| उदात्त | अनुदात्त | उधार | नकद |
| उन्नति | अवनति | उदघाटन | समापन |
| उन्मीलन | निमीलन | उत्तरायण | दक्षिणायन |
| उर्ध्व | निम्न | उऋण | ऋण |
| उन्मुख | विमुख | उद्यम | निरुद्यम |
| उपस्थित | अनुपस्थित | उर्ध्व | अधो |
| ऊपर | नीचे | उत्तीर्ण | अनुत्तीर्ण |
| उपचार | अपचार | उपमेय | अनुपमेय |
| उपमा | अनुपमा | उपाय | निरुपाय |
| उपयोग | दुरूपयोग | उत्तम | अधम |
| उग्र | सौम्य | उपसर्ग | प्रत्यय |
| उर्ध्वगामी | अधोगामी | ऊँच | नीच |
| उपकार | अपकार | उदार | अनुदार |
| उदय | अस्त | उत्तीर्ण | अनुत्तीर्ण |
| उधार | नकद | उत्थान | पतन |
| उत्कर्ष | अपकर्ष | उत्तर | दक्षिण |
| उद्यमी | आलसी | उर्वर | ऊसर |
| उत्तम | अधम | उपसर्ग | प्रत्यय |
| उदार | कृपण | उत्कृष्ट | निकृष्ट |
| उपयोग | दुरूपयोग | उत्कर्ष | अपकर्ष |
| उत्साह | निरुसाह | उद्यमी | निरुद्यम |
| उपयुक्त | अनुपयुक्त | उच्च | निम्न |
| उद्धत | विनीत | उदयाचल | उस्ताचल |
| उत्तरायण | दक्षिणायन | उधार | नकद |

## ( ए, ऐ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| एड़ी | चोटी | ऐतिहासिक | अनैतिहासिक |
| एकता | अनेकता | एकत्र | विकर्ण |
| एक | अनेक | ऐसा | वैसा |
| एकल | बहुल | ऐहिक | पारलौकिक |
| ऐश्वर्य | अनैश्वर्य | एकाग्र | चंचल |
| ऐक्य | अनैक्य | | |

## ( ओ, औ )

| शब्द | विलोम |
|---|---|
| ओजस्वी | निस्तेज |
| औपचारिक | अनौपचारिक |
| औचित्य | अनौचित्य |
| औपन्यासिक | अनौपन्यासिक |

## (क)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| कल | आज | क्रम | व्यक्तिक्रम |
| कनीय | वरीय | कार्य | अकार्य |
| कठिन | सरल | क्रूर | अक्रूर |
| कुकृति | सुकृत्य | कलुष | निष्कलुष |
| कुख्यात | विख्यात | कनिष्ठ | ज्येष्ठ |
| कपूत | सपूत | कृष्ण | शुक्ल |
| कुसुम | वज्र | कलंक | निष्कलंक |
| कदाचार | सदाचार | कर्कश | सुशील |
| कसूरवार | बेकसूर | कटु | मधुर |
| क्रिया | प्रतिक्रिया | कृतज्ञ | कृतघ्न |
| कड़वा | मीठा | क्रुद्ध | शान्त |
| क्रय | विक्रय | कर्म | निष्कर्म |
| कीर्ति | अपकीर्ति | कुरूप | सुरूप |
| करुण | निष्ठुर | कायर | निडर |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| क्रूर | अक्रूर | कृत्रिम | प्रकृत |
| कर्मण्य | अकर्मण्य | कोप | कृपा |
| कठोर | कोमल | कृष्ण | शुक्ल |
| कनिष्ठ | ज्येष्ठ | कपटी | निष्कपट |
| कुटिल | सरल | क्रोध | क्षमा |
| कृपण | दाता | कर्मठ | अकर्ममण्य |

## ( ख )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| खिलना | मुरझाना | खुशी | दुख |
| खेद | प्रसन्नता | ख्यात | कुख्यात |
| खगोल | भूगोल | खुला | बन्द |
| खंडन | मंडन | खल | सज्जन |
| खाद्य | अखाद्य | खीझना | रीझना |
| खरा | खोटा | | |

## ( ग )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| गोचर | अगोचर | गमन | आगमन |
| गद्य | पद्य | ग्राम्य | शिष्ट |
| गम्भीर | वाचाल | गृहीत | त्यक्त |
| गणतन्त्र | राजतन्त्र | गृही | त्यागी |
| गेय | अगेय | गर्मी | सर्दी |
| गीला | सूखा | गहरा | छिछला |
| गुण | दोष | गरीब | अमीर |
| गुप्त | प्रकट | गुरु | शिष्य |
| ग्रस्त | मुक्त | ग्राह्य | त्याज्य |
| गगन | पृथ्वी | गरल | सुधा |
| गृहस्थ | संन्यासी | गत | आगत |
| गुण | दोष | गमन | आगमन |

## ( घ )

| शब्द | विलोम |
|---|---|
| घर | बाहर |
| घृणा | प्रेम |
| घात | प्रतिघात |
| घरेलू | बाहरी |
| घटना | बढ़ना |
| घन | तरल |

## ( च, छ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| चर | अचर | चाह | अनचाह |
| चोर | साधु | चिन्मय | जड़ |
| चल | अचल | चीर | साधु |
| चिरन्तन | नश्वर | चेतन | अचेतन |
| चढाव | उतार | चंचल | स्थिर |
| चतुर | मूढ़ | चिर | अचिर |
| छाँह | धूप | छली | निश्छल |
| छूत | अछूत | | |

## (ज, झ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| जीवन | मरण | जड़ | चेतन |
| जंगम | स्थावर | जटिल | सरस |
| जय | पराजय | जन्म | मृत्यु |
| ज्येष्ठ | कनिष्ठ | जागरण | निद्रा |
| ज्योति | तम | जल | स्थल |
| जीवित | मृत | जातीय | विजातीय |
| ज्वार | भाटा | जल्द | देर |
| ज्योतिर्मय | तमोमय | जागृति | सुषुप्ति |
| जोड़ | घटाव | जेय | अजेय |
| जीत | हार | जवानी | बुढ़ापा |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| जाग्रत | सुषुप्त | जाड़ा | गर्मी |
| जंगम | स्थावर | जाति | कुजाति |
| झूठ | सच | झोपड़ी | महल |

## ( त, थ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| तुच्छ | महान | ताप | शीत |
| तम | आलोक | तीव्र | मन्द |
| तुच्छ | महान् | तिमिर | प्रकाश |
| तामसिक | सात्त्विक | तुकान्त | अतुकान्त |
| तरल | ठोस | ताना | भरनी |
| तारीफ | शिकायत | तरुण | वृद्ध |
| तृषा | तृप्ति | तृष्णा | वितृष्णा |
| तिक्त | मधुर | तीक्ष्ण | कुंठित |
| त्याज्य | ग्राह्य | तुल | अतुल |
| तृप्त | अतृप्त | थलचर | जलचर |
| थोड़ा | बहुत | थोक | फुटकर |

## ( द )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| दिवा | रात्रि | देय | अदेय |
| दीर्घकाय | कृशकाय | दूषित | स्वच्छ |
| दुर्बल | सबल | दक्षिण | वाम |
| दाता | याचक | दिन | रात |
| देव | दानव | दुराचारी | सदाचारी |
| दुष्ट | सज्जन | दास | स्वामी |
| दोषी | निर्दोषी | दानी | कंजूस |
| दुरुप्रयोग | सदुप्रयोग | दुर्जन | सज्जन |
| दयालु | निर्दय | दुर्दान्त | शांत |
| दानव | देव | दुर्गन्ध | सुगन्ध |
| दिन | रात | दीर्घकाय | कृशकाय |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| दाता | सूम | दक्षिण | वाम |
| दृढ | विचलित | दुर्बल | सबल |
| दूषित | स्वच्छ | दुराशय | सदाशय |
| देय | अदेय | दिवा | रात्रि |
| दृश्य | अदृश्य | दुःशील | सुशील |
| दोष | गुण | | |

## ( ध )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| धनी | निर्धन | ध्वंस | निर्माण |
| धर्म | अधर्म | धीर | अधीर |
| धूप | छाँव | धनी | निर्धन |
| धरा | गगन | धृष्ट | विनीत |

## (न)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| नूतन | पुरातन | नकली | असली |
| निर्माण | विनाश | निकट | दूर |
| निरक्षर | साक्षर | न्यून | अधिक |
| निन्दा | स्तुति | नागरिक | ग्रामीण |
| निर्मल | मलिन | निरामिष | सामिष |
| निर्लज्ज | सलज्ज | निर्दोष | सदोष |
| नगर | ग्राम | निर्दय | सदय |
| निष्काम | सकाम | निन्द्य | वन्द्य |
| नख | शिख | निषिद्ध | विहित |
| निद्रा | जागरण | निराकार | साकार |
| निश्छल | छली | नमक हराम | नमक हलाल |
| निषेध | विधि | निश्चेष्ट | सचेष्ट |
| नर | नारी | नैसर्गिक | कृत्रिम |
| नगद | उधार | नीरस | सरस |
| निर्गुण | सगुन | निर्जीव | सजीव |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| न्याय | अन्याय | नाम | अनाम |
| निरर्थक | सार्थक | नेक | बद |
| नैतिक | अनैतिक | निराशा | आशा |
| नया | पुराना | नित्य | अनित्य |
| नश्वर | शाश्वत | निर्दोष | सदोष |
| निन्दा | स्तुति | निरक्षर | साक्षर |
| निडर | कायर | नरक | स्वर्ग |
| निर्धन | धनी | नकल | असल |
| नास्तिक | आस्तिक | नकरात्मक | सकरात्मक |
| नेकी | बदी | | |

## ( प, फ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| पतिव्रता | कुलटा | पाप | पुण्य |
| प्रलय | सृष्टि | पवित्र | अपवित्र |
| प्रेम | घृणा | प्रश्न | उत्तर |
| पूर्ण | अपूर्ण | परतंत्र | स्वतंत्र |
| प्रत्यक्ष | परोक्ष | पूर्व | अपूर्व |
| प्रात | साय | प्रकाश | अंधकार |
| पण्डित | मुर्ख | पक्ष | विपक्ष |
| प्रमुख | सामान्य | प्रारम्भिक | अन्तिम |
| प्रशंसा | निन्दा | परार्थ | स्वार्थ |
| पुरस्कार | दण्ड | पूर्ववर्ती | परवर्ती |
| परमार्थ | स्वार्थ | पुरुष | कोमल |
| प्रधान | गौण | प्रवृत्ति | निवृत्ति |
| प्राचीन | नवीन | प्राकृतिक | कृत्रिम |
| पुष्ट | अपुष्ट | परिश्रम | विश्राम |
| पूर्णता | अपूर्णता | प्रयोग | अप्रयोग |
| पठित | अपठित | पाश्चात्य | पौर्वात्य |
| प्रसाद | विषाद | पुण्य | पाप |
| परमार्थ | स्वार्थ | पात्र | कुपात्र |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| पतन | उत्थान | पराया | अपना |
| प्रज्ञ | मूढ़ | प्रशंसा | निंदा |
| पानी | आग | पुरातन | नवीन |
| पूर्ववत | नूतनवत | परार्थ | स्वार्थ |
| प्रजा | राजा | पुरुष | स्त्री |
| पराजय | जय | पता | खोज |
| पवित्र | अपवित्र | प्रख्यात | अख्यात |
| प्रतिकूल | अनुकूल | प्रलय | सृष्टि |
| प्रकट | गुप्त | पालक | संहारक |
| पूर्व | उत्तर | पूर्णिमा | अमावस्या |
| पूर्ण | अपूर्ण | परकीय | स्वकीय |
| पतनोन्मुख | विकासोन्मुख | प्रमुख | गौण |
| प्राची | प्रतीची | फूट | मेल |
| फायदा | नुकसान | फल | निष्फल |
| फूलना | मुरझाना | | |

**( ब, भ )**

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| बाढ़ | सूखा | बुराई | भलाई |
| बन्धन | मुक्ति | बर्बर | सभ्य |
| बाह्य | अभ्यन्तर | बहिरंग | अन्तरंग |
| बलवान् | बलहीन | बढ़िया | घटिया |
| बैर | प्रीति | बद | नेक |
| बद्ध | मुक्त | बाढ़ग्रस्त | सूखाग्रस्त |
| बुरा | अच्छा | भूत | भविष्य |
| भोगी | योगी | भौतिक | आध्यात्मिक |
| भद्र | अभद्र | भाव | अभाव |
| भय | निर्भय | भूगोल | खगोल |
| भूलोक | द्युलोक | भेद | अभेद |
| भोग्य | अभोग्य | भला | बुरा |
| भिखारी | दाता | भारी | हल्का |

## (म)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| मानवता | दानवता | मृदुल | कठोर |
| मानव | दानव | मुख | पृष्ठ |
| मिलन | विरह | मृत | जीवित |
| मुनाफा | नुकसान | महात्मा | दुरात्मा |
| मान | अपमान | मित्र | शत्रु |
| मधुर | कटु | मिथ्या | सत्य |
| मौखिक | लिखित | मोक्ष | बंधन |
| मंगल | अमंगल | मितव्यय | अपव्यय |
| मूक | वाचाल | मसृण | अमानवीय |
| मीठा | कड़ुवा | मृदुल | रुक्ष |
| मालिक | नौकर | मलिन | निर्मल |
| मनुज | दनुज | मर्त्य | अमर |
| माता | पिता | मानक | अमानक |
| मूक | वाचाल | मरण | जीवन |
| मेहनती | आलसी | | |

## (य, र, ल)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| यश | अपयश | योग | वियोग |
| योगी | भोगी | यथार्थ | कल्पित |
| राजतन्त्र | जनतन्त्र | रत | विरत |
| रागी | विरागी | रचना | ध्वंस |
| रक्षक | भक्षक | राजा | रंक |
| राग | द्वेष | रूपवान् | कुरूप |
| रिक्त | पूर्ण | रात्रि | दिवस |
| रात | दिन | राम | रावण |
| रंगीन | बेरंग | रुग्ण | स्वस्थ |
| लघु | गुरु | लौकिक | अलौकिक |
| लिप्त | अलिप्त | लुप्त | व्यक्त |
| लायक | नालायक | लाभ | हानि |
| लिखित | अलिखित | लेन | देन |

## (व)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| विधवा | सधवा | विजय | पराजय |
| वसंत | पतझर | विरोध | समर्थन |
| विशुद्ध | दूषित | विषम | सम |
| विद्वान | मूर्ख | विवाद | निर्विवाद |
| विशिष्ट | साधारण | विस्तृत | संक्षिप्त |
| विशेष | सामान्य | बहिष्कार | स्वीकार |
| वृद्धि | ह्रास | विमुख | सम्मुख |
| वैतनिक | अवैतनिक | विशालकाय | क्षीणकाय |
| वीर | कायर | वृहत | लघु |
| व्यस्त | अव्यस्त | व्यवहारिक | अव्यावहारिक |
| विपत्ति | सम्पत्ति | वृष्टि | अनावृष्टि |
| वक्र | सरल | विशिष्ट | सामान्य |
| वियोग | मिलन | विधि | निषेध |
| वरदान | अभिशाप | विपन्न | सम्पन्न |
| विस्तार | संक्षेप | वृद्ध | तरुण |
| वादी | प्रतिवादी | विकास | ह्रास |
| विरह | मिलन | विष | अमृत |
| विरत | निरत | विकीर्ण | संकीर्ण |
| वैमनस्य | सौमनस्य | व्यस्त | अकर्मण्य |
| विक्रय | क्रय | विधवा | सधवा |
| व्यास | समास | विश्लेषण | संश्लेषण |
| विसर्जन | अहान | वैतनिक | अवैतनिक |
| विजय | पराजय | वन | मरु |
| विश्वास | अविश्वास | व्यर्थ | अव्यर्थ |
| विनीत | उद्धत | विपद | सम्पद |
| विशिष्ठ | साधारण | व्यय | आय |
| विस्तृत | संक्षिप्त | विख्यात | कुख्यात |
| विषाद | आहद | वन्य | पालित |
| विकर्ष | आकर्ष | वियोग | संयोग |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| विशेष | सामान्य | वक्र | ऋजु |
| विनाश | निर्माण | विशालकाय | लघुकाय |
| विसर्जन | सर्जन | | |

## (स)

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| सौभाग्य | दुर्भाग्य | साक्षर | निरक्षर |
| साधु | असाधु | सुजन | दुर्जन |
| सुपुत्र | कुपुत्र | सुमति | कुमति |
| सरस | नीरस | सच | झूठ |
| साकार | निराकार | सजीव | निर्जीव |
| सुर | असुर | संक्षेप | विस्तार |
| सरस | नीरस | सौभाग्य | दुर्भाग्य |
| सुगंध | दुर्गन्ध | सगुण | निर्गुण |
| सक्रिय | निष्क्रय | सफल | असफल |
| सज्जन | दुर्जन | संतोष | असंतोष |
| सावधान | असावधान | सबल | निर्बल |
| संधि | विच्छेद | स्वस्थ | अस्वस्थ |
| सुख | दु:ख | सरल | कठिन |
| सुन्दर | असुंदर | स्वदेश | विदेश |
| शिक्षित | अशिक्षित | संजीव | निर्जीव |
| सदाचार | दुराचार | सम | विषम |
| सफल | विफल | सजल | निर्जल |
| स्वजाति | विजाति | सम्मुख | विमुख |
| सार्थक | निरर्थक | सकर्म | निष्कर्म |
| सुकर्म | कुकर्म | सगुण | निर्गुण |
| सबल | दुर्बल | सनाथ | अनाथ |
| सहयोगी | प्रतियोगी | स्वतन्त्रा | परतन्त्रा |
| संयोग | वियोग | सम्मान | अपमान |

STEP UP ACADEMY

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| सकाम | निष्काम | साकार | निराकार |
| सुलभ | दुर्लभ | सुपथ | कुपथ |
| स्तुति | निन्द | स्मरण | विस्मरण |
| सशंक | निश्शंक | सन्तोष | असन्तोष |
| सुधा | गर्ल | संकल्प | विकल्प |
| संन्यासी | गृहस्थ | स्वधर्म | विधर्म |
| समष्टि | व्यष्टि | संघटन | विघटन |
| समूल | निर्मल | सत्कर्म | दुष्कर्म |
| सुमति | कुमति | संकीर्णि | विस्तीर्ण |
| सदाशय | दुराशय | समास | व्यास |
| स्वल्पायु | चिरायु | सुसंसगति | कुसंगति |
| सुपरिणाम | दुष्परिणाम | सखा | शत्रु |
| सौम्य | असौम्य | सुगम | दुर्गम |
| सुशील | दुःशील | स्थूल | सूक्ष्म |
| स्वामी | सेवक | सृष्टि | प्रलय |
| सन्धि | विग्रह | स्थिर | चंचल |
| सबाध | निर्बाध | सत्कार | तिरस्कार |
| स्वार्थ | निस्वार्थ | सापेक्ष | निरपेक्ष |
| सक्षम | अक्षम | सादर | निरादर |
| सलज्ज | निर्लज्ज | सदय | निर्दय |
| सुलभ | दुर्लभ | संकोच | असंकोच |
| सभ्य | असभ्य | सुदूर | अदूर |
| सभय | निर्भय | सामान्य | विशिष्ट |
| सुकाल | अकाल | सविकार | निर्विकार |
| सुबह | शाम | स्वप्न | जागरण |
| स्मरण | विस्मरण | संगत | असंगत |
| स्वदेशी | परदेशी | सुभग | दुभग |
| समाज | व्यक्ति | संग | निःसंग |
| स्वकीया | परकीया | सामान्य | विशिष्ट |

## ( श, ह, क्ष, ज्ञ )

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| शूर | कायर | शयन | जागरण |
| शीत | उष्ण | शुभ | अशुभ |
| शुष्क | आर्द्र | शकुन | अपशकुन |
| शुक्ल | कृष्ण | श्वेत | श्याम |
| शासक | शासित | शयन | जागरण |
| श्रव्य | दृश्य | शोषक | पोषक |
| श्लील | अश्लील | शान्ति | क्रान्ति |
| शत्रु | मित्र | श्रीगणेश | इतिश्री |
| श्रद्धा | घृणा | श्यामा | गौरी |
| स्वर्ग | नरक | स्वीकृत | अस्वीकृत |
| स्वदेश | विदेश | स्वाधीन | पराधीन |
| स्तुति | निंदा | शुक्ल | कृष्ण |
| शिव | अशिव | श्वेत | श्याम |
| शरण | अशरण | शासक | शासित |
| षंड | मर्द | षंडत्व | पुंसत्व |
| ह्रस्व | दीर्घ | हित | अहित |
| हर्ष | शोक | हिंसा | अहिंसा |
| हँसना | रोना | हास | रुदन |
| क्षर | अक्षर | क्षम्य | अक्षम्य |
| क्षुद्र | विशाल | क्षणिक | शाश्वत |
| क्षमा | क्रोध | क्षुद्र | महत |
| क्षमा | दण्ड | ज्ञान | अज्ञान |

# विशेषण

## विशेषण

- विशेषण वे शब्द होते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। ये शब्द वाक्य में संज्ञा के साथ लगकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं।
- विशेषण विकारी शब्द होते हैं एवं इन्हें सार्थक शब्दों के आठ भेड़ों में से एक माना जाता है।
- बड़ा, काला, लम्बा, दयालु, भारी, सुंदर, कायर, टेढ़ा - मेढ़ा, एक, दो, वीर पुरुष, गोरा, अच्छा, बुरा, मीठा, खट्टा आदि विशेषण शब्दों के कुछ उदाहरण हैं।

## विशेषण की परिभाषा

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, सं ख्या, मात्रा या परिमाण आदि) बताते हैं विशेषण कहलाते हैं |

**जैसे** - बड़ा, काला, लंबा, दयालु, भारी, सुन्दर, अच्छा, गन्दा, बुरा, एक, दो आदि।

- वहां चार लड़के बैठे थे।
- अध्यापक के हाथ में लंबी छड़ी है
- वह घर जा रहा था।
- गीता सुंदर लड़की है

## विशेष्य

जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाए वे विशेष्य कहलाते हैं।

**जैसे** - मोहन सुंदर लड़का है

## प्रविशेषण

विशेषण शब्द की भी विशेषता बतलाने वाले शब्द 'प्रविशेषण' कहलाते हैं।

**जैसे** - राधा बहुत सुंदर लड़की है।

इस वाक्य में सुंदर (विशेषण) की विशेषता बहुत शब्द के द्वारा बताई जा रही है। इसलिए बहुत प्रविशेषण शब्द है।

## विशेषण के भेद

हिन्दी व्याकरण में विशेषण के मुख्यतः 5 भेद या प्रकार होते हैं|

- गुणवाचक
- परिमाणवाचक
- संख्यावाचक
- सार्वनामिक

1. **गुणवाचक :-** जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। ये विशेषण भाव, रंग, दशा, आकार, समय, स्थान, काल आदि से सम्बन्धित होते है।

   **जैसे** - अच्छा, बुरा, सफेद, काला, रोगी, मोटा, पतला, लम्बा, चौड़ा, नया, पुराना, ऊँचा, मीठा, चीनी, नीचा, प्रातःकालीन आदि।

   - गुणवाचक विशेषणों में 'सा' सादृश्यवाचक पद जोड़कर गुणों को कम भी किया जाता है।

     **जैसे** - लाल-सा, बड़ा-सा, छोटी-सी, ऊँची-सी आदि।

   - कभी-कभी गुणवाचक विशेषणों के विशेष्य वाक्य लुप्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में संज्ञा का काम भी विशेषण ही करता है।

     **जैसे** - बड़ों का आदर करना चाहिए।

     दीनों पर दया करनी चाहिए।

   - गुणवाचक विशेषण में विशेष्य के साथ कैसा/ कैसी लगाकर प्रश्न करने पर विशेषण पता किया जाता है।

2. **परिमाणवाचक :-** जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु के परिमाण, मात्रा, माप या तोल का बोध हो वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते है |

   इसके दो भेद हैं।

   I. **निश्चित परिमाणवाचक :-** दस क्विटल, तीन किलो, डेढ़ मीटर।

   II. **अनिश्चित परिमाणवाचक :-** थोड़ा, इतना, कुछ, ज्यादा, बहुत, अधिक, कम, तनिक, थोड़ा, इतना, जितना, ढेर सारा।

3. **संख्यावाचक :-** जिस विशेषण द्वारा किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

   **जैसे** - बीस दिन, दस किताब, सात भैंस आदि। यहाँ पर बीस, दस तथा सात - संख्यावाचक विशेषण हैं। इसके दो भेद हैं -

   I. **निश्चित संख्यावाचक :-** दो, तीन, ढाई, पहला, दूसरा, इकहरा, दुहरा, तीनो, चारों, दर्जन, जोड़ा, प्रत्येक।

   II. **अनिश्चित संख्यावाचक :-** कई, कुछ, काफी, बहुत।

4. **सार्वनामिक :-** पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनाम (मैं, तू, वह) के अतिरिक्त अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा के पहले आते हैं, तब वे संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

   **जैसे** - यह घोड़ा अच्छा है।, वह नौकर नहीं आया। यहाँ घोड़ा और नौकर संज्ञाओं के पहले विशेषण के रूप में 'यह' और 'वह' सर्वनाम आये हैं। अतः ये सार्वनामिक विशेषण हैं।

   **जैसे** - यह विद्यालय, वह बालक, वह खिलाड़ी आदि ।

   **सार्वनामिक विशेषण के भेद**

   व्युत्पत्ति के अनुसार सार्वनामिक विशेषण के भी दो भेद है-

   - मौलिक सार्वनामिक विशेषण
   - यौगिक सार्वनामिक विशेषण

I. **मौलिक सार्वनामिक विशेषण :-** जो सर्वनाम बिना रूपान्तर के संज्ञा के पहले आता हैं उसे मौलिक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

**जैसे –**

- वह लड़का,
- यह कार,
- कोई नौकर,
- कुछ काम इत्यादि।

II. **यौगिक सार्वनामिक विशेषण :-** जो मूल सर्वनामों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं।

**जैसे –**

कैसा घर, उतना काम, ऐसा आदमी, जैसा देश इत्यादि।

## विशेष्य और विशेषण में संबंध

ऊपर आपने विशेषण और विशेष्य के बारे में पढ़ा, अब इन दोनों के संबंधों पर बात करेंगे।

“वाक्य में विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है- कभी विशेषण विशेष्य के पहले आता है और कभी विशेष्य के बाद।” इस प्रकार प्रयोग की दृष्टि से विशेषण के दो भेद हैं-

- विशेष्य - विशेषण
- विधेय - विशेषण

1. **विशेष्य विशेषण :-** जो विशेषण विशेष्य के पहले आये, वह विशेष्य - विशेष होता हैं।

**जैसे –**

- मुकेश चंचल बालक है।,
- संगीता सुंदर लड़की है।

इन वाक्यों में चंचल और सुंदर क्रमशः बालक और लड़की के विशेषण हैं, जो संज्ञाओं (विशेष्य) के पहले आये हैं।

2. **विधेय विशेषण :-** जो विशेषण विशेष्य और क्रिया के बीच आये, वहाँ विधेय - विशेषण होता हैं।

**जैसे –**

- मेरा कुत्ता लाल हैं।,
- मेरा लड़का आलसी है।

इन वाक्यों में लाल और आलसी ऐसे विशेषण हैं, जो क्रमशः कुत्ता (संज्ञा) और है (क्रिया) तथा लड़का (संज्ञा) और है (क्रिया) के बीच आये हैं।

## महत्वपूर्ण

विशेषण के लिंग, वचन आदि विशेष्य के लिंग, वचन आदि के अनुसार होते हैं।

**जैसे –**

- अच्छे लड़के पढ़ते हैं।,
- नताशा भली लड़की है।,
- रामू गंदा लड़का है। आदि

यदि एक ही विशेषण के अनेक विशेष्य हों तो विशेषण के लिंग और वचन समीप वाले विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार होंगे,

**जैसे –**

- नये पुरुष और नारियाँ,
- नयी धोती और कुरता। आदि

STEP UP ACADEMY

# व्याख्या

## व्याख्या

व्याख्या न भावार्थ है और न आशय। यह इन दोनों से भिन्न है। व्याख्या किसी भाव या विचार का विस्तार या विवेचन है। इसमें परीक्षार्थी को अपने अध्ययन, मनन और चिन्तन के प्रदर्शन की पूरी स्वतंत्रता रहती है।

## व्याख्या की परिभाषा

- गद्य और पद्य में व्यक्त भावों अथवा विचारों को विस्तारपूर्वक लिखने को व्याख्या कहते हैं।
- 'व्याख्या' किसी भाव या विचार के विस्तार और विवेचन को कहते हैं।
- व्याख्या में पद-निर्देश, अलंकार, कठिन शब्दों का अर्थ तथा समानांतर पंक्तियों से तुलना आवश्यक है। व्याख्या न भावार्थ है, और न आशय। यह इन दोनों से भित्र है। नियम भी भित्र है।
- व्याख्या' किसी भाव या विचार के विस्तार और विवेचन को कहते हैं। इसमें परीक्षार्थी को अपने अध्ययन, मनन और चिन्तन के पदर्शन की पूरी स्वतन्त्रा रहती है।

## व्याख्या के प्रकार

प्रसंग-निर्देश व्याख्या का अनिवार्य अंग है। इसलिए व्याख्या लिखने के पूर्व प्रसंग का उल्लेख कर देना चाहिए, पर प्रसंग-निर्देश संक्षिप्त होना चाहिए। परीक्षा-भवन में व्याख्या लिखते समय परीक्षार्थी प्रायः दो-दो, तीन-तीन पृष्ठों में प्रसंग-निर्देश करते है और कभी-कभी मूलभाव से दूर जाकर लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधने लगते हैं।

यह ठीक नहीं। उत्तम कोटि की व्याख्या में प्रसंग-निर्देश संक्षिप्त होता है। ऐसी कोई भी बात न लिखी जाय, जो अप्रासंगिक हो। अप्रासंगिक बातों को ठूँस देने से अव्यवस्था उत्पत्र हो जाती है। अतः परीक्षार्थी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि व्याख्या में कोई बात फिजूल और बेकार न हो। प्रसंग-निर्देश विषय के अनुकूल होना चाहिए।

व्याख्या में मूल के भावों और विचारों का समुचित और सन्तुलित विवेचन होना चाहिए। यहाँ परीक्षार्थी को अपनी स्वतन्त्र बुद्धि और विद्या से काम लेने का पूरा अधिकार है। विषय के विवेचन में विचारों के सत्यासत्य का निर्णय किया जाता है। इसलिए, विचारो का विवेचन में विचारों के सत्यासत्य का निर्णय किया जाता है।

इसलिए, विचारों का विवेचन करते समय छात्र को विषय के गुण और दोष, दोनों की समीक्षा करनी चाहिए। यदि वह चाहें, तो उसके एक ही पक्ष का विवेचन कर सकता है। लेकिन, अच्छी व्याख्या में विचारों या भावों का सन्तुलित विवेचन अपेक्षित है। यदि छात्र मूल के भावों से सहमत है, तो उसे उसकी तर्कसंगत पुष्टि करनी चाहिए और यदि असहमत है, तो वह उसका खण्डन भी कर सकता है।

व्याख्या में खण्डन-मण्डन से पहले मूल के भावों का सामान्य अर्थ अथवा भावार्थ लिख देना चाहिए, ताकि परीक्षक यह जान सके कि छात्र ने उसका सामान्य अर्थ भली भाँति समझ लिया है। व्याख्या में भावार्थ अथवा आशय का इतना ही काम है। भावार्थ के बाद विषय का विवेचन होना चाहिए।

व्याख्या लिखने के लिए पहले लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ दी जाती थी। लेकिन अब एक-दो पंक्तियों या वाक्यों का अवतरण दिया जाता है। इन दो तरह के अवतरणों की व्याख्या लिखते समय थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। जब कोई बड़ा-सा अवतरण व्याख्या के लिए दिया जाय, तब समझना चाहिए कि इसमें अनेक विचारों का समावेश हो सकता है।

ऐसी स्थिति में विद्यार्थी को अवतरण के मूल और गौण भावों की खोज करनी चाहिए। इसके विपरीत, जब एक-दो पंक्तियों का अवतरण दिया जाय, तब छात्रों को उन्हीं शब्दों का विवेचन करना चाहिए, जिनसे भाव स्पष्ट हो जाय। छोटे अवतरणों में भावों की अधिकता रहती है। व्याख्या में इन्हीं गूढ़ भावों का विस्तार होना चाहिए।

सम्यक विवेचन के बाद अन्त में कठिन शब्दों का अर्थ, टिप्पणी के रूप में दे देना चाहिए। इस तरह व्याख्या समाप्त होती है।

## व्याख्या के लिए आवश्यक निर्देश

मूल अवतरण से व्याख्या बड़ी होती है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई के सम्बन्ध में कोई निश्चित सलाह नहीं दी जा सकती। छात्रों को सिर्फ यह देखना है कि मूल भावों अथवा विचारों का समुचित और सन्तोषजनक विवेचन हुआ या नहीं। इन बातों को ध्यान में रखकर अच्छी और उत्तम व्याख्या लिखी जा सकती है।

- व्याख्या में प्रसंग-निर्देश अत्यावश्यक है।
- प्रसंग-निर्देश संक्षिप्त, आकर्षक और संगत होना चाहिए।
- व्याख्या में मूल विचार या भाव का संतोषपूर्ण विस्तार हो।
- अंत में शब्दार्थ लिखे जायँ।
- मूल के विचारों का खण्डन या मण्डन किया जा सकता है।
- मूल के विचारों के गुण-दोषों पर समानरूप से प्रकाश डालना चाहिए।
- यदि कोई महत्त्वपूर्ण बात हो, तो उसपर अन्त में टिप्पणी दे देनी चाहिए।

## व्याख्या का उदाहरण

1. **सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,**
   **पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।**

   **व्याख्या :-** ये पंक्तियाँ डा. मैथलीशरण गुप्त के 'यशोधरा' काव्य से ली गयी हैं। कुछ वर्षों तक दाम्पत्य-जीवन बिताने के बाद यशोधरा (सिद्धार्थ की धर्मपत्नी) ने यह सहज ही जान लिया था कि उसका पति सांसारिक सुखों की सीमाओं में बँधने वाला साधारण मनुष्य नहीं हैं। इसका आभास उसे पहले ही मिल चुका था।

   अतः वह जानती थी कि सिद्धार्थ का वन-गमन या महाभिनिष्क्रमण स्वाभाविक था। लेकिन गौतम एक रात चुपके से घर छोड़ कर चले गये। यशोधरा को इस बात का बड़ा दुःख हुआ कि उसके स्वामी उससे बिना कुछ कहे, इस तरह चुपके-से क्यों चले गये। यह बात उसे काँटे की तरह चुभने लगी।

**अर्थ-विश्लेषण :-** यशोधरा यह जान कर गौरवान्वित हुई कि उसके पति जीवन के एक महान् लक्ष्य की पूर्ति मे, संसार के कल्याणार्थ गये हैं। सिद्धार्थ-जैसे महापुरुष की धर्मपत्नी होने का उसे गर्व हैं।

लेकिन दु:ख की बात यह हैं कि वे बिना कुछ कहे-सुने चले गये। सिद्धार्थ का 'चोरी-चोरी' जाना यशोधरा को बहुत खला, जैसे उसके हृदय पर गहरा आघात हुआ। वह तड़प उठी और विकल हो गयी।

ऐसा कर गौतम ने नारी के स्त्रियोचित अधिकार, विश्वास और स्वत्व पर गहरी चोट की। नारी का स्वाभाविक मान इसे क्यों कर सहन करे ! आदर्श नारी सब कुछ सहन कर सकती हैं पर अपमान का घूँट कैसे पी सकती हैं? कभी-कभी नारी की आत्म-गौरव-भावना स्त्री-हठ का रूप धारण कर लेती हैं।

लेकिन यशोधरा में इसका अभाव हैं। वह अपने पति की पलायनवादी मनोवृत्ति का विरोध करती महापुरुषों को 'चोरी-चोरी' गृह-त्याग करना शोभा नहीं देता।

**विवेचन :-** प्रश्न यह है कि यशोधरा से बिना कुछ कहे सिद्धार्थ ने पलायन क्यों किया ?सिद्धार्थ, श्रृंगार-भाव से न सही, कर्त्तव्य-भाव से अवश्य ही यशोधरा को, अपने गृह-त्याग का, पूर्व परिचय दे देना चाहते थे। लेकिन नारी की स्वाभाविक दुर्बलता से वे अच्छी तरह अवगत थे।

उन्हें यह शंका थी कि यदि वे पलायन की बात यशोधरा से कह देंगे तो वह निश्चय ही उनके पथ की बाधा बन जायगी। फिर उनकी योजना सफल न हो पाती। उनकी शंका निराधार न थी। वे अपने ही वंश में राम के साथ वन जाने वाली सीता का हठ देख चुके थे।

ऐसी अवस्था में सिद्धार्थ के लिए दूसरा और कोई रास्ता न था। अतः यह स्पष्ट है कि सिद्धार्थ का 'चोरी-चोरी' जाना सार्थक था। लेकिन यशोधरा के लिए यह अभिशाप हो गया। एक सजग और जागरूक नारी के लिए इतना क्या कम था कि उसका पति उसे 'मुक्ति-मार्ग की बाधा नारी' समझे।

फिर नारी का स्वाभिमान क्यों न उत्तेजित हो? सच तो यह हैं कि नारी और पुरुष की स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुसार यशोधरा और सिद्धार्थ के दृष्टिकोण अपने में सत्य हैं। दोनों के विचार स्वाभाविक हैं।

**शब्दार्थ :-** सिद्धि-हेतु-सांसारिक माया तथा बन्धनों को जीतने के लिए। व्याघात-गहरा आघात।

## व्याख्या का दूसरा उदाहरण

2. **तुमने मुझे पहचाना नहीं।**
   **तुम्हारी आँखों पर चर्बी छाई हुई है।**
   **कंगाल ही कलियुग का कल्कि-अवतार है।**

**व्याख्या :-** ये पंक्तियाँ हिंदी के सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह की कहानी 'दरिद्रनारायण' से ली गयी हैं। इन पंक्तियों में लेखक धनवानों को यह बताना चाहता है कि इस युग में कंगाल ही भगवान है। वे भगवान को पाने के लिए तीर्थो में जाकर पंडों को धन का दान करते है, पर वह धन कंगालों या गरीबों को मिलना चाहिए, क्योंकि कंगाल ही धन के सही अधिकारी हैं। धनी लोग धन के घमंड में चूर है वे गरीबों की दर्दभरी कहानी नहीं सुनते।

उनकी आँखों पर घमंड का चश्मा चढ़ा है या उनपर चर्बी छायी है। जबतक वे इस चश्मे को उतार नहीं फेंकते, तबतक कलियुग के कल्कि-अवतार के दर्शन नहीं कर सकते। इस युग का भगवान कंगाल है, गरीब है। उसकी सेवा ही आज भगवान की सबसे बड़ी पूजा है।

## व्याख्या का तीसरा उदाहरण

3. **माला फेरत युग गया, गया न मन का फेर।**

**कर का मनका छाँड़िकै, मन का मनका फेर।।**

**व्याख्या :-** प्रस्तुत 'दोहा' 'साहित्य-सरिता' नामक पुस्तक में संकलित 'कबीरदास की सखियाँ' से लिया गया है। महज अड़तालीस मात्राओं के इस छंद में महान् निर्गुणवादी संत कबीर ने एक गहरा अनुभव व्यक्त किया है।

उनका कहना है कि माला फेरते-फेरते तो अनगिनत वर्ष बीते, किंतु मन का फेर न गया अर्थात मन की मैल न धुली, कपट न मिटा। अतः यह आवश्यक है कि हाथ की सुमरिनी छोड़कर मन की सुमरिनी फेरनी ही आरंभ कर दें।

इस दोहे में कबीर ऐसे ढोंगियों को फटकारते हैं, जो दुनिया को ठगने के लिए एक ओर माला जपते हैं और दूसरी ओर फरेब का जाल बुनते हैं। उनके लिए माला मानो धोखे की टट्टी है, जिसकी आड़ में वे मनमाना शिकार खेलते हैं।

किंतु सच्चे भक्त जानते हैं कि प्रभु उसी पर प्रसन्न होता है, जिसका हृदय निर्मल हो, निष्कपट हो, छल-छद्महीन हो। गोस्वामीजी ने भी लिखा है कि भगवान राम की वाणी है-

**निर्मल जन सोई मोहि पावा।**

**मोहि कपट छल-छिद्र न भावा।।**

प्रस्तुत दोहे में यमक अलंकार है। 'मन का' और 'मनका' एक ही स्वर-व्यंजन-समुदाय की आवृत्ति है, किंतु दोनों में भेद है। एक 'मन का' का अर्थ स्पष्ट है और दूसरे 'मनका' का अर्थ माला है, अनुभव की गहराई से निकली हुई कबीर की यह वाणी सहज रूप से अर्थवान तो है ही, अलंकृत भी हो गयी है।

# शुद्ध वर्तनी

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और शब्द भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई है। भाषा के माध्यम से ही मानव मौखिक एवं लिखित रूपों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। इस वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का शुद्ध प्रयोग आवश्यक है। अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने में भी देर नहीं लगती। कई बार क्षेत्रीयता, उच्चारण भेद और व्याकरणिक ज्ञान के अभाव के कारण वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

**वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के कई कारण हो सकते हैं जिसमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित है –**

**1. मात्रा प्रयोग –**

हिन्दी के कई शब्द ऐसे हैं जिनको लिखते समय मात्रा के प्रयोग विषयक संशय उत्पन्न हो जाता है। ऐसे शब्दों का ठीक से उच्चारण करने पर उचित मात्रा प्रयोग किया जाना संभव होता है।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अतिथी | अतिथि |
| इंदोर | इंदौर |
| उर्जा | ऊर्जा |
| ऊषा | उषा |
| करूणा | करुणा |
| क्योंकी | क्योंकि |
| गितांजली | गीताजंलि |
| तियालीस | तैंतालिस |
| त्रिपुरारी | त्रिपुरारि |
| दवाईयाँ | दवाइयाँ |
| दीयासलाइ | दियासलाई |
| निरिक्षण | निरीक्षण |
| नुपुर | नूपुर |
| प्रतीलीपि | प्रतिलिपि |
| आहुती | आहूति |
| ईकाई | इकाई |

| | |
|---|---|
| उहापोह | ऊहापोह |
| एरावत | ऐरावत |
| केकयी | कैकेयी |
| क्षिती | क्षिति |
| गोतम | गौतम |
| तिथी | तिथि |
| तिलांजली | तिलांजलि |
| त्यौंहार | त्योहार |
| दिवारात्रि | दिवारात्र |
| निरव | नीरव |
| नीती | निति |
| प्रतिनीधी | प्रतिनिधि |
| पत्नि | पत्नी |
| पडौसी | पडोसी |
| परिक्षित | परीक्षित |
| पुज्य | पूज्य |
| पुरूस्कार | पुरस्कार |
| बिमार | बीमार |
| मिट्टि | मिट्टी |
| मुल्य | मूल्य |
| मूमर्ष | मुमूर्ष |
| युयूत्सा | युयुत्सा |
| रुप | रूप |
| रूपया | रुपया |
| श्रीमति | श्रीमती |
| परिक्षा | परीक्षा |
| पितांबर | पीताबंर |
| पूज्यनीय | पूजनीय |
| बधाईयाँ | बधाइयाँ |
| मारूति | मारुति |
| मिलित | मीलित |
| मूर्ती | मूर्ति |

| | |
|---|---|
| मेथलीशरण | मैथिलीशरण |
| रचियता | रचयिता |
| रात्री | रात्रि |
| शारिरीक | शारीरिक |
| हरितिमा | हरीतिमा |

**2. आगम –**

शब्दों के प्रयोग में अज्ञानवश या भूलवश जब अनावश्यक वर्णों का प्रयोग किया जाए तो उसे आगम कहते हैं। आगम स्वर व व्यंजन दोनों का हो सकता है। अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त इन वर्णों को हटाकर शब्दों का शुद्ध प्रयोग किया जा सकता है।

**स्वर का आगम –**

**जैसे –**

| अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|
| अत्याधिक | अत्यधिक |
| अहोरात्रि | अहोरात्र |
| पहिला | पहला |
| प्रदर्शिनी | प्रदर्शनी |
| द्वारिका | द्वारका |
| अहिल्या | अहल्या |
| आधीन | अधीन |
| तदानुकूल | तदनुकूल |
| वापिस | वापस |

**व्यंजन का आगम –**

**जैसे –**

| अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|
| अंतर्ध्यान | अंतर्धान |
| चिक्कीर्षा | चिकीर्षा |
| मानवीयकरण | मानवीकरण |
| सदृश्य | सदृश |
| सौजन्यता | सौजन्य |
| कृत्यकृत्य | कृतकृत्य |
| षष्ठम् | षष्ठ |
| समुन्द्र | समुद्र |

**3. लोप –**

शब्दों के प्रयोग में जब किसी आवश्यक वर्ण (स्वर या व्यंजन) का प्रयोग होने से रह जाए तो वह लोप कहलाता है। इस आधार पर भी शब्दों के सही प्रयोग करने हेतु आवश्यक स्वर या व्यंजन जोड़कर त्रुटि रहित प्रयोग किया जा सकता है।

**स्वर का लोप –**

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अगामी | आगामी |
| उज्यनी | उज्जयिनी |
| जमाता | जामाता |
| मोक्षदायनी | मोक्षदायिनी |
| स्वस्थ्य | स्वास्थ्य |
| आजीवका | आजीविका |
| कालंदि | कालिंदी |
| वयाकरण | वैयाकरण |

**व्यंजन का लोप –**

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अनुछेद | अनुच्छेद |
| गणमान्य | गण्यमान्य |
| जोत्सना | ज्योत्स्ना |
| प्रतिछाया | प्रतिच्छाया |
| मत्सेंद्र | मत्स्येंद्र |
| मिष्ठान | मिष्टान्न |
| व्यंग | व्यंग्य |
| स्वालंबन | स्वावलंबन |
| उपलक्ष | उपलक्ष्य |
| छत्रछाया | छत्रच्छाया |
| धातव्य | ध्यातव्य |
| प्रतिद्वंद | प्रतिद्वंद्व |
| महात्म | माहात्म्य |
| याज्ञवल्क | याज्ञवल्क्य |
| सामर्थ | सामर्थ्य |

4. **वर्ण व्यतिक्रम (क्रम भंग) –**

शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को उनके क्रम से प्रयुक्त न कर शब्द में उसके नियत स्थान की अपेक्षा किसी अन्य क्रम पर प्रयुक्त् करना वर्ण व्यतिक्रम कहलाता है।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अथिति | अतिथि |
| आवाहन | आह्वान |
| चिन्ह | चिह्न |
| पूर्वान्ह | पूर्वाह्न |
| ब्रम्हा | ब्रह्म |
| विव्हल | विह्वल |
| अपरान्ह | अपराह्न |
| आल्हाद | आह्लाद |
| जिव्हा | जिह्वा |
| प्रल्हाद | प्रह्लाद |
| मध्यान्ह | मध्याह्न |

5. **वर्ण परिवर्तन –**

कई बार वर्ण प्रयुक्त करते समय असावधानीवश किसी वर्ण विशेष के स्थान पर किसी दूसरे वर्ण का प्रयोग हो जाता है। यह प्रयोग वर्तनी की अशुद्धि को दर्शाता है। अतः इस प्रकार के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अधिशाषी | अधिशासी |
| आंसिक | आंशिक |
| कनिष्ट | कनिष्ठ |
| छीद्रान्वेशी | छिद्रान्वेषी |
| निशंग | निषंग (तरकश) |
| पुरुस्कार | पुरस्कार |
| यथेष्ट | यथेष्ठ |
| वरिष्ट | वरिष्ठ |
| श्राप | शाप |
| सगठन | संगठन |

| | |
|---|---|
| संतुष्ठ | संतुष्ट |
| खंबा | खंभा |
| जुखाम | जुकाम |
| नृसंश | नृशंस |
| प्रसासन | प्रशासन |
| रामायन | रामायण |
| विंधाचल | विंध्याचल |
| सीधा-साधा | सीधा-सादा |
| संघठन | संघटन |
| सुस्रुषा | सुश्रुषा |

6. **संयुक्ताक्षरों व व्यंजन द्वित्व का अशुद्ध प्रयोग –**

दो व्यंजनों के बीच स्वर का अभाव संयुक्ताक्षर बनाता है वहीं दो समान व्यंजनों में से कोई एक जब स्वर रहित हो व तुरंत एक-दूसरे के बाद आए तो ऐसा प्रयोग द्वित्व कहलाता है। शुद्ध लेखन के लिए इन संयुक्त एवं द्वित्व वर्णों के प्रयोग में भी सावधानी रखनी चाहिए।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अद्वितिय | अद्वितीय |
| उतीर्ण | उत्तीर्ण |
| उल्लेखित | उल्लिखित |
| न्यौछावर | न्योछावर |
| बुद्धवार | बुधवार |
| रक्खा | रखा |
| वृद्वि | वृद्धि |
| संक्षिप्तिकरण | संक्षिप्तीकरण |
| उतम | उत्तम |
| उलंघन | उल्लंघन |
| निमित | निमित्त |
| प्रज्जवलित | प्रज्वलित |
| योधा | योद्धा |
| विध्याचल | विद्यालय |
| शुद्धिकरण | शुद्धीकरण |

**7. पंचम वर्ण/अनुस्वार/अनुनासिकता (चंद बिंदु) का प्रयोग –**

कई बार शब्दों में अनुस्वार या अनुनासिक चिह्न के प्रयोग की आवश्यकता होती है। इनमें से अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक या अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग त्रुटिपूर्ण होता है। अतः इनके प्रयोग में विशेष सावधानी की जरूरत होती है।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अँकुर | अंकुर |
| आंसू | आँसू |
| कांच | काँच |
| गान्धी | गाँधी |
| चांद | चाँद |
| झांसी | झाँसी |
| अँधा | अंधा |
| ऊंचा | ऊँचा |
| कुआ | कुआँ |
| चन्चल | चंचल |
| जगंनाथ | जगन्नाथ |
| झूँठ | झूठ |
| थूंक | थूक |
| दिंगनाग | दिङ्नाग |
| वांगमय | वाङ्मय |
| षन्मुख | षण्मुख |
| सन्लाप | संलाप |
| सम्हार | संहार |
| हंसना | हँसना |
| हंसिया | हँसिया |
| दांत | दाँत |
| पाचवां | पाँचवाँ |
| षणमास | षण्मास |
| सन्लग्न | संलग्न |
| सन्शय | संशय |
| हन्स | हंस |
| हंसमुख | हँसमुख |

**8. 'रेफ' व 'र' के अशुद्ध प्रयोग –**

'र' तथा रेफ के असावधानीपूर्वक प्रयोग से कई बार शब्दों में वर्तनी दोष आ जाता है। अतः शुद्ध वर्तनी प्रयोग का ध्यान रखते हुए इनके प्रयोग में सावधानी रखकर हम त्रुटिपूर्ण प्रयोग से बच सकते हैं।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अथार्त | अर्थात् |
| अनुगृह | अनुग्रह |
| आर्शिवाद | आशीर्वाद |
| चर्मोत्कर्ष | चरमोत्कर्ष |
| दुगर्ति | दुर्गति |
| सर्मथ | समर्थ |
| पुर्नजन्म | पुनर्जन्म |
| ब्रहस्पति | बृहस्पति |
| मुध्दनर्य | मूर्द्धन्य |
| विगृह | विग्रह |
| श्रृंगार | शृंगार |
| सृष्टा | स्रष्टा |
| स्त्रोत | स्रोत |
| अहरनिस | अहर्निश |
| अनुग्रहित | अनुगृहीत |
| क्रशांगी | कृशांगी |
| तीथंर्कर | तीर्थंकर |
| दशर्न | दर्शन |
| नमर्दा | नर्मदा |
| प्रर्यपण | प्रत्यर्पण |
| मरयादा | मर्यादा |
| मुर्हुत | मुहूर्त |
| व्रद्धीकरण | वृद्धीकरण |
| संग्रहित | संगृहीत |
| स्त्रोत्र | स्तोत्र |
| स्रष्टि | सृष्टि |

9. **संधि –**

संधि के नियमों की जानकारी के अभाव में भी शब्दों में त्रुटि होने की पूरी संभावना रहती है। अतः वे शब्द जो संधि शब्द बन रहे हों उनके प्रयोग में संधि के नियमों के सावधानीपूर्वक प्रयोग से हम शब्दों का शुद्ध प्रयोग कर सकते हैं।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अत्याधिक | अत्यधिक |
| अंताक्षरी | अंत्याक्षरी |
| अभ्यांतर | अभ्यंतर |
| अभ्यारण्य | अभयारण्य |
| अन्विती | अन्विति |
| उपरोक्त | उपर्युक्त |
| कविंद्र | कवींद्र |
| उज्वल | उज्ज्वल |
| पुनरावलोकन | पुनरवलोकन |
| पुनरोत्थान | पुनरुत्थान |
| तत्त्वाधान | तत्त्वावधान |
| भाष्कर | भास्कर |
| रविंद्र | रवींद्र |
| षट्यंत्र | षड्यंत्र |
| सम्यकज्ञान | सम्यग्ज्ञान |
| उचछवास | उच्छ्वास |
| गत्यावरोध | गत्यवरोध |
| पुनरोक्ति | पुनरुक्ति |
| दुरावस्था | दुरवस्था |
| भगवतगीता | भगवद्गीता |
| मेघाछन्न | मेघाच्छन्न |
| लघुत्तर | लघूत्तर |
| संसदसदस्य | संसत्सदस्य |
| सरवर | सरोवर |

**10. समास–**

शब्दों के शुद्ध प्रयोग हेतु समास के नियमों का भी ज्ञान होना आवश्यक है। भाषा व्यवहार में आने वाले सामासिक पदों के प्रयोग में समास के नियमों का ध्यान रख कर हम त्रुटियों से बच सकते हैं।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अष्टवक्र | अष्टावक्र |
| एकलोता | इकलौता |
| निरपराधी | निरपराध |
| सशंकित | सशंक |
| यौवनावस्था | युवावस्था |
| अहोरात्रि | अहोरात्र |
| दिवारात्रि | दिवारात्र |
| सकुशलतापूर्वक | सकुशल/कुशलतापूर्वक |
| योगीवर | योगिवर |

**11. उपसर्ग –**

उपसर्ग के प्रयोग से बने शब्दों में उचित उपसर्ग की पहचान कर लेखन या वाचन करने से शब्दों का शुद्ध प्रयोग संभव हो सकता है।

**जैसे –**

| **अशुद्ध** | **शुद्ध** |
|---|---|
| अनाधिकार | अनधिकार |
| निरावलंब | निरवलंब |
| निराभिमान | निरभिमान |
| निसंकोच | निस्संकोच |
| बईमान | बेईमान |
| सशंकित | सशंक/शंकित |
| तदोपरांत | तदुपरांत |
| निशुल्क | निःशुल्क |
| निरालंकृत | निरलंकृत |
| बेफिजूल | फिजूल/फ़जूल |
| सदृश्य | सादृश्य/सदृश |
| सानंदपूर्वक | सानंद/आनंदपूर्वक |

**12. प्रत्यय –**

प्रत्यय के नियमों की जानकारी के अभाव के कारण भी शब्दों में त्रुटि होने की पूरी संभावना रहती है। अतः प्रत्यय के सही व सावधानीपूर्वक प्रयोग से लेखन में होने वाली अशुद्धि से बच सकते हैं।

**जैसे –**

| अशुद्ध | शुद्ध |
| --- | --- |
| अनुपातिक | आनुपातिक |
| उपनिवेशिक | औपनिवेशिक |
| उद्योगीकरण | औद्योगिकीकरण |
| एतिहासीक | ऐतिहासिक |
| ऐशवर्य | ऐश्वर्य |
| ओदार्य | औदार्य |
| कार्पण्यता | कृपणता/कार्पण्य |
| क्रोधित | क्रुद्ध |
| ग्रसित | ग्रस्त |
| तत्कालिक | तात्कालिक |
| दैन्यता | दैन्य |
| प्रफुल्लित | प्रफुल्ल |
| प्रामाणिकरण | प्रमाणीकरण |
| प्रोद्योगिकी | प्रौद्योगिकी |
| वाल्मिकी | वाल्मीकि |
| ओद्योगिक | औद्योगिक |
| औदार्यता | उदारता |
| कोंतेय | कौंतेय |
| गोरवता | गुरुता |
| चातुर्यता | चातुर्य/चतुरता |
| दारिद्रयता | दरिद्रता/दारिद्रय |
| धैर्यता | धीरता/धैर्य |
| प्रमाणिक | प्रामाणिक |
| प्रागेतिहासीक | प्रागैतिहासिक |
| भाग्यमान | भाग्यवान |
| व्यवहारीक | व्यावहारिक |

**13. लिंग –**

हिन्दी में स्त्री लिंग व पुल्ंिलग शब्दों के प्रयोग के विशिष्ट नियम हैं जो हम लिंग वाले अध्याय में विस्तृत रूप से पढ़ चुके हैं। लिंग परिवर्तन व पहचान के नियमों का सही प्रयोग हम अशुद्धियों से बच सकते है।

**जैसे –**

| अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|
| अनाथिनी | अनाथ |
| गुणवानी | गुणवती |
| चूही | चुहिया |
| ठाकुरनी | ठकुराइन |
| दुल्हा | दुल्हिन |
| पिशाचिनी | पिशाची |
| विद्वानी | विदुषी |
| सुनारी | सुनारिन |
| कवित्री | कवयित्री |
| चमारी | चमारिन |
| जेठी | जेठानी |
| दाती | दात्री |
| नेती | नेत्री |
| भुजंगी | भुजंगिनी |
| श्रीमति | श्रीमती |

**14. वचन –**

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं- एकवचन और बहुवचन। इनके प्रयोग व पहचान की विस्तृत चर्चा वचन वाले अध्याय में हो चुकी है। इनका ठीक तरीके से पालन हमें शुद्ध लेखन में मदद करता है।

**जैसे –**

| अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|
| अनेकों | अनेक |
| इकाईयाँ | इकाइयाँ |
| हिन्दुवों | हिन्दुओं |
| विद्यार्थीगण | विद्यार्थिगण |
| आसुएं | आँसू |
| गोवें | गौएँ |
| दवाईयाँ | दवाइयाँ |

# समास

आपस में संबंध रखने वाले जब दो या दो से अधिक शब्दों के बीच में से विभक्ति हटाकर उन दोनों शब्दों को मिलाया जाता है तब इस मेल को समास कहते हैं।

दो या दो से अधिक शब्द मिलकर जब एक नया उस से मिलता जुलता शब्द का निर्माण करते हैं वह समास कहलाता है। समास शब्द 'सम्' (पूर्ण रूप से) एवं 'आस' (शब्द) से मिलकर बना होता है। जिसका अर्थ होता है विस्तार से कहना। और इसी के अंतर्गत समास के नियमों से बना शब्द सामासिक पद या समस्त पद कहलाता है। जैसे – देश भक्ति, चौराहा, महात्मा, रसोईघर।

## समास की परिभाषा –

समास का संक्षिप्त तात्पर्य है – "संछिप्तीकरण"। इसका शाब्दिक अर्थ होता है छोटा रूप। अथार्त जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उस शब्द को समास कहते हैं।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जहाँ पर कम-से-कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रकट किया जाए वह समास कहलाता है।

**उदाहरण:**

1. हाथ के लिए कड़ी = हथकड़ी
2. रसोई के लिए घर = रसोईघर
3. नील और कमल = नीलकमल

## सामासिक शब्द

समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहा जाता है। समास होने के बाद विभक्तियों के चिन्ह गायब हो जाते हैं।

**उदाहरण:** नीलकमल

## समास विग्रह

सामासिक शब्दों के बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट करने को समास – विग्रह कहते हैं। विग्रह के बाद सामासिक शब्द गायब हो जाते हैं अथार्त जब समस्त पद के सभी पद अलग – अलग किय जाते हैं उसे समास-विग्रह कहते हैं।

**उदाहरण:–** माता-पिता = माता और पिता।

## समास के भेद

समास के मुख्यतः छह प्रकार या भेद होते हैं जो निम्नलिखित इस प्रकार है–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द समास
6. बहुव्रीहि समास

## अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास में प्रथम पद अव्यय होता है और उसका अर्थ प्रधान होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें अव्यय पद का प्रारूप लिंग, वचन, कारक, में नहीं बदलता है वो हमेशा एक जैसा रहता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयोग हों वहाँ पर अव्ययीभाव समास होता है संस्कृत में उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभाव समास ही मने जाते हैं।

**अव्ययीभाव समास के उदाहरण**

- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
- घर-घर = प्रत्येक घर
- रातों रात = रात ही रात में
- प्रतिवर्ष =हर वर्ष
- आजन्म = जन्म से लेकर
- यथासाध्य = जितना साधा जा सके
- धडाधड = धड-धड की आवाज के साथ
- आमरण = म्रत्यु तक
- यथाकाम = इच्छानुसार
- यथास्थान = स्थान के अनुसार
- अभूतपूर्व = जो पहले नहीं हुआ
- निर्भय = बिना भय के
- निर्विवाद = बिना विवाद के
- निर्विकार = बिना विकार के
- प्रतिपल = हर पल
- अनुकूल = मन के अनुसार
- अनुरूप = रूप के अनुसार
- यथासमय = समय के अनुसार

- यथाशीघ्र = शीघ्रता से
- अकारण = बिना कारण के
- यथासामर्थ्य = सामर्थ्य के अनुसार
- यथाविधि = विधि के अनुसार
- भरपेट = पेट भरकर
- हाथोंहाथ = हाथ ही हाथ में
- बेशक = शक के बिना

## तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है। यह कारक से जुदा समास होता है। इसमें ज्ञातव्य-विग्रह में जो कारक प्रकट होता है उसी कारक वाला वो समास होता है। इसे बनाने में दो पदों के बीच कारक चिन्हों का लोप हो जाता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

### तत्पुरुष समास के उदाहरण

- राजा का कुमार = राजकुमार
- धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ
- रचना करने वाला = रचनाकार
- राजा का पुत्र = राजपुत्र
- शर से आहत = शराहत
- राह के लिए खर्च = राहखर्च
- तुलसी द्वारा कृत = तुलसीदासकृत
- राजा का महल = राजमहल

### तत्पुरुष समास के भेद

वैसे तो तत्पुरुष समास के 8 भेद होते हैं किन्तु विग्रह करने की वजह से कर्ता और सम्बोधन दो भेदों को लुप्त रखा गया है। जिस तत्पुरुष समास में प्रथम पद तथा द्वतीय पद दोनों भिन्न-भिन्न विभक्तियों में हो, उसे व्यधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। उदाहरणतया- राज्ञ: पुरुष: – राजपुरुष: में प्रथम पद राज्ञ: षष्ठी विभक्ति में है तथा द्वतीय पद पुरुष: में प्रथमा विभक्ति है। इस प्रकार दोनों पदों में भिन्न-भिन्न विभक्तियाँ होने से व्यधिकरण तत्पुरुष समास हुआ।

इसलिए विभक्तियों के अनुसार तत्पुरुष समास के 6 भेद होते हैं :-

1. कर्म तत्पुरुष समास
2. करण तत्पुरुष समास
3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास
4. अपादान तत्पुरुष समास
5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास
6. अधिकरण तत्पुरुष समास

1. **कर्म तत्पुरुष समास**

इसमें दो पदों के बीच में कर्मकारक छिपा हुआ होता है। कर्मकारक का चिन्ह 'को' होता है। 'को' को कर्मकारक की विभक्ति भी कहा जाता है। उसे कर्म तत्पुरुष समास कहते हैं।

**कर्म तत्पुरुष समास के उदाहरण**

- ग्रामगत = ग्राम को गया हुआ
- माखनचोर =माखन को चुराने वाला
- वनगमन =वन को गमन
- मुंहतोड़ = मुंह को तोड़ने वाला
- स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त
- देशगत = देश को गया हुआ
- जनप्रिय = जन को प्रिय
- मरणासन्न = मरण को आसन्न
- गिरहकट = गिरह को काटने वाला
- कुंभकार = कुंभ को बनाने वाला
- गृहागत = गृह को आगत
- कठफोड़वा = कांठ को फोड़ने वाला
- शत्रुघ्न = शत्रु को मारने वाला
- गिरिधर = गिरी को धारण करने वाला
- मनोहर = मन को हरने वाला

2. **करण तत्पुरुष समास**

जहाँ पर पहले पद में करण कारक का बोध होता है। इसमें दो पदों के बीच करण कारक छिपा होता है। करण कारक का चिन्ह या विभक्ति 'के द्वारा' और 'से' होता है। उसे करण तत्पुरुष कहते हैं।

**करण तत्पुरुष समास के उदाहरण**

- मनचाहा = मन से चाहा
- शोकग्रस्त = शोक से ग्रस्त
- भुखमरी = भूख से मरी
- धनहीन = धन से हीन
- बाणाहत = बाण से आहत
- ज्वरग्रस्त = ज्वर से ग्रस्त
- मदांध = मद से अँधा
- रसभरा = रस से भरा

- आचारकुशल = आचार से कुशल
- भयाकुल = भय से आकुल
- आँखोंदेखी = आँखों से देखी
- तुलसीकृत = तुलसी द्वारा रचित
- रोगातुर = रोग से आतुर
- पर्णकुटीर = पर्ण से बनी कुटीर
- कर्मवीर = कर्म से वीर
- रक्तरंजित = रक्त से रंजित
- जलाभिषेक = जल से अभिषेक
- रोगग्रस्त = रोग से ग्रस्त

### 3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास

इसमें दो पदों के बीच सम्प्रदान कारक छिपा होता है। सम्प्रदान कारक का चिन्ह या विभक्ति 'के लिए' होती है। उसे सम्प्रदान तत्पुरुष समास कहते हैं।

**सम्प्रदान तत्पुरुष समास के उदाहरण**

- विद्यालय = विद्या के लिए आलय
- रसोईघर = रसोई के लिए घर
- सभाभवन = सभा के लिए भवन
- विश्रामगृह = विश्राम के लिए गृह
- गुरुदक्षिणा = गुरु के लिए दक्षिणा
- प्रयोगशाला = प्रयोग के लिए शाला
- देशभक्ति = देश के लिए भक्ति
- स्नानघर = स्नान के लिए घर
- सत्यागृह = सत्य के लिए आग्रह
- यज्ञशाला = यज्ञ के लिए शाला
- डाकगाड़ी = डाक के लिए गाड़ी
- देवालय = देव के लिए आलय
- गौशाला = गौ के लिए शाला
- युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि
- हथकड़ी = हाथ के लिए कड़ी
- धर्मशाला = धर्म के लिए शाला
- पुस्तकालय = पुस्तक के लिए आलय

- राहखर्च = राह के लिए खर्च
- परीक्षा भवन = परीक्षा के लिए भवन

**4. अपादान तत्पुरुष समास**

इसमें दो पदों के बीच में अपादान कारक छिपा होता है। अपादान कारक का चिन्ह या विभक्ति 'से अलग' होता है। उसे अपादान तत्पुरुष समास कहते हैं।

**अपादान तत्पुरुष समास के उदाहरण**

- कामचोर = काम से जी चुराने वाला
- दूरागत = दूर से आगत
- रणविमुख = रण से विमुख
- नेत्रहीन = नेत्र से हीन
- पापमुक्त = पाप से मुक्त
- देशनिकाला = देश से निकाला
- पथभ्रष्ट = पथ से भ्रष्ट
- पदच्युत = पद से च्युत
- जन्मरोगी = जन्म से रोगी
- रोगमुक्त = रोग से मुक्त
- जन्मांध = जन्म से अँधा
- कर्महीन = कर्म से हीन
- वनरहित = वन से रहित
- अन्नहीन = अन्न से हीन
- जलहीन = जल से हीन
- गुणहीन = गुण से हीन
- फलहीन = फल से हीन
- भयभीत = भय से डरा हुआ

**5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास**

इसमें दो पदों के बीच में सम्बन्ध कारक छिपा होता है। सम्बन्ध कारक के चिन्ह या विभक्ति 'का', 'के', 'की'होती हैं। उसे सम्बन्ध तत्पुरुष समास कहते हैं।

**सम्बन्ध तत्पुरुष समास के उदाहरण**

- गंगाजल = गंगा का जल
- लोकतंत्र = लोक का तंत्र
- दुर्वादल = दुर्व का दल

- देवपूजा = देव की पूजा
- आमवृक्ष = आम का वृक्ष
- राजकुमारी = राज की कुमारी
- जलधारा = जल की धारा
- राजनीति = राजा की नीति
- सुखयोग = सुख का योग
- मूर्तिपूजा = मूर्ति की पूजा
- श्रधकण = श्रधा के कण
- शिवालय = शिव का आलय
- देशरक्षा = देश की रक्षा
- सीमारेखा = सीमा की रेखा
- जलयान = जल का यान
- कार्यकर्ता = कार्य का करता
- सेनापति = सेना का पति
- कन्यादान = कन्या का दान
- गृहस्वामी = गृह का स्वामी
- पराधीन – पर के अधीन

6. **अधिकरण तत्पुरुष समास**

इसमें दो पदों के बीच अधिकरण कारक छिपा होता है। अधिकरण कारक का चिन्ह या विभक्ति 'में', 'पर' होता है। उसे अधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं।

**अधिकरण तत्पुरुष समास के उदाहरण**

- ईस्वरभक्ति = ईस्वर में भक्ति
- आत्मविश्वास = आत्मा पर विश्वास
- दीनदयाल = दीनों पर दयाल
- दानवीर = दान देने में वीर
- आचारनिपुण = आचार में निपुण
- जलमग्न = जल में मग्न
- सिरदर्द = सिर में दर्द
- क्लाकुशल = कला में कुशल
- शरणागत = शरण में आगत
- आनन्दमग्न = आनन्द में मग्न

- आपबीती = आप पर बीती
- नगरवास = नगर में वास
- रणधीर = रण में धीर
- क्षणभंगुर = क्षण में भंगुर
- पुरुषोत्तम = पुरुषों में उत्तम
- लोकप्रिय = लोक में प्रिय
- गृहप्रवेश = गृह में प्रवेश
- युधिष्ठिर = युद्ध में स्थिर
- शोकमग्न = शोक में मग्न

**तत्पुरुष समास के उपभेद**

1. नञ् तत्पुरुष समास
2. उपपद तत्पुरुष समास
3. लुप्तपद तत्पुरुष समास

**उपपद तत्पुरुष समास**

ऐसा समास जिनका उत्तरपद भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त न होकर प्रत्यय के रूप में ही प्रयोग में लाया जाता है। जैसे- नभचर, कृतज़ , कृतघ्न , जलद , लकड़हारा इत्यादि ।

**लुप्तपद तत्पुरुष समास**

जब किसी समास में कोई कारक चिह्न अकेला लुप्त न होकर पूरे पद सहित लुप्त हो और तब उसका सामासिक पद बने तो वह लुप्तपद तत्पुरुष समास कहलाता है ।जैसे –

- दहीबड़ा – दही में डूबा हुआ बड़ा
- ऊँटगाड़ी – ऊँट से चलने वाली गाड़ी
- पवनचक्की – पवन से चलने वाली चक्की आदि ।

**नञ तत्पुरुष समास**

इसमें पहला पद निषेधात्मक होता है उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं।

**नञ तत्पुरुष समास के उदाहरण**

- असभ्य =न सभ्य
- अनादि =न आदि
- असंभव =न संभव
- अनंत = न अंत

## कर्मधारय समास

कर्मधारय समास का उत्तर पद प्रधान होता है। इस समास में विशेषण-विशेष्य और उपमेय-उपमान से मिलकर बनते हैं उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

### कर्मधारय समास के उदाहरण

- नीलगगन = नीला है जो गगन
- चन्द्रमुख = चन्द्र जैसा मुख
- पीताम्बर = पीत है जो अम्बर
- महात्मा = महान है जो आत्मा
- लालमणि = लाल है जो मणि
- महादेव = महान है जो देव
- देहलता = देह रूपी लता
- नवयुवक = नव है जो युवक
- अधमरा = आधा है जो मरा
- प्राणप्रिय = प्राणों से प्रिय
- श्यामसुंदर = श्याम जो सुंदर है
- नीलकंठ = नीला है जो कंठ
- महापुरुष = महान है जो पुरुष
- नरसिंह = नर में सिंह के समान
- कनकलता = कनक की सी लता
- नीलकमल = नीला है जो कमल
- परमानन्द = परम है जो आनंद

### कर्मधारय समास के भेद

1. विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास
2. विशेष्यपूर्वपद कर्मधारय समास
3. विशेषणोंभयपद कर्मधारय समास
4. विशेष्योभयपद कर्मधारय समास

**1. विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास :-**

जहाँ पर पहला पद प्रधान होता है वहाँ पर विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास होता है।

**जैसे :-**

- नीलीगाय = नीलगाय
- पीत अम्बर = पीताम्बर
- प्रिय सखा = प्रियसखा

**2. विशेष्यपूर्वपद कर्मधारय समास :-**

इसमें पहला पद विशेष्य होता है और इस प्रकार के सामासिक पद ज्यादातर संस्कृत में मिलते हैं।

**जैसे :-** कुमारी श्रमणा = कुमारश्रमणा

**3. विशेषणोंभयपद कर्मधारय समास :-**

इसमें दोनों पद विशेषण होते हैं।

**जैसे :-** नील – पीत, सुनी – अनसुनी, कहनी – अनकहनी

**4. विशेष्योभयपद कर्मधारय समास :-**

इसमें दोनों पद विशेष्य होते है।

**जैसे :-** आमगाछ, वायस-दम्पति।

**कर्मधारय समास के उपभेद**

1. उपमानकर्मधारय समास
2. उपमितकर्मधारय समास
3. रूपककर्मधारय समास

**1. उपमानकर्मधारय समास :-**

इसमें उपमानवाचक पद का उपमेयवाचक पद के साथ समास होता है। इस समास में दोनों शब्दों के बीच से 'इव' या 'जैसा' अव्यय का लोप हो जाता है और दोनों पद, चूँकि एक ही कर्ता विभक्ति, वचन और लिंग के होते हैं, इसलिए समस्त पद कर्मधारय लक्षण का होता है। उसे उपमानकर्मधारय समास कहते हैं।

**जैसे :-** विद्युत् जैसी चंचला = विद्युचंचला

**2. उपमितकर्मधारय समास :-**

यह समास उपमानकर्मधारय का उल्टा होता है। इस समास में उपमेय पहला पद होता है और उपमान दूसरा पद होता है। उसे उपमितकर्मधारय समास कहते हैं।

**जैसे :-** अधरपल्लव के समान = अधर – पल्लव, नर सिंह के समान = नरसिंह।

**3. रूपककर्मधारय समास :-**

जहाँ पर एक का दूसरे पर आरोप होता है वहाँ पर रूपककर्मधारय समास होता है।

**जैसे :-** मुख ही है चन्द्रमा = मुखचन्द्र।

## द्विगु समास

इस समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और कभी-कभी उत्तरपद भी संख्यावाचक होता हुआ देखा जा सकता है। इस समास में प्रयुक्त संख्या किसी समूह को दर्शाती है किसी अर्थ को नहीं। इससे समूह और समाहार का बोध होता है। उसे द्विगु समास कहते हैं।

### द्विगु समास के उदाहरण

- दोपहर = दो पहरों का समाहार
- त्रिवेणी = तीन वेणियों का समूह
- पंचतन्त्र = पांच तंत्रों का समूह
- त्रिलोक = तीन लोकों का समाहार
- शताब्दी = सौ अब्दों का समूह
- पंसेरी = पांच सेरों का समूह
- सतसई = सात सौ पदों का समूह
- चौगुनी = चार गुनी
- त्रिभुज = तीन भुजाओं का समाहार
- चौमासा = चार मासों का समूह
- नवरात्र = नौ रात्रियों का समूह
- अठन्नी = आठ आनों का समूह
- सप्तऋषि = सात ऋषियों का समूह
- त्रिकोण = तीन कोणों का समाहार
- सप्ताह = सात दिनों का समूह

### द्विगु समास के भेद

1. समाहारद्विगु समास
2. उत्तरपदप्रधानद्विगु समास

**1. समाहारद्विगु समास**

समाहार का मतलब होता है समुदाय, इकट्ठा होना, समेटना उसे समाहारद्विगु समास कहते हैं।

**जैसे :-**

- तीन लोकों का समाहार = त्रिलोक
- पाँचों वटों का समाहार = पंचवटी
- तीन भुवनों का समाहार = त्रिभुवन

**2. उत्तरपदप्रधानद्विगु समास**

उत्तरपदप्रधानद्विगु समास दो प्रकार के होते हैं।

1. बेटा या फिर उत्पत्र के अर्थ में।

   **जैसे :-**

   - दो माँ का =दुमाता
   - दो सूतों के मेल का = दुसूती।

2. जहाँ पर सच में उत्तरपद पर जोर दिया जाता है।

**जैसे :-**

पांच प्रमाण = पंचप्रमाण

पांच हत्थड = पंचहत्थड

## द्वंद्व समास

द्वंद्व समास में दोनों पद ही प्रधान होते हैं इसमें किसी भी पद का गौण नहीं होता है। ये दोनों पद एक-दूसरे पद के विलोम होते हैं लेकिन ये हमेशा नहीं होता है। इसका विग्रह करने पर और, अथवा, या, एवं का प्रयोग होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

**द्वन्द समास उदाहरण**

- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
- राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण
- अन्न-जल = अन्न और जल
- नर-नारी = नर और नारी
- गुण-दोष = गुण और दोष
- देश-विदेश = देश और विदेश
- अमीर-गरीब = अमीर और गरीब
- नदी-नाले = नदी और नाले
- धन-दौलत = धन और दौलत
- सुख-दु:ख = सुख और दु:ख
- आगे-पीछे = आगे और पीछे
- ऊँच-नीच = ऊँच और नीच
- आग-पानी = आग और पानी
- मार-पीट = मारपीट
- राजा-प्रजा = राजा और प्रजा
- ठंडा-गर्म = ठंडा या गर्म
- माता-पिता = माता और पिता
- दिन-रात = दिन और रात

**द्वन्द्व समास के भेद**

1. इतरेतरद्वंद्व समास
2. समाहारद्वंद्व समास
3. वैकल्पिकद्वंद्व समास

1. **इतरेतरद्वंद्व समास**

वो द्वंद्व जिसमें और शब्द से भी पद जुड़े होते हैं और अलग अस्तित्व रखते हों उसे इतरेतर द्वंद्व समास कहते हैं। इस समास से जो पद बनते हैं वो हमेशा बहुवचन में प्रयोग होते हैं क्योंकि वे दो या दो से अधिक पदों से मिलकर बने होते हैं।

**जैसे :-**

- राम और कृष्ण = राम-कृष्ण
- माँ और बाप = माँ-बाप
- अमीर और गरीब = अमीर-गरीब
- गाय और बैल = गाय-बैल
- ऋषि और मुनि = ऋषि-मुनि
- बेटा और बेटी = बेटा-बेटी

2. **समाहारद्वंद्व समास**

समाहार का अर्थ होता है समूह। जब द्वंद्व समास के दोनों पद और समुच्चयबोधक से जुड़ा होने पर भी अलग-अलग अस्तिव नहीं रखकर समूह का बोध कराते हैं, तब वह समाहारद्वंद्व समास कहलाता है। इस समास में दो पदों के अलावा तीसरा पद भी छुपा होता है और अपने अर्थ का बोध अप्रत्यक्ष रूप से कराते हैं।

**जैसे :-**

- दालरोटी = दाल और रोटी
- हाथपॉंव = हाथ और पॉंव
- आहारनिंद्रा = आहार और निंद्रा

3. **वैकल्पिक द्वंद्व समास**

इस द्वंद्व समास में दो पदों के बीच में या, अथवा आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे होते हैं उसे वैकल्पिक द्वंद्व समास कहते हैं। इस समास में ज्यादा से ज्यादा दो विपरीतार्थक शब्दों का योग होता है।

जैसे :-

- पाप-पुण्य = पाप या पुण्य
- भला-बुरा = भला या बुरा
- थोडा-बहुत = थोडा या बहुत

## बहुव्रीहि समास

बहुव्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। जब दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हैं तब वह तीसरा पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर “वाला , है, जो, जिसका, जिसकी, जिसके, वह” आदि आते हैं वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

**बहुव्रीहि समास के उदाहरण**

- त्रिनेत्र = तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)
- नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका (शिव)

- लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
- दशानन = दश हैं आनन जिसके (रावण)
- चतुर्भुज = चार भुजाओं वाला (विष्णु)
- पीताम्बर = पीले हैं वस्त्र जिसके (कृष्ण)
- चक्रधर= चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
- वीणापाणी = वीणा है जिसके हाथ में (सरस्वती)
- स्वेताम्बर = सफेद वस्त्रों वाली (सरस्वती)
- सुलोचना = सुंदर हैं लोचन जिसके (मेघनाद की पत्नी)
- दुरात्मा = बुरी आत्मा वाला (दुष्ट)
- घनश्याम = घन के समान है जो (श्री कृष्ण)
- मृत्युंजय = मृत्यु को जीतने वाला (शिव)
- निशाचर = निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)
- गिरिधर = गिरी को धारण करने वाला (कृष्ण)
- पंकज = पंक में जो पैदा हुआ (कमल)
- त्रिलोचन = तीन है लोचन जिसके (शिव)
- विषधर = विष को धारण करने वाला (सर्प)

**बहुव्रीहि समास के प्रकार/भेद**

1. समानाधिकरण बहुब्रीहि समास
2. व्यधिकरण बहुब्रीहि समास
3. तुल्ययोग बहुब्रीहि समास
4. व्यतिहार बहुब्रीहि समास
5. प्रादी बहुब्रीहि समास

**1. समानाधिकरण बहुब्रीहि समास**

इसमें सभी पद कर्ता कारक की विभक्ति के होते हैं लेकिन समस्त पद के द्वारा जो अन्य उक्त होता है, वो कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण आदि विभक्तियों में भी उक्त हो जाता है उसे समानाधिकरण बहुब्रीहि समास कहते हैं।

**जैसे :-**

- प्राप्त है उदक जिसको = प्रप्तोद्क
- जीती गई इन्द्रियां हैं जिसके द्वारा = जितेंद्रियाँ
- दत्त है भोजन जिसके लिए = दत्तभोजन
- निर्गत है धन जिससे = निर्धन
- नेक है नाम जिसका = नेकनाम
- सात है खण्ड जिसमें = सतखंडा

2. **व्यधिकरण बहुब्रीहि समास**

समानाधिकरण बहुब्रीहि समास में दोनों पद कर्ता कारक की विभक्ति के होते हैं लेकिन यहाँ पहला पद तो कर्ता कारक की विभक्ति का होता है लेकिन बाद वाला पद सम्बन्ध या फिर अधिकरण कारक का होता है उसे व्यधिकरण बहुब्रीहि समास कहते हैं।

**जैसे :-**

- शूल है पाणी में जिसके = शूलपाणी
- वीणा है पाणी में जिसके = वीणापाणी

3. **तुल्ययोग बहुब्रीहि समास**

जिसमें पहला पद 'सह' होता है वह तुल्ययोग बहुब्रीहि समास कहलाता है। इसे सहबहुब्रीहि समास भी कहती हैं। सह का अर्थ होता है साथ और समास होने की वजह से सह के स्थान पर केवल स रह जाता है।

इस समास में इस बात पर ध्यान दिया जाता है की विग्रह करते समय जो सह दूसरा वाला शब्द प्रतीत हो वो समास में पहला हो जाता है।

**जैसे :-**

- जो बल के साथ है = सबल
- जो देह के साथ है = सदेह
- जो परिवार के साथ है = सपरिवार

4. **व्यतिहार बहुब्रीहि समास**

जिससे घात या प्रतिघात की सुचना मिले उसे व्यतिहार बहुब्रीहि समास कहते हैं। इस समास में यह प्रतीत होता है की 'इस चीज से और उस चीज से लड़ाई हुई।

**जैसे :-**

- मुक्के-मुक्के से जो लड़ाई हुई = मुक्का-मुक्की
- बातों-बातों से जो लड़ाई हुई = बाताबाती

5. **प्रादी बहुब्रीहि समास**

जिस बहुब्रीहि समास पूर्वपद उपसर्ग हो वह प्रादी बहुब्रीहि समास कहलाता है।

**जैसे :-**

- नहीं है रहम जिसमें = बेरहम
- नहीं है जन जहाँ = निर्जन

## समास और संधि में अंतर:

समास का शाब्दिक अर्थ होता है संक्षेप। समास में वर्णों के स्थान पर पद का महत्व होता है। इसमें दो या दो से अधिक पद मिलकर एक समस्त पद बनाते हैं और इनके बीच से विभक्तियों का लोप हो जाता है। समस्त पदों को तोडने की प्रक्रिया को विग्रह कहा जाता है। समास में बने हुए शब्दों के मूल अर्थ को परिवर्तित किया भी जा सकता है और परिवर्तित नहीं भी किया जा सकता है।

**उदाहरण:–** विषधर = विष को धारण करने वाला अर्थात शिव।

जबकि.....

संधि का शाब्दिक अर्थ होता है मेल। संधि में उच्चारण के नियमों का विशेष महत्व होता है। इसमें दो वर्ण होते हैं इसमें कहीं पर एक तो कहीं पर दोनों वर्णों में परिवर्तन हो जाता है और कहीं पर तीसरा वर्ण भी आ जाता है। संधि किये हुए शब्दों को तोड़ने की क्रिया विच्छेद कहलाती है। संधि में जिन शब्दों का योग होता है उनका मूल अर्थ नहीं बदलता।

**उदाहरण:–** पुस्तक+आलय = पुस्तकालय।

## द्विगु समास और बहुब्रीहि समास में अंतर:

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जबकि बहुब्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है।

**जैसे –**

- चतुर्भुज -चार भुजाओं का समूह
- चतुर्भुज -चार हैं भुजाएं जिसकी

## कर्मधारय समास और बहुब्रीहि समास में अंतर:

समास के कुछ उदहारण है जो कर्मधारय और बहुब्रीहि समास दोनों में समान रूप से पाए जाते हैं ,इन दोनों में अंतर होता है। कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है।

इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है। कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा पहला पद विशेष्य के विशेषण का कार्य करता है।

**जैसे:** – नीलकंठ = नीला कंठ और बहुब्रीहि समास में दो पद मिलकर तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं इसमें तीसरा पद प्रधान होता है।

**जैसे**- नीलकंठ = नील + कंठ

## द्विगु और कर्मधारय समास में अंतर:

द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो दूसरे पद की गिनती बताता है जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है।

द्विगु का पहला पद्द ही विशेषण बन कर प्रयोग में आता है जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है।

**जैसे –**

- नवरात्र – नौ रात्रों का समूह
- रक्तोत्पल – रक्त है जो उत्पल

## संयोगमूलक समास

संयोगमूलक समास को संज्ञा समास भी कहते हैं। इस समास में दोनों पद संज्ञा होते हैं अथार्त इसमें दो संज्ञाओं का संयोग होता है।

**जैसे :-**

माँ-बाप, भाई-बहन, दिन-रात, माता-पिता।

## आश्रयमूलक समास

आश्रयमूलक समास को विशेषण समास भी कहा जाता है। यह प्राय कर्मधारय समास होता है। इस समास में प्रथम पद विशेषण होता है और दूसरा पद का अर्थ बलवान होता है। यह विशेषण-विशेष्य, विशेष्य-विशेषण, विशेषण, विशेष्य आदि पदों द्वारा सम्पन्न होता है।

**जैसे :-** कच्चाकेला, शीशमहल, घनस्याम, लाल-पीला, मौलवीसाहब, राजबहादुर।

## वर्णनमूलक समास

इसे वर्णनमूलक समास भी कहते हैं। वर्णनमूलक समास के अंतर्गत बहुब्रीहि और अव्ययीभाव समास का निर्माण होता है। इस समास में पहला पद अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा। उसे वर्णनमूलक समास कहते हैं।s

**जैसे :-** यथाशक्ति, प्रतिमास, घड़ी-घड़ी, प्रत्येक, भरपेट, यथासाध्य।

STEP UP ACADEMY

# हिन्दी मुहावरे अर्थ सहित

## हिंदी मुहावरे और अर्थ और वाक्य प्रयोग

**मुहावरा –** अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना

**अर्थ –** अपनी बड़ाई आप करना

**वाक्य प्रयोग – अपने मुँह मियाँ मिट्लू बननेवाले को समाज में इज्जत नहीं मिलती |**

**मुहावरा – आँख दिखाना**

**अर्थ –** क्रोध से देखना, रोकना, धमकाना

**वाक्य प्रयोग –** गलती भी करते हो और ऊपर से आँखें भी दिखाते हो|

**मुहावरा – आँख का तारा, आँख की पुतली**

**अर्थ –** बहुत प्यारा

**वाक्य प्रयोग – यह बच्चा मेरी आँखों का तारा है।**

**मुहावरा –** आँख का काजल चुराना

**अर्थ –** सफाई के साथ चोरी करना

**वाक्य प्रयोग –** इतने लोगों के बीच से घड़ी गायब ! चोर ने तो जैसे आँखों का काजल ही चुरा लिया है

**मुहावरा – आँखों में धूल झोंकना**

**अर्थ –** सरे आम धोखा देना

**वाक्य प्रयोग –**परीक्षक की आँखों में धूल झोंककर कुछ विद्यार्थी अच्छे अंक तो पा जाते हैं, परंतु इससे उन्हें जीवन में सफलता नहीं मिलती

**मुहावरा – आँखों पर चढ़ना**

**अर्थ –** पसंद आ जाना

**वाक्य प्रयोग –** तुम्हारी घड़ी चोर की आँखों पर चढ़ गयी थी, इसलिए मौका पाते ही के लिए लोभ होना उसने चुरा ली

**मुहावरा – आखें फेर लेना**

**अर्थ** – पहले जैसा व्यवहार न रखना

**वाक्य प्रयोग** – जब से उसे अफसरी मिली है, उसने माँ बाप, यार दोस्त सबसे आँखें फेर ली है

**मुहावरा – आँखें बिछाना**

**अर्थ** – प्रेम से स्वागत करना

**वाक्य प्रयोग – तुम्हारी राह में आँखें बिछाये कय से बैठा हूँ तुम जल्द आ जाओ**

**मुहावरा – आँख में पानी न होना**

**अर्थ** – जोहना, बेशर्म होना

**वाक्य प्रयोग – बेईमान लोगों की आँखों में पानी नहीं होता**

**मुहावरा – आँखों में खून उतरना**

**अर्थ** – अत्यधिक क्रोध होना

**वाक्य प्रयोग – जयचंद को देखते ही महाराज पृथ्वीराज की आँखों में खून उतर आया**

**मुहावरा – आँखों में गड़ना**

**अर्थ** – पसंद आना

**वाक्य प्रयोग – तुम्हारी कलम मेरी आँखों में गड़ गयी है, इसे तुम मुझे दे दी**

**मुहावरा – आँखों में चरबी छाना**

**अर्थ** – घमंड होना

**वाक्य प्रयोग – दौलत हाथ में आते ही उसकी आँखों में चरबी छा गयी और वह अपने रिश्तेदारों से बुरा व्यवहार करने लगा |**

**मुहावरा – आँखे लाल करना**

**अर्थ** – क्रोध से देखना

**वाक्य प्रयोग** – आँखें लाल मत करो, इससे मैं डरनेवाला नहीं

**मुहावरा – आँखे सेंकना**

**अर्थ** – दर्शन का सुख उठाना

**वाक्य प्रयोग – बहुत से नवयुवक तो मेले ठेले में सिर्फ आँखे सेंकने ही आते हैं**

**मुहावरा –** ख़ाक छानना

**अर्थ –** भटकना

**वाक्य प्रयोग –** नौकरी की खोज में वह खाक छानता रहा।

**मुहावरा –** खरी-खोटी सुनाना

**अर्थ –** भला-बुरा कहना

**वाक्य प्रयोग –** कितनी खरी-खोटी सुना चुका हुँ, मगर बेकहा माने तब तो ?

**मुहावरा –** खून का प्यासा

**अर्थ –** जानी दुश्मन होना

**वाक्य प्रयोग –** उसकी क्या बात कर रहे हो, वह तो मेरे खून का प्यासा हो गया है।

**मुहावरा –** खेत रहना या आना

**अर्थ –** वीरगति पाना

**वाक्य प्रयोग –** पानीपत की तीसरी लड़ाई में इतने मराठे आये कि मराठा-भूमि जवानों से खाली हो गयी।

**मुहावरा –** खटाई में पड़ना

**अर्थ –** झमेले में पड़ना, रुक जाना

**वाक्य प्रयोग –** बात तय थी, लेकिन ऐन मौके पर उसके मुकर जाने से सारा काम खटाई में पड़ गया।

**मुहावरा –** खटाई में डालना

**अर्थ –** किसी काम को लटकाना

**वाक्य प्रयोग –** उसनेतो मेरा काम खटाई में डाल दिया। अब किसी और से कराना पड़ेगा।

**मुहावरा –** खाई से निकलकर खंदक में कूदना

**अर्थ –** एक परेशानी या मुसीबत से निकलकर दूसरी में जाना

**वाक्य प्रयोग –** मुझे ज्ञात नहीं था कि मैं खाई से निकलकर खंदक में कूदने जा रहा हूँ।

**मुहावरा –** खाक फाँकना

**अर्थ –** मारा-मारा फिरना

**वाक्य प्रयोग –** पहले तो उसने नौकरी छोड़ दी, अब नौकरी की तलाश में खाक फाँक रहा हैं।

**मुहावरा –** खाक में मिलना

**अर्थ** – सब कुछ नष्ट हो जाना

**वाक्य प्रयोग –** बाढ़ आने पर उसका सब कुछ खाक में मिल गया।

**मुहावरा –** खाना न पचना

**अर्थ** – बेचैन या परेशान होना

**वाक्य प्रयोग –** जब तक श्यामा अपने मन की बात मुझे बताएगी नहीं, उसका खाना नहीं पचेगा।

**मुहावरा –** खा-पी डालना

**अर्थ** – खर्च कर डालना

**वाक्य प्रयोग –** उसने अपना पूरा वेतन यार-दोस्तों में खा-पी डाला, अब उधार माँग रहा हैं।

**मुहावरा –** खाने को दौड़ना

**अर्थ** – बहुत क्रोध में होना

**वाक्य प्रयोग –** मैं अपने ताऊजी के पास नहीं जाऊँगा, वे तो हर किसी को खाने को दौड़ते हैं।

**मुहावरा –** खिचड़ी पकाना

**अर्थ** – गुप्त बात या कोई षड्यंत्र करना

**वाक्य प्रयोग –** छात्रों को खिचड़ी पकाते देख अध्यापक ने उन्हें डाँट दिया।

**मुहावरा –** खीरे-ककड़ी की तरह काटना

**अर्थ** – अंधाधुंध मारना-काटना

**वाक्य प्रयोग –** 1857 की लड़ाई में रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को खीरे-ककड़ी की तरह काट दिया था।

**मुहावरा –** खुदा-खुदा करके

**अर्थ** – बहुत मुश्किल से

**वाक्य प्रयोग –** रामू खुदा-खुदा करके दसवीं में उत्तीर्ण हुआ हैं।

**मुहावरा –** खुशामदी टट्टू

**अर्थ** – खुशामद करने वाला

**वाक्य प्रयोग –** वह तो खुशामदी टट्टू हैं, खुशामद करके अपना काम निकाल लेता हैं।

**मुहावरा –** खूँटा गाड़ना

**अर्थ** – रहने का स्थान निर्धारित करना

**वाक्य प्रयोग –** उसने तो यहीं पर खूँटा गाड़ लिया हैं, लगता हैं जीवन भर यहीं रहेगा।

**मुहावरा –** खून-पसीना एक करना

**अर्थ** – बहुत कठिन परिश्रम करना

**वाक्य प्रयोग –** रामू खून-पसीना एक करके दो पैसे कमाता हैं।

**मुहावरा –** खून के आँसू रुलाना

**अर्थ** – बहुत सताना या परेशान करना

**वाक्य प्रयोग –** रामू कलियुगी पुत्र हैं, वह अपने माता-पिता को खून के आँसू रुला रहा हैं।

**मुहावरा –** खून सवार होना

**अर्थ** – बहुत क्रोध आना

**वाक्य प्रयोग –** उसके ऊपर खून सवार हैं, आज वह कुछ भी कर सकता हैं।

**मुहावरा –** खून-खच्चर होना

**अर्थ** – बहुत मारपीट या झगड़ा होना

**वाक्य प्रयोग –** सुबह-सुबह दोनों भाइयों में खून-खच्चर हो गया।

**मुहावरा –** खून पीना

**अर्थ** – शोषण करना

**वाक्य प्रयोग –** सेठ रामलाल जी अपने कर्मचारियों का बहुत खून चूसते हैं।

**मुहावरा –** ख्याली पुलाव पकाना

**अर्थ** – असंभव बातें करना

**वाक्य प्रयोग –** अरे भाई! ख्याली पुलाव पकाने से कुछ नहीं होगा, कुछ काम करो।

**मुहावरा –** खेल बिगड़ना

**अर्थ** – काम बिगड़ना

**वाक्य प्रयोग –** अगर पिताजी ने साथ नहीं दिया तो हमारा सारा खेल बिगड़ जाएगा।

**मुहावरा** – खून ठण्डा होना

**अर्थ** – उत्साह से रहित होना या भयभीत होना

**वाक्य प्रयोग** – आतंकवादियों को देखकर मेरा तो खून ठण्डा पड़ गया।

**मुहावरा** – खोटा पैसा

**अर्थ** – अयोग्य पुत्र

**वाक्य प्रयोग** – कभी-कभी खोटा पैसा भी काम आ जाता हैं।

**मुहावरा** – खोपड़ी खाना या खोपड़ी चाटना

**अर्थ** – बहुत बातें करके परेशान करना

**वाक्य प्रयोग** – अरे भाई! मेरी खोपड़ी मत खाओ, जाओ यहाँ से।

**मुहावरा** – खोपड़ी खाली होना

**अर्थ** – श्रम करके दिमाग का थक जाना

**वाक्य प्रयोग** – उसे पढ़ाकर तो मेरी खोपड़ी खाली हो गई, फिर भी उसे कुछ समझ नहीं आया।

**मुहावरा** – खोपड़ी गंजी करना

**अर्थ** – बहुत मारना-पीटना

**वाक्य प्रयोग** – लोगों ने मार-मार कर चोर की खोपड़ी गंजी कर दी।

**मुहावरा** – खोपड़ी पर लादना

**अर्थ** – किसी के जिम्मे जबरन काम मढ़ना

**वाक्य प्रयोग** – अधिकतर कर्मचारियों के छुट्टी पर जाने के कारण एक या दो कर्मचारियों की खोपड़ी पर काम लादना पड़ा।

**मुहावरा** – खोलकर कहना

**अर्थ** – स्पष्ट कहना

**वाक्य प्रयोग** – मित्र, जो कहना हैं, खोलकर कहो, मुझसे कुछ भी मत छिपाओ।

**मुहावरा** – खोज खबर लेना

**अर्थ** – समाचार मिलना

**वाक्य प्रयोग** – मदन के दादा जी घर छोड़कर चले गए। बहुत से लोगों ने उनकी खोज खबर ली तो भी उनका पता नहीं चला।

**मुहावरा –** खोद-खोद कर पूछना

**अर्थ** – अनेकानेक प्रश्न पूछना

**वाक्य प्रयोग –** खोद-खोद कर पूछना बंद करो, मैं इस तरह के सवालों के जबाब नहीं दूँगा।

**मुहावरा –** गले का हार होना

**अर्थ** – बहुत प्यारा

**वाक्य प्रयोग** – लक्ष्मण राम के गले का हर थे।

**मुहावरा –** गर्दन पर सवार होना

**अर्थ** – पीछा ना छोड़ना

**वाक्य प्रयोग –** जब देखो, तुम मेरी गर्दन पर सवार रहते हो।